



मणिमाला

रत्नविदान-ग्रन्थः।

मीगौरीन्द्रमोद्दन ठाकुरेय मिटनिय् डाकार,

नारट कमाएडार चार्दि चर्डार चार् विखोपीवड चार वे विजियम्,

माइट कमारखार जन दि मार्ड कास अब दि यहार अनु यानवाट अब साक्सीन, सिभे लियार चन्दि इमिपरियेल चहार बन् मेडिजिहि बन टार्फ,

स्तासदेभीय नारट खर दि बड़ार खर दस्तमाता, नेपानीय नारट खर दि गुरुक्षा खड़ार खर सरस्तती, सङ्गीतनायक , सङ्गीतसागर',

वदु सद्दीत-विद्यालय प्रतिहात्समापति ,

कविकाता मङ्ग्नगरीयानरेरि माजिष्टेट, जिंदम् वक्टि पिसं, राजिनमारसिटिमेली र ये ट इटनायर्न एडीय रवेन आसियाटिक सोसाइटि से न्वर. साहित्य रवेल सोसाइटि मेली,

सुरहेन राजधानी प्रकृष्टतम् नगरीय सङ्गीत विद्येकाहेभि खनरेरि में न्दर, प्रश्यू राजवाना वर्ष्यण् न्यराच पक्षा व्यक्षावाच्यावा व्यवस्य व्यक्ष्य भाग्य राजधानी पारिस् नगरीयाधिकर डिलाइन्ड्कृत् वर्गावक् एकाडेमि व्यक्षियाध्य वेतृतिवस्याव्यस्य वित्य विद्याव र्येत एकाडेमिएसोविएट सेव्यर,

कामराडीम्नगरीय सङ्गीतविद्याचीसार टिकरे स्थिए में म्बर, निदारकण्डस्य हेगनगरीय रथेत फाइलविजितेत एवनायाफिकेन भारतवर्षीय

निटिटिंडसन् फरेन् में खर. जेनिमानगरीय विश्व-विद्यालय करे स्पित्ड मेम्बर, रोम् राज्यस्य सेव्टिंसिनिया नगरीय रदेव एकाडेमि सोसिको अनरेरिको,

रटानी राज्यस्य सीसारटा डिटासकानिका सीसियो चनरेरिसो, फोरेन्स नगरीय रथेन मिर्जाजकेन् इनिहिटिउट एकाडेमिएकाडेमिको करेसाउँ एट, करिएएमच एकाडे मिचर्डिनारि में ब्दर,

रदानीस विभागतस्य राजेनो रवेन एकाडीम सोवियो करेक्सवडीएट, पारमा रवेस विश्व विद्यालय वेमिने रिटी,

नेपलस राज्यस्य पिटागोरिका नगरीयैकाडिम सोसिको कोवापरिटर, वोलोगना नगरीय फिलकारमिक एकाडेनि सोविको अनरेरिकी, दीत राज्यस्थेयेनुषनगरीयारिय योनजियेन सोसार्टिमे म्बर,

विविविद्वीपस्य पावारमानगरीय रवेच एकाडेमि सोसिको जनरेरिसी. सार्डिनिया द्वीपस सेसेरि विश्व विद्यालय पेइन, बारे विवालमें नवीरन नगरीय फिन्डारमणिक घोसाइटिबनरेरि में म्बर

द्रत्यादापाधिकेन प्रचीता ।

किश्वातार्यां धन्यवारेच प्रकाशिता ।

सण्मिला

रतने विज्ञानका ग्रन्थ। जीगौरीनमोधन राकुर मिउजिक हातर,

नाइट कमायहार कर्दि कहार जब जिन्नोगोनह वह नेवजियम, नाइट कमायहार कर्द दि मोट झाव जब दि कहार कर खावराट कर साक्सन, सिमे जियर कर दि दीमिरिवेज कोर कर में हॉजिट कर्दार्क, खाम दे स्वा नाइट जब दि कहार कर ब्रवस्थाना,

नेपालका नारद ्यव दि गुरुखा अडीर वन् सरस्ती, सद्गीत नाथक, सद्गीत सागर,

बङ्क सङ्कीत विद्यानवका मितनायक जीर सभापति, बनुकत्ताका द्रश्रिभार्र्मिटका फेन्नो, जनविर्द माजिन्द्रेट, जाटक् जन दि पिक, पेट जिदन जीर जायरलाङ्के रएक जास्तिर्दाक, सेशादटिका में बर, स्रात्रिक्के रएक सोसार्टिका फेन्नो,

श्वद्रदेनका राजधानी एक्एलम्का धङ्कोत विद्याके एकाडामिका जनगेरि में घर, स्नृतन्त्वा राजधानी गरिसके व्यक्तिगर डिटा रनन् कृत् प्रश्निक चौर एकाडामिका व्यक्तिगर,

वेश्वजियमका मिला साहित्व जीर विधानके रायु एकाशामिका एकोविएट मेन्यर, ज्यामहार होमका सङ्गीत विद्याका खोनाहटिका करेसुपविष्ट मेन्यर, मिलारमाकुम केन नगरका

रएल काइलल किलेल एण्नापामिकेल भारतकीय द्रनिष्टिटिल्यानका करेन मेन्द्रर

जिनिभा नगरका किय विद्यालयका करे स्त्तीतः में स्वर, रोम राज्यस्य वेस्ट्रीविसित्याका रस्त वकाशमिका सीविज्ञी जनरेरिजो, म्हाली राज्यस्य वेस्ट्रीविसित्याका रस्त वकाशमिका सीविजो जनरेरिजो, म्हारेन्द्र नगरका रस्त मिल्डिटिटट एकाशिम सक्राविभिक्त के स्वर्केटिटट एकाशिम सक्राविभिक्त के स्वर्केटिट स्वर्टिट स्वर्केटिट स्वर्केटिट स्वर्केटिट स्वर्ट स्वर्केटिट स्वर्केटिट स्वर्केटिट स्वर्केटिट स्वर्केटिट स्वर्केटिट स्वर्ट स्वर्ट

पार्माका रान विश्व-विद्यानयका बेनियोरिटो, नेवलकु राज्यका प्रिज्ञाणीरकाका एकाडार्यिका छोडियो कोद्यापिटर, वोरोनायका किन्द्रार सिक्क दकाडार्यिका छोडियो क्यारिटो, स्रोक्का प्रकृत नमरका क्यारियोक्षिक्षके छोडाह्रीका में बर,

क्षित्रिति होच्या पानास्थी का स्पन्न एकाराभिका छोडियो जनरेरियो, भार्यहरिना होच्या वेदिस्ता वित्र विद्यालका देश्तु, अट्टिनायाच्या सेकारेत्रुका किन कुरस्थितक सेकार्यका चनरेरिय सेबार स्वादि एका स्व वर्षुक मखीत खोर तकारित ।

क्सक्तामे यत्पदारचे प्रवर्शित ।

MANI-MÁLÁ.

A TREATISE ON GEMS.

SOURINDRO MOHUN TAGORE, Mus. Doc.

KNIGHT COMMANDER OF THE OFFICE OF LEOPOLD OF RELCHIM. ENIGHT COMMANDER OF THE 1ST CLASS OF THE ORDER OF ALBERT OF SAXONY . CHEVALIER OF THE IMPERIAL ORDER OF MEDJIDLE OF TURKEY . KNIGHT OF THE SIAMESE ORDER OF RUSABA MALA :

KNIGHT OF THE GURRHA ORDER OF SARASWATL SANGITA NATAKA AND SANGITA BAGARA OF VEPAUL .

FOUNDER AND PRESIDENT OF THE BENGAL MUSIC SCHOOL . HONORARY MAGISTRATE, JUSTICE OF THE PEACE AND FELLOW OF THE UNIVERSITY OF CALCUTTA. MEMBER OF THE ROYAL ARIANIC SOCIETY, AND FELLOW OF THE ROYAL SOCIETY OF LITERATURE GREAT BRITAIN AND IRPLAND

HONORARY MEMBER OF THE ROYAL SWEDISH MUSICAL ACADEMY, STOCKHOLM. OFFICIER DE LINSTRUCTION PUBLIQUE AND OFFICIER DACADEMIE. PARIS & ASSOCIATE MEMBER OF THE ROYAL ACADEMY OF SCIENCES.

LETTERS AND FINE ARTS OF BELGIUM . CORRESPONDING MEMBER OF THE MUSICAL SOCIETY OF AMSTERDAM . FOREIGN MEMBER OF THE BOYAL PHILOLOGICAL AND ETHNOGRAPHICAL

INSTITUTION OF METHERLANDS INDIA AT THE HAGUE . CORRESPONDING MEMBER OF THE UNIVERSITY OF GENEVA . SOCIO ONORARIO OF THE ROYAL ACADEMY OF ST CECTLIA, BOME .

SOCIO ONORARIO SOCIETA DIDASCALICA ITALIANA . ACCADEMICO CORRISPONDENTE OF THE ACADEMY OF THE ROYAL MUSICAL INSTITUTE AND ORDINARY MEMBER OF THE ORIENTAL ACADEMY OF FLORENCE .

SOCIO CORRISPONDENTE OF THE ROYAL ACADEMY OF RAFFAELLO, URBINO. ITALY , RENEMERITO OF THE ROYAL UNIVERSITY OF PARMA . SOCIO CO-OPERATORE OF THE ACADEMY OF PITTAGORICA, NAPLES . SOCIO ONORARIO OF THE PHILHARMONIC ACADEMY OF BOLOGNA . HONORARY MEMBER OF THE ARCREOLOGICAL SOCIETY OF ATHEMS, GREECE SOCIO CAGRARIO OF THE ROTAL ACADEMY OF PALERMO, SICILY,

PATRON OF THE ATHENEON OF THE ROYAL UNIVERSITY OF BASSARI. BARDINIA . AND HONORARY MEMBER OF THE

PHILHARMONIC BOCIETY OF MELBOURNE, AUSTRALIA, &C., &C. &C.

PART I.

CALCUTTA

PRINTED BY I C. BOSE & CO STANHOFE PRESS 249, BOW BAZAR STREET. AND PUBLISHED BY THE AUTHOR.

[All rights reserved.]

ম্পিম্পল্

অৰ্থাৎ

রত্বিজ্ঞান-গ্রন্থ।

অংশীর ক্রিয়োহন ঠাকুর, মিউজিক্ ডাজোর, নাইট ন্যাণ্ডার অব দি অঙীর অব দিওগোদ্ড অব বেল্লিয়ন, নাইট ন্যাণ্ডার অব্ দি কার্টা রাম অব দি অঙার অব আনবার্ট অব সাক্সনি, নিতেলিয়র অব্ দি ইপিরিয়েল অডার অব্ দেত্তিভি অব টার্কি, প্যাধ্যেশের নাইট্ অব্ দি অঙার অব্ ব্যবদাদা,

নেগালের নাইট্ অব দি গুর্মা অভার অব গরেখনী, সঙ্গীত নারত, সন্ধীত নাগর ; বন্ধ সন্ধীত বিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠাতা ও সূতাগতি,

কলিকাতার ইউনিভার্সিটির কেনো, অনরেরি মাজিট্রেট, কৃষ্টিস অব দি পিন, এটি ত্রিটন ও আগর্লতের রক্তন আসিয়াটিক লোকাইটির মেষর, গাডিডোর বক্তন সোনাইটির জেলো।

স্ইডেনের রাজধানী ইক্লমের সন্থীত বিদ্যার একাডেমির অনহেরি মেষ্য, মাুলের রাজধানী পারিনের আভিনার ভিলা ইন ট্রক্সন্ প্রাক্তির ও একাভামির আফিনার,

প্রবাসক ও একডিমের আজেলার, বেস্তিরদের শিশ্প নাহিত্য বিজ্ঞানের রওল একাডেমির এলোলিয়েট মেরর, আমহীর্ভাবের সম্বীত বিনার লোলহিতির করেম্পতিং মেরর,

নিদার্শত ২ গো নগরের
র্মন ভাবিদানিকের এখনামানিকের পারত বর্গী ইন্টিউউননের ফরেন মেরর,
ক্রিনিভানারের বিশ্বনিদানের করেশতি মেরর,
রোর বাবাক মেনী নিনিনার বঞ্জ একাডেনির সোনিক জনমেরি এ.

ইটানী রাল্যস্থ দোনাইটা ডিভাস্কালিকার নোনিও অনরেরিও, জোরেস নগরের রএল মিইজিকেল ইনিটিটেউট্ একাডেমি

এমাডেমিরোর করেলাতোটি, ও ভারিরেতাদ এমাডেমির অভিনরি মেরর, ইটালীক্ উর্বিমার রাকেনোর ররেল এমাডেমির লোলিও করিলাতোটি, শার্মার ররেল বিশ্ববিদ্যালয়ের বেলিমেরিটো,

নেপন্স রাদ্যের পিটাবোরিকার একাডেমির সোসিও কোরাপরিটর, বোনোগ্নার কিন্দার্যদিক একাডেমির সোদিও অনরেরিও, থীনের এধেশ নগারের

আর্ডিগুসন্থিকের রোগাইটির জনতেরি মেবর, নিনিলি দ্বীপন্থ শাসার্থীর রাজন একাডেবির নোনিও জনতেরিও, নাডিনীরা দ্বীপন্থ সেনেরির বিশ্ব বিদ্যালয়ের পেট্রুন, আর্ট্রেমিরান্থ মেল্টেরেনের জিল্টার্যুন্ধনিও নোনান্থটির জনতেরি দেয়র, ইত্যান্ত্র্যারিককর্তৃক শ্রনীত।

वनिकार्णंद धन्नाद कर्वक धनानिक।

भूमिका।

चार्यांवां पुरावादित्रास्त्राकरेथी रहान्याञ्चवेवं "शिवमाचा" चिन्दीं-राजी-संस्कृत-वद्गीयभाषाचतुष्यसूचैर्याधता । प्रतिरह्निवरवाजे , रचनाया दृष्तासम्पादनाचे प्रन्यिस्तृष्ट्यांमउरोधीयरह्नतच्चित्रां मतं चित्रविद्यते। प्रव्यवे मासाप्राचतरह्नविषयकवर्षनपरिश्वोभितमध्यमिक-रूपपरिचिष्टकं योजितम्।

ग्रन्यकार: ।



वार्धन-नातिना पुराय, चौर यन्य चन्य माखवस्य वानरसे रत सव सङ्ग्रह करके यह "मित्रमावा" बारिजी, हिन्दी, बाङ्गाचा धौर संख्नुत यह चारो भाषा खरूप चारो मूच करके बनाया। प्रत्येक रत्नके वर्णनाके प्रेषभागमे रचनाका दृष्ठता करनेनेवारी रउरोयका रत्नतत्त्वच पर्यक्षत चौगके मत सन्य खरूप काल्यत भये। यह माखाने नाना रत्नके विषयका वर्षम करके परिशोधित मध्यमिक खरूप रक्त परिधिष्ट स युक्ष भया।

ग्रन्यकार।

PREFACE.

HIS "Mani-mala" (Chain of Gems) has been strung on the four-fold thread of English, Bengali, Hindi and Sanskrit languages, with the gems obtained from the precious mines of the Puranas and other classic works of the Hindus. At the end of the description of each class of gems have been inscrted the views of the European authorities thereon as a knot in order to compactness. To the whole has been attached a Pendant forming the supplement, replenished with miscellaneous information on diverse kinds of gems.

S. M TAGORE.

ভূমিকা ৷

আর্থানাতির প্রাণ ও অন্যান্য প্রাতন এইসমূহরপ আকর হইতে
বন্ধ সম্পার আহবণপূর্পক এই "মবিমানা" ইংরামী, বাদানা, হিন্দী ও
বংস্থত এই চারি ভাষারপ চারি থাছি প্রহাবা প্রথিত হইমাছে।
প্রত্যেক রয়ের বর্ণনাব শেষভাগে রচনার চূচতা সম্পাদনের নিমিত্ত
ইউরোপীন রন্ধত্যবিদ্দিশের মত প্রত্তিরপে ক্ষিত হইমাছে। এই
মালাতে নানা রন্ধবিষ্থি বর্ণনা হারা প্রিশোভিত মধ্যমণিপ্রপ্রপ
একটা প্রিপিট সংমূক্ত হইয়াছে।

গৃন্তকার ৷

J.

THE HON'BLE SIR ASHLEY EDEN, KOS.I.,

Bientenant-Bovernor of Bengal,

MANI-MÁLÁ

Most Respectfully Pedicated

HIS MOST GRATEFUL

OBLIGED SERVANT

THE AUTHOR.

सूचीपतम्। ⊸⊷

विषयः ।					प्रश
					8
रत्नजातिः		•••		•••	~
खमनाकोपाखान	મ્	•••			७२
नवरत्नानि	•••	•••			ه ع
वजुम्	•••	··· .	•••	•••	168
वजुदीयाः	•••	•••	•••	•••	194
वर्जुमारणविधिः	•••	•••	•••		१च्द
माशिक्यम्	•••	•••	•••	•••	रे॰र
माणिकास्य काया	दयः	•••	•••		242
वैदूर्णम्	•••	• •••	•••		रप्र
वेद्य्येग्गाः	•••	•••	•••	•••	रप्रच
बैदूर्यदीषाः	•••	***	•••	•••	र्भ
मुक्ता	•••	·	•••	•••	
मुक्तागुर्याः	•••	•••	***	•••	550
सकाटीषाः	•••	•••	***	•••	१ १६
मुलादीयाः जोमेदः		***	•••	•••	848
विद्यमम्	•••	•••	•••	•••	PEE
भरकतम्		•••	•••	•••	64
मरकतदीषाः	•••	•••	•••	***	१८२
मस्कतावाः		•••	•••	***	658
मरकतच्छाया		•••	•••	•••	१८ ६
मुव्यस्याः		•••	•••	•••	8२०
हुन्द्रनी खः	•••	•••	•••	•••	848
इन्द्रनीचगुर्याः		•••	•••	•••	83.
इन्द्रनीखदीयाः		•••	•••	•••	837
. क्केतनम्	•••	•••	•••	•••	840
. युलकम्	•••	•••	•••	•••	8ई-
सुधराखम् रुधिराखम्			•••	•••	800
स्कटिकम्		•••	•••	•••	8==
भीग्रम	•••	•••	•••	•••	864

सूचीपतः।

		+		
विषय				प्रव
रत्नका जात ••				. 8
स्यमनाम,मश्चिमा वय	न		•••	~
नौर्ज्ञा वयान				७र
चीरक वयान	•••	•••	•••	وع
चीरेका खयेव				228
श्रीरेका मारनेका उप	na	•••	•••	१३६
माणिकवा बयान	•••	•••	•••	१ = 6
माणिकका काया वरी	 37		•••	रं∘र
सञ्जनिवेका वयान	•••			₹ 1.₹
सञ्जिविका गुख	•••		***	244
चयुनियेका ध्ययेव	•••	***	•••	रपूच
भोतिका वयान	***	•		र७र
मीतिका गुरा		***	***	हर ०
मीतिका धर्मेच		•••		254
गीमेदका ययान	•••	•••		44.8
मुंग्ना वयान	•••	•••	•••	544
माज्ञका वयान	•••	•••	•••	Set
षाद्मेकाच्ययेव , …	•••	•••	•••	१८र
मानेका गुगा	•••	***	•••	\$ 6
मानेका दाया	***	•••	•••	१८ ई
मुखराजका वयान	•••	•••	•••	8₹•
नीसम्का वयान	•••	•••	•••	848
नीसाका गुग्	•••	•••	•••	880
नीनाका व्यवेष कर्कतकका नदान	•••	***	•••	837
क्षकतकका वयान	•••	•••	•••	84.
पुलक्का वयान	•••	•	•••	8€ ⊂
दक्षिरात्यका वयान स्फटिकका वयान	•••	•••	•••	8€0
भीयका बदान	•	•••	•••	8==
Minds and	•	•	•••	8ረ-€
		_		

CONTENTS.

			L	age
Invocation	•••	•••	•••	3
History of Syamantaka		•••	•••	9
General Remarks on Gems	••• -	•••	•••	73
DIAMOND, pag	e 91—183	٥,		
Defects of Diamond	***			115
Process of Refining a Diamond	***	•••		137
Diamond : Its Properties .	***	***		142
Diamonds-where found	***			144
Colored Dramond	•••	•••		151
Mode of Cutting -Indian and I	Furnmen		•••	153
	auropean			157
Engraving on Diamond Price of Diamond, its Flaws	and Date	 	do of	Tol
	and Dete	Cts; mo	ae or	159
Testing	***	-44-27-4		100
Supernatural and Medicinal I	ropernes	RULIDU	ieu io	163
the Diamond	•••	•••	•••	165
Celebrated Diamonds, Kohi-no	or	•••	***	
Great Mogul	***	•••	•••	168
Pitt or Regent Diamond	***	***	• •	170
Orloff or Amsterdam Diamond	•••	***	•••	171
Nassuck Diamond	. ***	***	***	173
Nizam	***	•••	***	77
Shah of Persia	•••	***	•••	33
Pacha of Egypt	•••	•••	•••	174
Mattam Diamond	***	••	***	7.
Sancy Diamond	***	•••	•••	175
Charles the Bold's Diamond	•••	••	***	176
Florentine Brilliant	•••	***	•••	177
Braganza	•••	***	•••	178
Pigott Diamond	***	•••	•••	179
Hope Diamond	•••	•••	•••	"
Eugenie Brilliant	•••	•••	•••	
Cumberland Diamond	•••	•••	•••	180
Star of the South	•••	•••	•••	
Polar Star	***	***	***	**
Other large Diamonds		***	***	181

	Page
Ruey, page 187-200	
Shades and other Qualities of Rubies	203
Ruby Its Properties	230
Rubies—where found	233
Mode of Cutting	236
Ruby, as known to the Ancients	237
The control of the base	238
Frice of the Ruby, its Flaws and Defects, mode of	
	240
Marvellous and Medicinal Powers attributed to the	
Ruby	243
Celebrated Rubies	245
Cats eye page 253-270	
	0-7
Qualifies of the Cat s-eye	207
Defects of the Cats eye	209
Cat s-eye Its Properties	266
Cats eyes-wi ere found .	267
Mode of Cutting	*)
Its price, Flaws and Defects, mode of Testing	200
Its Marvellous Powers	269
Celebrated Cats eyes	25
Pearl, page 273-352	
Properties of Pearls	311
Defects of Pearls	317
Pearl : Its Properties	326
Original Formation of Pearls	327
Pearls-where found Pearl Fisheries	331
Mode of Boring and Polishing	339
Pearls, as known to the Ancients	340
Price of Pearls Imitations	344
Marvellous and Medicinal Virtues of the Pearl	348
Celebrated Pearls	349
Gomeda on Zirtov, &c page 355-365	
Zircon Hyacinth or Jacinth Its Properties	360
Zircon, &c -where found	361
Mode of Cutting and Polishing	362
Zircon Jacinth or Hyacinth as known to the Angrees	8
Engravings	363
Price of the Z roon, its Flaws and Defects, mode	o£
Marvellous Properties attributed to the Zircon	365

		Pag
Coral, page 267-385.		
Coral Its Properties		. 37
Corals-where found Coral Fisheries		***
Cutting and Boring of Chral ,		. 38
Engraving on Corals	•	
Coral as known to the Ancients Its Uses	•	. 38
Price of Coral Its Imitations	***	38
Marvellous and Medicinal Powers attributed to C	oral	
EMERALD, page 387-418.	-	
Defeate of the Presseld (393
Carl Daniel Call Daniel	٠.	80.
	***	397
Shades of the Emerald r'	••	400
Emerald Its Properties	***	40
Emeralds—where found:	***	400
Emerald, as known to the Augents	• •	
Engravings on Emerald		411
Cutting of Emerald		41:
Price of the Emerald, its Flavs and Defects: I	mita-	٠
tions	•••	412
Marvellous and Medicinal Properties	***	415
Celebrated Emeralds	***	417
TOPAZ, pago 421-433.		
Topaz Its Properties	•••	426
Topazes - where found Varieties of the Topaz	***	427
Topaz, as known to the Ancients	•••	428
Cutting and Engraving	٠.	**
Its price Imitations		430
Marvellous and Medicinal Properties attributed to	the	-
Topaz	•••	431
Celebrated Topazes		432
SAPPHIPT, prgc 435-459.		•
Qualities of the Sapplure	•••	441
Defects of the Sapphirn	***	413
Samplire Its Properties	***	450
Sapphires-where found	***	451
Supplure, as knowl to the Ancients	•••	,,
Engraving and Cutting	•••	452
Its price, Flaws and Defects Imitations	•••	453
Marvellous and Medicinal Properties attributed to	tka	
Sapphire		.43G
Celebrated Sapphires	••	438

সূচীপত্ৰ ৷

,	, ~			
				পৃষ্ঠা
दिदय ।				è
রয়জাতি …	•••	•••	•••	5
ভমন্তকোপাখ্যান	•••	•••	•••	ৰত
मदद्रव •••	•••	•••	•••	25
বন্ধ বা হীরক	•••	•••	***	226
विख्य पारावर	٠	***	•••	33E 309
वृद्धभावगविधि		***	•••	
	•••	•••	•••	249
মাণিক ••• মাণিকের ছায়াদি	***	•••	***	2.0
मानिक्त्र श्रामान	•••	•••	•••	२६०
देवन्पा	•••		***	২৫৭
देवमूर्यात्र श्वन	•••	•••	•••	२६३
टेबम्ट्रांत्र त्नाव	***	•••	***	२१७
ৰুকা …	***	***	•••	022
স্কার ওণ	•••	***	•••	७५१
মুকার দোব	•••	•••	•••	01E
ट्यांटमन •••	•••	***		তচণ
বিজ্ঞ •••	•••	•••	•••	464
মর্কত •••	•••	***	•	020
মর্কতের দোব	•••	***	•••	360
মরকতের ত্বণ	•••	•••	•••	ಶಾಗ
মর্কতছোমা	•••	***	***	835
পুলারাগ •••	•••	•••	•••	802
रेखनीन •••	•••	***	•••	883
ইন্দ্রনীলের খণ	•••	•••	•••	889
ইন্দ্রনীলের দোব	•••	•••	•••	865
कार्दछन …	•••	•••		845
भूतक	•••	•••		875
क्षित्राधा •••	•••	•••	***	E72
न्होंक •••	•••	•••	•••	827
ভীয …	•••	•••	•••	



PART I.

मिश्रिमाला।

मङ्गलाचरणम्।

चन्नानश्चात्त प्रस्ति विश्वष्टरिशिरिशै क्षूयमाना प्रशाना चेतासोने वसती विश्वष्टसुवि चेतमूपाष्टता वा । घोणाद्रस्तं द्याना कमु इद्ममनं सुक्तकं विभूती ता बन्दे वाणी प्रवदा परिवर्शत वयाजातता ग्र द्द्ति ॥

जो बजानकर बाधिरेको नाम करित है, तझा, विष्णु और महेम नव्या जाहा स्तृति कर्ते रहते है, जिल्हों भूरत जित मान्त है, जो मधेर कमलफुष्ठ वनमें वास कर्ति है, विस्के अद्भक्षी किरण चन्द्रमाके समान मुखा वर्ण, जिस्का सलांद्र सकेर गहें नोमें मुदित है, और जिस्के कमावशे समान घायमें कभी वीच और कभी उन्हां मुसक योगा दिति है, वह प्रवन्न होकर मनुष्यको मुख्ताको नाम और कलाण करे, वही वार्वाहिनी सरस्तती देवीको वन्दना कर्ता हो।

MANI-MÁLÁ,

A Theatise on Gems.

THE INVOCATION.

ness of ignorance! Her, who is ceaselessly adored by the Holy Triad, whose form is gentleness, who dwells constantly in the lotus forest, whose lustre resembles that of the moon, whose person is decked all over with milk-white ornaments, whose hand sometimes holds the hard handle of the Vind, at others, the neat volume, whose favor reclaims people from ignorance and brings about their good,—haif to the word-presiding goddess, Saraswati!

যিনি অজ্ঞানতারণ অঞ্চলার বিনাশ করেন, জন্না, বিষ্ণু ও মহেশ্ব সর্বানা বাঁহাব তব করিবা থাকেন, বাঁহাব মূর্ত্তি অতি প্রশান্ত, যিনি শেতকমল-কাননে নিবতর বাঁস কবেন, বাঁহাব অসের আতা নিশাকবসদৃদ, বাঁহাব সর্বাস্থিত অলঙ্কাবে ভূবিত, বাঁহাব কব কমলে কথন কঠিন বাঁগা দণ্ড, কথন বা পবিজ্ঞ পুত্তক শোভা পাথ, যিনি প্রসন্ধ হুইলে মানবগণেব মূর্বতা নাশ ও কল্যাণ বিধান করেন, সেই বাণ্ বাদিনী সর্বতীদেবীকে বন্দনা কবি ॥

मूचम्।

रक्ष' निधारचेत् कोषे सुद्धं सगुणमञ्चयं । सद्ग्रतानामतो जाति गुर्जं तेषा परीचवेत्॥ १ ॥

सुखदा मणय' गुद्धा द खदा दोपणालिन:। श्रतो मणीना बस्तामि सम्मणदीनि तस्वत' । २ १

तपादी रत्नजातयः।

यज्ञानुकागोभेद्नवद्यांगाः वमरकताः प्रोक्षाः । व्यपिन्द्रनीवमण्यत्यदेदृष्यां य प्रध्यानगञ्ज ॥ ३ ॥ कर्कतनं सपुनकं विधराव्यवमन्त्रतं तथा स्कटिकं। विदुत्रमण्यि यदादुदिष्टं वयन्त्रे तज्युर्वः ॥ ॥ ॥

तर्जमा ।

भमस रहको लात चीर ग्रुण पश्चिले परीचा कर्के जी बिगुह चीर ग्रुणपुक्त बोध चोए, वची पत्र छाजानेभे रक्तेके योग चे। १।

वे च्येथ रस जिस्पकार मनुष्यके नानाप्रकारके स्वाका निदान के उसी प्रकारके दोषपुष्ठ रस नाना-प्रकारके दु.पका चेतु के चत्रक रसका ययार्थ सच-वादि निपा जाता के। २।

रववा भात।

रक्ष परीचा-परिएत वहते हैं, के हीरा, मित, गोमेदन्
मावक् पाद्धा, नीतम् या खीना, मम्निया, पीपराज,
कर्षतम्, नाम्दा, नरस्, पटिक, चीर मुंना पटार्थकी रक्षमे
गर्यत है, चीर बक्षपूर्वक मुख्य चीर तहाम कर्ने हैं। शह।

TRANSLATION.

1. Of the various kinds of gems, those only that, on examination, turn out to be sterling, should be treasured up.

2. As a pure jewel is a source of manifold blessing to man, so a flawy one is the cause of diverse troubles. I shall therefore expose the real properties of precious stones.

3—4. According to authorities in the science of precious stones, the following classification well nigh exhausts the more important ones: diamond, pearl, arcon, ruby, emerald, sapphire, cat's eye, topaz, cymophane, garnet, spinel or balas ruby, quartz and coral.

অহুবাদ।

প্রথমে রত্ন সমূদাযের স্থাতি এবং গুণ পরীকা কবিয়া যে গুলিকে বিভন্ন ও গুণমুক্ত বলিয়া বোধ হইবে, তৎসমূদায কেই ধনাগাবে স্থাপন কবা বিধেষ ॥ ১ ॥

বিশুদ্ধ বছ যেমন মানবগণেব অশেব হুথের নিদান, দোষাযিত বন্ধও তজ্ঞাপ নানা ভূংথেব হেড়; অতএব রত্ন-সমূহের বর্ধার্থ লক্ষণাদি বলা বাইতেভে ॥ ২ ॥

রত্ন পরীক্ষক পণ্ডিতেবা হীবক, মুক্তা, গোনেদ, মাণিক বা চুণি, পাদা, নীলম্ বা নীলমণি, লহুনে বা বিড়ালচনু, পোধ-রাজ, কর্বেতন, তামুড়া, নরমচুণি, স্ফটিক ও পলা প্রভৃতিকে রহ্মধ্যে পবিগণিত কবেন, এবং অতি যহুসহকাবে এই সকল বঙ্কেব অনুসন্ধান ও সংগ্রহ কবিতে বিধি দেন ॥ ০ ॥ ৪ ॥ मृचम्।

भाकतिवर्णी प्रवसं प्रवादोध तत्मकं परीचा च !
मूख्य रत्नुमविदिमे य म्बरताना ! पू ।
कुकाने पूपभावते वानि वापक्षते । हि ।
दीपैसासुप्युक्तने कीवनो गुणसम्पदा ! है ।
परीचा परिमुद्धाना रत्नाना एविवीमुना ।
धारणं संप्रको वापि कार्यः निवसभीप्षता ! ७ ।
मास्त्राः कुमलासापि रत्नभाभः परीचकाः ।
त एव मूलमामावाकः नारः परिकस्तिताः ! है ।

तर्जमा ।

रत्नपार्ची पण्डित पश्चित रत्नका कई, रङ्ग, छनर, यथेव भीर नका, नोकशान परीचा करके बाद उस्के किसत करेड्रे। पृ।

जो रत कुद्नि चीर कुलानमे पवदा होता है, सोई रत्न गुणहीन चौर दोवी होते हैं। है।

को राजा थप्ने मद्भवद्यो कामना कर्ते हैं, उनको उपित है, पश्चित रहती परीचा कर्के छस्मे जो निर्देश होए, एसीकी संग्रह भीर भारण करेट्टे। ७।

जो मनुष्य रत्नमाहामे निष्ठण, सर्जेटा रत्नका व्यवकार खर्ने हैं, किस् रत्नका केया हाम डिश्त है, स्तृष्टे विदेश जान्नेवाले, भीर रत्नकेट्नमे धरिशक है, वर्षे सोग रत्नपर्धी हैं। ⊏]

TRANSLATION.

- 5. The worth of gems is ascertained by persons skilled in the knowledge of them, noter examination of their figure, color, flawlessness or otherwise, and the effects deducible therefrom.
- 6. Stones originating on inauspicious days and at unlucky moments are not only void of any beneficial quality, but are positively harmful.
- 7. Those princes that are desirous of securing good fortune, should procure and wear jewels of spotless chastity.
- 8. Only such persons as have mastered the knowledge of gems, use them habitually, can judge their value with precision, and are skilled in the lapidary art, should be reckoued as connoisseurs of precious stones.

षष्ट्रवीम ।

রত্নবিৎ পণ্ডিতেরা প্রথমে রত্নের আকৃতি, বর্ণ, ভণ, দোষ এবং গুণদোষের ফলাফল পরীফা করিয়া পশ্চাৎ মূল্য নিজ্ঞপা করিবেন ॥ ৫ ॥

যে সকল রত্ন কুদিনে কুলমে উৎপন্ন হয়, সেই সকল রত্নই গুণহীন অথচ দোষাম্বিত॥ ৬॥

যে রাজা নিজ নপ্রল কামনা করেন, তাঁহাব কর্তব্য, অথ্যে রত্ত্বের পরীকা করিয়া তমধ্যে যে তলিকে বিশুদ্ধ বলিয়া বোধ হইবে, সেই তলিই সংগ্রহ বা ধারণ করেন মণ্ম

যে সকল ব্যক্তি রহণাত্রনিপুণ, সর্বানা নানারহের ব্যব-হাব করেন, কোন রহের কিব্রূপ মূল্য হওয়া উচিত, ইহার বিশেষজ্ঞ, রহক্ষেদ-পরিপক তাঁহারাই রহপ্রীক্ত বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন ৪৮৪ रतानां सुबदोधप्रभावतो जनानानिष्टानिष्टे भवितुमङ्गत इति प्रकटीकर्त्तु चलेव सामनाकोषास्थानसङ्गतम् ।

मूलम् ।

स्वमन्तकोपाख्यानम् ।

धनमिधानिष्ठः निष्ठस्य प्रवेनसम्बाजितौ । तस्य च सधा-जितस्य भगवानादित्यः दखा चभवत् । ८ ।

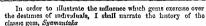
एकदा तु चम्मोधे स्नीरसंत्रयः मूर्ये सवाजितस्रष्टाव । तत्रानस्तत्रया च भाखानिष्ट्यमानोद्यतस्य स्वात्ते। चस्यष्ट-मूर्त्तिभदं चैनमाकोक्य गर्वाजितः मूर्व्यमाद यथैव व्योक्ति ता बिद्धारपढोपममदम्पर्यं तवैवाद्याग्रतो गतमध्यच न किश्विद्वगवता पसादीक्षतं विशेषमुपवच्यामि। १० ।

रहीते सुबदोधने समावने जादमीबाँके सुभ बीर श्रम्स होने सके यह नात प्रनास करचेकेसको यह जगहोंने स्वयनकके बदान सोग किया है।

तर्जमा ।

यमिनवका लेडका निम्न, और निम्नके दो लेडकी। वर्दका नाम समाजित, और कोटेका नाम प्रपेन। भगवान् सूर्यादेव वनाजितके वरम निम्न है। ८।

एक समये समाजित समुद्रके किनारे बगेठ कर सूर्वेशकी आराधना कर्ते थे। एकदिल घोकर सूर्वेशका स्तीय पाठ कर्ते थे, उस समये सूर्वेश उन्नके पाय खाये। सजा- कित्ते पूर्वेशको सूर्वे उन्नके पाय खाये। सजा- कित्ते पूर्वेशको सूर्वे उप्रधान ना देखकर कथा, "भगवन! में आकाशमे थापको जिवतरश्ये खागको पिएडके समान देखता इं, याज खाप समारे सामने सौजुद हैं, लेकेन उस परभी में खायको उसी तरश्ये देखता इं! खायके क्षायका कोई विद्व मैंने निष्ट देखा। "१०।



TRANSLATION. .

The History of Syamantaka,

- Nighna, the son of Anamitra, had two sons, Satrajita and his younger brother Prasena A. great intimacy is said to have subsisted between Satrajita and the divino sun.
- 10 Once Satrájita took up his abode in the seacoast for the purpose of spending his timo in worshipping the sun. After he had prayed long and
 intently, the 'king of day' appeared before him.
 Satrájita, not perceiving tho god distinctly, said,—
 "Lord, why, notwithstanding your personal appearance before me, do I see in you the same globe
 of fire that crests the welkin? I see no signs of
 your favor."

মুদ্দমূদের গুণনোর প্রাক্তির মানবগণের গুভাগুভ ঘটনা হইতে পারের, তাহাই প্রকাশ করিবার জন্য ওন্থনে সাম্ভকোপাধ্যান যোজিত হইল।

অহবাদ।

স্যমন্তকোপাখ্যান।

অনমিত্রেব পুত্র নিম্ন, নিম্নের ছুই পুত্র, জোঠের নাম সত্রাজিত ও কনিঠেব নামু প্রদেন। ভগবান সূর্যদেব সত্রা-জিতের পরম মিত্র ছিলেন। ১।

এক সমযে সত্রাজিত সমুদ্রকূলে অবস্থান কবিয়া সূর্য্যের উপাসনা করেন। একাগ্রচিতে স্ততিপাঠ কবাতে দিবাক্ব উাহার সমিহিত হইলেন। সত্রাজিত দিবাক্বেব মূর্ত্ত স্পন্ট-ভাবে দেখিতে না পাইষা বলিলেন, ভগবন। আমি নভো-মগুলে আপনাকে যে প্রকাশ অমিপিগুসুদ দেখিতে পাই, আজ আপনি আমার সম্মুধে উপত্রিত হইষাছেন, কিন্তু তথাপি আপনাকে সেইজপ্ট দেখিতেছি। আপনাব প্রসদ্ধ-তাব কোন চিহ্নই দেখিতে পাইতেছি না।১০।

मूषम् ।

इत्येवसुक्ते (भगवता) स्येष निजकष्टाइन्मुच्य स्थमनाक-नामा मणिरवताये एकान्ते न्यसः । ततस्त्रमाताम्योज्यून-इत्स्वयुपं ईपदापिक्ष जनयनमाहित्यमद्राचीत्। कृतमणि-पातस्त्रवादिकञ्च चथाजितमाक भगवान् वरमस्नानोऽभिमतं स्णीपृति। स च तदेव मणिरत्यमयाचत। स चापि तस्त्री तत् दक्ता वियति सं थिएणामास्रोड । ११।

चचाजितीऽपि श्रमतमणिरतुषनाथकण्डतया गृग्ये दव तेजोभिरप्रेपदिगन्तराष्णुद्भासभन् हारका विवेश । १२ । वरजमा।

पवाजितने इस् तरस्क कहने सुर्यादेवने खपने गर्वसे स्वानक्तनामं मणि खोनकर रख दि। याद उसके प्रवाजितने सूर्यग्देवना प्रत्यच द्र्यन किया। उनका रङ नावेके समान घोदा जाल और उज्जूस, छोटा कर, चाल घोदी पित्रजवण, पर्यात् धोड़ा मोशा और वज्रत् पोला मिला ज्ञया। बाद उसके सवाजितने प्रवाजितने प्रवाक्त स्वति किया, नव मुद्यग्देवने उनको कहा, के सवाजितने प्रवाक्त स्वति क्याने स्वया एक स्वाक्त विवा तत्र देवने उनको कहा, के सवाजितने प्रवादिवने सवाजितने प्रवादिवने सवाजितने वर्ष स्वाक्त वर्ष स्वापने स्वाक्त माना। स्वावित्रने सवाजितने वर्ष स्वाक्त वर्ष स्वावित्रने स्वावित्रने वर्ष स्वावित्रने वर्ष स्वावित्रने स्वावित्रने वर्ष स्वावित्रने स्वावित्रने वर्ष स्वावित्रने स्वावित्रने स्वावित्रने वर्ष स्वावित्रने स्

प्रशासन पर्ध बकामत मांबरतुको अपने गलेमें पहरतेही मूर्वप्रके समान तेजस्ती श्रीकर अपने तेजको पार्रो भीर प्रकाम कर्ते उन्ने दशका नगरीमें हाखिल इन्ने।१२।

TRANSLATION

- 11. On being thus accosted, the drvine sun took out the gem Syamantaka from his neck, and laid it out. Satrajita could now see his real form. His complexion was reddish hlo copper, and lustrous; his body was under the middle stature; his eyes were slightly tawny. After Satrajita had worshipped him duly, the divinity said,—"Satrajita, do you ask for some recompense for your ment." Satrajita theroupon asked for the gem. The sun accordingly gave it him and went away.
- 12. On wearing the jewel over his neck, he appeared refulgent like the sun, and entered Dváraká

অমুবাদ।

সত্রাজিত এই কথা বলিবামাত্র সূর্য্যদেব আপনাব কণ্ঠ হ'হতে অমন্তক মণি উদ্মোচন কবিয়া এক পার্মে বাথিলেন। তদমন্তব দত্তাজিত সূর্যদেবকে প্রত্যক্ষ দর্শন কবিলেন। উহিব বর্ণ তাত্রেব ভাব ঈমং লোহিত, উত্ত্বন, শবীর ধর্ম, চক্ষ্ ঈমং পিস্নবর্ণ। অনন্তব সত্রাজিত প্রদিপাতপূর্মক ত্রমাদি কবিলে সূর্য্যদেব তাঁহাকে বলিলেন, মত্রাজিত। ত্রি আমান নিকট অভিনমিত বব প্রার্থনা কব। সত্রাজিত স্থান্দেবর এই বাক্ত প্রবণ করিয়া দেই মণিবত্ব প্রার্থনা কবিলেন। অর্থানাত তদসুনাবে সেই মণিবত্ব প্রাজিতকে প্রদান করিয়া বাবানে প্রায়ন করিবলেন। ১১।

সত্রাজিত সেই অদল নণিরত্র কঠে ধারণ করিবামাত্র মূর্ব্বোন আঘ তেজবী হইনা স্বতেজে দশদিব্ উজ্জ্ব কবিয়া দ্বারকানণারীতে প্রবেশ করিলেন। ১২।

मूचम्।

हारकावाधिजनपदस्तु नमायानामवेन्द्र भगवन्तमनादि-प्रवर्ष प्रविनम' अवनिभारावतारणायांश्चिन सानुपद्ध-धारिलं प्रविपत्वाच भगवन् । भगवन्तमयं नूनं द्रष्टुमाया-त्यादित्यः। दत्याकर्ष्य प्रचस्य च तानाच भगवान् नायमादित्यः सचाजितोऽवमादित्यद्भां स्वमन्तकार्ष्यं महामणि विश्व-द्योपायाति। तदेनं विश्वस्थाः प्रस्तत इत्युकास्ते ययुः । १३।

स च तं स्थमन्तकात्वं महामिवनात्वनिवेशने चक्रे 1९81 प्रतिद्विद्व तन्मावरमुग्रवरमधी कलकभारान् सुवति।१५।

तर्ज्ञमा।

धरकानिवामी धादमी सवाजितको धाते देखकर ध्योके भारके नाम करनेवाले धंगरूप मनुष्यस्य धनादि प्रयोक्तमके पास साक्तम प्रवास कर्के वोले, भगवन! धापके देखनेकेवाचे सूर्यप्रदेव धाते हैं। श्रीक्रप्ण धनकी बंध बात पुनकर धाएते धातने बोले, तुम् खोग विम्को सूर्यम खेगान कर्ने धो, यह पूर्वप्र निष्ट है, वह राजा सवाजित हैं। उद्धने सूर्यमको दोडायी स्मननक-वासे महामधिको पष्टकर याडां धागमन किया है, इस्-चित्रे तुम लोग निर्मये धनको देखे। श्रीकप्यकी इस् यातको गुनकर स्व दरकानिवासी चले गये। १३।

सपाजितने यशे स्वमन्तकनामे महामणिको अपने सकानमें रख्छा। १८।

वही श्रेष्ठ मणिरतु हर रोज चाट भार सीणा देता।१५।

TRANSLATION.

13. When the inhabitants saw him coming, they hastened to that Incarnation of the Deity and Bearer of our sins—Krishna, and, bowing themselves down before him, said,—"Lord! the divine sun is coming hither to see you." On hearing this, Krishna replied, with a smile, "He whom you take for the sun, is king Satrájita. Ho is coming hither, decked in the great gem obtained by him from the sun. You may therefore see him without fear." Thus enlightened, they went their way.

14. Satrájita kept Syamantaka in his palace.

 This matchless gem every day produced eight loads* of gold.

অমুবাদ।

হারকানিবাদী জনগণ পত্রাজিতকে আগমন করিতে দেখিযা পৃথিবীর ভার অবভরগের জফ্য অংশে মহযারূপী
আনাদি পুরুষ পুরুষোভনের সমিধানে গমন করত প্রণিপাতপূর্বক বলিল, ভগবন ! আপনাকে দর্শন করিবাব আগমে
দূর্ব্যানেব আদিতেছেন । শুরুষ তাহালিগের এই কথা
ভান্যা শিত্রত্বেথ বলিলেন, তোনরা মাহাকে দূর্য্য বলিখা
বিবেচনা করিতেছ, তিনি দূর্য্য নহেন, রাজা গত্রাজিত।
ইনি দূর্যাদত অনতকনানে নহানণি ধারণ করত এখানে
আদিতেছেন, ঘতএব তোনবা অশার ননে ইইাকে দেধ।
শুরুষর এই কথা ভানিয়া ভাহারা প্রভান কবিল ॥ ১০॥

সত্রাজিতও সেই জনম্ভবনামক মহামণি ত্রাপনার নিকেতনে রকা করিলেন । ১৪।

সেই শ্রেষ্ঠ মণিরত্ব প্রত্যহ ঘাট ভার হবর্ণ প্রদব করিত। ১৫।

^{*} Sandrata, rice = 2) Tolks = 2,000 Palus of gold - Williams.

मूचम् ।

तत्प्रभावाच चकलस्त्रैव राष्ट्रस्य चपसर्गा चनाष्टिः व्यालामिचौरदर्भिचादिमयं न सवति । १६ ।

षयुतोऽपि तद्रनुष्ठमसेनस्य भूपतेर्योग्यमेतदिति लिपसा सके गोवभेदमयाञ्च सकोऽपि न जहार । १७ ।

सवाजितोऽष्ययुतो सामेतत् याविष्यतीत्यवगतरतृबीम सम्त्राचे प्रवेनाय तहत् दत्तवान् । १८ ।

तरजमा।

स्त्रमन्तकमण्डि प्रभावसे राजमे पाणि ना वर्षनाः सारः, चानः,चोर चौरदुर्मिच इस सबका सय ना घा। १६

उस् मधारतको राजा उग्रचेनके लायेक समझकर त्रीकष्णते उस्के जेनेके चामलायी घोषरमी जातकी भगडके मयसे वायजुद यक्ति चीर ताकतके उन्को जोरसे न विया। १७।

इस् मिल पर छप्याको स्त्रोम पयदा उत्या है, समध्यते हैं, के पीके हमारे पास यह प्रार्थना करेंगे। इस् सयसे समाजितने ऋपने भाइ प्रसेनको यह मिल दे दिया। १८०।

3

TRANSLATION.

- 16. Through its magical influence, the kingdom became free from draught, serpents, conflagration, thieves and famines.
- 17. The gem having been deemed worthy of Ugrasena in the opinion of Krishna, he was anxious to havo it, but the fear of family feud restrained him from taking possession of it by force.
 - 18. "I understand that Krishna covets this jewel." Lest he asked for it of him, Satrájita transferred it to his brother, Prasena.

অভুৰাদ।

অমন্তক-মণি-প্রভাবে রাজ্যমধ্যে অনার্হাট, দর্প, অয়ি, চোব ও ছুর্ভিকাদির ভ্য থাকে না। ১৬।

সেই মহারত্ব মহারাজ উপ্রদেনের উপযুক্ত বিবেচনায প্রাকৃষ্ণ তাহা গ্রহণাভিলাযুক হইযাও আতিবিরোধ আশ-জায় সামর্থাসবেও বলপ্রকাশ কবিবা তাহা গ্রহণ করি-লেন না। ১৭।

এই মণিব প্রতি রুফের লোভ জুমিবাছে, বৃঞ্চিতে পাবিতেছি, পাছে আমাব নিকট ইহা প্রার্থনা করেন, এই ভযে সজ্ঞাজিত নিজসোদৰ প্রসেনকে তাহা সমর্পণ কবিলেন ।১৮।

मूचम् ।

तञ्च ग्रुचिना वियमाणमशेषसुवर्षभूनाहिकं शुणसत्-पादयति जन्यया य एव धारयति तमेव घन्तीति । ज्या-विष प्रवेन स्थमन्तकेन कष्टासकेनाध्वमाकच्चाट्या ध्यया-मगच्छत । तत्र च विद्यात् वधमाप । साग्रञ्च तं निष्ठत्य विषोऽप्यमनमणिरत्नमास्याग्रेषादाय गन्तुसदात ध्वाधि-पतिना जाम्बवता इटो घातितस्य । जाम्बानप्यमन्तं तन्नाण-रतुमादाय स्वविनं प्रविशेष स्कुमारकसंन्ताय च वानकाय क्रीदनमकरोत्। १८।

तर्जमा।

पित्र होकर पहरतेथे यह मिल घोणा हेगी, उस्के विपरीत होनेने च्यात् चमुद्ध रहनेथे निषय ठस्के नामका कारण होगी। किसी समयमे मसेन वही मिल चपने गलेने पहरकर घोडे पर मदार होकर जिकार खेलनेको बनमे गये थे। बनमे याते ही एक सेरने उस्को चौर उस्के घोडें के मारा, चौर उस् मिलको सुहमे लेकर चला, जी समयमे मानुकके राजा जानुकनाने उसकी मारकर उस् निर्माल मिलको ले विया, चौर चपने घरमे चला गया। चौर सुतुमारकनामे चपने चेडकेको खेलनेके वियो घायो वियान बिया। दीर सुतुमारकनामे चपने चेडकेको खेलनेके



TRANSLATION.

19. When worn by a clean man, it produces gold, but to an unclean person it indubitably proves fatal. On one occasion, Prasena, decked in this gem, rode a-hunting into the forest There a lion slew both the horse and the horseman, and was about to depart holding the gem in his mouth, when Jámbabán, king of bears, slew him in turn, took the spoil home to his cell and gave it to his son as a gewgaw.

অহুবাদ।

পবিত্র হইয়া ধারণ করিলে সেই মণিবত্র হ্বর্থপ্রস্বাধি করে, তদক্তবায় অর্থাৎ অপবিত্র শবীরে ধাবণ করিলে অবশাই তাহাব বিমাশেব নিদান হয়। কোন সময়ে প্রস্নে
সেই অমন্তক মণি নিজকঠে পবিধান করিয়া অ্যারোহণে
হুগ্যাভিলাষে বনমধ্যে গনন করেন। বনমধ্যে প্রবেশমাত্র এক দিংহ তাঁহাকে ও তাঁহাব অখকে বিনাশ কবিয়া
সেই মহামণি অমন্তক মুখে ধারণপূর্বক গমন করিতে উদ্যত
হইলে রাজাধিপতি আবরান তাহাকে বিনাশ কবত সেই
অমল মণিবত্র গ্রহণ করিয়া নিজ আবাসগর্তে প্রবেশ
কবিল এবং হার্মারকনামে আয়ুজকে জ্বীভূনার্থ প্রদান
কবিল। ১৯।

TRANSLATION

20 When the Jadavas saw that the hour for Prasena's return had gone by, they concluded that, without doubt, Krishna had murdered him and appropriated the gem, he having been before known to covet it

21 When intelligence of this false accusation came to the knowledge of Krishna, he assembled the Jadu host and entering the forest by tracing the hoof marks of Prasena's horse, discovered the dead hody of Prasena and his steed. By showing the prints of the lions paws, he exculpated himself from the blame laid at his doors and then began to search for the lion guided by the paw-marks

অহ্বাদ।

প্রত্যাগমনকাল অতিক্রান্ত হইলেও বখন প্রদেন প্রত্যা গত হইলেন না, তখন যাবতীয় যত্ত্বশীয় ব্যক্তি প্রকল্পর বলাবলি কবিতে লাগিল মে, এইক্ষ অমন্তক্তের প্রতি অভিলাষ প্রকাশ ক্রিয়ছিলেন, কিন্তু তাহা প্রাপ্ত হন নাই, অতএব আমাদিগের বিবেচনায় কৃষ্ণই প্রদেনকে বিনাশ করিয়া মণি গ্রহণ করিয়াছেন, অভ্য কোন ব্যক্তি প্রদেনকে বিনাশ করে নাই। ২০।

প্রীকৃষ্ণ এই মিথাপবাদেব কথা কর্ণপ্রশেষায় প্রবর্ণ কবিষা যন্তুসৈন্তসমবেত হইষা প্রমেনের অথেব পদচিছ্ অমুগানে বননধ্যে প্রেশে কবিষা দেখিলেন, প্রদেন অথেব গহিত শিংহর্কৃত নিহত হইমা ছুমিতে পতিত বহিষাছেন। প্রীকৃষ্ণ বদ্যভিষাহারী ব্যক্তিবর্গকে প্রমেনের মৃতদেহ ও দিংহেব পদচিছ দেখাইয়া নিজকলম্বাপন্যন ক্রিতেন, পদচাৎ শিংহেব পদচিছানুসাবে তাহার অমুগ্রণ ক্রিতে লাগিলেন। ২১।

22. After proceeding some way, he lighted upon the carcass of the lion. Having regard to the rarity of such a gem as syamantaka, he then proceeded to search for the bear in the direction pointed out by the traces of his paws. After having advanced awhile, he stationed his army in a valley; and himself entered the den of the bear. When he had advanced only half way, he heard the following soothing-speech addressed to Sukumára by his nurse:—

23. "Hush, child! Don't you know that the gem of which the prince of bears, your father, forcibly possessed himself by slaying the lion, has been given to you, and that now it is your own?"

षञ्चाम ।

শ্রীকৃষ্ণ বিংহেব পদচিক ধরিদা কির্দ্ধুর গদন করিদা দেবিলেন, সিংহও কোন ঋক্কর্ত্ক নিহত হইণা ভূমিতে পতিত রহিণাছে। পরে নেই স্মাযতকের ভূর্তত্ব জানের খনের পদচিকানুসারে গদন করিদোন। কির্দ্ধুর গদনের পর এক পর্বত্যানিহিত ভূতাবে সমৃদায় যতুনৈত স্থাপন করিয়া। আক্ষের পদচিকানুসারী হইয়া ঋক্ষের বিবরমধ্যে অবেশ করিলেন। বিবরের অর্জনাত্র প্রবেশ করিবাই স্বন্ধুনারকের প্রতি ধাত্রীর নিম্নলিখিত সাভ্নাবাদ ভনিতে পাইলেন। ২২।

স্থকুমাবক! ছুমি রোদন করিও না, এক দিংহ প্রদেনকে বিনাশ করিষা বে মণিরত্ব গ্রহণ করে, তোদার পিতা থুকুরাজ দেই দিংহকে বিনাশ করিয়া দেই মণি খান্যন করিয়া তোমাকে দিয়াছেন, একণে এই মণিরত্ব তোমারই হইল।২৩।



मूचम्।

दलावर्षा वयस्यमन्तकोदन्तोऽन्तःप्रविष्टः कुमारक-कोदनकोष्ठतत्त्र धावीवक्ते तेजोभिर्ज्ञान्वत्यमानं स्वमन्तर्वे दर्दमः । ५८ ।

तञ्च स्वमन्तकाभिलापचत्रुयमपूर्वे गुरुपमार्गतमवेस्य धानी चाडि चाहीति व्याजहार। २५ ।

तदार्त्तनाद्यवणानन्तरह्यामपेपूणैचृद्यः स जाव्यवनाज-गाम नवोद परसरं बुखतोर्द्वयोर्गुद्वमेकावंग्रानिद्मान्यभवत्।

तर्जमा ।

शिक्तप्पने यह बात मुनतेही स्वमन्तक मणिका छात मालुम करके गुडामें प्रवेश किया। देखा, वडी स्वमन्तक मणि लेदकेने खेलनेने खिये दार्दके डायने है, श्रीर उसके तेनसे चोरा तरस प्रकासमान है। २४।

दार्रने देखा के एक भादमीने जिस्को निंद नभी देखा या, फनत उस्मणिको देखता है, इमको नवाणो, हमको ववाणो ऐसा सोरकर उठी। २५।

लाखुबना दाईका से बाबीर मुनकर क्रीधातुर घोकर वधीदम उम् जगद भानीजद उत्या; भीर सीक्षणाचे बन्दू युद्ध करने लगा। भीर वह बदाई स्विम्म दिनतक उद्गा

(60)F .

TRANSLATION.

- 24 On learning this, Krishua came forward, and found syamantaka lying in the hand of the nurse and illumining the spot.
- 25. When the eyes of the nurse fell upon a person whom she had never seen before, and who eyed cagerly the prize in her hand, she cried out, "help, help! O."
- 26. Alarmed by her cries, Jámbabán immediately appeared on the spot, filled with wrath, and entered into a fieres combat with Krishna. Thislasted for twenty-one days.

অভ্ৰাদ।

প্রীক্ষম এই কথা শুনিবানাত্র গুনতকের সংবাদ অবগত হুইয়া বিলনধ্যে প্রবেশ করিলেন, দেখিলেন, দেই গুনতক বালকের জীড়াব নিনিত ধাজীহন্তে গুন্ত রহিয়াছে, এবং ভাহাব তেজে চুহুর্দ্ধিক আলোকিত হুইয়াছে। ২৪।

ধাত্রী সেই অনুষ্ঠপূর্ব্ব অবচ জনন্তাকের উপর সত্কগৃষ্টি পুক্ষকে দেখিয়া আনাকে রকা কব, রকা কব, বলিবা চীৎকার কবিযা উঠিল। ২৫।

চাঘনান ধাত্রীন এই প্রকান সভীতি চীংকার প্রবাণ ক্রোধে পরিপূর্ণ ইইয়া তংক্ষাং দেই স্থানে উপস্থিত ইইয়াই এইকোর নহিত মোরতর হন্দর্যক্র মারস্ত কবিন। সেই মুক্তে একবিংশতি দিন গত হইন।

ઈંદ

मुसम्।

ते च यहुमैतिकासाच यप्ताष्ट दिनानि तिझ्क्यानि-सुदीन्यसाणासन्त्यं । चनियक्तसमाचे च मधुरियी चनाववय-मच विचेऽव्यन्तनायमाप्तो भविष्यव्यन्यया तस्य कथमेता-चिन दिनानि यनुजये व्याविषो भवतीति कताध्यवसाया दारकामागता चतः कृष्ण इति कथयामान्तः । १६ ।

तदान्यवास तत्कालोचितमखिलसुपरतक्रियाकलापं चक्:। ५७।

तत्र पास युष्यमानसातियद्वाद्तविशिष्टपात्रीपयुक्तान्न-तोयादिना कृष्णस वनप्राणपुष्टिरभूत्। २८ ।

तर्जाता।
श्रीर इधर यहुवंशीवांकी धेनाते श्रीलप्णकी ग्रुषांधे वाषार धीने के इनतिजारने सात श्राट हिनतक काटा ; जन देखा, के श्रीलप्ण सात श्राट हिनतक मी किरकर निष्धाने, तन उनलिंगिने तजनीज किया, के श्रीलप्णने जनर ग्रुषा भ्रमता प्राप्त छोड़ हिया, जीते रहने से हुसमनके सारने में इजी देर नी घोति, यही निषय करके उनलेंगोंगे दरकां में किर धाकर यह बात ममूरकी, के श्रीलपण प्राप्त छोड़ हिया है।

श्रीरुपाढे भाइबन्धुने यह बात मुनकर उधीवक क्रिया करण पर्यात् श्राहकका करठाचा । ५० । भाइबन्धुने बडत श्रहाचे श्रद्ध पाति श्रीरुपाके हेत रान किया। श्रीर वहीं श्रद्ध पाति बहुाइ करते छये

शां क्या। अरिवंदा अन्न पान सद्दि कारतः श्रीकृष्णके बसका मनवृत्करने वासा छ्या। २००।

When the Jadu army found that he did not return after a week had passed they concluded him dead, for had he hved, (thought they) he would certainly have returned by this time. Under this conviction, they returned to Dwáraká, and gave out that Krishna had given up the ghost.

27. On receiving this tidings, the friends of Krishna performed his funeral ceremonies

28. The various articles of food offered to his manes contributed but to impart a fresh accession of strength, while engaged in the combat.

অভুবাদ।

এধানে যহু দৈনিকেবা এই ফেব গর্ভ হইতে নিজুমণ অপেকাষ সাত আট দিন অতিবাহিত কবিন। যথন দেখিল,
এইফ সাত আট দিনের পবেও প্রত্যাগত ইলেন না, তথন
তাহাবা বিব কবিন যে, অবশ্যই এইফ গর্ভমধ্যে লীলা
স্ববণ কবিবাছেন, জীবিত বাদিলে কথনই শক্রছ্য কবিতে
তাঁহাব এত বিলম্ব হইত না। এইবল্পে ক্তনিশ্চম হইমা
তাহাবা ঘাবকায় প্রত্যাগমনপূর্বক এই কথা রটাইয়া দিল
যে, এইফ প্রাণ পবিত্যাগ কবিবাছেন। ২৬।

ত্রীকৃষ্ণের বন্ধুবান্ধবের। এই কথা শ্রবণ করিয়া তৎ-কালোচিত প্রেতকার্য্য সমুদায় সম্পন্ন কবিল। ২৭।

বদুগণ অতি শ্রন্ধাপূর্বক অন্নপানাদি শ্রীল্লয়েব উদ্দেশে দান কবাতে তত্মারা যুদ্ধে ব্যাপৃত শ্রীর্থেব বলাদির পুষ্টি-সাধন হউল। ২৮।

मूचम् ।

इतरखानुदितमतिगुरुषु व्यमिद्यमानखातिनिष्ठु रप्रवार-पीदिनाषिखावयवस्य निरावारतया वलवानिः। निर्जिनस्य भगवता जास्ववान् प्रणिपत्याष्ट्रस्यषुरस्वरायसम्बद्धरावसा-दिनिरप्यधिलैभेगवान् न जेतुं एकः विस्तावनिगोप्वरैरस्य-वीर्धेनैरावयवभूतेच निर्म्यग्योन्यनुष्ठतिभः कि प्रनरस्वविधे-रवस्यं भगवतीःस्मत्स्वामिनी नारायणस्य सक्वजगत्यरा-यणस्यायेन भगवता भवितस्यसित्युकः। २८।

सर्जमा।

मुखे क्रये और प्रयत्वतसान श्रीलागाक यह भारी मक मारचे तामाम बर्न पूर पूर घोजान से आख्रुयना बल- घोन घोकर गिर पहा। श्रीलागाने सनायाम समको परा- जित किया। जास्यक्त इस् तर्घ घे घाकर श्रीलागाको प्रणाम करके बोमा, मगदन। जित्र मगद मव मुर, श्रमुर, यह भीर गश्री बगयरह प्राणीमाच एककहे घोकर कभी चाप्को पराजयकर निष्क सके, तथ छुनेके रघने याने समतावत मनुष्य-पालति तित्य ग्रीति-रनुमारो छम ऐसे श्राटमी पायको घारों, यह कभी स्थानको निष्य प्राणीम प्रथान निष्य प्राणीम स्थान स्थान प्रथान स्थान स्

TOANSTATION

29 What through privation, and what owing to the many and deep wounds inflicted by his powerful adversary, Jámbaban at length succumbed Being thus defeated, he bowed bumbly to Krishna, and said, "Lord! when all the Gods and Asuras," Jakshas† and Gandharvas† could not defeat thee, what is the chance of a weak beast like me, although in a human form? On my life, thou partakest of the nature of that Universal God who is the author of my life as of all else that breathe"

অমূবাদ।

নিবাহাবে এবং প্রবল পর্বাক্তান্ত প্রীকৃষ্ণের গুরুত্বনির্চুর প্রহাবে সর্বাদ্ধি কতবিকত হওবাতে জাম্ববান এক বাবে নিস্তেজ হইমা পডিল, হতবাং প্রীকৃষ্ণ অনাঘাসেই তাহাকে পরাজিত কবিনেন। জাম্ববান এইকপে পরাজিত হইমা প্রীকৃষ্ণকে প্রণিশাতপূর্বকি কহিল, তগবন্। যথন সমূদায় হব, অন্তব্ধ, যক্ষ ও গঠকর্ব প্রস্থৃতি প্রাণিচ্য একজ্র হইমাও কর্থনই আপনাকে পরাজ্য কবিতে সমর্থ হয় না, তথন যে, পৃথিবীর, অম্লমন্ত্র, পরাক্তার, তিয়ুগুগ্লোক অন্লু সাাবী অত্মবিধ ব্যক্তি আপনাকে পরাজ্য কবিরে, ইহা কথনই সম্ভবপর নহে। আনাব নিশ্চর বেধা হইতেছে, বিনি সমূদ্য জগতের প্রকর্মান্ত্র প্রাণ্ড প্রস্থৃত্ব বিনি সমূদ্য জগতের প্রকর্মান্ত্র প্রাণ্ড প্রস্থৃত্ব বিনি সমূদ্য জগতের প্রকর্মান্ত্র প্রস্থানিক সম্বাদ্ধি জগতের প্রক্ষান্ত্র প্রধান সমূদ্য জগতের প্রক্ষান্ত্র প্রধান সমূদ্য জগতের প্রক্ষান্ত্র প্রধান সমূদ্য জগতের প্রক্ষান্ত্র প্রস্থানির প্রস্থৃত্ব হইমা থানিবেন। ২৯।

¹ Celestial mus cians who form the orchestra at the banquets of the gods and who belong to Indras heaven—(ibid)



^{*} Adversaries of the Gods.

[†] Dem gods who are attendants on Luvers the Cod of wealth and employed on the care of his garden and treasures.—(Williams)

मूचम्।

तस्मै भगवानिष्ठलमविभारावतारमाचयत्ते । ३० । प्रीत्याश्चितकरतत्त्रसम्बन्धित चैनमपगतयुद्धवेदं चकार ।३१। स च प्रणिपत्यैन सुनरिप प्रमादा जाव्यवतीं नाम कत्या

प्रहागमनाघेरभूता ग्राह्यामास । ३२ ।

स्यमन्तकमणिमयसी प्रणिपत्य तसी प्रद्री। श्रयुती-ऽयितिप्रणतात् तसादप्राद्यमणि तन्त्रणिरत्नमात्रशोधनाय अग्राह। ३३।

तर्जमा।

त्रीलप्पने आख्यातकी यह नात मृनकर कहा, भी प्रभीके योभोने उतारनेकेवासे इम संग्र स्थवतार ऊर्वे से | ३० |

जानुबन्त त्रीक्षयाकी वातसे सन्तृष्ट क्षोकर बट्नपर क्षाय फेरकर युद्धका कष्ट ट्रर किया । ३१ ।

उस्के बाद जास्त्रवन्त ष्ट्यीपर मावा रखकर प्रणाम करके त्रीकष्णको प्रषद्ध करके उस्के मकानपर त्रीकष्ण भावे हैं, इन्कारण प्राक्ते स्वरूप चपनी खेडकी जास्त्र-वतीको दिया। ३२।

जाम् बन्तने फेर प्रवास करके स्वसन्तक सविभी त्रीकृष्णको इवाने किया। चगर के चीकृष्णने चपने भक्तोकी चिज सेना, गयेर सनामिक समको, चेकिन नाचार घोकर चपना कषडा दूर करनेक्ष्यस्ते यक सवि स्नेना पदा। ३३।

30. At this, Krishna frankly confessed to his incarnation for bearing the sins of this world.

31. Highly satisfied at this frank avowal, Jámbabán began to shampoo Krishna's body, with a view to relieving the pain incident to the late combat.

32. Jámbabán again reverentially bowed, and, by way of paying suitable respect to Krishna for having condescended to come to his dwelling, bestowed on him the hand of his daughter, Jámbabatí.

33 He also presented his divino guest with the gem Syamantala. Although fully alive to the impropriety of depriving his friendly host of the jowel, Krishna was obliged to accept it, in order to wipe out the stigma that had attached to his name.

অভ্যাদ।

প্রীকৃষ্ণ জাম্বরানের এই কথা শুনিয়া তিনি যে, পৃথিবীর ভারাপনোদনের জন্ম অংশারতাবরূপে অবতীর্ণ হইয়াছেন, এ কথা ভাহার্কে বনিলেন । ৩০ ।

জাম্ববান্ শ্রীক্বফেব বাক্যে প্রীত হইবা খঙ্গে হস্তামর্ঘণ দ্বাবা তাঁহার সংগ্রামজনিত ব্লেশ অপনীত করিল। ৩১।

তৎপৰে জাঘবান্ প্রণিপাতপূর্বক পুনবায জীর্ফকে প্রদান কবিয়া তাহাব ভবনে যে, রক্ষ আগমন কবিয়াছেন, তাহাব অর্ধ্যযক্ষপ জাঘবতী নানী নিজতন্যাকে তাঁহাকে সম্প্রদান করিল। ৩২।

জাঘবান পুনবায় কৃতপ্রণান হইবা ভ্রমন্তক মণিও জীব্রহ্মকে প্রদান করিল। এরপ অমুগত ব্যক্তিব নিকট হইতে দেই মণি গ্রহণ অতিষ্কৃতিব্য বিবেচনা কবিয়াও জীক্ষ তর আত্মকলহাপনোদনের জন্ম অগত্যা তাহা গ্রহণ কবিলেন। ৩০।



मूचम्।

षष्ठ जास्ववत्या दारकामाजमाम । मनवदागमनोङ्ग्रतषर्भोत्कपस्य दारकावासिजनस्य क्रप्णावलोकनानु व्यवसेवातिपरिणतवयसोऽपि नववौवनिक्तामवत्। श्वानकदुन्दिभञ्ज दिएपादिष्टेशित च सक्तुयादवाः स्त्रियस्य सभाजया-माछः। १४।

भगवानि यद्यानुभूतमश्रेषवाद्वसमाजे यद्यावदाचचचे स्यमन्ताकच वचाजिताय दत्त्वा मिद्याभिश्राचित्रमृद्विमनाप जास्ववतीचान्तः पुरे निवेशवामास । यचाजितोऽपि मवास्यान् भूतमजिनमारोपितनिति जातसन्त्वासः स्वमुता सत्यभामा भगवते भावाः ददी । ३५ ।

बर्जमा।

डस्के बाद त्रीकष्ण जास्वती सहित दरकामे किर आये। त्रीक्षणांके केर धानेसे हरकानिवासी खोगके कैसे धानन्द डार्वे, के बूदे धादमी अवानके कैसे ताकतदार धोगवे चौर तमाम यदुवंभी स्त्री सुक्ष वस्त्रदेवके पाम जाकर मडान धानन्द जाहेर करने लगे। ३८।

इस् मणिके मध्ये को जो ज्ञवावा, त्रीक्षणाने सबसे कहा।
भीर समाजितको बच्ची माबि देकर भपने मुठ कलहुसी
कुटे। उसके बाद जाम्बबतीको भन्तः पुरसे भेजवा दिया।
समाजितने जो श्रीकृष्णाको मुठा कलहु चगायाया, उसके
सममे बज्जत भवभीत कोकर भवनी खेदभी सल्यभामाको
क्याने कर दिया। ३५।

34. Then Krishna returned to Dwaraka with Jamhahati. His unexpected return infused such joy into the people, as made even the old young. All the men and women of the Jadu race flocked to Vasudeva and expressed their heart-felt congratulations.

85. Krishna now related all that had befallen the gem; and finally bestowing it on Satrájita, wiped out the 'damned spot' on his fair fame. He then sent Jámbabatí to the inner apartments. Satrájita now became a prey to fear for having groundlessly blamed Krishna, and married his daughter Satyabhámá to him, by way of conciliation.

षञ्चाम ।

অন্তর প্রীকৃষ্ণ জাধ্বতীর সহিত ধারকায প্রতিগনন করিলেন। প্রীকৃষ্ণের পুনরাগদনে ধারকানিবাদী জনসমৃ হের এরূপ আনলোদর হইল বে, প্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিয়া বৃদ্ধ ব্যক্তিরাও নব-যুবকের ভাষ বলশালা হইল, এবং যুক্তু-বংশীয় সমুদায প্রী পুরুষ বহুদেবের নিক্ট গিয়া মহা আনন্দ প্রকাশ করিতে লাগিল। ৩৪।

এই মণিসদধে বাহা বাহা বাট্যাছিল, ঐক্য সর্বন্ধসমক্ষে তাহা ব্যক্ত করিলেন, এবং সজাজিতকে সেই অমতক মণি প্রদান কবিয়া নিজ মিঝাপবাদ হইতে মুক্ত হইলেন। পবে জাখবতীকে অন্তঃপুবে প্রেরণ করিলেন।
সজাজিতও ঐক্তিফের প্রতি অকারণ কলজারোপ করিয়াছিলেন বনিষা অত্যন্ত ভীতাক্তরপ হইবা তাঁহাকে নিজ
তনয়া সত্যভানাকে প্রদান করিলেন। ৩৫।

मूलम्।

ताञ्चाक्ररकतवर्षायतधन्त्रममुखा यादवाः पूर्वं यरवामाषुः ।
तत्त्वत्त्रप्तानादवज्ञातमात्मानं मन्यमानाः स्वाजिते वैरानुवन्यं चक्तुः । धक्र्रकतवर्माप्रमुखाय यतधन्त्वानमूषुः धयमितुराला स्वाजिनो योऽस्माभिभवता चान्यवितोऽप्यालजामस्मान् भवन्तं चाविगणया क्राप्याय द्वावान् । तद्वमनेन
जीवताः घातियत्वेनं तन्मधारत्नं त्वया किं न गृद्यते ।
ययमप्रस्प्यत्स्यामः यद्याषुतस्वापि वैरानुवन्धं करिः
प्यतीति । १६ ।

तर्जमा ।

शक्र कातवसां चीर मतधन्या यदुवं मीयोने पहिले धल्यमामाकी वादिकरनेके लिये क्वाजित के क्वाया। अब कल्यमामाकी श्रीकृष्णके धावाजे करनेने जन समेनि श्राप्तान वे दक्ती नमस्कर क्वाजित वे दुस्तनी करनेकी तैयार क्षये। चल्रूर चीर कातवसां वगयर च यदुवं मी मतधन्याचे बोने, के देख, स्वाजित बदा दुराक्षा है। इसने चीर तुमने क्वाजित में मत्यमामाकी दरखाझा कियी, खेकिन चसने कम दोनोनेचे कियोजो न दिया, जीर च्यामा करके भीराष्यकी दिया; इस्तिये क्यारे तुमारे स्वतामे चमको जीता रखना मनानिक निक्ष खुव को, जो चसको मारकर वक्ष मणि खेनेवी। चार कथ्य दुस नावमे तुमसे दुस्तनी करेंगे, तो क्या साक कक्षते हैं, के जकर क्यांग तुझारी मदद करेंगे। हैं।

36. Akrura, Kritabarmá, Satadhanyá and other jádavas had before this sought the hand of Satyabhámá. Now sceing that Satrájita gave her away to Krishna, they felt insulted and plotted against the father. Akrura, Kritabarmá, &c., said to Satadhanvá—"Lo! Satrájita is a villain: see, he has given away Satyabhámá to Krishna, slighting us. Down with him! Why do you not slay him and possess yourselves of the matchless jewel held by him? If Krishna prove hostilo to you, depend upon it, we shall be at your back."

অনুবাদ।

অকুন, ত্বতবর্মা ও শতধ্যা প্রছতি যাদবগণ পূর্বে সেই
সত্যভামাকে বিবাহার্থ সন্তাজিতের নিকট প্রার্থনা করিয়াছিলেন। একণে নেই কভা প্রীকৃষ্ণকে সমর্পণ করাতে
ভাঁহারা সকলে আপনাদিগকে অবনানিত বোধ করিয়া
সন্তাজিতের প্রতি বৈরামুষ্ঠানে বত ইইলেন। অকুর ও
কৃতবর্মা প্রভৃতি যতুবংশীযেনা শতধ্যাকে কহিলেন; দেথ,
সন্তাজিত অতি তুরারা, কারণ, তুমি এবং আমবা ইহাব
নিকট সত্যভামাকে যাচ্ঞা করিয়াছিলাম, কিন্তু সে
তোমাকে ও আমাদিগকে অবজ্ঞা করিয়া এথন কি না
কৃষ্ণকে নেই কভা দান করিল; অতএব আমাদিগের
বিবেচনাম ইহাকে জীবিত রাথা কর্তব্য নহে। তবে
তুমি যে, কেন ইহাকে বিনাশ করিয়া সেই মহামণি গ্রহণ
করিতেছ না, বলিতে পারি না। যদি প্রাকৃষ্ণ এ বিব্যে
তোমার সহিত বৈরতা করেন, আমরা মৃক্তবণ্ঠ বলিতেছি,
অবগ্রুই তোমার সাহায়্য কবিব। ৩৬।

म्सम्।

एवसुकत्तचेत्यमावयाद । जतुगृहदाधानाध्व पायङ्-नन्दनानां विद्तिपरमार्थोऽपि भगवान् दुर्वेप्राधनप्रयतः येथित्यार्थे कुत्यकरणाय वारणावतं गतः । ३७ ।

गते च तस्मिन् मुप्तमेव सवाजितं शतथन्वा जधान
सणिरत्नद्दादे । पित्रवधासप्पूर्णं च सत्तमामा श्रीपृश्यन्दनसारूदा वारणावतं गत्ता सगवते द्रष्टं प्रतिपादितेति च्यान्तिमता शतथन्वता चस्तिपता त्यापादितः तञ्च स्थमनत्तप्रसणिरत्नमपद्धतं। तदियमस्यायद्यामना । तदाखीच्य यद्य
सकं तत् क्रियतामिति द्रष्णमाह। ३८८।

तर्जमः।

सतथनाने चक् रकी यह बात मुनकर क्वुल किया। याद उन्हें जीक्षणाने यह बात मुनके पाएउवगण लाहा-मुहके उनलकर मरनाये हैं। दुर्व्योधन जिससे फेर पाएडकी तलास ना करें। इस चिम्रायचे इन्द्रपृद्धसे ब्राह कराने-वासे चने गये। ३०।

त्रीक्षणके इन्द्रप्रस्थे जानेके बाद स्तथनाने मवा-जितको धोते छवे मारवर स्वमन्तक मणिको चोऱाय निया! सत्यभामा बायके मरेजानेके दुःखसे क्षोधातुर डोकर उसी समये रवपर मवार डो इन्द्रमस्यको पर्जं च गरं, चौर बीज्ञण्यम कहा, इमारे बायको तुद्धारे माय इमारे मादि होनेके सबस्से सत्यन्ताने मारहाला, चय साय इस बादमे जो मनासिक हो, हो किसीये। इट।

37. Satadbanvá consented. In the meanwhile, Krisbna with a view to confirming Durjyodhana in his belief that the Pándavas had been burnt to death in the bouse of lac, went to Báranábata in order to perform their funeral obsequies.

38. Taking advantage of his absence, Satadhanya murdered Satrajita while asleep and took possession of Syamantaka. Satyabhama, all grief for the death of her father, immediately went to Baranabata and said to Krisbna, "Satadhanya bas murdered my father and stolen the gem Syamantaka, because he gave away my hand to you; now, I leave it to you to do the needful."

অভ্যাদ।

শতধ্যা অকুরাদির কথার দগতে ইইলেন। পরে জ্রীকৃষ্ণ পাওবেরা জভুগৃহে দগ্ধ ইইবাছেন, এই দখাদ প্রবণে ছর্গ্যোধন যাহাতে ভাঁহাদিগের অবেবণে আর অধিক যহ না করেন, এই অভিপ্রায়ে পাওুনদনদিগের প্রেত-কার্য্য করিবার জক্ত বারণাবতে গদন করিলেন। ৩৭।

প্রীকৃষ্ণ বারণাবতে গমন করিলে পর, শতধবা সন্ত্রাজিতকে মুপ্তাবছাব সংহার করিয়া অমন্তর্কমণি অপহরণ করিলেন। মতাভামা পিতৃষ্বামর্যপূর্ণ ইইনা তৎকণাৎ র্বারোহণে বারণাবতে উপহিত ইইলেন, এবং প্রীকৃষ্ণকে কহিলেন যে, আমার পিতা আপনাকে আমায দান করাতে শতধবা ভাহার প্রাণ বিনাশ করিয়া অমন্তর্ক মণি অপহবণ করিয়াছে। একণে এ বিব্যব আপনার যাহা কর্তব্য হয়, করুন। ৩৮।

मूचम्।

तया चैवसकः परितृष्टान्तः करणोऽपि कृष्णः सत्यभामा-ममप्तास्रवीचनः प्राष्ट्र सत्ये। समीपावचासना नाचभेता तस्य इराक्षनः पष्टियो। नद्यानृब्बद्धाः वरपादपं तत्कृतनीड्।-यिणो विच्छा यथ्यन्ते। ३६।

तद्वमत्यर्थमसुनासत्यरतः श्वेकप्रेरितवाक्यपरिकरेण इत्यक्षा दारवामयेत्य ववदेवमेकान्ते वासुदेवः प्राङ क्रगयाः गतं प्रसेनमटत्या क्रगपतिर्वेद्यानः। सनाजितोऽप्यक्षना यतपन्यना निधनं प्रापितः। तद्भयविनायात् तत्राणिरलः मायाया सामान्यं भविष्यति। ४०।

तर्जमा ।

सत्यभागाको यह बात गुनकर मनधी मनमे बङ्गत सन्तुष्ट घोकर बनावटको सुख खाछे करके सत्यभागाचे योने, हे सत्यो या तुसारे बायका मारना नहि है, बखके प्रभारि बेर्जुरी है। इस कभी ए वे दुराजाका अपमान महना महेंगे। गाहको यहिने च कटनेसे उपके रहनेवाने प्रविकेत प्रदेशी मारना सुमकोत है। ३८।

तुम चव घमने दू छकी वान मन यहाँ। श्रीकृष्ण इस-तरहचे सत्यमामाकी याना करके दरका फेराकर यन रामको एकान्तमे नेजाकर वोले, के ममेन सिहके डायमे वनमे मरागवा, चर ममाजित यत्तपन्याक डायने वध जया। इस बारण उम्हें मरेजानेंचे स्वयन्तक डमारे तुझारे टो चारमोका होगा। इन।

39. Although this intelligence filled Krishna with delight, (the cause whereof will appear in the sequel), he feigned wrath and with blood-shot eyes, said, "O Satye! This proceeding of Satadhanvá has not disgraced your sire but me, and wee unto the wretch for it. Unless you ascend the tree where the bird has taken shelter, you can not kill it."

40. "Pray, fobear to bewail the loss of your father" Thus having soothed Satyabhámá, Vásudeva returned to Dwáraká and taking Baladeva aside, said, "Prasena, as you know, was slain in the forest by a hon, now Satrájita also has been killed by Satadhanvá. These two having died, Syamantaka will be ours."

অন্বাদ।

সত্যভামা এই কথা বলিলে, এক্স মনে মনে অভিশ্য সম্ভেট হইষাও কৃত্রিম ক্রোধভবে চক্ষুর্য লোহিতবর্গ কবিয়া সত্যভামাকে কহিলেন, সত্যো ইহা ত তোমাক পিভার অবমাননা নহে, আমারই অপমান কবা হইষাছে। আমি কদাপি সেই ভ্রাত্মত্বত এই অবমাননা সহ কবিব না। আপ্রয়তককে অপ্রে উল্লভ্যন না কর্মলে তদাপ্রিত পক্ষীকে ক্রনই বিনাশ কবিতে পাবা যাব না। ৩৯।

তুমি আমাব নিকট আব শোকব্যঞ্জকবাক্য প্রযোগ ববিও না। বাহদেব সত্যভানাকে প্রইপ্রকাব সান্ত্নাবাক্য বিলয় ছাবকাব প্রত্যাগমনপূর্বক বলদেবকে নির্জনে ডাকিয়া বলিলেন; দেখুন, প্রসেন ত বননধ্যে সিংহকর্তৃক নিধনপ্রাপ্ত হুইযাকে, প্রধুনা স্ত্রাজিতও শতধ্যাকর্তৃক নিহত হুইয়াকে। অগ্রথম গুই উভব ব্যক্তিব বিনাশ হওয়াতে অমতক আমাদিগেব হুই জনেব হুইবে।৪০।



मृखम्।

तद्विष्ठ चारकाता रयः शतधन्तिधनायीद्यमं नुर इत्यभिष्टतक्षवेति समन्वोप्वितवान्। कृतोद्योगौ च ताद्यभा-द्वपन्य शतधन्या कृतवसाधनुपेत्य पाष्णि पूर्णकर्मानिम्ना-भचोदयत्। चार चैनं कृतवसा नार्थं वनभद्रवास्त्रदेवास्या गष्ठ विरोधायानम् इत्युक्तयाक्रूरमचोदयत्। चार चासाविष निष्ठ कवित् भगवता पाद्यपारपरिकम्मितजगन्नुग्रेण चस्रर-वरवितावेषय्यकारिणा प्रवत्तरिषुचकाप्रतिष्ठतक्रकेण चिक्रणा

तर्जमा।

भाप छिठिये, श्रीर रवपर सनार शोकर प्रतथमांके मारनेकेवासे तैयार छक्षीये। वलदेवने त्रील्यासी यह सात प्रनक्तर कहा, ऐसाडी शोगा। क्रण्यवलराम उन्की लकारकेवासे तैयार छवे है, प्रतथम्बाने यह बात प्रनक्तर कावसाँव मदद शाही, उसने कहा, के इस क्रण्यवलरामये लहाइ न कर सकेंगे। तह प्रतम्बाने सकूरके पास जाकर मदद शाही। सकूर बोवे के जिझने एक लायसे तिनों लोगको कम्यायमान करिद्याया, श्रीर जिनका बदा प्रवस पराक्रम है, श्रीर शहरीको स्वीयोंको जिझने विश्वम कर दिया थे, श्रीर शहरीको स्वीयोंको जिझने विश्वम कर दिया थे, श्रीर शहरीको प्रविवास जानुतनको दलन करने है, ऐसे सक्ष्मपी समयन जीलस्प्रक गाय,

€€.

TRANSLATION.

41. "Do you therefore, Sir, get up, and prepare for slaying Satadhanva" Baladeva replied:—"Be it so." Hearing that Krishna and Balarama were preparing for battle against him, Satadhanva asked the aid of Kritaharma. "I shall not be able to compete with Krishna and Balarama," was the answer of Kritaharma Satadhanva now applied to Akrura. Akrura said, "He who by one kick shook the three worlds, who has brought about the widowhood of the wives of mighty Asuras, who by his discus subdues powerful enemies, is an overmatch

অভুবাদ।

আপনি গাত্রোপান কফন, বথারত হইবা শতধবাতে
বিনাশ কবিবাব জঅ উদেবারী হউন। বলদেব শ্রীক্লফেব
এই কথা শুনিয়া তথাস্ত বলিয়া শীক্তত হইবাছেন, এই
কলাম জাঁহাব বিক্তে সংগ্রামার্থ সক্তিত হইবাছেন, এই
কলা শুনিয়া শতধরা ক্লতবর্মাব নিকট সাহায্য প্রার্থনা
কবিলেন। আমি কৃষ্ণ বলদেবে সহিত সংগ্রাদে
সমর্থ হইব না, ক্লতবর্মা শতধরাকে এই কথা বলিলে শতধরা অক্রুবের নিকট সাহায্য প্রার্থনা কবিলেন। অক্রুব
বলিলেন, যিনি এক পদায়াতে জগজ্ঞ কম্পিত কবিয়াছিলেন, যিনি অতি প্রবল প্রবাজ্ঞ অন্তবগণের বনিতাবর্গের
বৈধরা-সম্পাদন করিয়াছেন, যিনি স্বীয় চক্রে প্রবল রিপুচক্র দলন ববেন, সেই চক্রী ভগরান প্রীক্রকের সহিত

मूचम् !

मद्मुद्तिनयनावलोकितारिवलविज्ञाननेन श्रतिगुरुवैरिवार-णाकपेणाविष्कृतमधिमोरमीरेण सीरिणा च सह सकत जगदन्द्र्यानामसरवराणामवि योहं समय क्रिसुताहम्।

तद्न्यत. भरणमभिखष्यताम्। ४१ ।

इत्युक्त शतधनुराष्ट्र यद्यसत्परिचाणाममय भवानामानः मक्त्राच्छति तद्यममान्मिकः संग्रद्धा रच्यताम्। द्रत्युक सोऽप्याच यदानायामप्यवस्यायां न कसीचिद्गवान् कथियपित

\mathscr{C}

TRANSLATION.

for even the gods, not to speak of weak men like us; and who again can take the field against him whose half shut eyes (through drink)* can disperse adverse hosts by his side-glances, and who has achieved immortal fame by drawing by main force a herd of elephants which had arrayed themselves against him—namely the mighty Haláyudha? You must therefore seek for help in other quarters.

42. Hearing this, Satadhanvá replied, "If you don't think you can assist me, you will, I hope, oblige me so far as to keep this gem with you" "I can comply with your request," said Akrura, "on condition that you engage never to give this fact out—

অহ্বাদ।

এবং যিনি প্রবাপানমূদিত ন্যনকটাকে সকল শক্রাপৈত সংহাব কবিতে পাবেন, অত্যন্ত প্রবন শক্রুকপ দন্তিযুথ আকর্ষণ কবাতে বাঁহান মহিনা প্রচাবিত হইযাছে, সেই ছলামুদ্রেব সহিত মুদ্ধ কবিতে লোকপুজিত দুেবগণও যথন সমর্থ হন না, তথন আমবা কোথায আছি। অতথ্য তুনি অত্য কোন ব্যক্তিব শ্রণাগত হইতে চেকটা বব। ৪১।

শতধ্যা অকুৰের এই কথা শুনিধা বলিলেন, বনি
আপনি আমাকে বফা কবিতে পাবিবেন না, এরপ
বোধ কবেন, তাহা হইলে এই মণিটা গ্রহণ কবিবা
আপনাব নিকট বাগুন। অতুব শতধ্যাব উক্ত বাক্য
শুনিধা কহিলেন, দেখ, যদি ছুমি আপনাব চবম
দশাতেও একথা কাহাবও নিকট প্রকাশ না কর,

F

Baladera is a staunch votary of Bacchus as also Krishna although
in a lesser degree. The former is always 'tottering' and 'recling' 's ide
Horscanza, a chapter of Machbbbarra, and a linglisy interesting and
entertaining paper by Dr Rygodra Lala Mittra in 'No CLYXX. of th
Asanto journal.

मूचम्।

तद्धमेनं यधीयामि । तयेतुरके चकूरसन्मिषरकं जप्राह। ४२।

यत्रधराष्यतुनवेगां यत्योजनवाहिनीं वद्धवामारुह्याय-कान्तः । येव्यमुगीवमेधगुष्पवलाह्याग्वसृष्ट्ययुक्तर्याः वस्यिती यलदेवयासुदेवी तमनुप्रयाती । ४३।

सा प यडवा यतयोजनप्रमाणं मार्गमतीत्व सुनर्पि बाह्यमाना विश्वनादनोद्देशे प्राणातृत्वमर्का। यतधन्द्रि तो परित्यक्य पदातिरेबाद्रयत्। 881

तर्जमा।

तो इस इस मणिको कबुत कर सक्ते हैं। श्रतपानाने यदी मानाका मिल चाक्र दुखे दायाने की, चाक्र देनेभी यह मिल ग्रहण किया। ४५।

सनधनानि चनुरको मिन देकर रोज चार श्री कोश जानेवाले घोदियर छवार कोकर भागा। छन्त्रवज्ञाननि सनधनाके मागनेका काल पुनकर श्रीत्म, सृत्रीय, सेघडप्प चीर क्लाक्क नामे चार घोदाको रहमे छना छवार कोकर सनवनाके विके स्किटेटीदे। हुन्।

सत्रभ्यावे घोडी एवटिनमे बार मी कीम जावर घेर बनमेंगे निविधादेस्ट्रेक करिय जहन्ये गुमकर मनगरी। सत्रभ्या छम्रमा घोडीको कोड्कर पायटम भागा 1881

nay, not even in your death-bed." Satadhanvá,

agreeing to this, Akrnra accepted the gem.

43. Having given the jewel to Akrura, Satadhanvá mounted a mare which could go a hundred jojanas* a day, and departed. On hearing of his escape, Krishna and Balaráma yoked to a car the four horses named Saivya, Sugriva, Meghapushpa and Baláhaka and hastened in pursuit of the fugitive.

44. After having gone a hundred jojanas in one day, the mare of Satadhanvá died of fatigue in a woodland tract close to Mithilá † So he was obliged

to continue his journey on foot.

षञ्दाम ।

তাহা হইলে আমি তোমার বাক্যে দমত হইতে পারি। শতধ্যা তাহাই স্বীকার করিয়া মণিটা অক্রুরকে প্রদান করাতে অক্রুবও গ্রহণ করিলেন। ৪২।

শতধয় অফুরকে মণিরত্ব প্রদান কবিবা দিবদে শত-যোজন বাহিনী, অত্যন্ত বেগশালিনী ঘোটকীতে আরোহণ-পূর্বক তথা হইতে নিজান্ত হইলেন । কৃষ্ণ বলরাম শতধরার পনাবনসনাচাব প্রাপ্তে শৈব্য, স্থাঞীর, মেঘপুপা ও বলাহক নামে অরচতুক্তববোজিত রখে আবোহণ করিয়া শতধরার পশ্চাৎ ধাবমান হইলেন। ৪০।

শতধরার বড়বা এক দিবদের মধ্যে শত যোজন পথ গমন করিয়া পুনরায চালিত হওয়াতে মিথিলাব সমিহিত বনপ্রদেশে প্রাণত্যাগ করিন। শতধরা মৃত বড়বাকে ত্যাগ করিয়া পদব্যক্ষেই গমন করিতে লাগিলেন। ৪৪।

^{*} A particular measure of distance, sometimes regarded as about equal to an European league, (a four or five English miles, but more correctly =4 krods or about mms miles; according to other calculations=3] English miles, and scorning to some=8 krods) (Williams) ends also Min. Bosonier's interesting paper on Endature Ilemanus of Behar, page 211, No. CLXXX, of the Journal of the Anatic Society + The Modern Onde.

मूखम् ।

रुप्पोऽपि वलभद्रमाघ तावद्वैव खन्दने भवता खेयम्। षष्टमेनमधमाचारं पदातिरेव पदातिमनुगम्य वावद् घातः वामि। षाच वि भूभागे हष्टदोपा घवा नैतेऽस्वा भवतेमं भूमिमागसुस्रक्षः नेवाः। ४५।

तवेल्युका वलमहो रय एव तस्वी । क्रच्योऽपि दिकोयमार्च मूमिभागमनुस्त्य द्रस्सस्वेव चक्कं लिह्या स्तप्तपुपः
रिरिचिच्छेद । तच्चरीराज्यरादिषु च वज्जमकारमन्त्रियद्वपि
स्थमनार्क मिर्ण नावाप यदा तदीपगस्य वलभद्रमाच व्यीबाम्साभिः घातित: सत्यमुनं प्राप्तं चिख्तजगत्सारभूतं
तन्त्राविरतः । इत्याकर्षं चहुतकोपो वलदेवो वास्तदेवमाच

तर्जमा।

जीक्षण वलरामचे बोले, आप इस जमक इस रवपर
रिविधे; धम एकेकेको पायदल उस अध्यम-आवार गत-धन्ताको मारकर जाते हैं। धमारे घोड़ोंने इस जगक्ष अभिट देखा है, इस कारल इन घोड़ेंको इस्रांधे आगे नेजाना मनाविक नहि हैं। 841

बलराम इम बातको मानकर उस रवपर वयटे रहें।
श्रीकृष्णने दो कोयचे चन्न केवक र प्रतम्बाका शिर कार्ठ
जाला। चीर उसके कष्यदोमे मिलको तलाम किया,
मगर न प्या। तब बलरामचे चाकर कहा, के इमने
बेफयदा प्रतमन्त्रको मारा। चो मिल तमाम इनियाको दीलतका मूल है, यह न मिलि। बलमझ्
श्रीकृष्णको यह बात प्रनक्ष युक्त क्रोध करके बोले

45. When Krishna came to the spot, he said to Balaráma! "Please stay here, while I go to have the life of this slave. Our horses has come upon this unsightly spectacle here. They should not

therefore go forward."

46. Baladeva accordingly remained in the car. After having proceeded only two miles or more, Krishna sent his discus from a distance and cut off the bead of the fugitive. Next he examined Satadhanva's body and searched his clothes for Syamantaka, but in vain. He refurned to Baladeva and communicated his disappoinment. "We have slain Satadhanva' to no purpose, because that pink of perfection, Syamantaka was not with him." At this Balarama flew into a towering rage—

অভ্ৰাদ ৷

রুষ্ণ বলরামকে কহিলেন, আপনি এই স্থানেই জন্দনে অব্বিতি করন; আনি একাকীই পদত্রক্তে সেই অধনাচার পদাতি শতধ্বার অনুগ্যনসূর্বাক তাহার প্রাণ দাংহার করিয়া আনিতেছি। আনাদিগের অবগণ এই ভূতাগে অনিত ঘটনা দর্শনি করিয়াছে, অতএব ইহানিগকে এ স্থান অতিক্রক করিয়া স্থানাত্তর বইবা বাওরা আপনার উচিত নহে। ৪৫।

বলদেব তাহাতে সন্মত হইণা রথেই অবস্থান করিতে
লাগিলেন। শ্রীকৃষ্ণ ক্রোশব্যমাত গানন করিবাই দুর
হইতেই চক্র নিক্ষেপ করত শতধ্যার শিরশ্ছেদন করিলেন।
পরে তাহার অবস্বজাদি বিশেষরূপে অনুসন্ধান করিরাও
যথন অন্তক্ত মণি প্রাপ্ত না হইলেন, তথন বলদেবের
নিকট আসিয়া বলিলেন, আনরা অকারণ শতধ্যাকে
বিনাশ করিলান, বেহেছু সনতে জগতের সারহত সেই
মণিরত্ব পাইলান না। বলভতে শ্রীহন্ধের এই কথা
শ্রবণ করিবা অত্যন্ত কোপপ্রকাশপূর্বক কহিলেন,

मुषम्।

धिक् तां बक्तमवैलिप्सः । एतम् ते भावत्वानमधिव तर्वं पन्ता स्वेक्त्या गस्यता न मे दारक्या न त्वया न वस्तुभिः कार्यम्। स्वक्तेमिकमाग्रतोऽस्वीकशपवैः। इत्याचिष्य तं तथा प्रचाद्यमानोऽपि न तस्त्री विदेष्णुरीं प्रविवेश । ४६।

जनकराष्ट्रीयूर्वकमेवैनं ग्रष्टं प्रवेगयामासः। स तवैव च तस्यौ। वास्तरेवोऽपि रारकामाजगाम। यावञ्च जनकराजगृष्टे

वर्जमा।

के लप्प! तमको धिवार है, तुम एसे दुनियाके चौमी हो! हमने तुमको भाद सममकर चमा किया; जगर कोई इसरा होता, कभी मेरे हायसे न बाबता। यही विधार सांगे, जिधार चाये घले जायो। हमको सरकाले प्रयोजन नाई, जीर न तुझारे ऐसे भादकी जररत है, और न भादकनुकी हरकार है। तुम वेकयदा क्यं हमारे पाय मुठ यहम खाते हो? वल-देवने इस प्रकार के लखको तिरस्तार करके रासा विधा। कप्पाने बज्जत तरह विनय किया, परन्तु जरा माभीन टहरकर विटेह नगरको घले। हहै।

िरेड नगरका राजा जनक बजरामके पार्वे।को धोकर चपने मकानपर चे गदा, चौर वह वही रहे, चौर कृष्ण हरकामे चौट चावे। बसराम जिस समय जनकरे मकानपर

"O fie! Krishna," exclaimed he, "Your cupidity has struck me dumb. I forgive you in this matter, as you are my brother, but had it been any body else, by Heaven, he would never have raised his head more. The path lies hefore yon, go wherever you like. As for me, I have no further need of Dwáraká, no further need of such a brother as you, no further need of friends and relatives. A truce to your false protestations." After having thus vented his rage, Baladeva left the scene, notwithstanding the reiterated attempts of Krishna to dissuade him; and went to Videha.

47. The king of that place lavished costly presents upon him and conducted him to his polace. Balaráma became domiciled there. Krishna returned to Dwáraká. While Baladeva was staying under the roof

অমুবাদ।

কৃষ্ণ তোমাকে ধিক্! ছুমি এমন অর্থনোভী! আমি তোমাকে আতা বলিযাই এ বিষয়ে কমা করিলাম, অন্য কেহ হইলে কথনই তাহাকে কমা করিতাম না। এই সোজা পথ রহিন্যাছে, তোমার মথাম ইছা চলিয়া যাও, আমাব আর ছারকায় প্রয়োজন নাই! তোমার মত ভাতার প্রয়োজন নাই! বকু বাদ্ধবেও প্রয়োজন নাই! ছুমি আর অকারণ কেন আমার নিকট অলীক শপথ করিতেছ্ বলদেব এই প্রকারে প্রিকৃষ্ণকে তিরকার করিয়া প্রযান করিলেন। কৃষ্ণ বছবিধ অনুন্য করিলেও বলদেব কণকলৈ করিয়া অবান না করিয়া বিদেহনগরীতে গমন করিবেন। ৪৬।

বিদেহ রাজ জনক অর্থ্য প্রদান করিয়া বলদেরকে নিজার্বে লইয়া গেলেন, তিনি সেই থানেই থাকি-লেন। থানিকে কৃষ্ণও ঘারকানগরীতে প্রত্যাগ্যন কবিলেন। বলরামণ বংকাবে জনকের আল্বে

मूचस्।

वलभद्रोऽवतस्ये तावत् धार्त्तराष्ट्रो दुर्व्योधनस्रत्मकायाद्-गदाशिचामशिचत । ४७ ।

वर्षवयानो च वश्त्रप्रसेनप्रश्तिभिश्विदैने तट्रलं कर्णोः नापञ्चतिमित कतावगतिभिविदेशपुरी गत्वा वलदेवः संप्रत्याया दारकामानीतः। ४८०।

चकुरोऽपि उत्तममणियसुद्भृतसुवर्णधानपरः तते यज्ञानीजे। ४८।

चवनगतौ हि चनियवैश्वौ निघुन् ब्रह्महा भवनीत्यतो दीचाकवर्षं प्रविष्ट एव तस्त्री दिपष्टि वर्षाणि । पू॰ ।

तर्जमा।

थे, उस समय धतराष्ट्रका सेड्का दुर्थोधन गर्। ब्रह्म वर्षा शिखता था। ४७।

तिन वरस गुजरे वाद वक्षु और उग्रसेन चादि यादव-लोग विदेषपुरीमे जाकर वलरामसे यक्ष वात सोले, के कष्णाने यक्ष मणि चोरीकर न लिया। दूस तरक्षका विकास देलाकर वलदेवको फेर दरकामे लेचाए। ४००।

चमुर उस मद्यामणिके सोणे पयदा छयेसे बछत् तरहके यागयत्तरे समय काटने लगे। ४६।

यज्ञकती धोनेसे चिचि चौर वैश्वभी चार मारा जाय, तो उसके मारनेकी कत्या मद्धाकत्वाके पापणे समान हैं। मालूम घोता है, के चक्रूर इस उपायके चापनी जान बाचा-नेभेवाको बासट बरसतक दीचाल्प कवचसे चापना बदन कपाय राखा था। पूर।

4.

TRANSLATION.

of king Janaka, Duryodhana, son of Dhritarashtra, learnt from him the principles of mace-warfare.

48. After three years had elapsed, Babhru, Ugrasena and other Jadavas, visited the palaco of the king of Videha and creating in Baladeva the helief that Krishna had not appropriated Syamantaka, prevailed upon him to return to Dwáraká.

49. Furnished with immense gold through Syamantala, Akrúra spent his time in celebrating vari-

ous jajnas.*

50. A man who slays a Kshetriya or a Vais'ya engaged in a jajna, is guilty of killing a Brahmin + It was perhaps this which shielded him for no less than sixty-two years from any hostilo manifestations on the part of Krishna.

অহ্বাদ।

অব্বিতি কবেন, সেই দ্মযেই ধৃতরাষ্ট্রাত্মজ ছর্ব্যোধন ভাঁহার নিকট গদাযুদ্ধ শিক্ষা করেন। ৪৭।

তিন বংশর অতীত হইলে বহু ও উগ্রসেনাদি যাদবগণ বিদেহপুরীতে গমন করত কৃষ্ণ সেই স্যায়ন্তক মণি অপহরণ करवन नोहे, अहेजल विधान जन्माहिया निम्ना वनानवरक श्वन রায় দ্বারকায় আনয়ন করিলেন। ৪৮।

অক্রন্ত সেই মহামণিপ্রসূত হুবর্ণরাশিষারা বিবিধ यक्षापूर्णीन করত কাল্যাপন করিতে লাগিলেন। ৪৯।

যুক্তে ত্রতী ক্ষত্রিয় এবং বৈশ্যের প্রাণ বধ করিলে ত্রন্ধ-হত্যাৰ পাপগ্ৰস্ত হইতে হয়; ৰোধ হয় অফুর এই উপায়ে হত্যার নাল্ড হতে হয় কার্য নাল্ড অবরত দীক্ষারপ আয়ুবকার নিমিতই বিবৃত্তি বংশর কাল অনবরত দীক্ষারপ হ্বচন্বারা আরত থাহিতেন। ৫০।

[·] A general name for certain ceremonies presided over by priests, in which ollations are presented and sometimes sacrifices made, t According to Maxu it e slaying of a Brahmin is one of the five capital ann, manipitalas, (ride the Institutes by Sin W. Joxes.)

मुलम्।

एवं तन्नाणिरत्नप्रभावान् तच उपसर्गेटुर्भिद्यमरकादिकं नामूत्। पुरा

चयाक्रूरपचीयेभॉजे: शबुझे सालतस्य प्रवीचे व्यापा-दिते भोजे: चडाक्रूरो हारकामपडाय चपकान्त: । ५२।

तदपकान्तिदिनादारभ्य तत्रोपसर्गव्यानानाष्टिमस्का-द्युपद्रवा वभूतः। श्रय यादववलभद्रोग्रसेनसम्बेतोऽसन्त्रयत् भगवातुरगारिकेतनः कियदिदमेकदैव प्रवुरोपद्रवागमन-मेतदासोस्यताम्। पृ३।

तर्जमा ।

उपी समय उस मिवके प्रभावसे हरकानगरीने कोई उपद्रव, दुर्भिन्न, मरिका भय न था। पुर।

इस प्रकारसे कुच दिन व्यतीत कोने पर चक्रूरके दीक्त भोजगण नामेने सास्ततके परपोते सबुझको भारकाला ! इस भयसे चक्रूर भोजगणके साय दरका कोदकर भाग गया। पुर।

जिस दिन धक्तूर भागा, उसी दिनसे दरकामे नाना-प्रकारका उपद्रव, सीपका भय, धनाष्टि धीर महामारी होने लगी। उसके बाद बोळक्का, बलराम, उप्रसेन धीर बादबलोग वगवरक एककड़ होकर मला करने सगे। के किस कारण यह सब देवी विश्व होने लगी, द्रवका निचय करना खबख है। १३।

51. During all this time, through the influence of this gem, Dwáraká enjoyed perfect freedom from wars, rebellions, famines, pestilences, &c.

52. Afterwards, the bhojas of Akrúra slew Satrughna, the grandson of Sátvata. Alarmed at

this Akrúra fled from Dwáraká with them.

53. His departure was the signal for the prevalence of snake-bites, droughts, pestilences and other calamities. Krishna, Baladera, Ugrasena and others met together and seriously addressed themselves to the ascertaining of the causes of the miseries which the people were groaning under.

षश्वाम ।

তৎকালে দেই মণির প্রভাবে দারকানগরীতে কোন উপদ্রব, দুর্ভিক্ষ ও মরকাদির ভয় ছিল না। ৫১।

এইরপে কিছু দিন গতে অক্রের পাক ভোলগণ সায়তের প্রপোত্ত শক্রমতে বিনাশ করে। তাহাতে অক্রর ভীত ইইয়া ভোলগণের সহিত দারকা পরিত্যাগপুর্বক প্রায়ন করিলেন। ৫২।

বে দিবদ অক্রর পলায়ন করেন, দেই দিবদ হইতেই
ঘারকাতে নানা উপদর্শ, দর্শাদিভীতি, অনার্থি ও মরকাদির উপদ্রব হইতে লাগিল। তাহার পর ঐহক্ষ, বলদেব ও উএদেন প্রভৃতি যাদবাণ একতে দনবেত হইয়া
মন্ত্রণা করিতে আরম্ভ করিবেন। কি কারণে অক্যাৎ
একেবারে এই সমস্ত দৈববিভ্রনা উপদ্বিত হইতে লাগিল,
তাহা নিমপ্য করা অক্ত করিয়। ৫০।

मस्म।

इ.लुके चन्धकनामा बर्डहः प्राप्त अस्ताक्रूरस्य पिता खफल्को नाम यच यचामून् तच तच दुर्फिन्नमरकानावष्ट्या-दिकं च नामृत्। पुठ।

काशिराजस्य विषयेऽत्यन्तानारस्यां यूकल्कीऽनीयत्। ततसत् क्षणदेव देवो ववषे। काशिराजस्य प्रवास्य गर्मे कन्या पूर्वमासीत्। पूष् ।

चापि पूर्णेऽपि प्रमृतिकाले नैव निस्त्रकाम। एवच तस गर्भस हाद्य वर्षाणानिष्कामतो यद्यः। काशिराजस्त्र ता-मालाजो गर्भसामाच प्रचि। बस्नान जायसे निष्कृम्यताम् चार्स

तर्जमा ।

सबने जब यह बात कही, तब खन्यक नामे एक ब्हुटा श्रदमी यह बंशोरोंनेसे बोला, देख, हमने देखा है, के धनुरका बार प्रकम्क जिल जिस जगह रहा, वहां हमी हमिल, मरी, धौर धनाहिए बगवरहका मय नहिं होता या। पृष्ठ।

एस समय काशिराजके राजमें अत्यन्त अनाष्टि छ होनेसे खफल्कको उस जगह ने गये। उफल्कके राजमें जानेही देनराज इन्द्रने वर्षण प्रारम्भ कर द्या। उस समय काशिराजकी स्त्रीके गर्ममें एक कन्या थी। पृष्टु।

नेड्का पवदा डोनके समयके व्यतीत हो जाने बादमी नेडकी पवदा न ऊर्द। इस प्रकार वार्ष वर्ष व्यतीत छए। तक्सी कव्या पवदा न ऊर्द। एक रोन कारिया गर्भस्य कवासे बोले, हे प्रवि! तुम किश्वासे प्रभिस्त कवासे बोले, हे प्रवि! तुम किश्वासे गर्भस्य कवासे होती, बाहर घाषो, हम तुस्नारे सुख

54. An old Jádava, Andhaka by name, said, "I have remarked that wherever Saphalka, the father of Akrūra, resides, the natural calamities cannot approach

55. "Once the provinces of Kasiraj wero suffering terribly from drought; but no sooner Saphalka entered the kingdom than the Thunderer* began to send down heavy showers A daughter was then

residing in the womb of the royal spouse.

56. Sho was not delivered of her burden even when the proper time had gone by. Twelve weary years passed in this manner. Once the king addressed his embryonic daughter thus: "O daughter, why are you yet delaying to come out? Do, I heseech you, come out. How my soul longs to see your dear face!

অস্বাদ।

সকলে এই কথা বলিলে অফ্ননামক এক জন বছুত্বর কহিলেন, দেখ, আনি দেখিতেছি অফুনেব পিতাখ্যন্ত যে নে খানে অবস্থিতি করেন, সেই সেই খানে কথনই ছর্ভিজ, মবক ও অনার্থ্যি প্রভৃতি উপদ্রব সংঘটিত হয় না। 28।

এক সময়ে কাশিবাজেৰ ৰাজ্যমধ্যে অত্যন্ত অনানৃষ্টি উপস্থিত হওয়াতে খফল্ককে তথায় লইয়া যায়। খফল্ক ৰাজ্যমধ্যে প্ৰবিভ হইৰামাত্ৰ দেববাজ ইল্ল প্ৰচুব বৰ্ধণ আৱম্ভ ক্ষিলেন। তৎকালে কাশিবাজেৰ পত্নীয় গৰ্কে এক ক্ষা অৰম্বান কবিতেছিল। ৫৫।

প্রদান সময় উত্তীর্ণ হাইনেও দেই কতা গর্ভ হাইতে নিঃস্থত হাইল না। এইনপে ছান্দা বর্ষ গত হাইল,তথাপি কন্যা ভূমিঠ হাইল না। একলা কাশিবাজ সেই গ্রন্থ কন্যাকে স্থোধন কবিয়া কহিলেন, প্র্ত্তি! স্থানি কিনিন্ত ভূমিঠ হাইতেছ না। গর্ভ হাইতে নিগ্ত হও, স্থানি তোনার মুখচন্ত্র

· In Ira, the sup-tme god in the Vedic inerarchy, the Hindu Zeus.

मूचम।

ते द्रष्टुमिच्छामि । ख्वाख मातरं किमिति विरं क्वेयविष दृष्टुमिच्छामि । ख्वाख मातरं किमिति विरं क्वेयविष दृष्टुका सा गमेस्वैव व्याजद्वार तात । यद्येकैका गा दिने दिने वास्त्रायेष्ट्यः प्रथच्छिस तदादमनी स्वित्वयं निष्कुमियामीति । रतच तद्वचनमाकच्छे राजा वास्त्राया दिने दिने ना प्रादात् । सांप तावता कालेव लाता । तत्वत्वस्थाः पिता गान्त्निति नाम चकार । ताद गान्ति कन्या युष्वक्कायोपकारिणे ग्रहागतायाध्यम्ता प्रादात् । स्व मान्दिने कन्या युष्वक्कायोपकारिणे ग्रहागतायाध्यम्ता प्रदात् । सा च गान्दिने प्रतिदिनं यावज्ञीव बाह्याणाव गां दलवती । तस्वामयमक्ष्रूरः युष्वक्कात् कन्ने । तस्वैवं स्वर्णिमयुनादृत्वत्ति । पृक्ष्

वरजमा।

Why are you, again, inflicting so much hardship upon your mother " "If you, dear father." replied the daughter, "henceforth daily offer a cow to a Bráhmin, I shall be born only after three years " Kásıráj complied with this After three years had thus passed, the daughter saw the light. Having regard to the unique circumstances that preceded her birth, her father called her Gandini * By way of rewarding Saphalka, the king bestowed Gandini on him She also daily bestowed a cow on a Bráhmin. This lady bore her husband Akrúra. Sprung from such parents, Akrúra should naturally partake of their wonderful virtues.

অভ্যাদ।

দর্শনেব জন্য অতি উৎস্থক হইষাছি। এবং এত দিন ধবিষ। স্বন্ধনীকে কি কাবণে এই গৰ্ভভাব-বহন ক্লেশ দিতেছ ? কাশিবাজ এইপ্রকাব বাক্য বলিলে দেই কন্যা গর্ভ হইতে ৰলিল, পিতঃ। আপনি যদি অন্যাবধি প্ৰতিদিন ভ্ৰাহ্মণদিগকে এক একটী গো দান কবেন, তাহা হইলে আব তিন বংসব পবেই আমি ভূমিষ্ঠ হইব। কাশিবাজ গর্ভস্থ কন্যাব কথাত্ব-দাবে প্রতিদিন ব্রাহ্মণদিগকে এক একটা গো দান করিতে লাগিলেন। এইরূপে তিন বৎসব অতিক্রান্ত হইলে কনা। ভূমিষ্ঠ হইল। দিন দিন গো দান কবাতে কন্যা প্রসূত হইয়াছিল বলিয়া কন্যার নাম গান্দিনী বাখিলেন। যৎকালে শুফলুকের আগমনে বাজ্যমধ্যে অনাত্নষ্টি নিবাবিত হয, সেই সুমুয় তাঁকে গান্দিনী কন্যা সম্প্রদান কবেন। সেই গান্দিনীও প্রতি দিন ব্রাহ্মণদিগকে এক এক গো দান করিতেন। খফল-কের ঔবদে এবং দেই গান্দিনীব শর্ভে অক্রুরেব জন্ম হয়। এই প্রকাব গুণসম্পন্ন দম্পতী হইতে অক্রবৈব জন্ম। ৫৬।

^{*} The word, through the particle 417, alludes to the singular circum stance of the offering of kine

मुखम्।

तत् कवमसिन्नपद्धानोऽच मरकद्वभिचाद्यपद्रवा न भवि-ष्यन्ति । तद्यमानीयतामिति चलमचातिग्रणवत्यपराधान्ते-पर्णेन प्रति । पूछ ।

यदृष्द्रसान्ध्रस्य एतदवनमाकस्य केशवीप्रसेन-सनभद्रस्रोगमेयेद्रिम छतायराधितित्वाभवमभव दत्ता यूग्मव्किः स्वरुरमानीत । तच चागत एव तत्स्रस्यनत्व भणे चनुभावादनाष्टिमरकद्गीचेद्यालासुपृद्व, य्याम । रूप्य चिन्तयामाम स्वस्मेतत् कृष्णं यद्यं गान्दिन्या यूषक्केनाकृरो जनित' समझायायमनाष्टिप्रदुर्भिचसरका-सुप्रमनकारी प्रभाव.। प्र⊏।

वरजमा ।

जब के ऐसे चक्र इरकाके कोड्कर गये, तब व्यं उस जगह मरी, चौर दुर्भित्त महिं होगा। हमारी मलाहमे कक्रूको केर इस जगह बाना मनासिक है। चगर अक्रूरने महा चपराधमी किया है, परन्तु जिसका ऐसा चिक गुण है, उसको चपराध पकडना उचित नहिं। ५७।

कणा उग्रधेन श्रीर बन्देव श्राद् याद्वगण श्रमक की यह बात शुनकर ज्वफन्छ-सुव श्रम्भूका पिछना श्रम् एक स्था कर के समय देवर फेर दरकाने लाए। श्रम्भूकी नगरमे प्रमाय करते हो उस स्थमनाक मणिके प्रभावसे श्रमाव हिए, मरी, दुर्मिस श्रीर सावका भय सब निवारण श्री गया। श्रीकृष्ण श्रम्भूकी यह बढाइ देसकर श्राद्ये हो कि दिन्ता करने भमे, के श्रम्भूर गाहिनोंके गर्भमें प्रमावक की की यदा हुए है, यह बढात योदा कारण है, बनके श्रमाहरू, दुर्मिस श्रीर मरीका दूर होना बढ़न्स भारी है। पूटा

TRANSLATION.

57. "What wonder, then, that natural calamities should hefall the land on which he has turned his hack? My voice is for bringing him hack. Although I grant that he has committed wrong, yet what may not he forgiven to such as he?"

Agreeably to this sage advice, Kes'ava. Ugrasena, Baladeva and other Jadavas, hrought the son of Saphalka over to Dwaraka, condoning his past transgressions. Anon the drought, plague, famino, snake-hites, &c. ceased to rage by virtue of Syamantaka, which was with him. The sudden chango led Krishna to reflect :- "Akrúra's having sprung from the loins of Saphalka and the womb of Gandini," thought he, "is no sufficient reason. To a certainty, this extraordinary phonomenon must owe its origin to a far more potent cause.

জহ্বাদ।

যখন সেই অকুর এই দারকা পরিত্যাগ করিয়া গিয়া-ছেন, তথন কেনই বা এখানে মরক ছর্ভিক্ষাদি না হইবে ? আমার বিবেচনায় অফুরকে পুনরায় এথানে আনয়ন করা কর্ত্তব্য। যদি চ অকুর মহা অপবাধ করিয়াছেন বটে, কিন্ত যাহার এত অধিক গুণ, তাহার অপরাধ ধর্তব্যই নহে। ৫৭।

কেশব, উগ্রসেন, বলদেব প্রভৃতি যাদবগণ যহুরুত্ব অন্ধ-কের এই যুক্তিযুক্ত বাক্য শ্রবণ করিয়া শ্বদল্কস্তত অক্রুরের পূর্ব্বকৃত অপবাধ কমা করিয়া অভয় দিয়া পুনরায় তাঁহাকে হারকায় আন্যন করিলেন। অফুর নগরে প্রবেশ করিবামাত্র ভাঁহার নিকটিবিত অমতকপ্রভাবে অনার্চি, মরক, ছর্ভিক ও সর্পাদির উপদ্রব প্রশ্নিত হইয়া গেল। এইক অকুরের এই অসাধারণ ক্ষমতা দর্শনে বিশ্রিত হইয়া চিতা করিতে লাগিলেন। অকূর গালিনীর গর্ভে এবং খুফল্কের উরুদে छित्रप्रोरहन, देश चिंठ मानाना कांत्रन, विख धरे चनावृष्टि, দুর্ভিক ও মরকাদি নিরাকরণপ্রভাব স্বতান্ত ভক্রতর। ৫৮।

म्सम् ।

तन्त्रनमस्य सकाधे य सहामणि स्वमन्तकाख्यक्तिहित।
तस्य द्वार्वविधा प्रभावा व्यवन्ति। व्यवमित वज्ञादनन्तरं
व्यव्यत् क्रावन्तर तस्त्रात् वज्ञान्तरं यज्ञतीति। व्यव्योगाः
दानद्वास्य । वर्षांत्रव्यम् वासी वरमणिक्तिष्ठतीति क्रताध्यवसावीज्यत् प्रयोजनस्हित्य सक्तव्याद्वसभाजमालगेषे
प्रयाचीकरत्। तच चोषविधेषुक्तिषु याद्वेषु पूर्वप्रयोजन
सुपन्यस्य पर्याविकते च तस्तिन् प्रमञ्जानतपरिहासकयामक्त्रेण यह क्रवा जनाहेनसमक्त्रमाह। ५८।

बर्जमा।

षमको नियय मानुम घोता है, के श्रमूरके पास वह स्वमन्तक मधारत है। धमने मुना है, खनके प्रभावसे यह यव उपहुत भान्त घोता है। श्रमूर एक वस्तके बाद उसरा वस्तु, तिसरा वस्तु, इसितर घ घमेग करता रहता है। इसकी दौनतभी ऐ की निर्ह है, जिसके हारा एतने वस्तु हो सके। इसके वही नियय मानुम घोता है, वह स्वमन्तक माण इसीके पास है। त्रीठण्याने मनधी मनसे यह नियय करके एकदिन अपने मकानपर एक बाम ठडराकर सब वादवगणको एकघ किया, श्रीर उस बामके श्रासर हो जानेक बाद त्रीठण्या श्रमूरके गान तरह तरहकी दिल लागि करके वोते। पूर्व।

TRANSPATION

50 "It is odds he has got the magical Syaman taka with him I have heard people attribute wonderful properties to the gem, whereby natural cala mities can be removed What, agam, enabled Akrura to celebrate jajuas* without number, if he were not furnished with heaps of gold by Syaman taka? Having come to this conclusion, Krishna brought together the whole body of the Jádavas on some occasion. The avowed purpose of the meeting having been accomplished, Krishna began to talk with Akrura in a light vein. The conversation having been brought to the intended pass, the former said.

षञ्दाम।

আমান নিশ্চম বাধ হইতেছে অকুনেব নিকট সেই

ন্যান্তক মহারহ আছে, আনি গুনিবাছি তাহাবই প্রভাবে

এই দক্ল উপত্রব প্রশানিত হয়। অকুন এক যজেব পর

অপন যজ, তাহাব পর অন্য যজ, এইরপে অনববতই

যজামুষ্ঠান করে, ইহাব বিভব ত এত অবিক নছে, যাহা

ছাবা এতাধিক যজ সম্পন্ন হয়। ইহা ছাবাও নিশ্চম বোধ

হইতেছে বে, সেই ন্যানতক ইহাবই নিকট আছে। এইক মনে মনে এইরপ নিশ্চম কবিয়া কোন অন্য একটা উপশক্ষে নিজালত্রে সমুবায় বাদবদে সমবেত কবিলেন। বাদবাণ উপবিভ হইলে সে উপলম্পে তাহানিশকে আহ্বান ক্রা

হইয়াছিল, তাহা শেষ হইলে এইক প্রসদ্জনেম অকুরের

সাহত নানাপ্রকাব পবিহাস কবিয়া ভাঁহাকে বিলিনে। ১৯।

मूखम्।

दानपते । जानीस एव वयं यया शतधन्वना अखिल-जगत्मारभृतं खमन्तकरत्नं भवतः सकाशे समर्पितं । तदैत-द्राष्ट्रीपकारक भवत सकारी तिष्ठतीति तिष्ठत मर्वे एव वयं तत्प्रभावफलभुजः किन्तेष वलभद्रोऽसानागङ्कितवान्। तद्सात्पीतये दर्शय इत्वभिक्तः सरतः सीऽचिनायत्। किमचातुष्ठेयम्। चन्यवा चेत् व्रवीस्य हं तत्केवलास्वर-तिरोधानमन्त्रियन्ती रत्नमेते द्रस्यनीति चतीऽन्वेषणं न चेममिति सचिन्ता तमखिलजगकारणमृतं नारायणंगाचा क्षरः भगवन्। ममैतत् स्थमन्तरमणिरल' श्तधतुपा मगरितम्। ६०।

तर्जमा । है दानपते ! यतधन्वाने को बापके पास सब जगत्का सार स्थमन्तक मणि रक्छा था, मो इस जानते हैं, वह मणिरत राजका बज्जत् उपकारी है, पागर वह चापके पास है, रहे, हम सबही उनका फलभोग करते हैं, मगर यलदेव धमारे ही पर धमेगा मन्दे ह करते हैं। दूसीवासी हमारे सन्तोपके निये वह मणि एकवार देखना दी। भी छप्पाकी यह बात गुनवर चकुर मनदी मनमे विन्ती करने लगे, के मिल तो हमादे पासू ही है, दूस समय केवा कहें। चगर भूठ कहें, तो यह पता लगाकर हमारे कावहीं भे-से नैवाल मेंगे, चौर सव देखेंगे। यह चगर तलाम करें, तो प्रमारा चाच्छान दोगा। चक्र रने यह मय बात विचार कर सकत जगतक कारणसङ्घ नारायणचे वीले, भगवन्! प्रतथन्त्राने प्रमको स्वमन्तक मणि दि शी। हैं।

TRANSLATION

60 "O Lord of Danavas," that Satadhanva has kept with you the meomparable Syamantaka is well-known to us That gem is a blessing to the land, and we don't grudge you the possession of it enough that it is with one of us But Baladeva suspects me of having appropriated it—in order to disvibuse him of this false notion, please show it me once before this assembly "In this dilemma, Akrūra thought, "The gem is with me now, what shall I say? If I deny, they will search my body, and will surely find it out Nor will this be a happy circumstance for me O Lord," he then said to the Great Cause of this Universe, "Sata dhanva did lodge the jewel with me

षञ्चाम ।

सान्तराज। भज्यस्य त्यं, व्यानमाव निक्के त्यहे अमल क्षण्याव मावक्ष्य त्यामक्ष्य स्थाप्य विषयाहित्यम्, जादा व्यामक्ष्य स्थितः व्याप्य स्थाप्य व्याप्य याप्य प्रमाना निक्के व्याप्य साम्य व्याप्य याप्य प्रमाना निक्के व्याप्य स्थाप्य व्याप्य व

[.] If p in 'Titans who warred on the Suras (rola)

मूचम्।

अपगते च तस्मिन् खद्य क्षः पराबो वा भगवान् मा याचियतीति छतमतिरतिकक्कुष्वेतावनां कालमधारयम् अस्य च धारणक्षोरेनाषमभेषोपभोगेषुचित्तमानगो न वेदिः सराबकलामि। १९।

एतावन्माचनशेपराष्ट्रीपकारि धार्यातुं न शक्तीतीति मा भगवान् मस्यत इत्यात्मना न चोहितम्। ६२।

निद्दं स्थमन्तवरत्न युद्धताम् इच्ह्या यस्याभिमत तस्य ममध्यताम्। ततः श्रीऽधरवस्त्रनिगोपितातित्रघु कण्क-समुद्रक प्रकटीकृतवान् । ६३ ।

तर्जमा ।

यतधन्वाके भरने बाद् भाज, या काल, या परणी जक्र भाग कमसेयह मिल माझते, यक विचार करजी मैने बज्जत् कप्टमे एतने दिन रत्ता किया। इसके रखनेगे कमको बडा क्षा प्रज्ञा है। मैं मब उपमोगसे बिह्नत घोकर सब सुख छोड़ दिया। हुए।

पार्थं चाप मनने कड़े में के सकूर चयोग्य है, के ससु-दाय राजका चग्नेप सद्भज करनेवाली मणिको रख न मका। इस सबसे एतने दिनतक मैंने चापके विनामार्गे दियानही। ६५।

इम समय आप यह स्वयन्तक मिंब सुत्ते लेकर जिसकी मनासिक हो, उसकी दिजीए । शक्रूरने कृत्याके वह सात कडकर श्राने कापटे से एक कोटीकी सोनेकी डिविया बाहर नेकाली। हुई।

TRANSLATION.

61. "I have kept it in my possession so long, in the hope of bestowing it on you after the death of Satadhanvá. Alas! sir, it has been a thorn in my side.

62. "I did not give it to you so long, lest you should think me incapable of bearing about a gem of such mighty virtues.

63. "Now accept it, sir, and hestow it on whomsoover you please." Having delivered himself thus, Akrára took out a small golden box from his dress.

অহ্বাদ।

শতগ্যার মৃত্যুর পর আজ হউক, কাল হউক, বা পরশই হউক, অবগ্যই আপুনি এক দিন আমার নিকট চাহিবেন, এই ভাবিয়া আমি অভি কটে এতকাল ইহা রক্ষা কবিয়াছিলান, ইহার ধারণে আমার এত রেশ হই-য়াছে যে, আনি সমুদায় উপভোগে বকিত হইযা কাল-যাপন করিতেছি, হবের লেশায়েও অত্তব কবিতে পারি নাই ১৬১।

পাছে আপনি মনে করেন, অফুর এমনই অফন বে, সমুদায় বাজ্যেব অশেষ উপকারক মণিরত্বও ধারণ কবিতে পারিল না, এই জয়ে এতদিন আমি বয়ং উপযাচক হইয়া আপনাকে ইহা সমর্পণ করি নাই। ৬২।

এমণে দেই ফনন্তক রত্র গ্রহণ করিয়া খাঁহাকে অভিন্ত হয়, ডাহাকেই দনর্পণ করুন। অজুর র্ফাকে এই কথা ব্রিয়া নিজ পরিধেয় বস্ত্রনধ্য হইতে একটা তুন্ত হ্বর্ণ কোটা বাহির করিলেন। ৬০।

मुखम्।

ततय निष्कृास्य स्त्रमन्तकमार्थं तत्र यदुनमान्ने सुमोच । मुक्तमाचे च तेनातिकान्ताा तदखिलमास्यानसुद्गोतितम् (६४।

श्रवाशकरूर स एप मिषवै: यतधन्यनासाकं समर्पितः वस्त्रायं स एनं रक्कात्विति । तन्त्रशिरक्रमालोक्य वर्षे-याद्वाना माधु साध्विति विक्षितमनसा वाचोऽत्र्यनाः । तमालोक्य ममायमच्युनैनैव सामान्यः समन्त्रीप्षितः इति वसम्ब्रः सस्पृषोऽभवत् । ६५ ।

तर्जमा ।

उनके बाद चक्रूने उस मोनेकी डिबियाधे वह स्यम-नाक मणि नेकाल कर उपस्पित याद्वगणको देखडाया। वाषर नेकलतेशी उपके द्रमक चमक्ते तामाम सभामग्डल प्रकाशमान भी गया। ६८।

बाद उनके चक्त् बोने, के शतअव्यान धनारे पास जो मणि रक्षी भी, वह मणि यही है। यह जिनकी चिक्र हो, वह लेवे। यादनगण उन मणिके दर्शन करते ही बज्जत चायर्थिय चारी तरक्षे बाहबाका ग्रन्थ उद्घारण करने नगे, वलदेव देखकर उन् मणिकेशको बज्जत चानक-चिन्न छोसर मनही मनसे कहते चगे, के लक्ष्णने पश्चित हो कहा है, के वह मणिरक्र हम दोनो चादमीकी होगी। द्रें।

TRANSLATION.

64. And laid Syamantaka before the assembled Jádavas. The gem sent a gleam far into the bosom of the apartment.

65. "Listen, princes," said Akrúra, "this is the gem which Satadhanvá lodged with me. Let him who is its rightful owner claim it." The Júdavas were struck with surprise at the sight, and were lavish in their praises. Baladova secretly pined for possessing it, and thought within himself, "Krishna promised formerly that this gem should be our common property."

অমূব্দে।

পরে অকুর সেই কোটা হইতে গুনন্তক বাহির কবিয়া উপস্থিত যাদবগণকে প্রদর্শন করিলেন। বাহিব করিবামাত্র তাহাব প্রভায় সমুদায় সভামণ্ডপ আলোকিত হইয়া উঠিল। ৩৪।

অনন্তর অকুর হাছিলেন, শতধ্যা আমার নিকট যে মণি রানিয়াছিলেন, সেই মণি এই; ইহা যাঁহার বস্তু, তিনি এহণ করন। যাদবগণ সেই মণি দর্শনিমাত্র অন্তন্ত বিশ্বরের সহিত চতুর্দ্ধিক হইতে সাধ্বাদ প্রদান করিতে লাগিলেন। বলদেন দেখিয়া তাহার প্রতি অন্তান্ত আসক্তচিত হইয়া মনে মনে কহিতে লাগিলেন, শ্রীকৃষ্ণ পূর্কের অস্পানর করিয়াছেন যে, এই মণিরত্র আনাদিগেন উভয়ের সম্পতি হইবে। ৩৫। स्चम् ।

ममैवेद पित्रधनमित्यतीव च चत्यभामापि स्पृष्ट्या-खकार। वलसत्वाननावजोक्षनात् क्षच्योऽप्यात्मानं चका-नारावस्थितमिव मेने। ६६।

सक्तवाद्वसमचच्चाकूरमाङ एतद्वि मणिरतमाल-शोधनायेषां यद्भा दश्चितम्। एतञ्च मम वलभद्रस्य च सामान्यं पित्रधनञ्चेतत् सत्यभामाया नान्यस्य। ६०।

एतञ्च सर्वेकावं मुचिना बच्चाचर्वमुणवता ध्रियमाण-मभेपराष्ट्रस्रोपकारकम् समुचिना ध्रियमाणमाधारमेव धन्ता। ६८ ।

तर्जमा ।

सत्यभागा मनने कहने लगी, के यह इसारे वापकी विज है, यह इसकोड़ी मिलना चाहिये। हाला वलदिन चीर नत्यभामाके सुखका मान देखकर मकुएकी तरफ हो गये। हह।

वाद उपके श्रीकृष्ण मसुदाय याद्यगणके सामने बोले के देख, मैंने केवल अपूने कलक्र के दूर कार्यकेवाले सवकी यह मणिरल देखलाया। पश्चिन मेंने कहुन किया था, के यह मणिरल मखदेवकी और हमारे सामने की विश्व होगी, लेकिन यह सल्यमामाके वापके धन है, इस कारण सल्यमामाकोकी मिलना छित्त है, इसरेको लोम करणा मनास्ति नहीं। ३७।

यह मिल पविच चीर बद्धावर्धे बती होकर धारण करणेथे राजका मद्भव करणेयाचा है, लेकिन चपविच भदमीके धारण करणेसे उसका नाम करणेवाला है। ६००।

TRANSLATION.

66. Satyabbámá thought that since Syamantaka was the property of her father, it should now he hers. Seeing the countenances of Baladeva and Satvabhámá, Krishna became emharrassed.

67. Then addressing Akrúra, ho said. must know, Sir, that I bave shown this gem, only to remove the stain which had attached itself to my reputation. Formerly I promised that it should be the joint property of Baladeva and myself. But, it is Satyabhama's paternal possession, and now ought to he hers. None else should covet it.

68. "When a man who is clean and who is engaged in Brahmacharjya,* wears it, it conduces to his good; hut it is destructive to an unclean person.

অভ্বাদ।

সত্যভাষা মনে করিতে লাগিলেন ইহা যথন আমার পিতৃসম্পত্তি, তথন আনারই হওয়া উচিত। কৃষ্ণ বলদেব ও স্ত্যভাষার মুখভঙ্গি দর্শনে আপনাকে: চক্রান্তপতিত বাক্তির স্থায় বিবেচনা করিতে লাগিলেন। ৬৬।

পরে শ্রীকৃষ্ণ সমূদায় যাদবের সমক্ষে অক্রুরকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন, দেখুন, আমি কেবল নিজ কলঙ্কাপ-নোদনের জন্মই এই মণিরত্ব সকলকে দেখাইলাম। পূর্বের আমি স্বীকার করিয়াছিলাম যে, এই মণিরত্ন বলদেব ও আমার সাধারণ সম্পত্তি হইবে, কিন্তু ইহা সত্যভামার পিতৃধন, অতএব সত্যভাসারই হওয়া উচিত; অন্সের ইহাতে লোভ করা বিধেয় নয়। ৬৭।

এই মণি পবিত্র ও ভ্রম্মচর্য্যভ্রতী হইয়া ধারণ করিলেই রাজ্যের মঙ্গল-জনক হয়, কিন্তু অপবিত্র ব্যক্তিকর্তৃক ধৃত হইলেই তাহার মৃত্যুর কারণ হইবে। ৬৮।

The condition of a young Brahmin or student in the first period of his life, involving much rigorous prayer and fasting Vide The Commentaries.

म्चम् ।

चत' चर्ड'चस्य गोदशस्त्रीमश्रस्तपरिग्रहात् सममर्थी थारखे। हट।

कथक्षेतत् सत्यभामा स्वीकरोत् । चार्येष वलभद्रेणापि
मिद्रापानाद्यमेपोपभोनपित्त्यायः कथं कार्यः। तद्यं
यदलोकोऽयं वलभद्रोऽष्टं सत्या च त्या दानपते प्रार्थवामः
एतद्ववानेव धारिवतुं समयः। त्वत्स्वसस्य राष्ट्रस्तोपकारकं
तद्ववानमेपराध्रोपकारनिमित्तमेतत् पूर्ववत् धारयतु।
लयान्यया न वक्षत्यमित्युके दानपितः तथेत्युक्ष्वां जमाच।

तर्जमा ।

दूप चालतमे किस तर्डसे उसके धारण करणेके में थीग्य ऊं। केसेवासे के मेरी पोल चालार स्त्री है। हुट।

चल्यभामाभी इच्छो किए नर्रुच धारण करेगी। वर्ष भेया इन मणिकेशको नक्काच्यांनन धारण करेगी। चीर बलदेनभी इस मणि धारण करणेकेशको सुरापान चाहि सब भोगको ल्याग करणेको गामय होगे? हे दाता चक्रा चौर किसीको देनेको में नजविज नहिं कर्ता। यही यादवगण, बलदेन, सल्यभामा चौर में सबचोग कहते हैं, के चाप स्वराजक मजलवेशको चह स्थाननक माण धारण करें। यह चापके पास इहने से राजका मज़ल होगा। इस कारण चाप धारण करें। इस्के सेबाय चौर दुसरी बात खेयात न करें। जीकण्यको यह बात सुन-कर चक्र्य बोत बज्ज चाल्या। इसारेही पास रहे, यह कहेकर वह सचि चाप उन्नाने से लिखा।

TRANSLATION.

69. "How then can'I wear it, considering that I have no less than sixteen thousand queens?

70. "How again can Satyabhámá use it? Shall she engage in Brahmacharjya for the sake of the jewel? Shall the respected Baladeva renounce the convival cup and other pleasures in order that he could grace his person with Syamantaka? O Lord of Dánavas, no use of my endeavours. Here are these Jádavas, here is Baladeva, here is Satyabhámá, and here am I. We all beseech you, do you wear the gem for the good of this kingdom. "Pray, do not disregard this advice." "Be it so"

অস্বাদ।

একপ অবস্থায় আমি কিরূপে ইহা ধারণ করিতে দক্ষম হুই ? যেহেতু আমাব ৰোড়শসহত্র মহিবী। ৬৯।

गज्जजामारे ना कि क्षकार है हा धाव पहिरुचन ? जिनि कि भिन्न क्ष्मरासं उद्यक्षणं-उज्जावनयन कि तिरान ? अदर व्याधा तनएमव कि अहे भिन् धावान जिल्लाम इवाभानानि ममछ जेभाजा भित्रजांग कि विज्ञान के विज्ञान के

सूधम्।

तन्त्रज्ञामणिरस्रं ततः प्रमृति चाक्रूरः प्रकटेनैवातीय तेजसा जाज्यव्यमानेनाक्रकष्टांसक्वेनादित्य द्रवाग्रुमाची चचार।७०।

इत्येता भगवतो निष्याभिश्वित्त्वालनां यः स्वरति न तस्य कदाचिदस्यापि निष्याभिश्वितभवति च्रव्याक्षतेन्द्रिय-स्वाबिलपापमोद्यमवाप्नोति। ७१।

इति सामन्तकोषास्थानम्।

तर्जमा।

उसीदिनसे प्रकूर यह महारक्ष मृति चपने गलेसे पश्रकर प्रत्यन्त तेजः पुत्रः कलेवर दुस्रे सूर्यके समान किरने चर्गे। ७०।

को धरमी भगवान त्रीक्ष्यका यह भुट कलडू दूर होनेकी कथा भुनेगा, घयवा मनमे लादेगा, कभी घोडाभी कलडू उस्की न कुये गा, घीर उस्की सब दुन्द्रियभी ठिक रहेगी, घीर सेममे यह घरमी सब पामसे सुक्त होकर वैकुल्ड वास करेगा। ७१।

स्यमनाकका वयान सालेर ।

TRANSLATION.

said Akrúra, who continued to wear Synmantaka, and ranged Dwáraká like a second sun."

71. When a man remembers the false accusation of Krishna mentioned above, he can bear with equanimity lesser false charges against bim, and is finally absolved from all sin.

End of the History of Syamantaka

षञ्चाम ।

শেই অবধি অঞ্রুর দেই মহারত্ন নিজকঠে ধারণ করিয়া অত্যন্ত তেজঃপুঞ্জকলেবব দ্বিতীয় সূর্য্যের ন্যাঘ বিচরণ করিতে লাগিলেন। ৭০।

যে ব্যক্তি ভগৰান ঐক্তিকের এই নিধ্যা কলফাপনোদনহতাত পারণ করে, কথনই তাহাকে সানাত নিধ্যাপবাদ
স্পর্শন্ত করিতে সমর্থ হয় না, তাহার ইন্দ্রিয সম্পায়
অবিহৃত থাকে এবং পরিশেষে সে ব্যক্তি সমুবায পাপ
হইতে নিম্নতি লাভ করে। ৭১।

ইতি জনগ্ৰহোগাখ্যান।

नवरत्नानि ।

मूचम् ।

वज्रमाणिकावेद्रयं सुकागोमेद्विहुमं। मरकतं पुष्परागञ्ज नीलक्षेति यंघाकमं।

तर्जमा ।

द्दीरा, माणिक, सर्वानार, मीति, ग्रोमेरक, मुङ्का, पाद्वा, ग्रीखराज, चौर नीलम् वा नीला यद्दी नी मकारका रहके नवरहा कदते है।

TRANSLATION.

The Diamond, Ruby, Catseye, Pearl, Zircon, Ceral, Emerald, Topaz and Sapphire are called the nine precious gems.

षश्वार ।

হীরক, মাণিকা, বৈদুর্য্য অর্থাৎ লগুনিয়া, মূক্তা, গোনেদ, বিক্রম অর্থাৎ প্রবান, নরকত অর্থাৎ পানা, পুপ্ররাণ অর্থাৎ পুথ্রাত্ব এবং ইক্রমীল অর্থাৎ নীলম্ এই নয় প্রকার রয় নবরস্বাধ্যে পরিগণিত। ৭২।

A STATE OF

GENERAL REMARKS.

HE taste for gems and precious stones can be traced to the most remote ages, and though it is now a hopeless task to point out the country where they were first discovered, or the nations by whom they were first worn, there are many circumstances which materially help us in concluding that India was their birth-place. For every luxury and comfort that man enjoys, for everything rare and beautiful in nature, for every delight that charms his senses and gratifies his vanity, for perfection in plants, flowers, perfumes, animals, birds, insects. music,* gems, pearls, &c., we are indehted to the East.

Mention is made of gems and jewels in the earliest writings of the Hindus. The Vedas speak of a place illuminated by rubies and diamonds which gave out a light as refulgent as that of the planets. Precious stones play a prominent part in the mythologics of the Hindus; in their traditions, poems and legends. In the two great epics of Hindustan, tho Ramayana and the Mahabharata, frequent

r. J Frms.

[•] The country which affords us the most ancient memorials of a perfect language of an advanced civilization, of a philosophy where all directions of human thought find their expression, of a posty instead of the perfect language of a munical art corresponding with the lively semidably of the people—Holds appears to have given brittle to bow increments, and to large made them known to other parts of Asia, and afterwards to Europe—F.J. FITIS.
There is nothing In the West which has not come from the East—There is nothing In the West which has not come from the East—

mention is made of stones and pearls with which the Lings and the people of the period used to decorate their persons Amongst the other anc ent nations of the East, the Persians had a great taste for gems The Phænicians are known to have hought from the East precious stones and jewels to Egypt and Greece The Egyptians are noted to have been very fond of them The belles of ancient Egypt used to adorn their brows with dia dems of Pearls and their throats with necklaces of four rows of precious stones The fingers of the men were loaded with rings Tive or six cen turies before Christ the Grecian Lings and rulers of the neighbouring countries used ornamental and signet rings made with cut stones Onomacritus a priest and founder of Hellonie mysteries, is said to have treated of precious stones and their super natural powers (500 B C) Heredotus mentions, (besides the Emerald in Polycrates ring) signet rings such as that of Darius and also speaks of the so called Emerald column in the temple of Hereules in Tyre, which emitted a splendid light at night Plato makes mention of the Sard Jasper and Emerald Aristotle had a better knowledge of stones than those authors that preceded him His scholar Theophrastus has left a work on the suh jeet Alexauder the Great had his breast plate set with stones and his mantle embroidered with gold and gems When the Romans conquered Egypt and Greece, they took away, as the spoils of their successful invasions, all the luxuries of the subjugated countries, and thus imbibed, among others. a taste for gems and stones Cæsar and Cleopatra are said to have met in a hall of tortoise-shell. studded with Emeralds and Topaz Caligula adorned his horso with a collar of Pearls; the shoes of Heliogabalus were studded with gems, and the statues of the gods had eyes of precious stones,-a custom borrowed evideatly from the East. Even now, the horses of the Oriental Princes are brought out, on festive processions, studded all over with Pearls and other gems In the time of the Ptolemies, jowels were used in profusion for ornamenting nrms, drinking cups, and even the altars of the gods, and were also set in the frames in which the sacred pictures were put. Constantine is said to have entered Romo in a chariot of gold, adorated with dazzling gems, and in his time the Royal Crown was first set about with precious stones custom still prevails throughout the civilized world. Pliny and Strabo make prominent mention of gems and jewels in their works. The Bible gives descriptions of various kinds of stones known to the Hebrews. The twelve stones which were in the breast-plate of the High Priest were-the Sard, the Topaz, the Carbuncle (or Ruby), the Emerald, the Sapphire, the Diamond, the Ligure, the Agate. the Amethyst, the Beryl, the Onyx and the Jasper. The twelvo Apostles were also represented by gems, called the Apostle stones :--

- 1 —The hard and solid Jasper, representing the reck of the Church, was the emblem of
- Peter

 2 —The hright blue Sapphire was emblematic of
 the heavenly faith of Andrew
- 3 -Tho Emerald, of the pure and gentle John
- 4 -The white Chalcedony, of the loving James
- 5 -The friendly Sandonyx, of Philip
- 6 —The red Cornelian, of the martyr, Bartholomew
- 7 —The Chrysolite, pure as sunlight, of Mathias 8 —The indefinite Beryl, of the doubting Thomas
- 9 —The Topaz, of the delicate James the younger
- 10 -The Chrysophrase, of the serene and trustful
 Thaddens
- 11 -The Amethyst, of Mathew the Apostle
- 12.—The! pink Myacinth of the sweet-tempered Simeon, of Cana

Sidorus, the Bishop of Seville, is said to have written a work on stones (630 A C). The number of properties attributed to precious stones at this time was wonderful, they were said to have the power of conferring health, wealth, beauty, honor, good fortune, and influence. Men and women used to carry them about their persons and called them amulets. These were also thought to have some connection with the stars and seasons. A particular stone was supposed to be sacred to each month. The following are what were known as the Zediac stones.—

January

Jacinth (Hyacinth), or Garnet.

Amethyst. February

Bloodstone, or Jasper. March Sapphiro.

April Agate.

May Emerald June

Oavx. July

... Cornelian. August Chrysolite.

Scotember Aquamarine, or Beryl. October

Topaz. November ·Rnbv.

December

Supernatural influences have been attributed to particular stones, which are still believed in by the superstitious. The Ruby is known to be a sovereign remedy for pestilence and poison; it also drives away evil spirits and bad dreams. Incinth, if worn on the finger, procures sleep, and brings riches, honor, and wisdom. The Amethyst dispels drunkenness and sharpens the wit. The Balas Ruhy restrains passion and fiery wrath, and is a preservative from lightning. The Emerald discovers falso witnesses by suffering alteration when it comes in contact with such persons; the Sapphiro procures royal favor, and frees men from enchantment. The Chrysolito was said to cool hoiling water, and soften wrath, and if placed in contact with poison, it lost its hrilliancy until re-Opinions, of course, differ as to these moved. attributes, according to the fancy of the writers. The superstitions attrched to these stones were not confined to the ancients only. The Empress Eugenie of France, it is said, would not wear a precious Opal, because it was known to have brought ill luck to the wearer. But our Most Gracious Majesty the Queen Victoria, Empress of India, having no superstition on the point, has presented each of her daughters, on their marriage, with a parure of Opals and Diamonds.

It has now become a fashion to have finger rings set with certain stones, so arranged that the initials of their names would give a desired name. The following alphabetical list of precious and half precious stones will be of great use in form ing the names.—

	Transparent	Opaque
Λ	Ametl 7st	Agate
В	Beryl	Basalt
C	Ci rysobery i	Cacholong
D	 Diamond 	Diaspore
\mathbf{E}	E merald	Egyptian pebble
\mathbf{F}	Felspar	Fire stone
G	Carnet	Granite
\mathbf{H}	Hyacıntlı	Heliotrope
1	Idocrase	•
J		Jasper
k	Lyanste	Krok dolite
L	Lynx Suppline	Lapis-Lazuli
М	Milk Opal _	Malachite
N	- Natrolite	Nephrite.
0	Opal	Onyx

	Transparent.	Opaque.
P	. Pyrope	. Porphyry
Q	Quartz .	Quartz Agate
\mathbf{R}	Ruby	Rose Quartz.
S	Sapphire	Sardonyx.
\mathbf{T}	. Topaz	. Turquoise.
U	Uranite	Ultra-marine
V	Visuvianite	Verd-antique.
W	Water-Sapphire	Wood-Opal
X	Xanthite	Xylotile
Y		•
Z	. Zircon	Zurlite

Thus, the name "Charles" may be represented by Chrysoberyl, Hyacinth, Amethyst, Ruby, Lapis-Lazuli, Emerald and Sapphire. The Prince of Wales, on his marriage with the Princess Alexandra, gave her a ring which represented his own name "Bertie," It was set with stones in tho following order-Beryl, Emerald, Ruby, Turquoisc, Jacinth and Emerald

The following account of precious stones, as supposed to be found on roptiles and animals, is taken from "All the Year Round" of the 1st June, 1878:---

"Among the Arabians, serpents were supposed to nossess precious stones of inestimable virtue. This belief was current through many ages Mathew Paris relates the story of a miserly Venetian, named Vitalis, who was rescued from a terrible death-having fallen" into a pit in which were a lion and a serpent-by a wood-cutter, to whom ho promised half his property for this deliverance The hon and the serpent, who take advantage of the ladder hy which Vitalis is brought to the surface, also testify their gratitude to the woodcutter, by crouching at his feet While the poor man is having his humble repast in his little hut, the lion enters with a dead goat as a present serpent also enters, bringing in his mouth a precious stone, which he lays in the country mans He next goes to Venice, and finds Vitalis in his palace, feasting with his neighbours in joy for his deliverance On being reminded of his promise, the rich man donies having seen the wood cutter, and orders his servants to cast him into prison, but before this could be effected, the rustic escapes and tells his story to the judges of the city At first they are incredulous, but on showing the jewel, and proving further the truth, hy conducting them to the dens of the hon and the serpent, where the animals ngain fawn on their henefactor, Vitalis is compelled to perform his promise This story, adds Mathew Paris, was told by King Richard, to expose the conduct of ungrateful men "In Timberlake & discourse of the Travels of two

In Almoratac's discourso of the Travels of two English Pilgrins to Jerusalem, Gaza, &c, (1611), we find an account of a great jewel which was taken from a serpent's head, and used in conjuring In Alphonso's Clericalls Disciplina, a serpent is mentioned with eyes of real Jacinth. In the romantic history of Alexander, he is said to have

found serpents in the Vale of Jordan with collars of huge Emeralds growing on their backs Milton gives his screent eyes of Carbnnele. A marvellons stone was said to be found in the serpent's brain, but in order to secure its lustre and potent influences, it was to be extracted from the living natural.

"The Draconius, described by Albertus Magnus as of a black-color and pyramidical form, was also taken out of the heads of dragons, while they lay panting. To the snake-stone a popular superstition is still attached in the East. In the narrative of a voyage in Her Majesty's ship Samarang, Captain Sir Edward Belcher says -" At my last interview with the Sultan of Guning Tahoor, he conveyed into my hand-suddenly closing it with great mystery-what they term here as the snakestone This is a polished globe of Quartz, about the size of a musket-ball, which he described as of infinite value, an heir-loom, and reported to have been extorted from the head of an enchanted snake" Allusions to serpent-stone are frequent in the early writers. We read in the Gesta Romanorum that the Emperor Theodosius the Bland ordained that the cause of any injured person should be heard on his ringing a bell, which was placed in a public part of his palace A serpent had a nest near the spot where the hell-rope hung In the absence of the serpent, a toad took possession of her nest; the serpent, twisting itself round

the rope, rung the bell for justice, and at the Emperor's special command the toad was killed. A few days afterwards, as the Emperor was reposing on his couch, the serpent entered the chamber, bearing a precious stone in its mouth, and, erawling up to the Emperors free, lud it on his eyes, and glided out of the apartment, the monuch was immediately restored to sight

"Apropos of the burglanous tord, the philoso phers taught that though ugly and venomous, "it wears yet a piecious jewel in its head 'Lupton, in his Book of Notable TLings, instructs his reader how to procure it, "you shall know whether the tode stone be the ryghte or perfect stone, or not Hold the stone hefore a tode, so that he may see it, and if it be a ryghte and true stone, the tode will leap towardo it, and make as though he would snatch it He ensieth so much that none should have that stone if swallowed, it was a certain untidote against poison, and it was usual to take it as a precautionary pill—rather a hard one—before eating

"In the Philosophical Transactions, vol vi, p 21, we find that the toad stone was supposed, in the Highlands, to prevent the burning of houses and the sinking of boats, and if the Commander in the field had one about him, he would either be sure to win the day, or all his men would die on the spot!

"The hezoar was a stone procured from the cervicebra, a wild animal of Arabia, and was supposed to have been formed of the poison of serpents which had bitten the creature, combined with the counteracting matter with which Nature had furnished it. There was a helief in the Middle Ages that the bezoar was a potent charm against the plague and poison.

"The wonderful effects of stones found in various animals are too numerous to mention The brain of a tortoise contained one that had the effect of a fire-annihilator in extinguishing flames; moreover, whoever did at a proper time-having first washed his mouth-carry it under his tonguo. felt a divine inspiration to foretell future events. Birds were particularly distinguished for the possession of talismanic stones. The hyena was very properly hunted; not, however, for its ferocious propensities, but for a precious stone in one of its eyes, full of mystic virtues. One of the most curious superstitions, and one which has been a favorite theme with writers of all ages, is connected with the Carbuncle, or Ruhy. Ælian has a singular story on this subject, how a certain widow. Herculia, had tended a young stork which had broken its leg, and how the grateful hird, returning from its annual migration, dropped into her lap a precious stone, which on her awaking

at night, lighted up her chamber like a blizing torch

"The fabulous animal called the carbunculo, said to have been seen in some parts of Peru, is re presented to be about the size of a fox,* with long black hair, and is only visible at night, when it slinks slowly through the thickets. If followed, it is suid to open a flap, or valve, in the forebead, from which an extraordinary and brilliant light issues. The natives beheve that the light proceeds from a precious stone, and that any person who may venture to grasp at it rashly is blinded then the flap is let down, and the animal disappears in the darkness."

The following lines from the journal of Sir Jerome Horsay, who was omployed as a special messenger between Ivan the Terrible of Russia and Quoen Elizabeth, sufficiently prove the superstitions that existed with respect to precious stones at that period (1584).

"The old emperor was carried every day in his chair to the treasury One day he beckened me to follow I stood venturously and heard him call for some precious stones and jewels. He told the princes and nohles present before and about him the virtue of such and such, which I observed, and do pray I may a little digress to declare for my

A variety of the for known as the colla-moothee (Sans. Dw pta jeers) exists 11 Bengal, from the mouth of which a blumb light is known to issue. This is called by the ignorant natives, the will o the wisp."

memory's sake : 5the loadstone, you all know, bath great and hidden virtue, without which the seas that encompass the world are not navigable, nor the hounds nor circles of the earth cannot be known Mahomet, the Persian's Prophet, his tomb of steel hangs on their Rapetta at Dorbent most miraculously' He caused the waiters to bring a chair of needles touched by this loadstone, and hanged all one by the other. 'This fair coral and this fair turcas, you see. Take it in your hand. Of his nature and orient colors put them on my hand and arm I am poisoned with disease. You see they show their virtue by the change of their pure colour into pale-declares my death. Reach out my staff royal, an unicorn's horn, garnished with very fair diamonds, rubics, sapphires, emeralds, and other precious stones that are rich in valuecost seventy thousand marks sterling of David Gower from the fowlkers of Ausborghe. Seek out for some spiders.' He caused his physician, Johannes Lloff, to scrape a circle thereof on the table, put within it one spider, and so one other that died, and some other alive, then run apaco from it. 'It is too late, it will not preserve me. Behold these precious stones, the diamond is tho orient's richest and most precious of all others. I never affected it. It restrains fury and luxury, gives abstracaco and chastity. The least parcel of it in powder will poison a horse, given in drink. much more a man.' Points at the ruhy, 'ah, this

is most comfortable to the heart, brain, vigour, and memory of man, clarifies congealed and corrupt blood.' Then at the emerald: 'The nature of the rainbow, this precious stone is an enemy to uncleanness. The sapphire I greatly delight in; it preserves and increaseth courage, joys the heart, pleasing to all the vital senses, precious and very sovereign for the eyes, cheers the sight, takes away blood shet, and strengthens the muscles and snews thereof' Then takes the onyx in hand. 'All these are God's wonderful gifts, secrets in nature and yet reveals them to man's use and contemplation as friends to grace and virtue, and enemies to vice. I faint, earry me away till another time'"

The following lines about the supernatural properties attributed to precious stones are also taken from "All the Year Round" of the same date:—

"Innumerable were the effects produced by certain precious stones; among others the Heliotrope had special virtues. It was called by necromanears the "Bahylonian gem," and if rubbed over into the juice of the herb of its own name, it rendered the wearer invisible. In the Middle Ages, the Heliotrope which contained many red spots, were highly valued from a behef that the blood of Christ was diffused through the stone. The Moonstone was, as its name implies, venerated from its supposed lunar attractions. It is one of the prettnest, though most common of precious stones in Ceylon Pliny describes it as containing an image of the moon,

"which, if the story bo true," he ohserves, "daily waxes, or wanes, according to the state of that luminary" Chalcedony hung ahout the neek, dispersed sadness, and if a person carried one perforated with the hairs of an ass run through it, he would overcome all disasters. Crystal dispelled witch-craft The Chrysophrasus gladdened the heart, the Chrysolite expelled phantoms, and what was more servicable rid people of their follies. The Onyx, in the Middle Ages, was believed to prevent ugly dreams hy night, and law suits by day. The Jasper was a charmer of scorpions and spiders, and was worn as a talisman by the Roman athlete. Burton, in the Anatomy of Melancholy, tells us that, "if hung about the neck, or taken in drink. it much resisteth sorrow and recreates the heart." The same qualities were attributed to the Hyacinth and Topaz. The Crystal has been the most popular of all oracular stones; a favorite stone was the Beryl, "which," says Aubrey in his Miscellanies, "18 a kind of Crystal that has a weak tine ture of 1ed; in this magicians see visions." The eustom was to consecrate, or "chargo" them, as the modern term is, for which purpose set forms were used, which are described in Reginald Scotts' Discovery of Witch-erafts. The famous Crystal of that prince of quackery, Dr. Dee, is preserved in the Ashmolean Muscum at Oxford.

"The properties of the Ruhy were endless; hrused in water it was a panaeca for all com-

plaints; it had the peculiarity, wherever worn, of discovering its presence by its lustre, which would shine through the thickest clothes. Powdered Agate was an infallible remedy for "nll the ills that life is heir to." Pluny quotes the Magii, as teach ing in Persia that storms could be averted by burning Agates. The Amethyst would prove a hoon to modern tipplers, if, ns the ancients asserted, it prevented intoxication. The Sappbire and the Emerald strengthened the sight, a property said to have been also possessed by the Turquoise; but it could confer a still more wonderful gift on its wearer; "whoever," says Vnn Helmont, "wears a Turquoise, so that it, or its gold setting, touches the skin, may fall from nny height and the stone attracts to itself the whole force of the blow, so that it cracks and the person is safe." The Romans regarded the Diamond with superstitious reverence and Pliny tells us that it baffles poison, keeps off insanity, and dispels vain fears,"

insanity, and dispels vain fears."

According to ancient authorities, all composite substances consist of the four elements—fire, air, earth and water: the difference between gems and common pebbles being caused by the predominance of water in the former, and of earth in the latter. The water condensed and congealed by the dryness of the earthy particles was supposed to give to precious stones their hrilliance and transparency. Aristole asserted that the first causo of stones was rescous mud, a sap that shrinks and is congealed by

cold, in which water predominates over earth . to these he adds stony fragments and particles of stone. and another special sap, which he calls lanidation Theophrastus taught that "stones were made of pure, equal and compact substance, after its perlocation, the which substance, being in certain places become petrified by flowing, or in some other manuer." Avecenna only says mud or foul, stagnant water composes stones. Talopius thinks stones to be the produce of a very pure juice. Cardan says that "they are engendered hetween the rocks by means of a sap, which is distilled through their concavity even as the babe in the maternal blood." This last assertion gave rise to a new theory, the object of which was to establish that the engendering of precious stones was not to be attributed to the same causes as that of inert nature, but that it proceeded from causes absolutely similar to those of animated living being Botius de Boot, a physician of the 17th century, attributes the formation of the stones to the almost direct intervention of the Deity.

The precious stones and pearls are mostly obtained from Ceylon, India, Brazil, Australia, California,

Siboria and South Africa.

In the widest interpretation of the term, a gem or a precious stone is nothing but a mineral—hard, of a heautiful color, or also intely colorless; usually transparent, of great rarity and value. Minerals possessed of these properties have been generally divided into two classes—(I) jewels or gems, perfectly pure; (2) half-pure precious stones, colored or tinted. The first class includes in its province those rare minerals which are distinguished by colors at once larght and dazzling, soft and tender; also by transparency, high lustre, great density and capability of polish. The so called precious stones which have these characteristics, but in a much less degree, come under the category of the 2nd class.

श्चय वद्ध^{*} । मुख्यः।

मचाप्रभावं विवुधेदैक्षादचमृदाञ्चत । वज्रपूर्वे परीचेवं ततोऽक्षाभि प्रकीर्त्तेते । ७३ । डेममातद्वचौराष्ट्राः पौडकालिद्वकोग्रलाः । वेषातटोयभौगीरी वज्रस्यादविधाकराः । ७४ ।

फ्टीरेंके वयान ।

तर्जमा।

देवताचीने चमस रक्षोमे कीरेको श्रेष्ठ कका है। तदनुषार पहिले कीरेका विषय विद्या जाता है। ७३।

हैम (हिमालय परेस), मातद्व (टालिकास्यहे कर्तार गत क्यामुख पर्वतवे निकट क्या नटीके किनारेका देस), भीराष्ट्र (क्राट), वीव्ह (रद्भकृत, टिनाजपुर, राजवाडी, योरमुम, मुर्रामदाबाद, नवहोद, बहुमान, चीर मेटिनीपुर बगयरह परेस), वनिद्व (द्वावह चीर टटिव्याके मधन

वनवरक पदम), क्षांत्र (इर्तावर चीर छटिष्याके मध्य-वर्मी पदेम), कोम्ल (चयोध्या), महाराष्ट्र देशके गोदावरी नदीकी छपनदी देवा चयवा देखगदाके तीर, भीवीर (मतदू चर्चात्मतम्ब चौर सिन्धु नदके सध्यदेम), दक्ति चाट जगहीं से हरिकी पान की 1081

THE DIAMOND.

TPANSLATION.

73. The Gods have considered the diamond as the best of gems. I shall accordingly describe it first.

The diamond is produced in the following 74.

eight places:-

Haima,* Matanga,† Saurashtra,‡ Paunda,§ Kalinga, Kosala, Venwa, ** or the shores of the Vena-Ganga, and Sanbira. ††

হীরক 1

षद्भाग ।

দেবতারা সমূদায় রক্লের মধ্যে হীরককেই দর্মা-রক্ল-শ্রেষ্ঠ বলিয়া কল্পনা করিয়াছেন, স্বতরাং তদসুসারে প্রথমেই হীরকের বিষয় বলা যাইতেছে। ৭৩।

হৈম (হিমানয় প্রদেশ), মাতঙ্গ (দাক্ষিণাতোর অন্তর্গত धारामध পর্বতের নিকটন্ত পম্পা নদীর তীরবর্নী প্রদেশ). মোরাষ্ট্র (স্থরাট), পোও (রদপুর, দিনাজপুর, রাজদাহী, বীরভূম, মুরনিদাবাদ, বর্দ্ধমান ও মেদিনীপুর প্রভৃতি স্থান), কলিন্স (দ্রাবিড় ও উড়িষ্যার মধ্যগত প্রদেশ), কোশল (অনোধ্যা), বেণা বা বেণ-গদার তীর (মহারাষ্ট্রের অন্তর্গত গোদাবরীর উপন্দীর কল), সৌবীর (পাশ্চাত্যে শতক্র ও দিন্ধ নদের মধাবর্তী প্রদেশ), এই আট স্থানে হীরক উৎপন্ন হয়। ৭৪।

^{*} The country of the Himalayas.

t The lands adjacent to the shores of the river Pampa near the Hrishyamnkha monutains in the Deccan.

I Surat.
§ Rungpore, Dinagepore, Rajshahre, Beerbhoom, Moorshedabad,
Burdwan, Midnapore, &c.
Burdwan, Midnapore, &c.

[#] The modern Ajodhyá

** A tributary of the River Godávari in the Maharatta country. tt The tract lying between the Satadru and the Indus.

मसम

यातामा विमर्शेवजाः स्थितिभा वेणातटीयाः सुभाः भीवीराम् पिताजनेषपटशासामास्य सौराष्ट्रजाः । कालिद्धाः कनकावदातरू सिराः भीतप्रभाः कीयलाः यासाः प्रव्हभवा सतद्भविषये नात्यन्तपीतप्रभाः ॥ ७५ ॥ एविज्यापौ वियत्तेजो सस्त्वैवित पञ्चभिः । वजस्तत्वित्वे वस्त्रस्त्रा । ७६ ॥

त्र्जमा।

हिमालय प्रदेश, चर्चात् हिमालय पर्यतके निकटके खानों में जो होरा पवदा होता है; उस्के रद्व में तांवापन भलक्ता है; वेण यद्वा होता है; उस्के रद्व में तांवापन भलक्ता है; वेण यद्वा होता है; उस्के रद्व में तांवापन है; वह चन्द्रमाके समान उक्कृत चमकता है; धीवीर दे यमें जो हीरा पवदा होता है, उस्का रद्व तो कमलके समान घटना होता है; उसराट प्रदेशने को हीरा पवदा होता है, उस्का रद्व नावेके समान होता है; उसराट प्रदेशने को होरा पवदा होता है, उस्का रद्व नावेके समान होता है, अर्थाध्याने जो हीरा पवदा होता है, उस्का रद्व व्याध्याने जो हीरा पवदा होता है; उस्का रद्व धीता है; उस्का रद्व यामक होता है; उस्का रद्व यामक होता है; उसरा पवदा होता है, उस्का रद्व यामक होता है; उसरा पवदा होता है, उस्का रद्व यामक होता है; उसरा पवदा होता है, उस्का रद्व यामक होता है; उसरा पवदा होता है, उस्का रद्व होता है। उस्का रद्व होता है। उस्का स्व हान्य वासर्व होता है। उस्का

वज्-विद्याके कुमल पिछत कस्ते हैं, के सीरेमें पृथीं। जल, धालाम, तेज थीर बायु यही पश्च महामूत मामान्य विशेष करके हैं। ७६।

75. The diamonds of the Himalayas are slightly copper colored, those found on the shores of the Venwa are lustrous like the moon, those of Saubira resemble in hue the white lotus or the silvery cloud, those of Surat are copper-colored, those of Kalinga dart golden rays, those of Kosala are yellow, those of Paunda, sable, and those of Matanga, yellowish.

76. According to persons versed in the knowledge of jewels, diamonds vary in the prependerance of one or other of the five primal elements earth, water, the sky, energy and the air.

অনুবাদ।

হিমালয় পর্বাতে ঈষৎ তাত্রবর্ণ, বেণাতীবে চন্দ্রের ন্যায় শুদ্রবর্ণ, সৌবীবে বেতপন্ন অথবা শুদ্র মেঘদদৃশ, সৌবাট্ট প্রদেশে তাত্রবর্ণ, কলিন্ন প্রদেশে স্বর্ণবর্ণ, কোশলে গীত-বর্ণ, পৌও-প্রদেশে শ্যামবর্ণ, মাতন্দ-প্রদেশে ঈষৎ গীতবর্ণ হীবক উৎপন্ন হয়। ৭৫।

वञ्च-পद्मीका-कूमन পछिएजो करका, शैवकवित्यास किछि, चर्ला, चार्काम, एउझ ७ वीग्न धरे ९क मश्चारु एउ स्रोधान विक्व स्य । १७ ।

मूचम्।

महाप्रभावं पर्वं सुशोभं पायिव विद्राः । ७७ ॥ विवयः यद धन खळ्याप्यभाकः पर वृधाः ॥ ७७ ॥ विमलं ग्रुचि तीवृाग्रं वैयतं वज्रसच्यते । प्रमुत्तात्मकं वज्रं तेजनं प्रायणो भवेत् । ज्या तीवृं खरस्यं वायय परिकस्मति ॥ ७० ॥ समसां प्रविचीं पाति पार्थिवस्य विधारणात् । ज्याने समसां प्रविचीं पाति पार्थिवस्य विधारणात् । ज्याने समितं प्रविचीं कार्ति राष्ट्रवस्य धारणात् । ७६ ॥

तर्जमा।

जिस् धीरेमे एट्रीका खंग क्यादा धी, वस शीरा गाहा घोता घी, जिस्मे जलका खग क्यादा घी, वस शीरा धन, यसान, पर्यात् श्लेन, घमकदार खीर खळ छोता धी 1001

जिस्मे त्राकाशका कंग स्थिक है, वह होरा निर्मात, पविच और तीचुाग्र होता है, जिन्मे तेजका कंग्र कथिक है, वह होरा रक्षकों होता है; और जिस्मे वायुका कंग्र क्यादा है, वह होरा हातका, तीचुाग्र सीर सुर्धरा होता है। ७००।

जिस् घोरेने प्योका चंग्र चिक है, उसकी की धारण करे, वह राजा है, जिल् घोरेने जलका चंग्र चिक की, वह घीरा धारण करनेने मनका ट्रांग, उपनी, यग्र चौर कोर्त्ति साम घोए। ७८।

77. The diamonds in which earthy matter forms the base are thick, while those in which water preponderates are dense, smooth, cool and transparent.

78. Diamonds mainly composed of the sky, are exceedingly flawless, clean, and sharp-ridged; those having for their base, energy, are almost always blood-red; and those preponderated by the air are exceedingly light, sharp-pointed and rough.

79. The wearing of earthy diamonds leads to universal dominion; and the watery kind brings contentment, riches, fame and renown.

অহুবাদ।

যে সকল হীরকে পার্থিবাংশের আধিক্য থাকে, দেই সকল হীরক দলে পুরু; যাহাতে জনীয়াংশের প্রাধান্য থাকে, তাহা অতি ঘন, মহণ, মিঠে এবং স্বছ। ৭৭।

আকাশাংশেব প্রাধান্যে হীরক অতি নির্মন, পরিত্র ও তীক্ষাগ্র হইরা থাকে; তেজঃপ্রধান হীরক প্রায়ই রক্তবর্ণ হয় এবং যাহাতে বায়ুর প্রাধান্য থাকে, সেই হীরক অতি লমু, তীক্ষাগ্র ও ধরস্পর্শ হয়। ৭৮।

পার্ধিবাংশপ্রধান হীরতধারণে সমস্ত পৃথিবীর আধিপত্য লাভ হয ; জলীয হীরকধারণে মানসিক ভৃত্তি, লক্ষ্মী, যশ ও কীর্ত্তি লাভ হয় । ৭১।

म्लम्।

उसाक्तियद्दारिनं वाययस्य विधारणात्।
तथा सम्पत्तयः सन्त्री वैयतस्य विधारणात्।
प्रतापः भौर्यासुसावस्त्रीजसस्य विधारणात्। प्रवाशः
विभक्तन्दुन्द्रभवनं पद्कोणाष्टदनं तथा।
तीषु वारिभवं वर्षः घनमञ्जासक्तिमन्।
अन्यकारे च दीप्येत तस्त्री यं यस्तिनमं। प्रवाशः
गुणादंग्र तीषुभारं यस्तर्यदर्गनवारणं।
तस्य धारणमानेण विपरोगः प्रशास्यति ॥ प्रदा

तर्जमा।

जिस् चीरेमे वायुका थंग चिक्षक है, वह हीरा धारण कर्नेसे चलाइकी एहि, चौर लोगोंने प्रिय होए; जिस् घीरेमे चलाइका दंग घधिक है, उत्तर्धीरेको धारण कर्नेसे सम्मत्ति लाम, घोए; जिस् हीरेमे तेजका यंग चिक्क है, वह घीरा धारण कर्नेसे प्रताप, बीरल, चौर चलाइ एहि होए। ८०।

को घोरा बरफ, कुन्दफुन, चमेद बादन, चीर चन्द्रमारे समान सुकूबर्ण घोता हो, चौर क्षकोल चववा चाटकोल सक, तोचुधार, जलसे उत्पद्ध घोता हो, चौर चांधेरेने प्रकाश पाता हो, यह होरा चित जत्तर हो। पर ।

ग्रुणपुक्त और तीदाधार कीरा धारण करने से सर्पका विष और सन्यान्य विषधर जन्तुका विष नए कीता की प्रश

80. The airy sort give heart and gracefulness; and the skyey diamonds bring about the possession of all kinds of wealth The use of energy-preponderated diamonds adds to puissance, heroism and hope.

81 Those diamonds that are white like hallstones, the Kunda flower,* white clouds or the moon, possessed of six or eight corners and sharp-ridged, that have originated from water, and that shine even in darkness, are the aeme of excellency.

82. The wearing of a genuine and sharp diamond leads to instant cure from snake-bite, and proves efficacious in neutralizing the effects of other poisons.

अञ्चाम ।

বায়বীযাংশপ্রধান হীবকুগাবলে উৎসাহ ও প্রিয়নর্শনত্ব জন্মে; আকাশপ্রধান হীবকগারণে সর্ব্ব প্রকার সম্পত্তি লাভ হয। তৈজস হীবকগাবনে প্রভাপ, শৌর্য্য, ও উৎসাহ বর্দ্ধিত হয। ৮০।

বে বজ কবকা, কৃন্দপুন্দা, শুক্র মেঘ অথবা চন্দ্রসদৃশ ধবল বর্ণ; যট্ বা অউকোণবিশিন্ট; জীন্নধার; জলোৎপর এবং অন্ধকাবেও দীপ্তি পায, সেই হীরকই উৎকৃত্ট। ৮১।

ওণমুক্ত অথচ তীক্রধাব হীরক ধাবণ করিবামাত্র সর্প-দফ ব্যক্তি আবোণ্য লাভ কৰে, এবং তদ্বাবা অপবাপর জন্তুব বিষও শমতা প্রাপ্ত হয়। ৮২।

^{*} Jasaminum Multiflorum or Pubescens,

मूचम्।

कोटिन्थ्यप्रतीकार्यं कोटिचन्द्रस्त्रीतलं । श्रन्धकारघरं वर्ज् विज्ञेयं सघदुनसं । तस्य धारणमाचेण सर्व्यतागः प्रमास्यति ॥ ८३ ॥ तप्ते दुस्ये जचे तेले घते चिप्तोऽिष यः पविः । श्रीततां नाययेत्सद्यं स ज्ञेयः सरद्वेभः ॥ ८४ ॥ बह्मचिविबद् ग्रद्रभेदासस्य चतुर्विधाः । क्रमशो चवर्षं तेषासुच्यते हिजसनुम ॥ ८५ ॥

दर्जमा।

भो हीरा कोट चूर्य के समान प्रकाशमान, चीर कोट चन्द्रमार्के समान शीतन, चीर चाधेरें मे प्रकाश पाता है, वह हीरा सबसे श्रेष्ठ है, चीर इन्के पहेरनेंसे सब विमारी नष्ट होते हैं। टूरे।

जी घीरा गरम जल, गरम दुध, गरम छत चीर गरम तिलमे फेंक दिया जाय, चौर छत्ती समय छन् यसुकी गरमि दूर घो जाय, पेसा चीरा देवतांको दुर्वम की। प्रश

मन्त्रमणमे जिन् प्रकारके ब्राह्मण, चित्र, वैद्या, भौर गूद्र यही चार वर्ष है, उसी प्रकार हीरामेमी ब्राह्मण, चित्र, विद्य चीर गूद्र यही चार वर्ष है, प्रवक्ष प्रवक् कर्के उस्का सच्च सिखता ऊरं। ट्या

E.

- 83. A diamond which is refulgent like myriads of suns, while deliciously cool as numberless moons, which illumines even palpable darkness, is excellent, and proves a panacea as soon as worn.
- 84. The diamond which, on being thrown into hot water, milk, oil, or clarified hutter, extinguishes the heat, is coveted by the gods.
- 85. Like men, diamonds are divided into Brahmins, Kshetriyas, Vaisyas and Sudras. The distinctive features of each caste I will now set forth-

অভ্ৰাদ।

বে হীরা কোটি সূর্যোর নাার ভাষর, অথচ কোটি চন্দ্রের ন্যাব হুশীতল, এবং অন্ধলাবেও দীতি পাব, দেই হীরক দর্বাশ্রেষ্ঠ; তাহা ধারণ করিবামাত্র দর্ব্ব প্রকার রোগের শান্তি হয়। ৮০।

যে হীরা উষ্ণ হল, ছ্বং, তৈল বা হতের মধ্যে নিশিপ্ত হইগা তৎকণাৎ উক্ত পরার্থনিচয়ের উষ্ণতা বিনাশ করে, সেই হীরক দেবতাদিগের ছুর্লভ। ৮৪।

মনুষ্যগণের নাথ হীরকেরও প্রামণ, কজির, বৈশ্য ও শুদ্র এই চারি প্রকার স্বাতিভেদ আছে ৷ ক্রমশঃ তাহা-দিগের লকণাদি নির্দেশ করা যাইতেছে ৷৮৫ ৷

मूखम् ।

विषय शङ्घकुत्तुद्खाटिकावदातः स्थात् चिषयः शशककविनोचनाभः।

स्यात् चाचयस ग्रमवनावला चनामः।

वैश्वय कान्तकदलीदलसद्रिकाशः

णूद्रच धौतकरवालममानदीप्ति: ॥ द€ ॥

विमचचियवैथाना शूद्रजातेययाक्रमं।

खेतारक्वातयापीता कष्णाच्छायासनुर्विधाः। ८० ॥

यद्गी दिनिसपोभित्र यदाप्रोति तदाप्रुयात्। गुणगुक्तस्य बज्जस्य विप्रजातेत्र भारणात्॥ प्रक्रा

तर्जमा |

को घीरा प्रञ्च, कुसुद्द्युल, चीर स्कटिक के समान प्रक्षवर्ण, वह धीरा बाह्यवर्ण है, को घीरा खरगवर्ण प्रात्त के साम प्रदासक के समान राजवर्ण, वह घीरा चित्रवर्ण है, को घीरा नवे के के के पातके समान सबुजवर्ण, वह घीरा पैछावर्ण है, जीर को घीरा परिष्कार खद्भके समान, वह घीरा पृहर वर्ण है। प्रहार है। प्रहार वर्ण है। प्रहार है। प्याप है। प्रहार है। प्रह है। प्रहार है। प्रहार है। प्रहार है। प्रहार है। प्रहार है। प्र

वाद्याणवर्षे घीरेका काया मफेट्, त्विवर्षे घीरेका काया रक्तवर्षे, वैद्यवर्षे घीरेका काया पीलावर्षे चीर मूट्रवर्ण घीरेका काया छप्पावर्षे घोगा। ८७।

यम्, दान, भौर कठिन तपस्ताके बारा मनुष्य जो भव साम करता की, गुणमुक बाह्य वर्ष कीरा भारण करनेथे यक्षी भव पाता की। द्रद्रा

86. Diamonds white like the conch, waterlily, or crystal, are Vipras (Brahmins); those which are red like the eyes of the hare, are Kshetriyas; those which are verdant like the cool plantain-leaf, are Vnisyas; and those which resemble in color the cleaned sword, are known as Sudras.

87. The Brahmin, the Kshetriya, the Vaisya and the Sudra, cast around white, red, yellow and black gleams respectively.

88. The fruit which is reaped through the celebration of various sacrifices, munificence, and the austerest devotion, is also gained by wearing superior Brahman diamonds.

অহুবাদ।

বে হারক শঝ, কুমুন-পূন্দা, বা স্ফটকের ভায় শুরুবর্ণ, তাহা বিপ্রজাতি; বাহা শশকের চন্দুর ভায় রক্তবর্ণ, তাহা ক্ষত্রিয় জাতি; বাহা প্রিশ্ব কর্মনান্দের ভায় হরিদর্শ, তাহা বৈশ্বজাতি এবং বাহা পরিভ্বত করবালসদৃশ খ্যামবর্ণ, তাহা প্রজাতি বলিয়া প্রবিচিত হয়। ৮৬।

ব্রাকণ, কল্রিন, বৈশ্র ও শূদ্র এই চারি জাতীয় হীবক ইইতে জনায়মে খেত, মন্ত, পীত ও কৃষ্ণর্য ছায়া নির্গত হয়। ৮৭।

মানবগণ বিবিধ যক্ত, অসামাত দান, ও অতি কঠোর তপদ্যা দারা যে ফল লাভ করেন, গুণমুক্ত আক্ষণবর্ণ-হারক ধারণ করিলেও দেই ফল প্রাপ্ত হইতে পারেন। ৮৮। मृचम्।

जयः पराक्रमस्तस्य ग्रमुनाग्रस् जायते । ग्रुणवत चचनातीयं वन् वनति यद्गृहे ॥ ५० ॥ कलाकुर्यंतता तस्य प्रचा चेमें यथी महत्। ग्रणिन पविरत्नस्य वैश्वजातेश्व धावणात् । ६० ॥ परोपकारिता चेम धनधान्यसमृह्य । गुवसुक्रस्य वनुस्य भूद्रजातेच धारणात् । ६१ ॥ वर्त सुवर्णयुक्तं देवानामपि परिग्रहः मोकः।

वर्षेभ्यस विभाग: कार्यो वर्षात्रयादेव । ६२ ।

तर्जमा।

युषयुक्त चिविष हीरा जिस्के घरमे रहता है, उसके सव कार्यों में जयलाभ, पराक्रमहिद्व भीर श्रव्युका नाश श्रीता श्री (द्वर (

जो मन्त्र गुणयुक्त वैद्यवर्ण हीरेको धारण करे, धर मनुष्य कनाकुमल, यज्ञद्यों, ऋरोगी भीर यमसी होता है। १०।

जो मनुष्य ग्रुणयुक्त मूद्रवर्ष चीरेके धारण करे, वह मनुष्य चत्यन परोपकारी, चरोगी, और धनधान्य चाहिंचे यमृहियाली घोए। ८१।

योनेमे जडा ऊया शीरा देवता खोगभी पश्च कर्ते है, भीर वणके सम्मायेष्टी होरेकी भिन्नता बुआह

देति है। हर।

- 89. The better sort of the Kshetriya class bring about uniform success, accession of power, and destruction of foes.
- 90. First rate diamonds belonging to the Vaisya caste are productive to their wearers of wisdom, cure, fame and skill in the elegant arts.
- 91. The higher order of the Sudra class induce benevolence in their master, and make him hale and wealthy.
- 92. Diamonds set on gold are an acceptable offering to the gods. They are classified according to color.

जर्दा ।

গুণাথিত ক্ষত্রিয়ণগাঁহীরক যাহার গৃহে থাকে, তাহাব সকল বিষয়ে জয়লাভ, পরাক্রময়ন্ধি ও শক্রবিনাশ হয় ৷ ৮৯ ৷

গুণশালী বৈশ্যবৰ্ণহীরকবারী মানবগণ কলাকুশলতা, বিজ্ঞতা, আরোগ্য ও যশ লাভ করিয়া থাকেন। ৯০।

যে ব্যক্তি 'গুণমুক্ত শুত্রবর্ণহীরক ধারণ করে, দে ব্যক্তি অত্যন্ত পরোপকারী, অরোগী এরং ধনধাতাদি সমূদ্দিশালী হয়। ১১।

প্লবৰ্ণপ্ৰতিবদ্ধ হীরক দেবতাদিগেরও আছ। হীরক বৰ্ণানুদারেই বিভাগার্হ। ৯২। मृखम् ।

हरितसितभीतिपद्भवतामृत्यामाः स्थमावतो क्विराः ।
हरिवक्षयकञ्चतव हिप्टर्यातमक्ता स्वसा वर्णाः ॥ ८३ ॥
हो वज्वर्णा प्रधिवीपतीना सङ्गि प्रहिष्टी नतु सार्व्यज्ञयं ।
य. स्याव्यवाविद्यमभद्भयोणो यो वा हरिद्रारसस्विकाम ॥८४॥
ईयत्वात् सर्व्यवर्णाना गुणवत् सार्व्यवर्णिकं ।
कामतो धारवेद्राजा न त्वन्योऽन्य क्षयश्चन ॥ ८५॥

तर्जमा ।

गतुज, सभेट, पीला, पिज़ल (नीला जीर पीला निश्चित) तांवेले पमान जीर खान यही कमकारका रज हीरेंगे होता है। नारायण, वरुण, इन्द्र, जानि, यम जीर वार्य इस्क रज़ मल्जूरेवालेले क देवता है। है ३। वही कमकार वर्षेतुक हीरेंके मध्ये कनेल पुल, ज्यावा

प्रशास सम्भार व प्रवृक्ष को एक सम्य कनल फुल, चयवा सुद्रेके समान रक्षवर्ण, चयवा क्ल्ड्रीके समान पीलार्ज़ यक्षी दो वर्णविमिष्ट कीरा राजा लोगोंको सुमहायक कै। इस्र।

चगर किसी एक घोरेने क्ष प्रकारका रज्ञ पाया आवे, तो उस् डीरेको राजा धारण कर सक्ता है, लेकिन क प्रकार रज्जका क डीरा एकदके कभी धारण निर् करेगा। ८५।

105

TRANSLATION.

93. Diamonds are generally green, white, yellow, brown, copper-colored or black; and the classes are presided over by Náráyana, Varuna, Indra, Agni, Yama and Váyu respectively.

94. Of the six classes, those that are red like the China rose or coral, or yellow like turmeric, are productive of good fortune to princes

95 They can wear a diamond whose hue is a medley of all the colors enumerated above, but never diamonds of diverse colors at one and the same time.

অনুবাদ।

হীরকে হরিত, শুরু, গীত, পিরুল, তাত্রবং ঈবং লোহিত ও শ্রাম, এই ছম প্রকার বর্ণই বভাবতঃ হইষা থাকে, এবং নাবায়ন, বরুল, ইল্লে, অগ্নি, যম ও বায়ু এই ছম দেবতা উক্ত ছয়বর্ণেব এবং তদমুমাবে উক্ত ছমবর্ণ-বিশিক্ত হীবকেবও অধিষ্ঠানীদেবতা। ১০।

উদ্লিখিত ছ্য প্রকাব বর্ণবিশিন্ট হীবনের মধ্যে জবা-কুহুম বা প্রবাদের ন্যায় বক্তবর্ণ, অথবা হরিদ্রাবদের ন্যায় শীতবর্ণ বিশিন্ট হীরকই রাজানিয়ের শুভজনক। ৯৪ ।

যদি একথানি হীরকে উক্ত সর্ব্বপ্রকাব বর্ণ থাকে, তাহা হইলে বাজারা সে হীবক ধাবণ করিতে পারেন, কিস্ত একদা বিভিন্ন বর্ণের ভিন্ন ভিন্ন হীরক কথনই ধারণ করি বেন না ৷ ৯৫ ৷ 106 मिवमाचा ।

मूचम् ।

चघरोत्तरष्टत्ता हि बाहक् स्वाद्वर्षमञ्जरः। ततः कष्टकरो वजुवर्णानां सङ्करो मतः॥ ८६॥

कोद्य' पार्कानि धारास पड्छी हार्शेति च । उत्तर पमतीनामा वजस्याकरना मणाः ॥ ४०॥

चनुद्रमतीवृाग्राः वजुस्याकरका ग्रणाः ॥ १७ ॥ ग्रणाः पञ्च समाखाता दोषाः पञ्च प्रकीर्त्तिताः । कावा विच्चे यायत्वारो वजुग्णां रत्नकोविदैः॥ ८० ॥

काया विज्ञेयास्त्वारो वजायां रत्नकोविहैः॥ ८८ ॥ पर्कोयनं वधुन्यस्य समाप्टरनता तथा । तीव्याप्रता निर्मवस्वमिमे पस्य स्थाः स्वताः॥ ८८ ॥

सर्जमा ।

निस् प्रकार मनुष्यमे बाह्मण, चित्रण, बैश्च और गुर्ह्से परस्यर भंयोग डोनेसे सद्धरवर्णका उत्पास डोती छैं उसी किसिम्से डोरेके विभिन्नवर्ण संयोग डोनेसे सद्धरवर्ण छोरा डोता है। यही सद्धरवर्ण डोरा मनुष्यके कष्टरायक है। ८६।

ककोण, चष्टपार्यसा (चाटी चांतवाट) बार धार (गेरदा घाट) गट्टा, ममान, चीर तींबृाग्रता बकी गव गुण

डोरेने समादिक पयदा घोता है। ८७। रत्नप्राह्मके परिदत डोरेके पांच ग्रम, पांच दोव कोर चार कावा तळ्किल किया है। ८०।

क्कोण, हाल्का, बाठो बांव घाट, तीनुग्रता, बीर निर्मावता यही पांच ग्रम हीरेंगे होता हैं। १८ ।

96. As the promiseuous intercourse of one caste with another gives rise to mixed castes among mankind, so it is with diamonds, the mixed classes of which are fraught with great troubles to man.

97. The qualities of being six-cornered, eightsided, twelve-edged, high, smooth and sharp, dia-

monds bring from their quarries.

98. Persons skilled in the knowledge of jewels cnumerate five good, and as many bad qualities of diamonds; and have also mentioned four kinds of shades as proper to them.

99. The qualities of being six-cornered, light, sharp-edged, and pure, as well as the state of having eight equal sides are the five good properties of

diamonds.

षञ्चाम ।

ব্রাহ্মণাদি বিভিন্ন বর্ণের সংযোগে মনুষ্যগণের মধ্যে বেমন সন্ধবর্ণের উৎপত্তি হয়, হীরকেও সেইরূপ ভিন্ন ভিন্ন বর্ণের প্রক্ষাব সহযোগে সন্ধবর্ণ হইয়া থাকে, হীবকের সন্ধবর্ণ মনুষ্যগণের পক্ষে অতি কউদাযক। ৯৬।

যট্কোণতা, অউপার্যতা, দাদশধার, উত্তর্গতা সমান অথচ তীক্ষাগ্রতা এই কমপ্রকার গুণ হীবকের স্বভাবনিদ্ধ, অর্থাৎ আকর হইতেই এই গুণসমূহ উৎপন্ন হয়। ১৭।

রছবিং পণ্ডিতেরা হীবকের পাঁচ প্রকাব গুণ, পাঁচ-প্রকাব দোষ ও চারি প্রকার ছাষা নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন। ৯৮।

ষট্কোণয়, নুমুর, সমান-অইদলয়, তীফ্নাগ্রন্থ ও নির্মানয় এই পাঁচটা হীরকের গুণ। ১১। म्बग्र

पर्षोवगुहुममनं ग्रुचि सीद्दवधारं यणीन्त्रतः मधु मुवार्ये मचेतदीयं। इन्द्रायुभागुविचतिन्द्रदितान्तरीयः -

भेवंविषं भृवि भवेत् सुनभं न वश्वः । १००। चल्यां समु वर्णतय शुणवत् पार्ण्यं मु सम्बद्धमः रेषाविन्दकमञ्जलावपदक्षमामाहिमिर्यार्जातः । सोकेस्मिन् परमाषुमाचमवि यदणं कविह्न्यते तिमन् देवसमाययो ग्रावितयसोचाप्रधारं बदि । १०१।

सर्जमा ।

को घीरा विश्वत, ककोष युक्त, प्रायम निर्मात पर्यात् बज्जन गाफ, नीचुधार, उत्तम वर्ग विशिष्ट चाल्का आच्छा घाटदार, वेष्यवेव, श्रीर जिस्से इन्द्रधनुकके समान पामा निष्ने, ऐसा घीरा पृथी पर बज्जन नायाव है।१००।

यक्त फाल्का, उत्तम वर्षभुत, शुष्युक्त, बरायर घाट, तीवणात्र, षर्यात् पुटीदार, चिर, क्रिटा, दाग, कावपद, गर्षा, यधी यस पायेयरिक्ति, कीरेके क्रोटे तारेके समान जिस जगहने रहे, छन्नी जगहने जहर देवताका याम कीमा। १०१।

100. The diamond which is free from defect, six-cornered, pure, sharp, possessed of an agreeable color, light, beautifully shaped, flawless and irisgleaming is a rarity in the world.

101. The place where there is even a particle of such a diamond as is sharp, equal-sided, exceedingly light, possessed of an excellent color and of other good properties, and free from Rekhá, Vindu, Kalanka,* Kákapada, Trása, &c, is certainly frequented by the gods.

षप्रवाम। "'

বে হীরক বিশুদ্ধ, মট্কোণবিশিষ্ট, অতি নির্মান, তীক্ষণ ধার, উত্তমবর্ণচ্ষিত, লয়ু, মুপার্য, নির্দ্ধোর এবং নাহা হইতে শত্রুধার প্রতা নিঃসত হয়, দেপ্রকার হীরক পৃথি-বীতে অতি দ্বর্লভ। ১০০।

খত্যন্ত নমু, উৎকৃত বর্গদিত, মওণ, সমপার্খ, তীক্ষার এবং বেধা, বিন্দু, কলফ, কাকপদ ও ত্রাসাদি দোমবিবর্দিক হীবক পরনাধুপরিমাণে যে হানে থাকে, সে খানে খবস্টই দেবতাদিগের সমাগম হইযা থাকে। ১০১।

^{*} A duk mot

मूचम्।

तीचाग्र विमलमपेतमर्व्यदोपं धत्ते य प्रयततनः सदीय बन् ।

ष्टतिस्तं प्रतिदिनमेति यावदायः

श्रीसम्पत्सत्वनधान्यगोपभूना । १०५। यत्त सर्वेगुणैर्यकं वज् तरित वारिणि। रव्यकों नमसीऽपि तस्य धारणिमच्यते ॥ १०३ ।

चमात्तरति यदणमभेदां विमलञ्च यत्।

तया मंगुद्वपद्कीण' लघु भागयनन्दन । १०४ । मभा च मकचापाभा यस्याकांभिम्छी भवेत्।

तदलुं धारयन् राजा धर्यान् जयति याचवान् । १०५ 1

102. The man who carefully keeps about him a sharp-pointed, spotless and genuine diamond, is blessed with the life-long possession of riches, good fortune, sons, corn, kine and other beasts.

103. The diamond which crowned with every good property, floats on water, is the very pink of perfection; and the use of such a gem is attended with greater good.

104-105. The possession of such a diamond as is exceedingly flawless, impervious, six-cornered and light to a degree, as forms the rainbow on being exposed to the sun, and as does not sink in water, renders a prince victorious over every enemy.

অনুৰাদ।

যে ব্যক্তি তীক্ষাগ্র, নির্মান এবং নির্দোষ হীবক অতি
যক্তমহকারে ধাবণ করে, দে ব্যক্তি যাবজ্জীবন লক্ষ্মী,
সম্পদ, পুত্র, ধন, ধান্য, গো ও পশুর আধিপত্য লাভ
করিয়া কাল যাপন করিতে পারে। ১০২।

যে হীৰক শৰ্মগুণানত্বত হইয়া জলে ভাসমান হয়, সমস্ত রত্নমধ্যে সেই হীরকই উৎকৃষ্ট, এবং তাহা ধারণেও অধিক ফল লাভ হয়। ১০০।

त्य शैतरु थांजि निर्मान, पालमा, बर्ग्ट्साविभिन्ने, चिन् भग नम्, बतन जाममान, मुर्गाजिन्द्र धृत हरेल हेळ्थसूत्र क्षज निरात करन, धक्षकात हीतर बातन कतित्व त्राक्षन मर्सक्रहे मक्त गक्राय्ट बग्न किंद्र मन्तर्य हन। ১०८१०००।

मचम्।

यम् वारिभयं नाम दृष्टांपचललक्दिव ।
सवर्षमाच' तुलया तदत्र्वं कोटिमाजनं । १०६ ॥
यद्यापि विश्रोषकोटिः सिवन्द् रेखान्तितो विवर्षों या ।
सोऽपि च धनधान्यस्तान् करोति सेन्द्रायुधी यत्रः॥१०९॥
सौदामिनीविक्कृरितामिरामं राजा ययोक्त कुलिशं दधानः।
पराक्रमाकान्तपरप्रतापः समस्तसमन्तमुयं भुनिक्त ।१००॥

तर्जमा ।

को होरा पालिसे प्यदा होता है, और जिसका रहे सबुज घासके पालिके यूंद्के समान, और घोजनमे एक तोला भारी हो, उस होरेके दाम फ्रोर रूपेया होता है। १०६।

टुटाकोषा, हिटा, चिर, चीर बदरक्ष यही सब भयेवदार होरावे भगर इन्द्रचतुकके गमान सामा प्रकाम पाबे, तभी पहरेनेसे धन, दीखन भीर भावोलातकी तर-किक होते। १०७।

जो राजा पश्चित बयान किये गये वेश्वयेव श्रीर विज-वीके बमान श्रामा प्रकाशित श्रीरा पहेरे, वह बदा एक वावमन्द शोकर तामास जनीनका राज खाम करे। १०८।

106. The diamond which has originated from water, which weighs one told,* and which is transparent as the dew-drop on a blade of grass, is worth ten millions.

107. Even a diamond which is cracked, spotted, striped, discoloured, or otherwise defective, leads to wealth and increase of children, if it possesses the power of forming the iris

108. The sovereign who wears a diamond possessed of the good qualities mentioned above, and laughing like the lightning's flash, attains to universal dominion.

दर्दार ।

দে হীবক জন হইতে উংপদ্ধ, মাহার বর্ণ দুর্ব্বাদনো-পরি পতিত ফন-বিলুর ন্যায় কল, এবং ওজনে এক তোলাপরিনিত, ভাহার দুলা কোটি হলা। ১০৬।

ভাষোণ এবং বিন্দু, রেখা ও বৈবর্ণ ইত্যাদি নোফ দূমিত হারক হইতে যদি ইন্দ্রধনুর প্রভা প্রকাশ পায়, ভাষাও ধৃত হইবে ধন, ধাত, ও সততি হৃত্তি করে। ১০৭।

যে রাজা প্রেক্টাক্ত ওণসমূহে ভূষিত এবং সৌশন্নির চার প্রভাগ্রকাশক হারক ধারণ করেন, তিনি পতিশন্ত পরাক্রমণাধী হথৈ। সমস্ত পুথিবীর স্থাধিপতা লাভ করেন। ১৬৮।

^{*} A weight of grid or allow, calculated at 12 million, descripts Weight, and appreciated to posite 210 grass at left articles that of the same weight as the most or 1724 grasses. We have:

ग्रय वज्जदोपा:।

मूचम् ।

मनो विन्दुसवा रेखा चामः काकपदस्तवा।

यते दोषाः समाखाताः पश्च बज्जेषु कोविदैः । १०८ ।

मन्ने मिनता खाता विन्दो सर्व्वावैनाशनं।

रेखाया दृष्ट्रिणो भीतः चाने चामः चयः पदे। ९९० ।

दोरोषु विन्दुरावर्तः परिवर्त्तो ववाकृतिः।

पतुर्विभाः समाखाता विन्द्वो बजुर्सश्चताः। १९९ ।

हीरेका चयेव।

सर्जमा ।

रत्न यास्त्र विस्तृत मयसा, क्रिटा, चिर, शब् को प्रीर कातपद यकी पाच प्रकारको धीरेके अधेव कके गर्य के १९०८।

मिलन कीरेके पहरनेसे मन मयला कोता की, किटेदार

हीरिक पहेरनेसे मर्जनाम होता है, विरदार हीरिक पहेरनेसे सापका भय होता है, गत् हादार होरा पहेरनेसे हमेसा मनके द्वार पहता है, और काकपद्धिक्रगुरू होरा पहेरनेसे अदमी बद्धत जल्द नामको प्राप्त होता है। ११०। होरे जो क्रिटा है, यह प्रकारभेट्से बिन्दु, आवर्म, परिवर्ष कीर यहाहित यही चार प्रकार होता है। ११९।

DEFECTS OF DIAMOND.

TRANSLATION.

109. Authorities in matters of precious stones mention five bad qualities of diamonds; namely, mala,* cindu,† rekhâ,‡ trâsa§ and kâkapada.

110. The first defect causes impurity, the second brings down destruction on the wearer, the third renders him apprehensive of sunke-bite, the next infuses constant fear into the mind, and the last leads to ruin.

111. Diamond spots are divided (according to the respective character of each) into four classes, namely; tindu (or the spot proper), dvaita, paritaria, and jabákrit. I

शेद्धद्ध *प*ाय १

प्रकृतात ।

রহতত্ত্বজ পভিডেরা মন, বিন্দু, দেখা, তাম, ও কাক-পদ এই পাঁচ প্রকারকে হীরকেরদোয শলিমা উল্লেখ করিমা থিমাছেন । ১০৯।

মলিন হারকে মনের মালিত জন্মে; বিন্দুর্বুক হারক সর্বমানের নিশান; রেথাবিশিত হারক সর্পানি শান্তি ত্যোধ-পাদক; আগমুক্ত হারক সর্পারা আন্তনক এবং কাকপদ-ডিহ্নিত হারক মসুযোর ক্ষমকারক ব্যাগা ক্ষিত আছে। ১১৮।

होतदस्ति तिन् श्वदाहरत्तर दिन्, पार्र्ड, शविदर्व ४ स्वाहिड वहे हर्द्रविष हरेश शास्त्र । >>> ।

[·] Impurity | + Front | | S.r., | | 1 car | | | Cornelly to • La reality, that which is adopted bloom barby corn.

मृचमृ।

रक्तोऽच वर्त्तुलो विन्दुरावर्त्तो मध्यवर्त्तुलः । रक्तच परिवर्त्तस्तु रक्त एव बवाळतिः ॥ ९१२ ॥

विन्दुरायुर्धनं कन्यादावन्ते भदमाद्दिशेत्। परिवर्ने भवेद्व्याधियेवे तत्फलमुखते ! १९३ ॥ रक्रवर्णे यवे खातं गजाखस्य विनाशनं।

यवे गीते कुलस्थान्तं धनमायुःचयं भवेत्। एवं दोषाः समास्थाता यवविन्होरश्रेषतः ॥ १९४॥

तर्जमा ।

रक्षवर्षे गोत चिक्रको बिन्दु चर्चात् हिटा कहते हैं। मध्यमोत्राकार चिक्रको चावर्त्त कहते हैं, सामान्य रक्षवर्ष चिक्रको परिवर्त्त कहते हैं, चौर रक्तवर्ष जब चिक्रको जवाछनि कहते हैं। १९२।

जो शिरा बिटेदार है, वह उत्तर चीर दीलतको नाम करता है, चावनका चयेबदार होनेचे बज्जत प्रकारका खीक पयदा करता है, परिवर्त्त चयेबदार होनेसे विमारी करता है, चौर जवाक्टीत चयेबदार होनेसे वही चयेब होता है। १९३।

किसी परिदृतके मतातुत्रार जबके समान निमान सुध धोनेने धाती भीर घोड़ाको नाम करे, भीर पीला डीनेसे कुन, धन भीर समर नाम करे। जब विच्चसे सही सब भवेब दोता है। १९४।

€.

112 A blood-red, circular spot is a vindu, a circular spot situated in the middle is called an acarda, a simple red speck is entitled a parivaria, while a Jabdkriti is a blood-red mark shaped like a barley corn.

113. A vindu-marked diamond is inimical to life and property; an ávarla spotted one gives rise to various fears; a parwarla-specked and a jabākriti-spotted one are fraught with disease.

114. According to some, if the barley corn-shaped speck is red, it is destructive to horses and elephants; and when it is yellow, loss of family dignity and of wealth and curtailment of life are the consequences.

वद्यार ।

বক্তবর্ণ বর্জুনাকার চিহ্নকে বিন্দু, মধ্যবর্জুলাকার চিহ্নকে আবর্জ, নামান্ত বক্তবর্ণ চিহ্নকে পরিবর্জ ও বক্তবর্ণ যরচিহ্নকে যবাকৃতি কহে। ১১২।

বিন্দুৰ্ক্ত হীরক আয়ু ও ধন নাশ কবে, আবর্ত্ত-দোধা-যিত হীবক নানা ভয়েব উৎপাবক, পবিবর্ত্ত ও যবাক্ততি-দোষদৃথিত হীবক নানাব্যাধিজনক হব। ১১৩।

কাছাবও মতে বক্তবর্ণ যবচিক্ত হতী ও অধ্যেব বিনাশক এবং পীতবর্ণ যবচিক্ত কুলনাশক এবং ধনায়ুক্তফাবক হয়। যবচিক্তেব এই সকল দোষ উক্ত ক্ইমাছে। ১১৪।

मूचम्।

म्ब्यवका मुभा रेखा वामवका भयद्वरी । केरभानिकरी च्छेदा रेखा मस्त्रभयप्रदा ॥ १९५ ॥ पच्छवप्रदृष्टा या केदा सा परिकीर्त्तिता । रेखा वश्वविनाणाय जायते वजुर्यव्यवा ॥ १९६ ॥ सव्या चैवापसव्या च केदा रेखोद्धेगामिनी । यथा पात्रभिदा जेया चथसव्या घनच्छिदा । उद्या पात्रभिदा जेया चथसव्या घनच्छिदा ।

सर्जमा।

चिर चगर ट्रांडिने तरफ टेडा डोए, तो वड उनम फल देने, बांवे तरफ टेड्रा डोए तो बज्जत तरडेजा खीफ पयदा करे, चीर जिस्चिरते डीरा काटा मानुम डीए, वड चिर डोनेबे तलवारका खोक डोए। ११५।

ष्टीरेसे को विर पचिकि परके समान होए, उसे हेरा ककते हैं, चौर हेरा नियान भाद बन्युके विनायका कारण षोता है। ११६।

छेदा नियान पगर वाचे तरफ टेट्डा होए, तो धारने कुल्वेके साधमे कलक पगदा करे, दक्षिण तरफ टेडा कोर, तो दीवतका नाम करे चीर सिधा होए, तो दोस्ती^{मे} ऽष्फुनि करावे। ११७।

115. If the above-mentioned stripe appears in a bent form on the right side, it is productive of good consequences; but the same appearance on the left occasions various fears; again, the streak which looks like a cleft renders one liable to blows from weapon.

116. That stripe in a diamond which resembles a bird's wing is termed chhedd. This mark brings about loss of friends.

117. When the chhedh mark is visible in a crooked form on the left, it leads to dissension with kindred; a like mark on the right side entails loss of wealth, and if pointing upwards, brings on difference with friends.

অহবাদ ৷

রেখাচিহ্ন দন্দিশে বক্ত হইলে শুভ দল প্রদন করে, বামদিকে বক্ত হইলে নানা ভবের কারণ হয়, এবং যে রেখা দারা হীরককে কটো বলিয়া বোধ হয়, সেই রেখা হইতে শক্রাঘাতের ভীতি উৎপন হয়। ১১৫।

হীরক্ষিত যে রেখা দেখিতে পফীর পক্ষের ভার, তাহাকে ছেদা কহে, ছেদা চিহ্ন ব্যুবিনাশের নিদান ৷ ১১৬ ৷

ছেদা চিহ্ন বানবক্রা হইলে আন্ধীয় জনেব সহিত কলহ সজ্ঞাটন, দক্ষিণবজ্ঞা হইলে ধনহানি এবং উদ্ধ্যায়িনী হইলে বন্ধু বিচ্ছেদ করে। ১১৭।



मुखम् ।

चक्व: काकपदाकारो हम्बते यो मलान्तितः । स मृत्युमादिशत्यामु धनं वासग्रष्टं चरेत् ३ ११८०॥ सन्तार्गं भन्नधारञ्च दल्ज्डीनञ्च वर्त्तुलं । कान्तिचीनञ्च यदन् दोषाय न ग्रणाय तत्॥११८॥ भिन्नभ्यान्तिकरः चासः स चासं जनवेद् धुवं। एवं दोषा गुणाः प्रोक्ता बलाखा सोममुभुजा॥१२०॥

सर्घमा ।

को दाम कीएके पात्रोके समान कोए, और वही दाम मिलन कीए, उसे काकपद अधेव कक्ते है, जो बादमी ऐसा कीरा पर्करे, उस्का मर्थनाम कोए, और मीह कोए। १९८।

जिए घीरेका आमेका धिस्मा, खदाना कोडी किनाय दुटा घोए, और जो घीरा द्वाधीन खर्यात् पन्या, तेजधीन और देखनेसे गोलाकार, यही धीरा बहा खयेनी, और तर तरके खयेवका पददा कर्नेवाला है। १९८।

तर तरक अववका पदर कर्नवाला है। ११८। जिस् सबस्ये होरेको टटा समजकत सक् पबदा होए, उस्को चास कहते हैं, चीर चासतुक होरा हमेना सब कामोमे चाम चर्वात् मय देवे, सोमराज परितृतीने हुनी तरहसे होरेबा सिकत चीर चवेबको लिखा है। १२०।

118. The spot which is like the claw of a crow as well as dirty, is called kākapada. Death and ruin are near the man who wears a diamond marked with kākapada, and a stranger shall lord it over his home.

119. That diamond, the top or any side of which has been rifted, which does not show a leaf-like arrangement of parts, which is devoid of lustre and which is globular, is not only void of any good property, but is positively productive of a variety of evils.

120. The mark the existence of which in any diamond imparts to it an air of apparent brokenness, is denominated trasa. Such a diamond always gives rise to fear. These good and bad qualities of diamonds have been described by Rajá Soma.

षञ्चाम ।

হীবকস্বিত যে দাগ কাকের পাদের চিল্ডের অনুরূপ, অথচ মলিন, হাহাকে কাকপদ দোদ করে। যে ব্যক্তি কাকপদ দোদস্টে হীরক ধারণ করে, তাহার সর্বনাশ, বাসগৃহ পরিত্যাপ, এমন কি মৃত্যু পর্যান্ত আসর। ১১৮।

যে হীরকের অগ্রভাগ বা কোন একধার ভয়, যাহা দলশূল অথচ কান্তিহীন, দেখিতে গোলাকার, দে হীরক অতি নির্তুণ এবং নানা দৌষের আকর। ১২৯।

বে চিহুদারা হীরককে ভার বলিয়া ভ্রান্তি জন্মে,
তাহাকে প্রাস্ন কহে, প্রাসদোঘায়িত হীরক সর্বাদা সর্বা বিষয়ে প্রাস উৎপাদন করে। দোমবাজকর্ত্বক হীরকের এই সকলপ্রকার গুণদোমের বিষয় উলিখিত হই-য়াছে। ১২০।

मूचम्।

एकमिप यस्य मृद्धं विद्वितमयनोक्चते विश्वोषेस्म । " गुणवद्धि तद्ध धार्यं वद्धं चेयोऽविभिभवने ॥ १२९ ॥ स्कुटिताग्रविशोषमृद्धदेशं मनवर्षे' पृपतैद्येतमध्यं । निष्ठ वज्रस्तोऽपि वज्रमाश् विद्यमयात्रयनाशं विधत्ते ॥१२२। यस्पेकदेशे चतजावभासो यदा भवेद्धोहितवर्षेषिनं । न तद्ध कुर्याद्धि वजुमाशु स्वस्य मृत्योद्धि जीवितानां ॥१२३॥

तर्जमा ।

निस् दीरेका भागा टुटा, या विशोध दोए, वह वजत् शुण्युक्त भयित् वव तारिकोसे भरा होए, तभी वही दीरा भएना माला चाहनेवालेको क्षमी श्रप्ने पाय रखना मनासिक निहा १२१।

जिस् घोरेका धामेका विस्ता भारा, मृद्ध पुरा धौर बीचका किस्सा मिलन घोरा ऐसा घीरा इन्द्रके समान दौलतको नष्ट करनेमाला है। १३३।

जिस् शीरेका कोई हिस्मा सज्जके क्षिटेके समान नियान रख्ता शोए, या कुल हिस्मा सज्जके क्षिटेके समान भरा शोए, यह शीरा भास्टे भार्ले भरमीका जल्द मीतका सवय्हें। १२३।

- 121. The diamond, the peak of which shews hreaches, or which is decayed, no man who seeks his welfare should keep in his house, although it should he otherwise furnished with every perfection.
- 122. A diamond, the face of which is eracked, whose top is rent, and whose centre is full of dirt, can deprive even Indra of His highest Heaven.
- 123. If any diamond is marked with a blood-red spot, or if it is throughout red-spotted, it brings a speedy death to the most hale man,

षञ्दाम ।

যে হীবকেব শৃদ্ধ ভাগ বা বিশ্বর্ণ, তাহা অশেষ গুণযুক্ত হ'ইলেও নিজহিতাভিলাধী ব্যক্তি কনাচ গৃহে বাথিবে না। ২২১।

যে হীবকের অগ্রভাগ দাটা, শৃদ্ধ বিশীর্ণ, এবং মধ্য-ভাগ মলপূর্ণ, সেই হীরক ইন্দ্রেব ইন্দ্রন্থ পর্য্যন্ত অন্য ব্যক্তির কবতলগত কবিতে সক্ষম। ১২২।

যে হীবকেব কোন অংশ বক্তবর্ণ চিচ্ছে চিহ্নিত অধবা সমুদায অংশ লোহিতবর্ণে চিদ্রিত, সেই হীরক অতি হৃদ্ধ ব্যক্তিবও আত মৃহ্যুব কাবণ হয়। ১২৩।

मस्म ।

प्रथमं ग्रणसम्पद्दान्युपेतं प्रतिवद्ध समुप्ति वस्त्यदीपं ।
अलमाभरणेन तस्य राम्रो ग्रणकीनोऽपि मणिने भूषणाय १९२८।
यस्य चते मवेच्छोयो दाको या ज्वर एव या ।
तव विमिषिमायेत तहजूं दृष्टमुच्यते ।
कर्कमं ग्रुक् यद्वर्ज्जं न तहारयते नृष् ॥ १२५ ॥
विकीणं कलकाय स्थान्नुत्कोण मयावर्षः ।
यक्षकोण भवेन्नुत्युः पद्कोणं सुममादिभेत् ॥ १२६ ॥

तरजगा।

जो घीरा पछिले गुणबुक गमभा जाय, श्रीर फेर योनेने जड़वानेने उस घीरेने श्रायेव प्रवदा घोष, श्रायीत् वध पाणि श्रीर वध श्रमक नाली ना रहे, तो ऐसा धीरा गधनेमें जड़वानेके लायेक नहि, किस्त्वियेके श्रायेनी वस्तु कभी भूषणके योग नहिं। १२८।

जिंग ्डीरें जे जसम पर होयाने से जसमा भोत्र पयदा होए, बुबारमें दाहकी हाई और सङ्ग चिम दिम घरे, यह होरा नेहाएत खाराफ होए, दून कारण उन्वो मकानमें रखना मनाविष्ठ नहिं, और जो हीरा खोजनमें भारी, नेहाएत हाम्यार, वज्जत् क्षेत्र, यह हीरा जाजाको किसी तरहये पहेर्ना उचित नहिं। १२५।

तिनकोणा घीरा समर्थका, घोकोणा घीरा बङ्गत, नरष्ठके खीदका, पाचकोणा घीरा मीतका कारण घोण श्रीर ककोणा घीरा सद्रल करनेवाला छै। १२६।

124. The diamond which at first appears possessed of good qualities, but which on being set on gold, &c., betrays defects, should never be selected for ornamentation; since a thing devoid of good properties should never be used for such a purpose.

125. A diamond the touch of which causes swelling in a wound and an increased sensation of burning in a fever and which brings on a sensation of fainting, is a bad gem and must not be treasured. The diamond which is rough is not acceptable to kings, although it may be weighty.

126. A three-cornered diamond gives rise to quarrel, a four-cornered one occasions various fears, a five-cornered one brings death, but a six-cornered diamond is productive of good.

षश्योग।

মে হীরককে প্রথমে ওপরুক্ত বলিয়া প্রতীয়দান হয়, কিন্ত প্রবর্ণাদি দারা জড়িত হইলে দোবাজ্রিত হইলা পড়ে, একপ হীরক দারা কদাচ অলকার নির্মাণ করাণ কর্তব্য নহে, যেহেতু গুণহীন বস্ত কথনই ভ্রণের উপযুক্ত নহে। ১২৪।

বে হীরকের স্পর্শে ফতে শোণ, থেরে দাহর্ছি হয এবং অদ চিমচিন করে, সে হীরক অতি ছুই, ফুতরাং তাহা গৃহে রাধা কর্তব্য নহে। এবং যে হীরক পরিমাণে ওফ, কিন্তু অতিশ্য কর্বশ, সে হীরক নৃপতিদিগের অগ্রাহা। ১২৫।

ত্রিকোণ হীরক করতের, চতুকোণ হীরক নানা ভয়ের, পঞ্চলোণ হীরক মৃহার এবং বট্কোণ হীরক মৃদ্ধনের নিবান। ১২৬। मुखम्।

हिद्वे बलघी नित्यं चिद्वे सखनायन । चतुद्देवे सखावाप्ति ग्रीकस पश्चमे द्वे ॥ १२०॥ पष्ट्देवे राजतो भीतिनृत्यु सप्तद्वे तथा । सप्टद्वे भवेन्छुद्दे वजुमित्याच पावक ॥ १२८॥ निन्छाय विपद्धुरोति मितनं धने भूषं कर्क्यं

द स से हिमितिसमत्त्वरणं खावच्छि क्षे ग्रस्त्। रेखाकामपदाङ्गविन्दुसहित स्यामृत्यवे देहिना वजु वजुविचचणस्य विभ्रयात्तसादिषार्थे स्वय ॥९२८॥

तर्जमा ।

श्वनिषुरायके मतये दोद्वका श्वेरा अध्यदेका कारण, तिनद्वका श्वेरा खबका नाग्र करनेवावा चौद्वका श्वेरा खब देनेवावे, पाषद्वका श्वेरा ग्रोक प्रयदा करने बाला। १५७।

बदलका घीरा राजमय करनेवाला, सातदलका घीरा भौतका कारण श्रीर घष्टदलका घीरा बऊत् थार्क्स है। १६८८।

प्रमेक होता चापरका सबस, मिलन होता गम देनेवाला, नाहास्त्र प्रवांत उदा नीचा होता इस देनेवाला, कम पाणि होता खककान होनेका कारण, खामक होता बडत इस देनेवाला, चीर चिर, काकपर कीर किटादार होता मौतका कारण है, दूर्स्वत पहिले खुव चाकि तरहे परस करके बाद उसको धारण करना मनाविक है। १२८।

127. A two-layered diamond, (says the Agnit Purána,) brings about quarrel, a three-layered ono is destructive of happiness, a four-layered diamond is productive of it, and a five-layered diamond occasions grief.

128. A six-layered diamond causes fear to kings, a seven-layered diamond is mortal,* while an eight-layered one is surpassingly pure.

129. Since a shadeless diamond is fraught with danger, a dirty diamond with grief, a rough diamond with unbappiness, an unfeeling diamond with intoxication, a black diamond with various troubles and a rekha-marked, a windu-marked, or a kåka-pada-spotted diamond, with death, it behoves a man to wear diamonds after minute examination.

षश्याम ।

অনিপুরাণের মতে বিদল হীরক কলহের কারণ, তিদল হীরক হথনাশক, চতুর্মল হীরক হথদায়ক, পঞ্চদল হীরক শোকজনক। ১২৭।

ষড়্দল হীরক রাজভদের নিদান, সপ্তদল হীরক মৃত্যুর হেতু এবং অউদল হীরক অতি বিশুত্ত। ১২৮।

ছাযাহীন হীরক বিপদের হেছ, মনিন হীরক শোকজনক, কর্বশ হীরক ছঃধনাযক, দ্রেহহীন হীরক মন্ততার
কারণ, খ্যানবর্গ হীরক মানারেশকর এবং রেখা কাকপদ ও
বিদ্যুক্ত হীরক মৃত্যুর নিরান; খতএব খাগ্রে বিশিউরূপে
বজের পরীকা করিয়া পশ্চাৎ তাহা ধারণাদি করা
কর্তব্য। ১২৯।

[·] Used literally ; L. mortis, death ; Eanakotta, mri, to d.e.

मृषम्।

षणुनािष च दोषेण जन्याबन्होण द्वायतं ।
तन्मृत्वाह्वेषमं भागं वजं खभते वा न वा ॥ १३० ॥
प्रकटानेकदोषस्य खन्यस्य महतोऽपि वा ।
स्मृत्वान्हत्यो भागा वज्रस्य न विधीयते ॥ १३९ ॥
स्मृत्वान्हत्यो भागा वज्रस्य न विधीयते ॥ १३९ ॥
स्मृत्वान्हत्यो भागा वज्रस्य न विधीयते ॥ १३२ ॥
स्मृत्वापिक स्मृत्यो स्वत्ति ॥ १३२ ॥
स्मृत्वापिक प्रमृत्यो स्वतीभिष्यं मणिः ।
जठरे वज्रुमम्बत्तोद् गर्भसासा विन्द्यति ॥ १३३ ॥

सर्जमा ।

जो शीरा योइ चर्वेबसे चर्वेबी है, और वह चर्वेब देखनेमे चार्य जा ना चार्य, लेकिन उन् होरेका हाम व चर्वेब शीरेके चाधे हामने बरावर भी निष्ठ शे कहा। १३०। जो शीरा बज्जत् चरेबसे चर्वेबी है, चीर वह मद चर्वेब बज्जत् योहा शोए, या ज्याहा शोए, उस शीरेका हाम बेच्येब शीरेके मोकाबेचने सतमागर्क बरावर नर्षि है। १३१।

जिस् गर्षेनेमें चयेवी चीरा जहा चीए, वह सब गहेना चगर देखनेसे बक्त भाषा घोए, सगर उसका दाम बक्त कम चोगा। १३२।

याराव घोरा गर्भिणी स्त्रोके स्त्रिय मझत् द खहावी फे, इस कारण श्रवेबी घोरेके पाम रखनेसे गर्भ निर आनेका खीष घें । १६३।

TRANSPARTION

130. It is doubtful whether those diamonds that are slightly defective, are even half as valuable as flawless ones, although their defects should escane the eve.

131. The worth of those diamonds that possess many had qualities, although all of them of a trifling nature, is not even a hundredth part of

the value of a sterling diamond

132. The value of such ornaments as are set with impure diamonds is small, although the ornaments themselves may otherwise be very fine.

133. Defective diamonds are very dangerous to youthful women under conception: the contact of such gems may lead to abortion.

प्रश्वाम ।

বে হীবক অভি সামান্য দোবদূষিত, এবং সেই দোব নকাই হউক বা অনকাই থাকুক, তাহাব মূল্য নির্দেশ হীরকের অর্দ্ধপবিমিত হয় কি মা হব সন্দেহ। ১৩০।

বে হীরক অনেক দোঘাখিত, এবং সেই দকল দোঘ অতি সামাজই হউক বা অধিক হউক, তাহাব মূল্য নির্দোব হীবকের শতভাগেব এক ভাগ নাত্রও হইতে পাবে না। ১৩১।

যে অনস্কারে দোষাপ্রিত হাবক সংযুক্ত থাকে, দেই অনস্কার মতি উৎকৃষ্ট হইলেও তাহাব মূন্য অতি সামাত হইয়া থাকে। ১০২।

ছুই হীরত গর্ভিণ দ্রীলোকদিশের পবে অত্যন্ত দোনা বহু, বেহেতু তাদৃশ হীরকসংশর্গে ভাহাদিশের শর্ভপাতের অধিক সম্ভাবনা। ১০০।

सूचम् ।

चयसा पद्मरागेण तथा गोमेट्केन च। वैद्र्यस्प्रिटकास्याञ्च काचेश्वाप एणम्बिधः॥ ९३४॥ प्रतिरूपाणि कुर्वन्त वज्य कुश्रवा नराः। परीचा तेषु कर्भव्या विदक्षिः सपरीचकै ॥ ९३५ ॥ चारोक्षेवनगाणीस कार्यं तेषां परीचणं। चयते गाणसंघर्षात् चूर्णतां याति चूर्णितं ॥ ९३६ ॥ चाराम्बं नेपियता तु रीट्रे चैव परिचिपेत्। क्षचिमं याति वैवर्णत सहजञ्जातिदोष्यते ॥ १३७ ॥

तर्जमा।

लोघा, माणिक, गोमेद, लगुनिया, स्फटिक श्रीर हर तरहका काच, इस गव घीजाने जरियेसे आच्छे कारिंगर लोक फरेबी घीरा वानाते है, इसलिये घीरा खरिदनेके समे चाच्छे जहरीचाके दारा घीरेका परीचा कर्ना मना-'सिफ चै। १३४। १३५।

चूणा चादि चारसे, धिसनेसे चौर ग्राणसे इन तिन चीजामें डीरेकी परीचा डोति डी, फरेबी डीरा डोनेसे चूणा चादि चारके सदीगसे चूर हो जावेगा, चौर धिमनेसे चौर शायमे जलद धिम् जायेगा, लेकिन चासल होरा डोनेसे सभी घटे, वादेशा नहिं, अर्थात् समान रहेगा। १३६।

चार चौर चिम दीनको मिलाकर चीरेपर लेप करकी धूपमे गुसाकर पाणिसे धोडाचे तो भठा दीरा मयला को जावेगा, लेकिन चामल कीरा इस ममालेके देने से और भी चमकदार हो जायेगा। १३७।

TRANSLATION.

134—135. Skilful lapidaries make use of iron, the ruby, the gomeda (agate?), the lapis lazuli, crystal, and glass of various colors, in fabricating false diamonds; therefore, before buying diamonds, they should he first tested by a skilful judge of precious stones.

136. There are three ways of testing a diamond; 1st, by mixing it with ashes; 2ndly, by rubbing; and, 3rdly, by whetting a weapon over it. A falso diamond is reduced to powder by the first test, and wears away by the second and the third,—changes which can never be produced in real diamonds.

. 137. Again, smear a diamond with a mixture of asbes and acid, and dry it in the sun; and if it is a false diamond, it will show loss of lustre on being washed, but a real one will receive additional bril-

liancy.

অহ্বাদ।

শৌষ্ট, পদ্মরাগ, গোমেদ, বৈর্ধ্য, ক্ষটিক এবং বিভিন্ন বর্ণের কাচ, এই সকল বস্তবারা হৃনিপুণ শিল্পী ব্যক্তিরা, হীরকের প্রতিক্রপ অর্থাৎ কৃত্রিম হীরক প্রত্তত করিয়া থাকে, অতএব হীরক ক্রম করিতে হইলে সক্রকুশন স্থপরীক্ষকদারা অত্রে পরীক্ষা করিয়া পশ্চাৎ ক্রম্ন কর্বা কর্তব্য। ১৩৪।১৩৫।

কারদানোগ, ঘর্ষণ ও শাণ এই ত্রিবিধ উপান্তে হীরকের পরীকা হইয়া থাকে, হীরক কুত্রিন হইলে চুর্গাদি কার-সংযোগে চুর্প হইয়া বায়, এবং ঘর্ষণ ও শাণ দ্বারা কয়প্রাপ্ত হয়, কিন্তু প্রকৃত হীরক কদাচ উক্ত পরীক্ষায় বিকৃতভাব ধারণ করে না 1 ১৩৬।

ফারযুক্ত: আম হীরকে লেপন করিরা রোচ্ছে উক করত ধৌত করিলে কৃত্রিন হীরক বিবর্গতা প্রাপ্ত হয়, কিন্ত জরু-ত্রিন হীরক পূর্বাপেকা অবিকতর দীপ্রিশালী হইয়া উঠে। ১৩৭।

मूचम्। प्रथिया यानि रहानि ये चान्ये लीइधातवः।

सर्वाणि विविधेदनं वन् तैने विविखते । १३८॥ ग्रकता सर्वेरहानां गौरवाधानकारलं।

वर्जे तु तद्दैपरीत्य ऋरिभि: परिचत्त्रते । १३८ । जातिरजाति विजिखति जाति विजिखन्ति वज्रकृषविन्दाः । वर्ज वेज विलिखति नान्येन विलिखते वर्ज । १४० ॥

तर्जमा ।

जमीनपर जित्ने किसिमके राज चौर लोहा वहरीरह सम चीन है, उन तामाम चीज डीरेस कटति है, बेकिन

घीरा किंधी चीजमें कट निंह सका। १३८ । रत्नपर्ची पण्डितोंके सतके अनुसार भारीपन, सन रत्नोका उमदाका कारण है, लेकिन हीरा इसके खेलाप तारिफका सवव है, अर्थात् हीरा कद्मे बड़ा और

चौजनमें कम छोना तारिफका मवव छै। १३८। चलविम चर्चात् मांचे चीरेके क्षरियेमे लविम चर्चात् भुठा भीरा कर जाता है, और चामल भीरा कुर्वान्स चयवा चामल कीरेके जिर्थेसे कट जाता है, लेकिन चीर किसी चीक में निह कटेगा। १८०।

TRANSLATION.

138. The diamond can make scratches on every other hard substance, but itself is not susceptible of such impression by ever so hard a thing.

139. Ancient authorities in the science lay down heaviness as the most valuable quality of all gems, but this does not apply to diamond; i. e., tho less the weight of a diamond in proportion to its bulk, tho greater is its value.

140. An unreal diamond can be scratched by a real one, as also the latter by a *Luruvinda*,* or by a real diamond, but not by anything else.

অমুবাৰ।

পৃথিবীতে যতপ্রকার রব্র বা লোহাদি কটিন পদার্থ আছে, সকল বস্তুই হারকদারা অঙ্কিত হইতে পারে, কিন্তু অন্য কোন পদার্থ দাবাই হারককে অঙ্কিত করিতে পারা বার না 1 ১০৮ ।

রহুতত্ত্বিৎ পণ্ডিতদিগের নতে গুরুতাই দকল রত্তের গোবরের কাবণ, কিন্ত হীরকে তদৈপরীতাই অধিক প্রশং-দনীয অর্থাৎ হীরক আকারে হহৎ হইয়া পরিমাণে যত লঘু হইবে, ততই তাহার গোঁরব হৃদ্ধি হইবে। ১১৯।

অকৃত্রিম হীরক্ষারা কুত্রিম হীবক অন্ধিত হয়, এবং প্রকৃত হীরক কুরুবিদ বা অক্তরিম হীবক্ষাবাই অন্ধিত হইয়া থাকে, তম্ভিম অস্ত কোন বস্তবারাই অন্ধিত হইটেত পারে না। ১৪০।

^{*} A kind of ruby,

मूचम्।

वजुाणि सुकामणयो येच केचन जातय ।
न तेपा प्रतिवद्वाना भा भवत्यूद्धिगमिनी ॥ ९८९ ॥
वन्यूट्यं ब्राह्मणे प्रोक्षं पादैनानेन वाज्जे ।
चनेनेव क्रमेणैव मणिमूट्यं विधीयते ॥ ९८५ ॥
चतुर्विधमिदं वजुं यहक्षं जातिभेदत ।
चतुर्विधनृर्वितिभर्षायमाणमन्द्रमात् ।
चतुर्विधनृर्वितिभर्षायमाणमन्द्रमात् ।
चतुर्विधनृर्वितिभर्षायमाणमन्द्रमात् ।
चतुर्विधनृर्वितिभर्षायमाणमन्द्रमात् ।

सर्जमा ।

चीरा, मीति, माणिक वहनीरह चगर बन्ट जडाणी चोए, तो उस्की किरण उपरको ना आवेगी। १८१। बाह्मण चीरेको जो दास घोगा, चनिवर्ण चीरे^{का}

तास्रण करिको जो दास क्षेत्रा, स्विवर्ण करिका कारणाना दास घट जावेगा, विश्ववर्ण करिका आधा दास और ऋद्वर्ण करिका चीवाह दास क्षेत्रा। १८४।

वाञ्चायवर्ष होरा वाञ्चायको, चित्रवर्ष होरा चित्रवे विकार वि

TRANSLATION.

- 141. When a diamond, a pearl, &c, set on gold or any other precious metal, look downward, their rays do not radiate upwards
- 142. The price of a Kshetriya diamond is onefourth, that of a Vaisya diamond one half, and that of a Sudra diamond three-fourth less than the price of a diamond of the Brahmin class.
- 143. If a kmg wearing a diamond belongs to the same caste that it belongs to, the circumstance is productive of good; the reverse brings about disease and grief

অহবাদ।

হীরক, মূকা এবং অপবাপব যে কোন মণি স্থবর্ণাদি-দ্বাবা প্রতিবন্ধ হ'ইলে অর্থাৎ তাহাদেব নিম্নবন্ধ করিলে তাহাদিগের কিরণ কবনই উর্জগানী হয় না। ১৪১।

ল্লন্নর্থ হীবকের যে মূল্য হইতে পারে, ক্ষত্রিযার্থ হীরকেব তাহাব একপান দূনে, বৈশুবর্ণ হীরকেব হিপাদ দূন এবং শুদ্রবর্ণ হীবকে ত্রিপাদ দূনে মূল্য হইবা থাকে।১৪২।

ন্তাহ্মণাদি চাবি দ্বাতীয় হীবক ন্তাহ্মণাদি চাবি দ্বাতীয় মৃপতিকর্ত্ক ধৃত ইইলে শুভ ফল প্রমব করে, ত্রিপবীতো বোগ, শোকাদি ভবেব নিদান হয়। ১৪০।

च्रथ वज्नमार्**खविधि:**।

मृष्टम्।

षगुडं कुरते वर्ष कुष्टं पार्व व्यथां तथा। पार्णुता पदुरत्वक्ष तसात् वंगोध भारवेत्। १८४। गृष्टीत्विक्त एमे वर्ष व्याचीकन्दोदरे चिपेत्। माष्टिपीविष्ठया विष्ठा कारिपानी विषायवेत्। १८५॥ विद्यामाया पतुर्वामं यासिन्यनोऽसम्बन्

भीरेका सारनेका छपाय ।

तर्जना।

अगुद्ध कीरा चौषधमें व्यवहार करनेने कुछ, गार्वका वेदना, पाएडुरोग चौर खञ्जता कोए, दूसलिये पहिले कीरेको संगोधन करके पीक्ष चौषधमें व्यवहार करना

चाहिए'। १४८। शुभ दिनमें भीरेको कल्डीबारीरसमें भिजाकर भर्सका विष्ठा सेप देकर सूंटेका चामसे दस्य करना मनासिक

है। १८५। नामाम रात वडी प्रकारसे द्रस्थकर फ्रजोरसे घोर्ड का मूनमें भिजाकर जागमें द्रस्य करा चिंचत ही, यडी प्रकारणे सात दिन द्रस्य करनेने छोरा सशोधित हो लागा। १८६।

THE PROCESS OF REFINING A DIAMOND.

TRANSPATION.

144 Impure diamonds when used in medicine lead to leprosy, pleurisy, jaundice and lameness. It is therefore highly advisable to refine a diamond before using it medicinally.

145. The process is on some auspicious day to dip a diamond in the juice of kantakári* and then to burn it in a fire made by direct pieces of the dung

of cow and buffalo

146. The hurning should be carried on for a whole night; in the morning the diamond should be put under borse's urine, and again burnt By this process of hurning being continued for seven days together, the diamond will be refined.

शैतकगात्रविधि ।

षञ्याम ।

অন্তন্ধ হীবক ঔবধে ব্যবহাৰ কবিলে ভদ্ধাবা কুৰ্চ, পার্থ-বেদনা, পাতুৰোগ ও পদুভা জন্মে, অতএৰ অন্তো হীরক সংশোধন করিয়া পশ্চাৎ উন্নয়ে ব্যবহাৰ কৰা কর্ত্ব্য'।১৪৪।

শুভ দিনে হীবককে কণ্টীকাবীরণে ডুবাইয়া মহিষের বিষ্ঠালিগু কবিয়া ঘূঁটেব আওণে পুডাইবে। ১৪৫।

সমন্ত বাত্তি উক্তপ্রকাবে দগ্ধ কবিবা প্রাতঃকালে অধ মূত্রে ভিজাইযা পুনরায় অগ্নিতে দর কবিবে, এই ভাবে সাত দিন দগ্ধ করিলে ধীরক শুদ্ধ হুইবে। ১৪৬।

Solanum jaquiri.

मुचम् ।

षिद्रसैन्धवसंद्रके चिपेत् काये कुलत्यने । तप्तं तप्तं पुनर्वे कामवेद्धसा चित्रप्तधा ॥ ९४७ ॥ बाद्य प्रिचा भन्ने वीर्ये वर्षे पीख्यं करोति च । पेवितं सर्व्यरोगप्तं मृतं वर्जं न संगवः ॥ ९४८ ॥ व्याषीकन्द्रवे चित्रुा सप्तभा ग्रुटिते पचेत्। सर्वद्रुकं कास्त्रने पाचे निग्रष्टा स्रापयेत् सभी ॥९४८ ॥

तर्जमा।

चित्र और सैन्धन नेमकमंत्रक मायकलाइका कृायमें भिजाकर एकिय बार क्षप्त करनेसे चीरा भस्न चीर जागा। १४७।

मंगोधित घीरा घटनीका घातु, बहनका पुष्टि, बता भीया, रज्ञ घीर सुख पुङ्क ससुदायका दृष्टि घीर वर्ळ-प्रकार विसारीका शान्ति करेगा। १४८ ।

पिहना घोरेको कपटीकारी गामक रसमे दुवाकर सात वार प्रठ पाकमे (एक महिके कटोरिसे को चीन मझ करना घो, वह रावकर दुवेरे महिके कटोरिसे वन्द करके माहि चौर मोबर मिनाकर सुम लेप करके चागमे ज्वलानेकी प्रटपाक कहते चैं) पाक करना चाहिए, बाद उसके एक काषेके बन्तेनसे एक मेटक रखना चाहिए। १४८।

TRANSLATION.

147. Then immerse it in a gruel made of kaldya,* into which assafeetida and saindhava salt also enter as ingredients, and lastly heat it repeatedly twenty and one times. By this means, the diamond will he reduced to ashes.

148. The imbibition of a purified diamond conduces to longivity, general development of the hody. strength, energy, heauty of complexion and happi-

ness, and effects cure from every distemper.

149-150. The process of burning a diamond is as follows:-Put the diamond in the juice of kantakári, place it ın an earthen-pot, placing another over it, smear the two with hard clay and cow-dung, then burn the whole; this should be repeated seven times. Then steep the

जङ्गाम।

হিন্ন ও সৈদ্ধবলবণসংযুক্ত কলাযের কাথে ভিজাইযা একবিংশতিবার পুনঃ পুনঃ তপ্ত করিলে হীরক ভত্মবং इरेग्रा यारेद्य। 289 ।

সংশোধিত হীরকদেবনে আয়ু, শবীবের পুটি, বল, वीवज, वर्ग ७ इवं धरे मम्नायत्र इक्ति धवः मर्दाधकाव

রোগের শান্তি হয়। ১৪৮।

প্রথমতঃ হীরক্তে কণ্টীকারীরসে ডুবাই্যা সাতবার পুট-পাকে (এক খানি খুরী বা ভদাকার কোন মূৎপাত্তে কোন বস্তু রাথিয়া অপর একথানি তাহাতে নুক্তাকারে আচ্ছাদন করিয়া আঠালমাটা ও গোন্য ইত্যাদিব লেপ দিয়া সেই পাত্র অমিতে দল্প করার নাম পুটপাক) পাক করিতে হয়, পৰে একখানি কাংস্থপাত্তে একটা মণ্ডুক ধবিয়া রাথিবে 1১৪৯।

Various leguminous seeds, chiefly of the order Phaseolus. Williams.
 † A kind of rock salt found in the country of the Sindhu (Indus) Ibid

मुखम्।

य भीतो भूवयेतच तसूचे बजुमावपेत्। तप्तं तप्तस्य बद्धधा बजुसीयं मृतिभेवेत्॥१५०॥ रसे यच भवेहजुं रसः सोऽमृत उच्यते। भसीभावगतं युक्तरा बजुबत् कुरुते ततुं।१५९॥

तर्जमा ।

वह मेदक खीक करके उस् वर्त्तनमें मूत देगा, बाद उस्कें उसी मूतमें वह ज्यला छ्या हीरा मिगोना होगा, और फेर ज्यागमें ज्यलान होगा, इस तरहरे वह हीरा साम ज्यात भक्त हो जायेगा। १५०।

धीमें वंबीगते जो दाखीया तैयार कि आती है, वध धनुतके यमान है, इस्विये वधी दाखीया खानेने बदन धीरेके यमान मजुनु सीएगा। १५१।

रति चेरिका वदान।

- with the same

TRANSLATION

diamond in frog's urine held in a pot composed of zine and copper, and heat it over and over in fire. The diamond will then have been entirely burnt, and can be reduced to powder

151 Those medicines into the composition of which the diamond dust enters are like ambrosia, and the imbibition of these imparts adamantine strength to the limbs.

षञ्गाम।

মণ্ডুক ভীত হইবাসেই পাত্রে মৃত্র পবিত্যাগ কবিবে, সেই মৃত্রে পূর্ব্বপুটপাকনম হীবক উল্লিবিত মণ্ডুকমৃত্রে ভিন্না ইয়া পুনঃ পুনঃ অগ্রিব উত্তাপ দিলেই হীবক দম্ম প্রস্তর বং চুর্পাকাবে পবিশত হইবে। ১৫০।

হীরকভ্ষদাবোগে যে দক্ল ঔষধ প্রস্তুত হয়, তৎনমু দায অনুভদদৃশ, দেই ঔষধ দেবনে দেহ বজের ফায় দুঢ় হয়। ১৫১।

ইতি হীরব।

THE DIAMOND.

Its properties.

HE Diamond might appropriately be called the king of gems. Whether, in respect to beauty, lustre, transparency, hardness or density, there is no other stone yet discovered that can surpass it. In fact it is the hardest of all substances-it resists the action of the file and can only be cut by its own dust. It is known in Sanscrit as the bajra and in the West, was called, in times of old, the Adamant, both the terms signifying hardness. The origin of this precious stone is lost in the mist of antiquity. The imagination of poets has supplied the data which history has failed to afford It is said that "Diamond was the name of a beauti ful youth of the Island of Creta, one of the attendants of the infant Jupiter, in his cradle. The God who placed, among the celestial bodies, the nymphs and goat that had reared him, could not leave this youth subject to the ills 'that flesh is heir to' Diamond was transformed into the hardest and most brilliant substance in nature"

All the opinions that have been collected as to the origin and formation of the Diamond can be placed under two heads, (a) that it is formed immediately from carbon or carbonic acid by the action of heat: (b) that it is formed from the gradual decomposition of vegetable matter. Its speČ.

cific gravity is about 3.5; its cleavage, very perfect: its refraction, simple; it is transparent and translucent; infusible, and unassailable hy acid. Doubts were entertained as to its combnstibility, but experiments made by scientific men, on various occasions, have led to the discovery of the fact that it was only hy entirely shutting out the air and therefore the oxygen with which the carbon combines, that the Diamond could be preserved from hurning; whereas, by simply letting in the air of which oxygen is a constituent part, it would burn just as well as common coal. The temperature must he very high to burn a whole Diamond. Small Diamonds and Diamond-dusts can be hurnt up in a much lower degree of temperature. The crystalline form of the Diamond is either octrahedron (as found in India) or rhombio dodecahedron (as found in Brazil). Its magnifying power heing greater than that of glass, it is sometimes used for microscopic purposes. It possesses, in addition to its strong refracting properties, the power of reflecting the coloured rays of light. It becomes phosphorescent, on its heing exposed to sunshine and remains so until it is removed or even when covered with cloth or leather or paper. It is known to be a non-conductor of electricity. but by friction, however, both in the rough and polished state, it becomes positively electric, though only for a short time.

Where found.

THE ancient authorities seemed to agree in considering India to be the place from which Diamond was first supplied to them, but none of them could point out the particular locality where it was first discovered. Pliny says very vaguely that "the gem-producing rivers are the Acesines (Jenauh) and the Ganges." Dronysius Periegetes enumerates the Diamond amongst the numerous gems picked up in the river-beds by the natives of India, as anciently understood, lying to the east of Mount Paropanisus and Ariana. All that Mahomed Ben Mansur knew of the Indian Diamond mines was the fahle, that " in the eastern part of India, there is a deep valley inhabited by serpents, where the Diamond is produced, but some believe it to be gotten in the mines of the Jneut (Ruby)."

Amongst the many fahles describing the mode in which Dinmond could be obtained, is one which says that when Alexander visited the mountain Zulmeah (called by others, Sarandip) where the inaccessible valley of Diamonds is situated, he directed pieces of fiesh to be thrown in; vultures picked these up with the precious stones attached to them and dropped them on various parts of the carth, in the course of their flight. Marco Polo, who travelled in India, in the beginning of 13th century, gives accounts of the manner in which Diamonds were then obtained—which agree materially with the tale given above. The first authen-

the minds of many of the impression that Golconda produces Diamonds Goleonda proper has no mines, nor any, in its immediate vicinity Tho stones were found at the base of the Neela mulla mountains in the neighbourhood of the Kistna and Pomar Rivers, they were then brought to Golconda in a rough state, and there cut and polished This place becoming the principal mart it was commonly supposed that the gems were found close by The Fort at Golconda was the store house of the great Diamonds in the Nawah's domi-The discovery of the mine, which has mado Golconda so fimous is attributed to a poor shepherd who came across what he thought a pret ty pobble, in the course of tending his fleels This he bartered to another for a little rice After passing through several hands, it fell, at last, into those of a merchant who at once I new what it was and discovered the mine, after considerable trouble in searching. It has been mentioned before that Tavernier visited the mines of Raolconda This place comes within the province of this group Its position is towards the middle tributary of the Listua There are other mines to the eastwarl, on the lower Kistna The most celebrated amongst these, is the one called 'Coloor by the Persians, and "Game by the natives, situated about 15 miles north west of Masulipatam. This was also visited by Twermer and was described by him as being tl " birth place of the " Great Mogul, ' which was said to have weighed 787½ carats in its rough state and 297 after it was ent.

4th —The Sumbulpore group, north of the Godavery, on the central tributary of the Mahanuddy. This Diamond district extends to the immediate vicinity of Sumbulpore only and between the Rivers Mabanuddy and Brabmine. In the year 1818, the year in which Sumbulpore was annexed to the British territories, a Diamond was found here which weighed \$4 grains, and although of only the third quality it was said to have been sold for Rs. 5,000.

5th.—The Panna group in Bundeleund, hetween the Rivers Sonar and Sone. The Diamond heds in this group lie near Bengal, Behar and Allahabad on the south bank of the Ganges. The most productive Diamond mines in this group were, in 1860, at the village of Sukariah, situated about 20 miles from Panna. Four kinds of Diamonds were found here; 1st Mottchal, clear and brilliant; 2nd Manik, verging in color to green; 3rd Panna, with a faint crange tutt; 1th Mansput, dark colored.

There are also Diamond mines in Siberia, Brazil, South Africa, Australia, Borneo, Sunnatra, Java, and the Celebes Islands. It had been the theory of Pliny and other ancient naturalists that Diamonds were generally to be found in the gold beds, and this has most remarkably been borne out by facts. Upwards of 50 Diamonds were said to have been found in the gold mine of Adolph, (Siberia), near the Ural Mountains (1830 to 1833)

The discovery of the Diamond mines of Brazil which occured in 1730, was, like that of the Indian mines, the result of chance Some miners search ing for gold in the districts of Serro do Frio, came across certain pebbles of peculiar huo and lustre, which, when carried home, were given to children and used as counters in card play. They fell soon after into the hands of an officer who had spent some years at Goa in the East Indies Struck with their symmetry and weight, he crused some of these stones to be sent to Lisbon, the Dutch Consul at which place, having examined them carefully, pronounced them to be genuine Diamonds The Diamond district of Serro do Prio is about 60 miles in length and 27 in breadth Diamonds live also been found in the remote provinces of Goynzes and Matto Grosso At one time the pre judice against the Biazilian stones was so strong that the merchants were obliged to export them to India and thence to Europe in order that they might pass for Indian Diamonds The places which yielded the greatest quantity of Diamonds were Diamantina (in the province of Minas Geraes) Balua (the old capital of Brazil,) and the beddings in the Paragnay and its many tributaries

In 1840, W Hencurt de Thur, announced to the Academic des Sciences that Drimoids had been discovered in the River Guinel, in the Algerian province of Constantine, Africa,—mingled with gold dust brought down by the stream. One specimen weighing 3 carats was bought for the Ecole des Mines, Paris; another of 5 grains for the Musée de L'Histoir Naturelle, (Museum of Natural History) and the 3rd, by the Marquis de Drée. Tho discovery of the Cape Diamonds is connected with a story very much the same as that of Diamonds of other places Amongst the number of pebbles used as playthings by a child of one Mr Jacoh (a Dutch farmer who had settled near Hope Town). was one pretty stone whose brightness attracted the attention of the farmer's wife. This was after wards shewn by Mrs. Jacob to a neighbour, named Schalk Van Nickerk, who requested Mr. J. O'Reilly, (a hunter and trader, then passing through the interior of the country.) to ascertain its nature. This pebble being sent through Mr Boyes to his friend Dr G. W. Atherstone, of Graham's Town, that excellent mineralogist holdly declared it to be a real Diamond This was in March 1867, when the Universal Exhibition in Paris was about to open The first opportunity was taken to present it at the Exhibition, where it remained for the whole period it was open and was, at its close, purchased by Sir Philin Wodehouse, then Governor of the Colony, (and afterwards the Governor of Bombay,) for the sum of Rs. 5,000. The weight of this Diamond was known to he 21.2 carats. Several other fields have since been discovered, of which some lie in the Colony of Griqualand, west, which has come under British rule since 1871.



Australia was generally known to he the land of gold, but now it hids fair to be the land of Dia monds too New South Wales was the only place ın Australia which bad yielded a sufficient quanti ty of Diamond, such as to invite exploration In a certain report written in 1851 Mr E H Har graves and the Revd W B Clarke referred to some specimens of gold and to a number of gems including what they called rather vaguely, "3 small one of the Diamond kind ' which was found in Reedy Creek near Bathurst But it was chief ly the Revd geutleman named above who first drew public attention to the Diamonds of New South Wales Four specimens were brought to him from the Macquaire River near Sutton's Bur in September 1859 and a fifth from Burrendong in Octoher In the mean time he had collected Diamonds from Pyramul and Calabash Creeks It was in July 1869 that a company called that of the Australian Diamond Miner's began in right earnest the work of hunting after Diamonds A few years ago a Diamond field has been opened up near Binjers in the New South Wales This town is situated on the Horton (popularly known as the Big River) and is about 100 miles north of Syd ney In 1832 some Diamonds were discovered near Lehuen, about 20 miles south east of Ade hade In 1862 the discovery of a Diamond in the Ovens district (in Victoria) was announced by Mr George Foord It was a transparent yellow erystal, with perfect edges, weighing about 2 grains.

The first Australian Diamond ever brought to England was presented by Sir Thomas Mitchell to the Museum of Practical Geology in Jermyn Street. This small stone weighs \$\frac{a}{4}\$ of a carat and was found near Ophir, west of Bathurst, New South Wales.

The Diamond mines of Borneo are all on the west side of the mountains known as the Ratoos Range.

About the year 1840, some Diamond beds were discovered in the district of Dolodoulá in the Island of Sumatra.

COLORED DIAMONDS.

The Hindus divido Diamonds into four classes, according to their castes. Those that are of clear and pure water belong to the Brahmana class; those that are clear and are of the color of honey, to the Kshetriya; the eream-colored, to the Vaisya and the greyish-white, to the Scalra. Diamonds of several colors have been found, principal among which are the Blue, Red, Green, Olive, Black, Firecolored and the Yellow.

The Blue Diamond is a thing of great rarity and, consequently, of very great value. The first Blue Diamond on record was the one bought by Tavernier

in India, in 1642, and sold to Louis XIV. It weighed in the rough, 1121 carats and 671, when cut and kept in the French Regalia. In 1792, it was abstracted from the Garde-Meuble, where it was kept with the rest of the French Regalia, after they had been seized. All trace of this stone was lost since that period till 1830 when a Blue Brilliant was found in the possession of one Mr. Daniel Eliason, which was perfectly identical with the lost stone in quality and color. It was afterwards traced to Mr. Henry Thomas Hope and was then known as the Hope Diamond, weighing 441 carats. This difference in weight with the original stone is thought, by some conjecturers, to have been due to reduction by cleavage. The smaller part weighing 6 or 7 carats (most assuredly the cleavage of the larger one) turned up in the market in April, 1874. It was purchased in Geneva at the sale of the late Duke of Brunswick's jewels and now passes by the name of the "Blue Drop Diamond."

The only specimen of a red Diamond known to English jewellers is the one bought by Mr. Joseph Halpben of Paris, from a London firm.

A beautiful green stone of 80 grains is said to have fetched Rs. 360, at the sale of Marquis do Drée. The King of Saxony is in possession of a green Diamond which forms the button to his state lat. The finest specimen of a Diamond of this color was obtained for Rs. 2,000, about 20 years ago.

It was afterwards sold for Rs 3,000 It subsequently fell into the hands of a jeweller in Bond Street, who sold it to an American gentleman for Rs 6,000 Mr Charles Drayson is its present owner and is known to be quite unwilling to part with it

Black Diamonds of very great beauty sometimes come from Borneo. They are so remarkably hard that the ordinary Diamond dust cannot make the slightest impression on them. They can be cut or polished by using their own dust. A coul black Diamond was exhibited at the World's Pair of 1851, by Mr. Joseph Meyer. It weighed 850 carats A black Diamond was seen about nine years ago, at Charles Nephews & Co., Jewellers, of Calcutta

The yellow Diamonds are the most common of all

Mode of Cutting-Indian and European

The Diamond, as mentioned hefore, can only be cut by itself in the form of n fine powder, which is generally prepared from defective stones and from the refuse in cleaving and cutting. This being put into a mortar of hardened steel is beaten until it is fine enough for use. Reference to the fact that Diamond is made to cut itself, is made in the touching verses composed by Charles I, on the night after his condemnation.

'With mine own power my majesty il ey wound, In the king's name tie king himself's uncrowned, So doth the dust destroy the Diamond R 15

The art of Diamond cutting seems to have had its origin in India and that, at a very early period Indirect cyidences might be adduced to support this fact Garcias ab Horto, (writing in 1565,) remarks that the Indians preferred the Diamonds of the "old rock," particularly those in their natural state,. (which they called "Naifes,") to those that were polished by human art Tavernier in visiting the Roalconda mines in 1665, found a large number of Diamond cutters at work there them was furnished with a wheel of steel about the size of a dinner plate. They worked on only one stone at a time but did so with great rapidity The principal consideration which guided the Indians in cutting Diamond was that it should lose as little of its size as possible and they would rather leave it in an irregular shape than diminish it to any great extent-a practice, in direct opposition to the system now adopted in Europo

The discovery of the art of cutting and polishing Diamond by means of its own dust, is attributed to Louis de Berquem, of Bruges, who is known to have constructed, in 1476, a polishing wheel in which Diamond dust was used instead of Corundum, which the Chinese and Hindus had hitherto employed. But there are several instances to prove that Diamond cutting was known in Europe, previous to this time. The clasp of the royal cleak of King Chirlemagne was set with Diamonds. In the year 1290, a corporate body of gem polishers

and cutters was formed in Paris; and in 1373, there were Diamond-polishers in Nurnherg. 1434, Guttenherg learned gem-cutting and polishing of Andreas Drytzehen of Strasbourg. Amongst the jewels of Louis, Duke of Anjou, exhibited in the years 1360-1368, were several Diamonds, one of which was cut into the shape of n shield; another, in the form of a round mirror; a third, in that of a lozenge, &c. &c. &c Of the pupils of Louis de Berquem, some went to Antwerp, some to Amsterdam, and others to Paris. The Diamondcutting made considerable progress in this last place, under the patronage of Cardinal Mazarin. He had ordered twelve Diamonds of the French Crown to be newly cut and these were henceforward known as the "twelve Mazarins" At the present time, Diamond-cutting is a flourishing trade in Holland and is chiefly in the hands of the Jewish inhabitants Diamonds are now cut in a variety of forms, the principal among which are the Brilliant, Rose, Table, and the Lasque.

The Brilliant form is said to be the crowning invention in the art of Diamond-cutting. It is the form most esteemed, as it exhibits the peculiar lustre of the stone to the best advantage. But in this there is a larger waste of the material than in

[•] After they had duappeared after the Revolution of 1830, no one knew what became of them. At the recent betroftal of king Alphono with Princess Mercede, an Amstern unretaint cause to Maried with series Damonds which he said was commissioned to sell by an over who washed his name to be also served. Completed authorithes have, upon careful examination, pronunced them to be the 'ung lost Mazzenia.



any other mode This style of cutting was introduced by Vincenzio Peruzzi (or Vincente Perggi,) of Venice, in the latter end of the 17th century "The Brilliant is formed of two truncated pyramids by a common base, the upper pyramid being much more deeply truncated than the lower, the upper side of the stone presenting a table of 32 facets inclined under different angles, and the underside, 25 facet The correspondence between the upper and lower facets is arranged so as to multiply the reflection and refraction' Some explanation is necessary to render the technical names of the several parts of a cut Diamond intelligible to the lay reader "The plane surface at the top is called the table, the bottom plane is called the culet or culette, the junction of the upper truncated pyramid with the lower is the girdle, and the lower pointed portion is called the parilion The facets are small triangular spaces or planes" The Brilli ant is said to be single, double or old English cut (otherwise called the star single cut), according to the number of facets The English cutters make the girdle rather sharp but the Dutch make it broader Brillonéts are those stones which are cut as Brilliants on the surface but have neither culette nor gurdlo These are very rare

The "Rose" cut has been in uso since 1520 and resembles an opening rose bud It is formed by covering the rounded surface of the stone with equilateral triangles, placed base to base, making

the figure of a rhomb. The number of facets together with their position determines the different names of the Rose. Thus 24 facets make a Dutch Rose; the same number, but less raised, a Bulliant Rose, 36 facets, a Rose Recoupée &c. The circular stones are hest suited for "Rose" cutting

The Table cut is made of those stones which, with considerable breadth, are of very trifling depth. It is produced by a series of diminishing four-sided planes below the girdle.

Losques are formed from flat or veiny Diamonds and are said to be manufactured in India. The Indian cut has according to some, an upper part, lower part, and girdle Its usual form is that of a single-cut Brilliant But as the effects produced are not of much consequence, the stones are generally re-cut

The point-cut was well known to Kentman who wrote in 1562. Some precious stones may either be cut as four-sided pyramids, or are so formed by-polishing the faces of the octahedron and making them exactly true and regular. Thus style is only found in old ornaments

Engraving.

According to Blum, the discovery of the art of engraving the Diamond is assigned to Ambrosius Caradosso, a Milanese, and ongraver to the Mint of Pope Julius II Ho is said, in the year 1500, to have executed upon a Diamond the figure of a Father of the church. But Paolo Morigia gives the credit of the discovery to Trezzo, the famous cameo artist of Milan and asserts that his first attempt was the Coat of Arms of the Emperor Charles V. Clement Bira go, a pupil of his, is known to have engraved upon a Diamond a portrait of Don Carlos, intended as a hetrothal present to Anna, the daughter of the Emperor Maximilian II He is also said to have engraved on Diamond the Spanish Arms as a signet for the same prince One Jacobus Thronus (believed to be a Hollander) engraved on a Diamond, the Arms of Mary, Queen of Scots Among the Hope precious stones, there were several engraved Diamonds One of these had the bust of the Emperor Leopold I on a large Table Diamond Costanzi, who flourish ed at Rome in the heginning of the 18th century, is known to have executed several engravings on Diamonds, prominently amongst them, a Leda and tho heads of Antonius and Nero

In the collection of Her Most Gracious Majesty, our Empress, is preserved the signet ring of Charles II, when he was the Prince of Wales, tho device of which is the ostrich plumes between the letters C and P, very neatly cut upon a large yellow Diamond, a table ½ x ½ inch in dimensions, quantify fashioned into a heater-shaped seven-sided shield Louis Siries, gold smith to Louis XV, is also said to have done some engravings, one of which is reported to be a very minute head of Julia, (daughter

of Titus,) executed upon the upper table of a regularly cut Brilliant.

The price of Diamond Its flaws and defects, mode of testing

THE price of Diamond, as of any other com modity, depends entirely upon the law of supply and demand It is therefore well nigh impossible to fix a price which would be a safe guide to the intending purchaser, for all times. Approximate piloes can, however, be given, when the market is supposed to be normal. In no other object of commerce, there are so many faults and imitations, of which the inexperienced should beware, as in Diamonds and other precious stones The value depends materially upon the degree of perfection in which the articles are found when offered for salo Amongst the most frequent faults aro (1) feathers, se, little rents or fissures in the inside of the stone (2) clouds, ie, gray, brown, and white specks, which look very much like clouds give great deal of trouble when working the stone (3) sands, or little seed like bodies within the stone, of white, brown and red color These are also called dusts, when very fine and found in large number in a stone

A Diamond, wanted to be sold to the hest advantage, must be perfectly free from the faintest tingo of color of any sort, must have no flaws, or specks or fissures in any part; must be bright and lively and free from what is technically called "milk" or "salt," which are semi-opaque imperfections in the hody of the stone. To ascertain if any of the above flaws exists, the stone should be breathed on until its lustre is temporarily destroyed and then the imperfections will be apparent. The stone must also be well-proportioned and properly cut. Even to the least experienced, the lustre of a Diamond when cut is sufficient to establish its identity. Some colorless Topazes, Emeralds, Sapphires and the white Zircon have sometimes been passed off ns Diamonds. If the surface of tho stone be the least scratched by the action of a fine file, it is not a Diamond The rays of the sun easily pass through other gems, but in the Diamond they are refracted by the surface, which causes the superior brilliancy. According to Mr. Milburn, if the coating of a rough Diamond be smooth and bright with a little tinge of green in it, it is not bad; but if there is a tincture of yellow with the green, it is a soft, greasy stone, and will turn out bad. Though the specific weight of the Diamond is nearly the same as that of the Topaz, the one can be distinguished from the other by its electrical properties The Topaz retains its electric powers several hours after it has been developed by friction, whereas the Damond loses it in the course of half an hour. The Diamond can, by its weight, be distinguished from colorless Corundums, whose weight exceeds that of the former in the proportion of 8 to 7.

The jewellers of old used the "tineture" test to distinguish the real Diamond from the spurious, of which so many were then current, as the white Sapphire, the Citrine Beryl, and the Crystal cut into a pyramid. This tincture was a varnish made of ivory-black and mastich applied to the back of the stone, which, if it was a real Diamond, hecame all the more brilliant on account of this back ground; if any other gem, it became dull and lustreless showing the black through its substance. Some used the oil exuding from a roasted grain of wheat darkened with ivory-black, others backed the stone with a hit of black silk. The "Novas Minas" white Topaz of Brazil, known there as the "Slave's Diamond," is now the only stone which has may chanco of being passed off for a Diamond. Though it is very hard and brilliant, it very much lacks "the Adamantine lustre and iridescence,"

The terms, first water, second water, mean only first and second quality. Perfect Diamonds should be as clear as drops of the purest water; and they are of the second and third water, according to the degree of clearness in them, until decidedly yellow or hrown, when they come under the category of colored stones. These colored Diamonds, on score of their rarity, are sold at fancy price.

Diamonds are generally valued per carats and it is necessary to explain the term. The word is probably derived from the name of a bean, the fruit of a kind of Erythma, which grows in Africa The tree which gives this fruit is termed by the natives "Kuara" or the sun. These fruits, when dried, were afterwards imported into India and here used for weighing the Diamond. They have now been universally adopted.

... 1 carat 4 grains make ...

6 carats or 24 grams .. 1 penny-weight. .. 1 cunec troy 1511 carats

But a carat is not of the same weight in all countries; for instance, in England it is equal to 205,4090 milligrams; in France, 205,5000; in Borneo, 105,000, in Madras, 207,3533, &c &c &c The fellowing is an approximate price list as

given by standard authorities

Diamonds below 2 grains

... £ 4 to £ 6 per carat. Inferior, from ... £ 6 to £ 8 Medium . £ 8 to £10 Good ... •• £10 to £12 Tine If over 2 grains, Fine £12 to £15 Over 3 grains ... £15 to £20 Of one carat £20 to £23

But the valuing of rough Diamonds is not to be made according to the above standard. The form and proportion of the crystal must first be taken into consideration, for, on these only, the loss of weight in cutting chiefly depends Then, care must also he taken to distinguish the degrees of color and the purity of the specimen. The hest forms to select would be the octrahedral and the rhombododecahedral. In valuing large rough Diamonds and specially those that came from the Cape, the fact should always be remembered that tints of color may be brought out in the cutting of a stone, which do not at all appear in its rough state; perfect polish and the power of reflection natural to the stone intensify any tint of yellow existing in it.

The Supernatural and Medicinal Properties attributed to the Dramond.

THE mythology of all nations in the world attributes supernatural influence to almost every thing in nature. Trees and fields, temples and stones, mountains and rivers,-all were supposed to be the abode of good or evil spirits. Anselm Bosco De Boot, physician to the Emperor Rodolph and Maximilian II, wrote in 1664, as follows: "From their burity, beauty, and brilliancy, it is most probable, gems were selected as receptacles for good spirits, oven as filthy, stinking and frightful places are usually the abodes chosen for evil and unclean spirits." Diamond being of all stones, the purest, hardest and most brilliant, it was naturally considered to be the most powerful in spiritual influence. It was conscerated to all that was holy and heavenly, and was known to have been a powerful charm, and, when under the influence of the planet Mars,

productive of great success For many centuries past it was thought to be a most potent tahsman against poison, pestilchee, witchery, insanity, evil spirits and night mare It was esteemed a safe guard to virtuo Though it had the power of preventing evils, as above stated, on external application, (i e if worn,) it had a quite disastrous effect, if taken internally Diamond dust had such a fa tal poisonous property that nothing could save the unfortunate who swallowed it The Diamond was also supposed to hestow victory, fortitude and strength of mind It softened wrath and strengthened wedded love, hence it was called the stone of re conciliation It was also an infallible test of conjugal fidelity A Diamond placed under the pillow of a married lady, without her knowledge, would make her reveal, during sleep, any secrets of her life, which she might have to conceal from her husband Though it was believed to be in combustible, its lustre and other properties were supposed to he affected by heat Hence, perhaps, the ancient practice of taking Diamond rings off the finger at hedtime, and putting them in a cup of cold water or on a marble, or some other cool surface To the Ancients, Diamond represented mexorable justice and immutable fate Henco the judges of the Hades were described as having hearts and hosoms of Adamant Tho clouds which covered Destiny were also described as being of Adamant To the moderns, it is a symbol of innocence, constancy, faith, strength, &c., &c. A gem. (supposed to have been a Diamond), worn in the girdle, by Aaron, the High Priest, had, according to a Jewish legend, marvellous properties, It would become dark and dim, if brought into contact with a man, actually guilty: if the necused was really innocent, it would shine on with increased brilliancy. If the sins of the Hebrews were to be punished with death, the stone would put on a bloody color. But the most absurd and unique virtue, attributed to Diamond-and to no other gem-was the power of multiplying its species. Bœtius Do Boot makes serious mention of a lady who possessed two hereditary Diamonds, which produced several others and thus left a generation.

CELEBRATED DIAMONDS.

The Koh-i-noor.

PERHAYS there is no other jewel in the world which is so much renowned for its antiquity and for the interesting romance with which it is connected as the Koh-i-noor. It is so old that some attribute its ownership to Karna, the Ling of Anga, who first discovered it near Masulipatam, in the bed of the Godavery, 5000 years ago. Other traditions speak of Rajah Vikramaditya of Oujien (56 B. C.), as having been the happy possessor of it. All subsequent trace of this stone was lost till it was taken

from the king of Mulwa by Ala-ooddeen, in 1304 After the defeat of the Pathans by the Moguls in 1526, it remained in possession of the latter till the invasion of Nadir Shah When Nadir Shah came to take possession of Delhi, Mahamood Shah, the then Emperor, had to give up every valuable thing in his treasury, except this lowel, which he used to keep concealed in his turban A woman in the harem hetrayed this fact to Nadir, who, strongly hent upon having it, planned a grand festival in which hoth the conqueror and the conquered were to most and swear friendship Nadir Shuh pro posed an exchange of turbans and thus managed to get possession of the stone It was he who gave it the name Koh i noor, or the "mountain of light" From him it descended to his son, from whom Ahmed Shah, the founder of the Cabul dynasty, suc cceded in getting it, by professing friendship in his time of distress Shah Shujah, the son and successor of Ahmed Shah, being driven out of his kingdom hy his hrother, Mahmood, took away the Koh-1-noor with him and made it the companion of his exile Runject Sing, the celebrated "Lord of the five rivers," contrived to get him at Lahore, where he was at once put to prison and given to understand that his release could be effected if he would part with the jewel Suffering with his wife and family, all sorts of privation and misery at the hands of Runject, Shah Shujah at last consented to make over the thing to him. This was done on

the 1st June, 1813. Struck with the brilliancy of the stone, Runjeet asked him, "at what rate do you value it;" to which he replied, " good fortune : and that is always the property of those who had vanguished their enemies" The Diamond was now set in a bracelet and was always worn by Rupieet. People attached bad luck to the possessor of this stone, for it would appear that all who had it in their hands subsequently came to grief, and an attempt was therefore made to make it over to the idol Juggernath of Puri. This was never done and it was occasionally worn by his successors. After the murder of Shu Sing, it was deposited in the Lahoro treasury, until Dullip Sing, (the son of Runject), was stationed at Lahore with an English Regont. When Punjab was annexed to the British Crown, all the state-jewels of Lahoro were confiscated by the East India Company. It was stinulated that the Koh-i-noor should be presented to the Queen. It reached Her Majesty on the 3rd Juno 1850 and then weighed 186 carats. Its original weight, when it was with Arungzehe, was 793 carats. This reduction was due to the unskil. fulness of Hortensio Borgio, a Venetian lapid irv. who had been entrusted with the cutting of it. Tho Emperor had been so much displeased with his work that instead of paving for all his labors, he dispossessed him of his property and was with great difficulty persuaded to lene him his head This stone created quite a sensation in the great

Exibition of 1851, where it was valued at 14,00,000 of Rupees The recutting of this stone heing thought necessary, Herr Voorsanger of Amsterdam was selected to do it The operation (conducted by steam) which commenced on the 6th July, was completed at the end of 38 days of 12 hours each, and is said to have cost 80,000 Rs The Koh i-noor has now assumed the form of a regular cut Brilliant, weighing 1061 carats and is one of the princi pal jewels in the British Crown

The Great Mogul

This stone is often confounded with the Koh 1noor It is reported to have been found in or about 1650, in the Coloor mines, a place about 7 days' journey from Golconda Meer Joomla, by hirth a Persian, was the Grand Vizier and General to the King of Goleonda He had amassed enormous wealth, (principally by farming, under other names, the Diamond mines of the place,) and thus made himself the eye sore of his master, who had on one occasion openly threatened his life Tho Vizier sought and obtained the aid of Prince Aurungzehe, then Governor of the neighbouring provinces, and with his co operation, surprized the King of Golconda and was about to make him surrender when the Prince was recalled by his father the Emperor Shah Jehan Meer Joomla ingratuated himself into the favor of the great Emperor by making him magnificent presents, amongst which was the "Great Mogul." Tavernier relates that he saw this Diamond at the Court of Aurungzebe, and that it weighod at that time 787½ carats. It was at this stage of its history that the stone has come to be confounded with the The same story about the cutting Koh-i-noor. by Borgio, about Nadir Shah's trick in obtaining it, &c , is repeated in connection with this Diamond. Some conjecture that Tavernier has described one large stone as having been seen by him in the Court of Aurunzebe. If there had been another of the same weight and size, it must have surely been noticed by him. Henco it is thought that the Koh-i-noor and the Great Mogul are merely convertible names. Others suppose that the Great Megul was a personal present to the Emperor Shah Jehan and most naturally it remained in his possession when he was in prison,—at the time of Tavernier's visit, and that consequently that traveller had no opportunity of examining it. They further believe in its existence amongst the regalia of the Persian Crown and in its having been designated there as the " Derya-noor," or "the ocean of light." But the drawings of the Shah's Diamonds which have lately been sent up to England, do not confirm this assertion. There has another theory been started which makes Borgio cut up the big stone into three; the one of which is now known as the Koh-i-neer; the other, as the Great Mogul, and the third was captured amongst the jewels of some petty Indian Chief. But the description which Tavornier gives of the character of the stone he saw, differs materially from the actual character of the Kohinoor. "It was circular, rose cut, very deep, of fine water, with hut one little crack externally and one flaw internally and the work upon it that of an Enropean lapidary, whereas the Kohinoor was in outline an irregular cllipse, facetted to no definite pattern, very flat, exhibited no more icater than a bit of rock crystal, had several flaws, hesides a large deficiency or fracture at one end and rude grooves cut in the sides, whilst all the work upon it has of that peculiar character, which the least experienced eye would detect at once as that of a Hindu Diamond cutter"

There is one Diamond of the name of *Derya-noor* which is said to be in the pessession of Navab Abdool Gunny of Dacca, East Bengal, but whether it is identical with its great name sake, we are not in a position to state.

The Patt or Regent Diamond.

If not the largest, the Pitt or Regent Diamond is generally looked upon as the most perfect and beautiful Diamond in existence, remarkable alko for its shape, proportion and fine water. It weighed 110 carats in its original state. According to the story with which its lustory is connected, it was found by a slave at Putcal (about 135 miles

from Golconda) and kept concealed in the calf of one of his legs which he had purposely wounded and bandaged, for its reception. An English sailor promised to find a purchaser for it, provided he was paid half the value. But bent upon having the whole of the proceeds to himself, he lured the poor slave on hoard his ship and pitched him over the water. This Diamond was sold by him to a celebrated Parsee merebant named Jamehand, for the sum of 10,000 Rupees. Jamchand sold it, in 1701, to Mr. Thomas Pitt (grand-father of the Earl of Chatham,) the then Governor of Fort St. George, Madras, for 1,25,000 Rupees. The operation of cutting it into a perfect Brilliant, which was finished in two years, reduced its weight to 1367 carats and cost him Rs. 50,000; 35,000 of which, however was recovered by selling the fragments The Duke of Orleans, Regent of France, hought it of Pitt for 13,50,000 Rupees. This Diamond was stolen from the Garde-meuble in 1792, hut was restored to its possessor most mysteriously. The Republic then pledged it to a Berlin merchant from whom it was again redeemed. The Emperor Napolean L used to wear it in the pommel of his sword and always considered it to be the key-stone to all his future greatness. It was shown in the French Exhibition of 1855.

The Orloff or Amsterdam Diamond.

This stone formed, according to one account, one of the eyes of a Hindu God, and was stolen away

hy a French Grenadier of Pondicherry, who had, with that object in view; taken refuge with the Brahmins and professed their faith for some time It was afterwards sold for Rs 20,000 to an English sea captain who resold it to a Jew for 1,20,000 Rs He, again, sold it to the Armenian merchant Shafras from whom it was purchased at Amsterdam, in or about 1772, by Prince Orloff, for presentation to Catherine II, at 9 00,000 of Rupees and a life an nuity of 40,000 Rupces and the grant of a Russsian nobility to the seller Another account says that it was one of the stones taken away by Nadir Shah from the Moguls that it had a pro minent place in his throne, and that it had, after his assassination, passed into the hands of one of his Affghan Generals and thence to the Armenian merchant Shafras This stone resembles in its outline the 'Great Mogul, as described by Tavernier, so closely, that, but for the difference in the weight, it may be taken for that long lest Diamond A third account supposes it to have been brought to Russia by Lazarus Lazareff, the head of the Armenian family of that name, and grand son of Manouk Lazareff, treasurer to Shah Abas II Hence it is called by some the "Lazareff" Diamond It is now placed in the Russian Imperial sceptre and weighs 1911 carate, and, like the Koh: noor, has the underside flat and is rose cut. Its size is about that of a pigeon's egg The water is of a rather yellowish tinge

The Nassuck Diamond.

This stone was originally found among the spoils captured from the Mahrattas at the conquest of Deccan, under the command of the Marquis of Hastings. It was then as large as a good-sized walnut and weighed 89\(^3\) carats. But when re-cut, in London, as a Brillhant, by order of its proprietor, the Marquis of Westminster, it weighed 78\(^3\) carats. It is very bright and pure but is very badly shaped. The East India Company had sold it to Messrs. Rundell and Bridge, wbo, on their retirement, sold it by auction to a jeweller for 72,000 Rs, though it was valued at three lacs.

The Nizam.

This stone is said to have been found at Golconda and is now almost in its primitive condition. It weighs 340 carats. It was by some ominous accident broken asunder in the year of the Indian Mutiny.

The Shuh of Persia.

Cosnoes, the younger son of Abass Mirza Sbah, of Persia, presented this stone to Emperor Nicholas of Russia. It weighs 86 carats and is perfectly pure and hrilliant. It is only partially cut; many of its natural octahedra being preserved. The interest of this stone is enhanced by the Persian

inscription it bears of its former owners, engraved

EK-BEK SHAK,
NIZIM SHAK,
FETH ALI SHAK,

Its shape is that of a long prism.

The Pacha of Egypt.

ALL that is known of this stone is that it was found in the possession of Ibrahim Pacha It weighs 40 carats; is of an octagonal form, Brilliant-cut and of very good quality.

The Matlam Diamond.

This stone belongs to the Rojah of Mattam, Borneo, and is at present the largest Diamond known; its weight being 367 carats. It was found at Landak, Borneo, in the year 1787. It is eggshaped; is of pure water and has a small indentation at the short end. Notwithstanding the many battles fought for it, this precious stone is still 12 the possession of the Rajah. The Dutch Governor of Batavia offered for it five lacs of Rupees, and two men of war, with stores and ammunitions complete; hut the owner refused to part with it on any account, considering it to be a talisman, on the possession of which depended the fortune and hapmess of his family. The Malayeso believe that all kinds of disease can be cured by means of the water in which this Diamond has been steeped.

The Sancy Diamond.

THE early history of the Sancy Diamond is not minutely traceable. According to some, it came from India and, in 1479, fell into the hands of the King of Portugal, Don Antonio, who, on the occasion of his visit to England, made with the purpose of securing assistance in prosecuting his claims to the throne, which was then in the possession of the Spaniards, pledged it with Queen Elizaheth for £ 5,000 sterling. To avoid further importunities from the Portugese Pretender for more money, the Queen returned the Diamond to him, giving up all claims to the sum she had advanced. This stone was subsequently sold by him to Nicholas de Harlay, Baron de Sancy, a Huguenot gentleman. From this owner the stone has assumed the name "Sancy." It was borrowed of the Baron hy Henry IV of France. The messenger sent in charge of this valuable stone was waylaid and murdered by robhers, but, acting up to previous arrangements, he managed to elude them, by swallowing it. It was afterwards taken out of his stomach by the Baron, in whose family it remained for more than a century. It was next traced to James II of England, who, in his exile (1688) carried it to France. There it was sold to Louis XIV for 2,50,000 Enpees. Louis XV wore it in the clasp of his hat, at his coronation. In the French revolution of 1792, along with various

other Crown jewels of France, the Sancy was lost, until 1830, when it was found in the possession of a French merchant. In 1838, the Prince Paul Demidoff hought it at 7,50,000 Rupess. In 1865 Messrs. Garrads of London purchased it of the Demidoff family, for the late Sir Jamsetjee Jeejeehhoy of Bombay, at two lacs of Rupees.

This stone is almond-shaped, of very fine water and weighs 53 carats. The cut is evidently Indian.

Charles the Bold's Diamond.

According to some, the Sancy is quite a distinct thing from what is called Charles the Bold's Diamond. Those who confuse the one with the other, say that the Sancy, after it was brought from India, fell first into the hands of Charles tho Bold, Dake of Burgundy, and then into those of the king of Portugal. Those who want to establish a separato indentity for "Charles the Bold's Diamond," affirm that this was one of the three Diamonds which Charles the Bold had given to Louis de Berquem to be experimented upon in rose-cutting. After the defeat at Granson, the Duke's Diamond was found by a common soldier, enclosed in a valuable box. Prefering to have the latter, the soldier threw away the stone, but subsequently changing his mind, picked it out from under a waggon and sold it for a florin to a priest who, in his turn, sold it to a citizen of Berno for

three francs. Jacques Fugger, a famous merchant. of the Nuremburg family, benght it of the Bernese Government. From this family it came into the hands of Henry VIII, whose daughter Queen Mary, brought it, in her dower, to Phillip II. We have already noticed that a large Diamond was pledged by Don Antonio with Queen Elizabeth, and from this portion of the history, the Sancy, (which was evidently the stone pledged by Antonio) is confounded with the Burgundian Jewel. It was a matter of utter impossibility for the latter to have passed into the hands of Antonio-one, who was known to have been the mortal enemy of Phillip's. By a strange chance, it came back to the greatgrand-son of its original owner, Charles the Duko of Burgundy. Its present whereabouts are unknown.

The Florentine Brilliant.

This stone was, according to a tradition, bought for a trifle at a curiosity stall in Florence, being then considered as nothing mere than a yellow crystal. The history of this stone is sometimes confounded with that of Charles the Bold's. The same story regarding its being found by a soldier and sold by him to a priest is also repeated in connection with the history of this stone. The fact is, Charles the Bold had three Diamonds of very great beauty and value, and it appears that the history of the two is confused with one another. The third is the Sancy. We have already noticed the

story in connection with what we have called Charles the Bold's Dirmond The story about the other stone, which we will designate as the Floren tine Brilliant differs from that of the other, from the point, where the gem was sold by the priest Instead of its being purchased by Tugger (as in the case of the other stone) the story makes it come into the hands of a rich Bernese merchant, Bartholomew May In 1482, it was sold to a Genoese, who in his turn, sold it to Ladovico Sforza the Moor, Duko of Milan, for 14 000 ducuts After the fall of the house of Sforza, this stone came into the possession of Popo Julius II who present ed it to the Emperor of Austria It is also called the Grand Duke of Tuscany or the 'Austrian Yellow," owing to its decidedly yellow color, not withstanding which, it is valued at 10 50 000 Rs It is cut as a double rose and weighs 1391 carats

The Braganza

This stone was discovered in Brazil, in 1741, and weighed, in its rough state, 1680 earnts. It is of the size of a hen's egg, of deep yellow color and is reported to be valued at 58 35,00,000 Rupees. But doubts are entertained as to its being a Diamond, it being generally believed to be a white Topaz, and as the Portugness Government, of whose Crown Jewels it forms a part, would not suffer it to be cut or even examined, there is very little chance of the doubts being cleared up

The Prooft Diamond

This stone was taken away from India by Lord Pigott Over fifty years ago it was sold in a lottery for three lacs of Rupees and was subsequently bought by Messrs. Rundell & Co for 60 000 Rupees When sold to the Pacha of Egypt, it fetched 3 lacs of Rupees again It is Brilliant cut, of a beautiful shape and weighs \$2\frac{1}{2}\$ carats The name of the present owner is not known

The Hope Diamond

A DETAILED account of this stone has already been given under the heading of "Coloured Diamonds". This beautiful and most important bluo Diamond was supposed to have been taken from India by Tavernier and sold to the French Government, wherefrom it was stolen, during the Revolution. It was subsequently traced to Mr Ehrson and from him to Mr H T Hope. Its original weight was 112 to carats, when stolen from the Trench Regalia, it was 67, and being subsequently recent as a Brilliant and thereby reduced by cleavage, (which has given us its counter part, the blue Drop Diamond.) it weighed 44½ carats. It figured a great deal in the Great Exhibition of 1851.

The Lugème Brilliant

This perfect Brilliant was purchased by the late Emperor Napolean III, and given to the Empress Eugènie We are not certain whether it is still in her possession, as the greatest portion of her valuable jewelry has been sold to His Highness the hie Maharajah of Puttiala, through Messrs Hamilton & Co. Jewellers, of Calcutta It is of an oval shape and blunt at one end and weighs fil carats

The Cumberland Diamond

This stone was bought by the City of London for a life of Rupies and presented to the Duke of Cumberland, after the battle of Culleden. It was one of the stones claimed by the Hanever Crown, to whom it has been restored by our Most Gracious Majesty. Its weight is 32 carats.

The Star of the South

This is the largest Drimond ever found in Brazil. It was found in July 1853, by a poor Negro who was at work in the mines of Bogragen, in the province of Mines Genaes When rough, it weighed 2511 carats, but the cutting of it into a Brilliant has reduced it to 125 carats. It is a Drimond of the purest water and under light exhibits a lovely rose tint. It was purchased by M. Halpen, or according to some writers, by Mr. Coster of Amsterdam, who is also reported to have cut it. It was shown in the London and Paris Exhibitions.

The Polar Star

This Brilliant was at one period owned in England, but is now to be found among 'the Russian

Crown Jewels It is remarkable for its purity and lustre, and is said to weigh 40 carats.

Other large Diamonds.

THE Portuguese Crown possesses many large and brilliant Diamonds, foremost among which is a Brazilian stone found in 1775 by a Negro, in the bed of the River Abaité, near Rio Plata. The following is the romance connected with the discovery. Three Brazilians, convicted of some high misdemeanour were banished to the interior of Brazil, for life. These unfortunates used to beguilo their time by searching for valuable matter. One day they came to the River Abaité, the bed of which had lain dry for sometime, owing to scarcity of rain. There they chanced to see a Diamond, nearly an ounce in weight, which, with the help of a priest, was taken to the Governor of Villa Rica. All the officers of this place baving been satisfied as to the nature of the stone, the Governor restored the exiles to freedom and bad the gem sent to Rio de Janiero and thenco to Lisbon Its weight was then 1381 earats. Some conjecturers connect this story with the discovery of the "Star of the South," with which they identify this stone.

Some very large Diamonds have come from the Cape. One was the "Star of South Africa," weighing in the rough 83\(\frac{1}{2}\) creats and after cutting, \(\frac{1}{2}\) The largest stone yet discovered here is what is now famous as the "Stewart Diamond," which

weighed in the rough state 2883 earnts It was consigned to Messrs Pittar Leverson & Co, who have also in their possession the so called "Fly Diamond which was also discovered in this place by one Antonie The Dudley Diamond weigh ing about 46 earnts is another important stone, come from the Cupe It is triangular in shape, very brilliant, perfectly free from color and very difficult of distinction from an old Indian stone. It was sold by Messrs Hunt and Roskell to the present Earl of Dudley

The Brazilian Government is in possession of some very large and curious stones

The Spanish Government is also very rich in Diamonds and other jewels

In the Russian Treasury is a brilliant Ruby colored Diamond of 10 carats, bought by Paul I, for 1,00,000 roubles

Mr Dresden a London merchant, possesses a drop shaped Diamond, one of the finest stones at present in the market. It was lately found at Bruzil, is perfectly free from flaws and has extra ordinary brilliancy. It weighs 761 caratis

In the 'Green Vaults' at Dresden, there is a green Diamond which once belonged to Augustus the Strong It is remarkably beautiful and weights 48½ carats Here are also some very beautiful purures and four very valuable yellow Brilliants, the largest of which weighs 117½ and the smallest 52½ grains respectively.

There are two large Diamonds with the Turkish Government, one of which is of 84 and the other of 147 earnts in weight

There are soyoral Diamonds of more or less bril hance and weight. in Burmah and China, also in the possession of some of the native princes and noblemen, in India (especially at Hydrabad, Baroda and Puttiala) There are some very beautiful and costly Diamonds in Bengal, particularly, some with the Maharasak of Burdwan, Nawab Abdool Gunny CSI of Daoca* and Maharam Surnomove of Cos simbazar + Some of the rich families in Calcutta have Diamonds, conspicuous alike for their size and brilliance, amongst which may be mentioned the stones sot in finger rings, belonging to the estates of Babu Kally Kissen Tagoro 1 Coomars Raj Coomar Roy and Kally Kissen Roy, and the late Babu Khelut Chunder Ghose There are some very good Diamonds in the Mullick Family There are also some valuable Kanthas or necklaces to he found with the natives of this country. amongst which may be cited those in the posses sion of Rai Dhunput Singh Bahadoor of Azimguni, Rai Budridas Mokeem (Jeweller to His Excelleney the Viceroy and Governor General of India) and of the estate of the late Bahu Khelut Chunder Ghose

[·] Used by the Nawaba son as an armiet.

[†] Also with Joshes jee of Benares and in the estate of the late Jug gut Sett of Moorshedabad

[†] This D amond shows a rosy color

Several remarkable Diamonds are to be seen in the estate of the Hon ble Maharaiah Joteendro Mohun Tagoro Bahadoor, of Calcutta Amongst those that are set in rings may be men tioned the 'Tagore Brilliant,' a Diamond of about 55 Ratis* in weight, of the purest water and very great brilliance free from any flaws whatever. the 'Sulh tara (or the Morning Star), very white and of a round shape the Arun dhate (the Sanskrit name for a certain star), flawless and of exquisito hearity and purity, and the Banga tara, (or the star of Bengal) rose cut, of great lustre and of a lovely rose tint without the slightest spot or flaw in it. There is a hrilliant Cape Diamond, (also set in a ring) circular in shape and weighing about 31 Ratis The large Diamond of ahout 50 Ratis, which is set in tho Sees paich or head ornnment of the Maharajah 15 % specimen of rare beauty A splendid greenish Diamond helonging according to the jewellers to the Bunsput species, (which are helieved to bring good luck to the owner,) hought of the late Sooklal Johury, adorns the crown of the Maharajah s family idol Thero is also in the Maharajah s estate n mag nificent kantha consisting of 19 brilliant Diamonds the largest of which weighs about 37 Ratis and the smallest, about 6 It has been valued by the lewellers at 80 000 Rupees



^{*} A Rat is one e ghth less than a carat.

There is also in the possession of the Hon'ble Maharaiah a red Diamond, called the "Cincaleso Red." set in a ring, and weighing about 10 rates The stone is so red that no layman would know it for anything clse but a Ruby. But, in fact, it is a rare specimen of a Diamond, conspicuous alike for its brilliancy and flawlessness, and without having the faintest tinge of what are called the "milky" imperfections, so common in the Ruby. It is said to have been discovered in a mine at Cevlon, and to have remained for sometime in the possession of a respectable family of that place Johnslal Mokeem, son of the late Boodh Sing Mokeem of Delhi, had this gem brought to him by a Chulia (petty dealer), and has subsequently sold it to the Hon'ble Mahararah.

श्रथ माणिकंत्र ।

मूचम्।
हिन्दी रावणगद्भायां विचले जन्म की निर्ता ।
स्वेवाणि चीणि तस्य स्वृमीणिकास्य जग्रवृधाः ॥ १५२ ॥
विचले तु भवेष्ट्रक पद्मरागद्मतुनमं।
पीतं कालपुरोङ्ग्ननं कुरुविन्द्रभिति स्नृत ॥ १५३ ॥
च्योकपञ्चवच्हायममुं भीगन्थिकं विद्वः।
तुस्युरे सायया नीलं नीलगन्धि प्रकीनितं॥ १५८ ॥

माणिकका वयान।

तर्जना।
रत्नपार्ची पण्डित लोक कश्ते हे, सिन्धु, रावणगङ्गा
श्रीर विंहल देश दून् घी तिन जगशेमें भाषिक पयदा
होता है। १५२।

कोई कोई पिछत कहने हैं, के सिंहल, कालपुर जीर तुमुर देश यही तिन नगडों में माणिककी खान पाड जाति हैं, उसीमें सिंहल देशने को माणिक पगदा होता है, वह बड़त इन्तम, और खुड़ रह, कालपुर जो माणिक पगदा डोता है, उस्का पीना रह, चौर उस्की कुरुविन्द कहते हैं, अगर अशोककुनके पहानके समान

रज्ञ दार घोछ, तो उम्को सौगन्धिक बोन्त हैं, चौर तुझुर देशमें जो साशिक पथदा घोता की, उस्का रज्ज नीला घोता की, चौर उस्को नीलशन्धि कक्षते हैं। १५३॥१५८।

RUBY.

TRANSLATION.

152 According to some authorities, the ruby is found in Geylon and the lands bordering upon the Indus and the Rayana Ganga.

153—154 According to others, ruby quarries are found in Caylon, Kálpur and Tombura. The rubies of Caylon are beautifully red; those of Kálpur are yellow, and are called hurunnda (rubicelle); and those of Tumbura are furnished with a blue shade and are hence called nitagandhi (violet ruby) That ruby which shoots a gleam green as the leaf of the asola goes by the name of saugandhika (spinel)

মাণিক। অমুবাদ।

কোন কোন রক্তত্ত্ত পিউত কহেন, সিজুনদ, বাষণ গদা ও দিংহল দেশ এই তিন ক্ষেত্রে নাণিক্য বা পদ্মৰাগ উৎপন্ন হয়। ১৫২।

কেহ কেহ বলেন, সিংহল, কালপুৰ ও তুৰুর দেশ এই তিন স্থানেই মাণিকেব আকর দেখা যায়; তমধ্যে সিংহল-দেশাংপন্ন মাণিক দেখিতে অতি উত্তন এবং রক্তবর্ণ; কালপুরে পীতবর্ণ পার্ম্বাগ জ্বিয়া থাকে; এবং তাহাকে কুকবিন্দ কহে; যে পার্ম্বাগ অশোকপন্নবের ন্যায় ছায়। বিশিষ্ট, ভাহাকে সৌগদ্ধিক কহে; তুৰুর দেশজাত মাণিক নীলচহামাবিশিক্ট এবং নীলগদ্ধি বলিয়া উল্লেখিত হয়। ১৫০1১৫৪।

मृषम्।

उत्तर्ग सिंहलोड्न्तं निकष्टं तुम्युरोद्भवं। मध्यमं मध्यमं ज्ञेयं माणिकां चेत्रभेदतः॥ १५५॥

वन्यूकग्रञ्जासकलेन्द्रगोप-जवाननाच्छम्मवर्णशोभाः ।

भ्वाजियावो दादिमवीजवर्णाः

स्रवापरे विश्वकपुष्पभासः ॥ १५६॥

तर्जमा ।

सिंदल देशमें जो माणिक पयदा होता है, वही सबसे उनदा है, और तुल्दर देशमें को माणिक पयदा होता है, अह बज्जत खाराप और कालपुर देशका मध्यम और जानधुर से बदलनेचे माणिक तिन कविमका होता है। १५५।

माणिकमेथे वज्जत्वे माणिक केत्ने बन्धूकके पुल, वेत्ने घुघची, केत्ने वीरवज्ज्ञ्यी, केत्ने कनेवज्ज्ञ, केत्ने चौके समान रद्भदार घोते पे, चौर केत्ने बड़े चमकदार चानारके दानेके समान, केत्ने पलाज्ञ्ज्ञ्ज्ञे समान

TRANSFACTION.

155. The rubies of Ceylon are good par excellence, while those of Tumbura are at the hottom of the scale, the rubies found in Kálpur occupying the middle position Rubies vary in value in accordance with the place where they are respectively found

156—159. Of rules, some are like the bandhu-la* flower, some are like the gunjá berry, some like the cochineal, some like the China rose, some like blood, some like the seeds of the pomegranate, some like the flower of the butea frondosa,

अञ्राम ।

নিংহল নেশে যে মাণিক জন্মে, তাহাই সর্কোৎকৃষ্ট; ছুষুবদেশোৎপন্ন পদ্মবাগ সর্কানিকৃষ্ট; এবং কালপুবোত্তত মাণিক মধ্যম বলিয়া প্রাণিদ্ধ আছে। কেত্রভেদে মাণিক উত্তম, মধ্যম ও অধম এই তিনপ্রকাব হইবা থাকে। ১৫৫।

প্রবাগের মধ্যে কডকগুলি বছুক (বাঁধূলী) পূপ সদৃশ, কডকগুলি গুঞ্জাব (কুঁচেব) ন্যায়, কডকগুলি ইন্দ্রগোপকীটেব সমান, কডকগুলি জবাকুর্যমেব ফায়, কডকওলি রজেব ফাব, কডকওলি দাড়ি-ধ্বেব বীজেব ফাব, কডকগুলি প্রাণপুষ্পস্চৃদ,

^{*} A species of plant.

मुखम्।

सिन्दूररक्तोपलकुङ्गमाना साचारसस्यापि समानवर्षाः ।

सान्द्रेऽपि रागे प्रभया स्वयेष भवन्ति साद्यास्कुटमध्यशोभाः ॥ १५७ ॥

कुसमनीबद्युतिरागमित्र-प्रत्ययबाचारसतुष्यभास' ।

तथापरे गोचुरकग्टकारी-पुष्पार्द्विपो चिद्गुत्तवस्त्रिपोऽन्ये ॥ १५८०॥ चकोरपुंस्कोकितसरानाः

ने चायभासद्युतयथ के चित्। चन्त्रे प्रनिर्मातिवपुष्पतानाः

तुल्यत्विष कोवनदोदराया। १५८॥

तर्जमा ।

केत्न सिन्द्रके समान, केत्न लालकमलके, समान, केत्न रोखीके समान, केत्ने महाबदके समान, केत्ने गहेरे खु छ, खौर गहेरे सहावरके समान, केत्ने गहेरे खु छ, खौर गहेरे महाबदके समान, केत्ने कुत्तमजुलके समान, केत्ने नीवापनलियेक्वये महाबदके समान, खौर केत्ने गोधुर खौर कप्टीकारीजुलके समान, केत्ने दंग्रदके समान, खौर केत्ने वकोर, कोतिव, सारसपद्योके खालके समान, खौर केत्ने वकोर, कोतिव, सारसपद्योके खालके समान, खौर केत्ने कमानिक खौर केत्ने कमानिक खौर केत्ने समान,

मृचम्।

प्रभावकाठिन्यगुरुत्वयोगैः

प्राय' समाना' स्त्रिकोद्भवानां !

मानीलरक्षीत्वचारभासः भागीलरक्षीत्वचारभासः

सौगन्धिकाखा मणयो भवन्ति॥९६०।

यो मन्दरागः कुरुविन्द्जेषु

स एव जात साहिकोद्भवेषु।

निर्राच्चिपोऽन्तर्वे छनी भवन्ति

प्रभाववन्तोऽपि न तत्ममाना । १६१ । ये त रावणगङ्गया जायन्ते कुद्दिन्द्व ।

पद्मरागसम राग विश्वाणा न स्तृ टार्चिष ॥ १६५॥

तर्जमा ।

सीगानिक मणि चमकमे चिक्रमे, और भारीयन्में आक्षर एकटिक वेजो माणिक प्रयदा चीता है, उध्के सनान है, और उस्कारक घोड़े नी लापन लिये छये लान कमल फ्लक्षे समान है। १६०।

जो कुर्यान्य योजे रज्ञदार घोण, वह स्कटिकसेभी पयटा घोता घे, घगर वह रज्जने कमभी छोए, लेकिन उसके भितरका तेज एसा च्यादा घे, के बक्त एक्टरि भीर कुटदेनेबाला चर्यात् घतिमभाविशिष्ट माणिक उसके समान निष्ट घोता है।१६९।

रायणगद्वामें को कुश्विन्ट एयट्टा श्रोता है, वह माणिषके समान स्राच रहिट्टा श्रोता है, बेकिन साणिषणे समान दीप्तिसान नहिं। १६२।

TRANSLATION.

160. The saugandhika resembles the crystal in brightness, weight and hardness; and its color is like that of the red-lotus dashed with blue.

161. Of kuruvinda ruhies, that which is reddish, owes its origin to crystal; still its inner lustro is such as even to surpass the brightest padmaraga.*

162. The Luruvindas which are produced in the Ravanaganga, are red like the padmarága, but are not so bright.

दश्वान ।

সৌগদ্ধিক মণি প্রভাব, কাঠিভ ও ওরুৱে প্রাযই স্ফটিকোন্তর পন্মরাগের সমান এবং তাহার বর্ণ টবং নীলের আভার্কু বক্তোৎপলের দদৃশ হয়। ১৬•।

কুরাবিদের মধ্যে যেটা মানপরিমাণে লোহিতবর্ণ হয়, সেটাও ফটিক হইতেই ফমে, তথাপি তাহার মত্ত-র্গত তেত এত মধিক হয় যে, মতি প্রভাবিশিত পদ্মরাণও তাহার সমান হইতে পারে না। ১৬১।

রারণগছাতে যে দক্দ বুরুবিন্দ উৎপন্ন হয়, তাহার। প্ররাগের সমান মৌহিত্য ধারণকরে, কিন্তু তক্রপ দাঁস্তি-শামী যে না। ১৯২।

· A Latel ratg.

मूलम।

बन्धूजीवि शिखण्डीनं इन्द्रगोषोद्युष्पनः । रक्तास्त्रं कुट्टिमस्वेव पर्षं सीमन्तकं तथा। १६३ । गैरिकास्त्रं मूर्व्यसंज्ञं द्वसामयमधोत्तरं । मधाराजनमन्त्रास्त्रं गोसुरं कल्टकारिकं । १६४ ॥

वर्जमा।

माणिकका रङ्गका खनुसार को जो नाम है, वही सव नीचुमें लिखा जाता है! ज्यासाः-जियका रङ्ग यन्त्रजीय-फुल के समाम, उपको वन्त्रजीयि, जिसका रङ्ग युंचपीके समाम, उसको शिखरडीक , जिसका रङ्ग रुन्द्रगीय कीटके समाम, उसको राखरडीक , जिसका रङ्ग कनेलफुलके समाम, उसको खोड़ गुष्पक , जिसका रङ्ग सुबके समाम, उसको रक्षाखा; जिसका रङ्ग धानारके श्लाके समाम, उसको रक्षाखा; जिसका रङ्ग धानारके श्लाको समाम, उसको जुड़िम; जिसका रङ्ग ध्वास्त्रजुके समाम, उसको पण ; और जिसका रङ्ग धिन्द्रके समाम, उसको सीमन्तक करते है। १६इ।

जिसका रह गैरीमाहिक समान, उपको गैरिक; जिसका रह जाफरानके समान, उपको सूर्य संह ; जिसका रह जाफरानके समान, उपको सूर्य संह ; जिसका रह जुएम- फुलके समान, उसको महाराजनगन्ध ; जिमका रह गोसुरवे फुलके समान, उसको गोसुर; धौर जिसका रह करहीकारीफुलके समान, उसको वस्त्र करहिकारिक कहते हैं। १६८।

TRANSLATION

163. Rubies have different appelations according to their colors. That which is like the bandhuli flower. is called bandhujibi, that resembling the gunjá berry, is called sikhandika, that which is like the cochineal, is called indragopi, that which resembles the China rose, is called odrapushpaka, that which is like blood, is called raktakhya, that which is like the seed of the pomegranate, is called Luttima, that which is like the kinsuka flower, is called parna, and that which

is like vermilion, is called simantaka.

164. That ruby the color of which is like mountain slime, is called gairikdkhya, that which is like saffron, is called surjasanga, that which is like lae, is called drundmaya, that which is like the Lusuma flower, is called mahárájanagandhi, that which is like asteracantha longifolia, is called gokshura and that which is like the solanum jaquini, is called kanta-

kdrika (Almindine Ruby.)

্তহবাদ। মাণিক্যের বর্ণগত নাম প্রদর্শিত হইতেছে। যথা:— যাহার বর্ণ বাঁগুলী পুলেশব সদৃশ, তাহাকে বরুজীবি; যাহার वर्ग खन्नामान, जांशांक निवधीक; गांशोव वर्ग हेस-গোপকীটের সদৃশ, তাহাকে ইন্দ্রগোপি; বাহাব বর্ণ জ্বা-ফুলের ন্যায়, ভাষাকে ওড়পুষ্পক; যাহার বর্ণ রক্তের সদৃশ, তাহাকে রক্তাথ্য; যাহার বর্ণ দাড়িনবীজের তুল্য, তাহাকে কুটিন; যাহার বর্ণ কিংশুকপুপের নদৃশ,তাহাকে পর্ণ এবং योहात वर्ग मिल्टलत नामि, छोहाद्य नीमस्ट वर्ता । ১५०।

যাহার বর্ণ গৈরিকসদৃশ,তাহাকে থৈরিকাখা; যাহার বর্ণ क्टूरमद माग छाहारक मुधामान्छ; गाहात वर्ग मास्त्रामनुम, जीशादक कमामगः याशिव दर्ग दूसमक्नमहुम, जाशादक महा-রাজনগড়ি; যাহার বর্ণ গোকুরপুষ্পাদৃশ, তাহাকে গোকুর: गोरात वर्ग करों हाती भूलगतुरो, जारास्ट करोदातिक रात रे 258 6 मिणमाला।

तयैव साटिकोत्याना देशे तुम्ब्रसंच्की।

मूखम।

मिणरागं घकोराचं कोकिलाचं तथैव च।
मारसाचं कोकनरं माणिका परम विदु ।
एवं वज्जविष विप्र माणिकां भृवि जायते ॥ १६५॥
वर्णानुयायिमस्वेषामन्दृदेसे तथापरे ।
प्रजायन्ते तु ये केचित मूल्यन्ते गमवाम्र तु ॥ १६६॥

ममरागा प्रजायन्ते खलामूल्या हिते स्नृता ॥१६७ ॥

तरजमा। जिसका रङ्ग डिङ्गलके समान, उसको मणिराग, जिस्का

रद्ग चकोर पद्योके आखके समान, उसको चकोराच, जिसका रद्ग कोयेलके आखके समान, उसको कोकिलाच, जिसका रद्ग सारसपद्योके आखके समान, उसको सारगांच और जिसका रद्ग सांस्कृतक समान, उसको कोकनर कहते हैं। जमीनपर यथी प्रकारचे बज्जन तरहेका माणिक

पयदा होता है । १६५। धन्दु देशमें जो माणिक पयदा होता है, उस्मेसे जिसका जिसतरहका रह्ल होए, उस्कारीसा दाम होता

र्षे । १६६ । तुम्बुर देशमे स्कटिससे मणिकी तरक जो माणिक पयदा घोता है उसका दाम सङ्ख्या सम डोए । १६७ ।

TRANSLATION

165 The ruby the color of which is vermilion, is cilled maniraga, that which resembles the eye of the Greek partridge, is cilled chakmadisha, that which is like the eye of the cuculus Inducus, is called hohidasha, that which is like the egg of the Indian erane, is called hohidasha, and finally that which is like the red lotus, is called hohanada. The earth produces a splendid variety of the kinds enumerated above

166 The Andhra country* produces rubes re sembling the Luruvinda of Ravanaganga These have the same value as Luruvindas

167 The padmaragas of Tumbura, which resemble in color crystaline padmaragas, are of small worth

অহবাদ।

যে মাণিকেৰ বৰ্ণ হিন্তুলেৰ ন্যায়, তাহাকৈ মণিবাগ,
যাহাৰ বৰ্ণ চকোৰপন্ধীৰ চন্দ্ৰৰ দদৃশ, তাহাকে চকোৰান্ধ,
যাহাৰ বৰ্ণ কোৰিদেনৰ চন্দ্ৰদৃশ, তাহাকে কোৰিলান্ধ,
যাহাৰ বৰ্ণ কোৰিদেনৰ চন্দ্ৰ দৃশুশ, তাহাকে দাবিশাক এবং
যাহাৰ বৰ্ণ কোৰদ্ৰ পুপেৰ উদৰেৰ ন্যায়, তাহাকে কোৰনদ বলে। পৃথিবীতে এইপ্ৰকাৰ বছবিধ মাণিক জন্মিয়া
থাকে। ১৬৫।

রাবাগসাসমূত্ত কুকবিদেব ন্যায় বর্গবিশিন্ট যে অপব কতকগুলি মণি অন্ত্র দেশে জন্মে, ভাহাবাও কুববিদেব সমানমূল্যে বিক্রীত হয়। ১৬৬।

তৃত্বৰ দেশে ক্ষতিকান্তৰ পদ্মরাগেৰ সমান বর্ণবিশিক্ত যে পদ্মবাণ জন্মে,তাহাৰ মুন্য অতি অন্ন হইযাথাকে। ১৬৭।

[.] The modern Telingana. Its people are called Andera by Pluny

196 महिमाचा ।

मूखम। मणिरागं चकोराचं कोकिलाचं तयैव च)

मारसाचं कोकनदं माणिका परम विदु । एवं वज्जविधं विप्र माणिकां भृषि जायते । १६५॥ वर्णातुयादिनक्षेपामन्द्रदेशे तथापरे । प्रजायन्ते तु ये केचित मृत्यन्ते समयाप्रदु । १६६॥

तथैव साटिकोत्थाना देशे तुब्दर्सन्तके । समरामा प्रजायन्ते खलमूल्या हि ते साता ॥९६७॥

तरजमा।

जिसका रज्ज चिह्नुचक ममान, उसको माजरान, जिस्का रज्ज चकोर पद्योक आखक ममान, उसको चकोराच, जिसका रङ्ग कोरेलके चांखक समान, उसको कोकिजाच, जिसका रङ्ग सारस्थाचीक चांखक समान, उसको सारगाच चौर जिसका रज्ज सालुक कुचके समान, उसको कोकनर कहते हैं। जमीनपर यही प्रकारने बज्जत तरहेका माणिक प्यदा होता है । १६६५।

चन्द्र देशमे जो माबिक पयदा होता है, उस्मेसे जिमका जिसतरहका रह्न होए, उसका ऐसा दाम होता है। १३६।

तुम्बुर देशमे स्फटिवचे मणिको तरह जो माणिक पयदा घोता है उस्का दास बऊत् कम घोए।१६७।

E.

TRANSLATION.

165. The ruby the color of which is vermilion, is called manuaga, that which resembles the eye of the Greek parfridge, is called chalardisha, that which is like the eye of the cuculus Inducus, is called kokuldisha, that which is like the egg of the Indian crane, is called kokuldisha, and finally that which is like the red-lotus, is called kokudada. The carth produces a splendid variety of the kinds enumerated above.

166 The Andhra country produces rubies resembling the Luruvinda of Ravanaganga. These have the same value as Luruvindas.

167. The padmarágas of Tumbura, which resemble in color erystaline padmarágas, are of small worth.

ध्ययुराम् ।

বে মাণিকেব বৰ্ণ হিস্কুলেব ন্যায, তাহাকে নণিবাগ;
যাহাব বৰ্ণ চকোবণক্ষীৰ চকুল দদৃশ, তাহাকে চকোবাক;
যাহাব বৰ্ণ কিবলৈৱ চকুলদৃশ, তাহাকে কোকিলাক;
যাহাব বৰ্ণ নাব্যপক্ষীর চকুল দৃশ, তাহাকে দাবশাক এবং
যাহার বৰ্ণ কোকনদ পুশোর উদনেব ন্যায, তাহাকে কোকনৰ্বে। পৃথিবীতে এইপ্রকাব বছবিধ নাণিক জন্মিয়া
থাকে। ১৬৫।

বাষণণদাসমূত্ত বুকবিন্দের ন্যায় বর্গবিশিন্ট যে অধ্যর কতকণ্ডলি মণি অন্ত্র দেশে জন্মে, তাহারাও কুলবিন্দের সমানমূল্যে বিফীত হয়। ১৬১।

তৃপুর দেশে কটিকোডৰ প্ররাশের সমান বর্ণবিশ্রিত যে প্রারাশ তল্মে, তাহার মুদ্যা মতি মন ইইয়াধাকে। ১৬৭।

[.] The modern Telingana. Its prop'e are called Anders by Phoy.

वर्णाधिका ग्रन्तय सिखता समता ग्रुमा। यर्जियाना महत्ता च मणीनां ग्रणसंग्रहः॥ ९६८॥

श्रचिपात्ता महत्ता च मणीनां ग्रणसंग्रहः ॥ ९६८ ॥ माणिकास्य प्रवन्तामि ययाजातिचतुष्टयं ।

वस्त्रचित्रवेद्याय गृद्शाच यद्याक्रमं ॥ १६८ ॥ पद्मरागो भेवद्विपः कुरुविन्दस्त वाङ्यकः । सीगन्त्रको भवेदेखो मांसखर्डस्वान्तरः॥ १७०॥

भोषपद्मसमासारः खदिराङ्गारसम्भः । पद्मरागो दिजः मोकन्यामदेन सर्वेदा ॥ १७१ ॥

तर्जमा।

च्यादा रङ्ग, भारी, चमकेला, समान, शुभलदाण, कुट चीर कदमे बद्दा, यशी सब रत्नका बद्दा खास सुण भी १६८८।

हैं। १६८। जिस्प्रकार सतुष्यको ब्राह्मण, चित्रय, वैद्य और ऋह, यही चार जात घोति है, उसी प्रकार साणिकमी चार

प्रकारकी जात है, श्राजक श्रालक उनका लच्छ कहते हैं। रह्ट। माणिक ब्राह्मणवर्ण, कुरुचिन्ट चित्रकर्ण, शीगानिक वैश्ववर्ण श्रीर मांसखएड (श्रवांत् कुटेडचे मांगके समान)

गूट्वर्ष कहा जाता है। १७०।

किसि किसि पण्डितके मतके चतुमार ब्राह्माववर्षे

माणिक लालकमल, खरेरकाठके चङ्गारके समान वर्षविशिष्ट होता है। १७१।

Æ.

TRANSLATION

168. Heaviness, coolness, evenness, lustre, thickness, deepness of color and auspiciousness are the principal good qualities of gems.

169. The four-fold division into castes obtains also among rubies. The characteristics of each class I shall now describe.

170. The padmarága (Oriental Ruby) is reckoned a Vipra (Brabmin), the kuruvinda (Rubicelle) a Khetriyá, tho Saugandhika (Spinel) a Vaisya, and the Mansa-khanda (Balas Ruby) a Súdra.

171. Some say that the Vipra rubies emit a shado red like the color of the red-lotus or the red-hot charcoal of the Acacia Catechu.

अञ्दोग।

বর্ণাধিক্য, গুরুষ, বিশ্বতা, অবদূরতা শুভলফণ, দীপ্তি এবং ফুলতা এই পুলি সামান্যাকারে রড়েব প্রধান্তণনধ্যে পরিগণিত। ১৬৮।

लाक्षन, कृतिम, रिन्ध ४ शूल थेरे खाँकिष्ठ्रकेप्रत्यस्य मानिकाय क्ष्र्रिय रव, कृत्म कारास्त्र नक्ष्म रना यारे-रक्कि । २५२।

প্ররাগ বিপ্রজাতি, কুকবিল ক্রিয়ড়াতি, গৌগদ্ধি (ন্বন) বৈশুজাতি এবং নাংস্থত (লাজ্নী) শৃত্রভাতি বলিয়া ক্রিত হ্যা১৭৽।

কেহ কেহ বলেন, বিপ্রজাতি প্ররাণ হইতে রক্তপন্ন বা থদিরকাঠেব অধারের নাায় ছায়া নির্গত হয়। ১৭১। मूचम्।

ग्रञ्जासिन्दूरवन्धूकनागरञ्जसममभ । दाव्हिमीकुसमामासः कुर्वावन्द्रस्य वाङ्गजः ॥ १७२॥

हिङ्गुलाशोकपुष्पाममीपत्पीतन्तु लीहित। जनालाचारमप्रायं वैश्वं सीनस्वकं विद्रा १७३॥

जवालाचारकपाय वस्य सानास्रक गयु ॥ १७४॥
भारककान्तिशीनस्य चिक्रणस्य विग्रेषतः ।
मासखण्डसमाभी वो सीऽन्तप्रज पापनाश्रन । १७४॥

तर्जमा ।

चिवर्षे कुरुषिन्द् घृषंची चर्यात् ग्रुद्धाः, सिन्दूरः वर्ण्यूकः ग्रुप्पः, नारङ्गी चौर चानारके फुलके समान रद्भदार छोता है।१७५।

वैश्ववर्ष सीर्गात्यक इंग्रर, श्रश्यकका मुल, श्रीर घोड़ा पीचापनिविधेक्षये सुख, कनेलफुल श्रीर महावरके समान रज़दार घोता है। १७३।

यद्रवर्णका मासलयु कान्तिशीन, विश्वण, घोडा सुखीसावेन रङ्ग देता है। १७८१।

^{*} कस्यचिमते रक्तंत्रेतो भवेट्विप्रस्तिरक्षसु चित्रिय । रक्तपोतो भवेदेशो रक्तनीसस्त्रायान्यत्र ॥

रक्षापात्र भवस्था रक्षनाथच्यात्त्वज्ञ ॥ भोरको भतमे युखी सप्तरोमायेक त्राद्धायवर्ग, यङ्ग् युखी चांचयर्थ्य सुखीपीलामनसियेज्यये वैद्धवर्ग, चीर सुखोनीलामनसियेज्यये प्रदेश्य ॥

172. The Kshetriya ruby casts forward a shade resembling in hue a gunjd, vermilion, or the flower of the bandhuka, the orange, or the pomegranate.

173. From the Vaisya saugandhika comes out a shade like vermilion, the flower of the asaka, the China rose, or alakta; or a red lustre tinctured with yellow.

174. A Sudra mánsakhanda emits a reddish, unbeautiful, and glossy shade resembling a piece of flesh.*

অমুবাদ।

ক্ষিয়জাতি কুরুবিন্দ হইতে ওঞা (কুঁচ), সিন্দুর, বীধুনী, মাগরদ্ধ ও দাড়িনের পুষ্পসদৃশ ছাযা বহির্গত ইয়। ১৭২।

বৈগ্রন্থাতি সোঁগদিক হইতে হিহুল, অশোকর্ত্যম, দীবং গীতের আভাযুক্ত লোহিত, জবাপুন্দা, ও খলককের ন্যায ছায়া বাহির হয়। ১৭৩।

শুদ্রজাতি মাংসথও হইতে ঈषং রক্ত, কান্তিহীন, চিক্ল, এবং মাংসবতের দদৃশ ছামা নির্গত হয়। ১৭৪।†

z

^{*} The Huby which is red white, is a Brahmia, that which is deep red, is a Kabetriya, that which is red yellow, is a Valsya, and finally that which is red blue, is a Sadra.

१ काराव स्टड भवसायात्र सद्या त्यो वकरणेड-सिदिङ वर्गसिनिहे, त्यो वादनणाटिस्सा; त्यो भटाव-स्वारिडवर्ग, त्यो प्रदिद्याहि-सन्ता; त्यो वक्तपोड सिदिड वर्गदुक, त्यो देवटणाडिस्सा च्या त्यो नीतालात्डि सिदवर्गतायो, त्यो नूक्याडिस्सा श्रीरानिङ;

माणिकास्य छायादयः।

मस्य ।

माणिकास्व ममाखाताण्याया पोड्रम की किताः ।
गुणाचलार चाखाता चरी दोषा मुनीम्बरः ॥ १७५ ॥
कावा स्थात् पद्मरागस्य रक्तकोकनदममा ।
खद्योतानिकाताचिकोकितानेचसिन्नमा ॥ १०६ ॥
सारमाचिवकोरस्य मन्त्रिमेबन्तु सप्तथा ।
रताः मुमफलाण्याः विंचतोस्यमप्तमणेः ॥ १७७ ॥
सन्द्रवोष्ठप्रसामा ग्रञ्जाकिम्रकमिनाः ।
स्वारमाः कृतिन्दोन्तु चतसः परिकोनिताः ॥ १७० ॥
यथना चीरकाया कृत्रीद्कसिन्नमा ।
देणद्रका भवेष्टाया सीरान्यकमणेरिय ॥ १७८ ॥

माणिकका छाया वगैरह।

रत्नपारची परिउत माणिकके मध्ये पोलप्रकारकी कार्या, चारप्रकारका ग्रुण चीर चाटप्रकारका चर्चेय कहे गर्ये हैं। १७५।

सिष्पत्रयक्षे माणिकमे नालकमल, मगजुगनी धर्यात् यह्योतः, चागः कपूतरः, क्रोयेतः, भारम चीर चक्कीरके चागः ममान कावा नियत घोता है, चीर यही पातमकारकी कावा गुभदायक है। १७६। १७७।

कुर्वाबन्द मणिमे सिन्द्रर, लोधपुष्प, गुष्टा चीर पनार-फुलके ममान छाया निर्मेत चोती है। १५८।

बीगस्थित मणिमे इप, रोनोमिनेक्चरे उनके ममान, भीर घोदा सुधीमायेन षाया निसेनती है, उनके मध्ये इपके ममान कांचा दीतनको नाम करती है। १७६।

Shades and other Qualities of Rubies.

TRANSLATION.

175. The authorities mention sixteen kinds of shade, four good and eight bad properties of rubies.

176—177. The rubies of Ceylon emit a gleam like the red-lotus, the glow-worm, fire, or the eye of the pigeon, the cuculus Indicus, the Indian crane or the Greek partridge.

All these shades are auspicious.

178. The Kuruvinda shoots a shade resembling red lead, the gunja berry, or the flower of symplocos racemosa or of the butea frondosa.

179. The saugandhika gem scatters a gleam either pale-red or like milk or the water colored by the crocus Sativus;—of these, the milky lustre blights wealth.

मानिद्दत हासारि।

অহ্বান।

রত্বত্ত পণ্ডিতেরামাণিক্যদথমে ঘোড়শপ্রকাব ছাযা, চারিপ্রকাব তণ ও ঘাটপ্রকাব দোয নির্দেশ করিয়া-ছেন। ১৭৫।

নিংহল-দেশীয় প্রানাগ হইতে রক্তপনা, খন্যোত, অন্নি, কপোত, কোহিল, সার্য ও চকোরেব চলুর ন্যায ছাযা বহির্গত হয়; এই সপ্তবিধ ছায়াই শুভজনক। ১৭৬।১৭৭।

ङ्क्षविन रहेर्ड मिन्द्र, त्नाश्चभूष्म, एवा ७ दिःएक-भूष्म मनुभ होग्रा निर्शेठ रग्न । २१৮ ।

শৌগদ্ধিক মণি হইতে ছ্ব, বুছুমের ফল ও টন্ং রক্তের ভায় ছায়া বিকার্ণ হয়,তত্মধ্যে ছ্বচ্ছায়া ধনহামিকর। ১৭৯। 94

मूचम् ।

र
नीचोत्पलदचच्छाया चोइकान्तिसमप्रमा ।
नीचगत्धमणेः प्रोक्ते हे च्छाये रस्कोविटैः॥

मिवसाचा ।

नीलगन्धिमणेः प्रोके हे क्हाये रत्नकोविदैः ॥ १८० ॥ वालाकाभिमुख कत्ना द्र्पणे धारयेन्मणि । तव कान्तिविमागेन कावामागं विनिर्द्धित् ॥ १८९ ॥ वालाकिकरसंस्रागद्यः थिखां लोकितां वमेत् । राष्ट्रयेदायमं वापि स महाग्रण उच्यते ॥ १८२ ॥

तर्जमा ।

नीलगन्धिमिषिमे नील कमल चौर लोडेके समान काया निकेलनी है । १८०।

पद्मराग वर्गरङ मिलको एक खुब साफ खाइनापर रखकर मुक्को सूर्यके सामने रखनेसे बडी पोत प्रकारको खाटा उप्नेसे प्रकार होती। १८६।

मुक्डले सूर्यके किरवचे स्वर्थमे जिस् माणिकमेरी लालरङ्ग किरवकर तामाम मकानको लालरङ्ग करदे, यक्षी माणिक महागुखविधिष्ठ खर्थात् येलकुल वेश्वयेव

यहा माणिक महागुवाबायछ च्यात् यस्तुत् ४००० चीर खुव की १८८५।

180. The nilagandi shines in a halo like the blue lotus or iron.

181. When the ruby is placed over a mirror and is then exposed to the morning sun, the glass will flash with a lustre composed of all the above-mentioned shades.

182. That ruby which, when exposed to the sun 'new risen,' radiates red rays or paints the whole house with crimson, is surpassingly fair.

অনুবাদ।

নীলগদ্ধি মণি হইতে নীলোৎপল ও লোহের সদৃশ ছান্না বহির্গত হয়। ১৮০।

প্রারাগ নণিকে একথানি দর্পণে স্থাপন করিয়া বালার্বা-ভিনুথে ধারণ কবিলে তাহা হইতে উন্নিখিত বোড়শবিধ ছামা সেই দর্পণে প্রতিবিধিত হইবে। ১৮১।

প্রাতঃসূর্যোর বিরণসংস্পর্ণে যে পররাগহইতে নোহিত-বর্ণ শিধা উদ্গীর্ণ হয়, অধবা বাহা সমস্ত আশ্রমকে রঞ্জিত করে, সেই প্ররাগই মহাওগসম্পন। ১৮২।

मूचम् ।

वमेक्छिवां लोहितास्वा पद्मरागः स उत्तमः । १८६ ।
प्रत्यकारे महाघोरे यो न्यस्तः सन्प्रहामिषः ।
प्रकाययित स्थाभा स न्येष्टः पद्मरागकः ॥ १८८ ॥
पद्मकोयेतु यो न्यक्तो विकाययित तत्क्षणात् ।
पद्मरागवरो स्थाय देवानामिष दुर्तभः ॥ १८५ ॥
यो मणिह याते दूरात् क्लब्रानसम्ख्याः ।
पंप्रकान्तः स विक्रीयः सर्वक्षस्यक्तिकारकः ॥ १८६॥

दुग्धे यतगुणे चिप्तो रञ्जवेद्यः समन्ततः।

तर्जमा ।

जो माणिक अपनेधे श्रीग्रण ज्यादा दुधमे जालदैनेथे सब दुधको लालदद्व करदे; अयवा दुधके अन्दरसे लाल-शिखा बांदेर करें, बड़ी माणिक नेडायेत् जमदा होता है। १८८३। जो माणिक चांदेरेसे सूर्योक्षेत्रमान तेल प्रकाम करें,

वष यस्त्र उत्तम, श्रीर चौखल ट्रजेका है। १८८। जी माणिक कमलके फुलके कलिपर रखतें ही कमलकी खेला देगा, वशी माणिक चक्ते उमदा है, श्रीर देवताचिकी दुर्लेम हैं। १८५।

भो माणिक दूरसे प्यामके समान देखलाद देवे, उस्की वंगकान्ति कश्ते हैं श्रीर उस माणिकके दारा सव-प्रकारकी सम्बत् शासिल श्रीती है। १८६।

E.

183. That padmardga which, on being east into a quantity of milk a hundred times its bulk, makes the white mass one entire sheet of red, or sends out a red flame, is nonparell.

184. That padmaraga which, like the sun, can destroy even Egyptian darkness, is supremely excellent

125. That padmardga which, when placed on the lotus-bud, anon makes it blossom, is Perfection's self—and is hardly attained even by the Gods.

186. The padmarága which is perceptible from a distance like a flame, is entitled vansakánti,—it leads to wealth.

जर्दाम ।

বে পদারাণ খীয় পরিমাণের শতগুণ হুদ্ধে নিকিপ্ত হইরা স্মুদায় হুরকে লোহিতবর্ণে রঞ্জিত, অথবা লোহিত বর্ণ শিখা উদ্গীবণ কবে, সেই পদ্মরাগ অতি উত্তম বলিয়া প্রসিদ্ধ ৷ ১৮৩ ৷

যে পন্মরাগ অতি প্রগাঢ় অফকারেও নূর্য্যের ভার আভা প্রকাশ কবে, তাহা অতি শ্রেষ্ঠ। ১৮৪।

যে পদারাগ পদ্মের কলিকার উপর স্থাপন করিবামাত্র তাহা তৎক্ষণাৎ প্রাকৃতিত হর, দেই পদারাগই দর্ম্ব-শ্রেট, এবং দেবতাদিগেরও ভূর্নত। ১৮৫।

যে পরবাগ দূর হইতে জনন্ত অগ্নির শিথার ভাগ্ন দুখ-মান হয়, তাহাকৈ বংশকান্তি কছে, এবং তদ্বারা সর্ব্ব-প্রকার সম্পত্তি লাভ করা বায়। ১৮৬। मृषम् !

नीलीरसं दुग्धरसं जलस्वा

ये रञ्जयन्ति दिशतप्रमार्णं I

ते ते यथा पूर्वमितप्रश्ला

सोभाग्यसमात्तिविधानदायका: । १८०॥ माणिकास्य समास्त्राता च्यटी दोषा सुनीयरैः । स्वर्ण क्रमणक्ष्मेषां बच्चामि यक्षतो दिज ॥ १८८॥ दिस्हायत्व बीरूपत्वं समोदः धर्करन्तवा । च्योभन कोकिवस्र जद्म धूमाभिषद्व वै ॥ १८८॥

तर्जमा।

को माणिक अपने प्रमाणिक होगो गुण नीलरङ्ग छल,
और दुध अथवा फकत् जलमे डालदेनिके दुक्ती तिन
विभोको लालरङ्ग कर दें, तो दर्ज बदर्ज बेश्वतर है,
अर्थात् नीलरङ्ग जलको सुख करनेवाला भीवन
दर्जिका माणिक है, और दुधको सुख करनेवाला होयेम
दर्जिका माणिक है, और फकत् जलको सुख करनेवाला
येयम दर्जिका माणिक है। और यह तिनो माणिक
दीलतने कारण है। १८-छ।

रत्नपारची पाँउतीने माणिकका जो चाट किसिमका पायेव कहा है, उस्की तपसीसब्यान किजाती है। १८८।

हिच्छायत्व, बिरूपत्व, वस्तेर, कहर, चर्मामन, कोफिल, जल चीर धून यही चार्टाकविधिमका चर्रेव हमेना साणिकने देखा लाय। रिक्ट।

187 All those padmaragas that, on being thrown into a quantity of milk or of water pure or blue two hundred times their bulk, crimson the liquid, conduce to prosperity though they differ among themselves as records worth

188 I shall now describe the eight bad properties of rubies, which have been enumerated by the authorities.

189 Dwi-chchhdyatwa, wrapatya, samveda, karkara, asovana, kokila, jara, and dhumra, are the defects commonly found in rubies

অসুবাদ ।

যে দকল প্রবাগ স্বীয় পবিমাণের বিশত গুণ নীলীবদ,
ছগ্ধ অথবা জলেব মধ্যে নিশিপ্ত হুইলে উল্লিখিত বস্তুত্রথকে
লোহিতবর্গে বঞ্জিত করিয়া তুলে, তমধ্যে পূর্ব্ব পূর্বপ্রলি
পব পর্ঞলি অপেকা অধিক প্রশস্ত এবং সমূদায়গুলিই
সম্পত্তিকাবক। ১৮৭।

বত্ত পরীক্ষকেরা মাণিক্যের যে আট প্রকাব দোষ নির্দ্দেশ ক্বিয়া গিয়াছেন, সেই অউবিধ দোষেব নাম ও লক্ষণ ক্রমণঃ বিহুত করা যাইতেছে। ১৮৮।

ছিল্লায়ত্ত, বীনপত্ত, সম্ভেদ, কর্মতা, অশোতন, কোকিন, জন্ত ও ধূত্র এই অতীবধ দোৰ সচরচির মাণিক্যে দৃষ্ট হয়। ১৮৯।

मूचम्।

हायादितयसन्यात् हिन्छायं वन्धुनाशनं। वीह्पं विपदत्तेन चाणिकोन पराभवः ॥ १८०॥ समोदो भिद्मभित्युक्त शस्त्रघातविधायकं। कक्षेत्र कक्षेत्रयुक्त पशुबन्धुविनाशकत्॥ १८९॥

दार्ध नेव समाचित्र चस्ववीपुटमुच्यते । चर्योभनं समुद्दिरं माणिक्यं वज्जदुःखज्जत् ॥ ९८५ ॥

तर्जमा ।

जिस् माणिकमे दीकिसिमकी छाया निक्ले, उसकी हिच्छाय ककते हैं, दिच्छायका माणिक बन्धुकी नाम करता है, जिस् माणिकमे पद्योकि पाणोका निमान घोष. उसकी बीरूप प्रयोव ककते हैं, बीरूप माणिक माचीककी यस जागे धार हेता है। १८०।

को माणिक एकिकतमे टुटा लिए है, मगर भन्नभाव मानुम होता है, उस्को समोद खयेव कहते हैं, समेदि माणिक मालीकको यह्वाधातके भयसे छुटा निर्ध सक्ता। माणिकमे को कद्वरसा देखा जावे, उसे कर्कर कहते हैं, कर्कर माणिक, पशु धीर बन्धुको नाम करता है। १८९।

जिस् माणिकमें दुधके गमान मानुम चोता हो, उनकी अगोमन खर्येव कहते हैं, खगोमन माणिक बड़ा इस-रायी है। १८२।

190. The padmardga which emits a two-fold shade is called a dwo-chchhdya. A dwi chchhdya ruby is the death of friends. That ruhy which hears a mark like a bird's foot, is called a virápa. A virápa gem always brings humiliation to its master.

191. A samveda ruby is one which shows a mark like a rift. This gem renders its owner liable to blows from a weapon. A karkara ruby bears in its bosom a gritty fragment. It causes the death of friends and is also fatal to domestic heasts.

192. That padmardga which naturally appears as if it were immersed in milk, goes by the name of assorana; this gem is the source of a multiplicity of evils.

অমূবার ।

যে প্ৰমাণ হইতে ৰিবিধ ছামা নিৰ্গত হয়, তাহাকে বিচ্ছাম বলে, বিচ্ছাম প্ৰমাণ বন্ধনাশক, যে মাণিকে পক্ষীর পদ্যচিহ্ন দৃষ্ঠ হয়, তাহাকে বীৰূপ বলে, বীৰূপ মাণিক্য স্বামীকে দৰ্বত্ৰে প্ৰাভূত কৰে। ১৯০।

ভদ্নভাবকে সম্ভেদ বলে, সম্ভেদদোষাপ্রিতনাণিক্য-স্বামী শব্রাবাতেব ভব হইতে মৃক্ত হইতে পাবেন না, পর-রাগেব মধ্যে যে কর্জব (কাঁকব) দৃষ্ট হয, ভাহাকে কর্জব বলে, কর্জবযুক্ত পদ্মরাগ পত ও বন্ধুবিনাশক। ১৯১।

প্রবাগকে ছুক্তে অভিষিক্ত করিলে যেকপ আকার ধাবণ কনে, বভাবতঃ যে পল্লবাগ তজ্ঞপ, তাহাকে অশোভন বলে, অশোভনদোষণানী প্রারাগ বহু ছুঃথের আকর। ১৯২।

मुचम्।

मधुविन्दुसमच्छायं कोकिलं परिकीर्त्तितं। चायुर्वेचीयशौ चन्ति मदोपं तन्न धारयेत्॥ १६३॥

रागडीनं जद' प्रोक्तं धनथायविनाग्रकत्। धूम्रं धूम्रममातारं वैद्युतं भयमावडेत्॥ १८८॥ दंहग्दोपस्रतो निन्द्रा मणयो मूख्यर्जिताः। चपि प्राप्ताः न ते धार्यो पृष्ठे योभनमिन्द्रता ॥ १८५॥

सर्जमा ।

जिस् माणिकसे सक्दरे किटेके समान को, खस्की कोकिल अपेन ककते हैं, कोकिल माणिक उमर, दीवत भौर नामरीको नाम करता है। इस कारण ऐना माणिक कभी पर्वराम मनासिक नहिं। १८३।

जो माणिक रङ्गदार जिं, उनको जड़ कहते हैं। जड़ चर्यवयुक्तका माणिक सम चौर सान्य नाम करता है। धूर्य ऐसे रङ्गके माणिकको भूस कहते हैं, धूस चर्यवका माणिक विज्ञा गिराता हैं। १८८।

जो सब अयेव उपर वयान कियेगये, यही सब अवेव-दार माणिक नेषायेत. अवेबी और निन्दाके योग हैं। और वज्जतकम किमत, ऐसे माणिक मुक्त मिन्देगेसी अपने भावाद अधिनेदाने कसी अपने यास या

मकानमे ना रखेगा। १६५।

193 The mark in a ruby which looks like a drop of honey, is called a *lokila* A *lokila* ruhy is immical to life, wealth and fame, and must be shinned.

194 The quality of being discolored is called jara A jara padmaraga causes loss of wealth. The color of a padmaraga which looks like smoke, is called dhumra * A dhumra colored padmaraga renders one liable to lightning stroke

195 The above mentioned rubies are worthless and permicious, and should never be treasured up, even were they to be had for the gathering

षञ्दाम।

প্রাবাগের উপরিভাগে যে মধুবিন্দুর ন্যায় দাগ লক্ষিত হয়, তাহাকে কোফিল বলে, কোফিলদোয়বিশিকী মাণিক্য আয়ু, লক্ষী ও যুশ বিনাশ করে, অতএব তাদুশ পদ্মবাগ কদাচ ধাবণ করা কর্তব্য নহে। ১৯৩।

পদ্মৰাণেৰ বাগহীনতাকে জড কহে, জডযুক্ত মাণিক্য ধনধাতাদি বিনাশ কৰে, ধূত্ৰেৰ সাথ বৰ্ণকে ধূত্ৰ বলে, ধূত্ৰ-বৰ্ণ পদ্মৰাণ বজ্ৰপাতেৰ ভব উৎপাদন কৰে।১৯৪।

উল্লিথিত দোষাশ্রিত মণি অতিশ্ব নিদনীব এবং মূল্য হীন, এবন্ধিধ বত্ন অনাবাদলত্য হইলেও আত্মহিতেজুণ্ণ কদাচ তাহা গৃহে বাধিবেন না। ১৯৫।

^{*} Literally smoke

मूखम् ।

योभादितयवन्तो ये भण्यः चतिकारकाः।

उभयच पदं येवा तैरेव स्थात् पराभवः ॥ १८६॥ ये कर्क राष्ट्रियमनोपरिग्धाः

कक् राष्क्रद्रमसापादग्धाः ग्रमाविमुक्ताः वर्तवा विवर्षाः ।

न ते प्रयक्ता मणयो भवन्ति समासतो जातिसुणै: समक्तैः ॥ १८७ ॥

दोषोपसृष्टं मणिमप्रवोधाद्

विभक्ति यः अद्यन कश्चिदेकं। तं वन्युदुःखाय सवन्युवित्त-

नागाद्यो दोषगणा भजन्ते॥१८८०

सर्जमा ।

जिस् माणिकको शोमा दोकिनिमको है, चर्चात् कभी कोड रद्ध, भौरकभी किनितरहेका देख्लाइ देता है। यह वज्जतही लोश्यान करनेवाला है भौर जिस्के रो जगहमे पद्योक पार्थोका निशान हो, उस्का हार्वेका कारण है। १८६।

कारण व १८८६। अर्थात् कक्ष रदार, घेंदा अर्थात् केंद्रवाला, मंत्रव, अर्थात् मवका, प्रभाषीन, अर्थात् दिक्षि होति केंद्रवाला, मंत्रव, अर्थात् स्वयात् मिरक घेंति, वेदक घेंचात् वेदक घेंचा माणिक घेंगर उत्तम जात, अर्था और ग्रुणोर्थ भूषित

हो, वेकिन कभी चाच्छा निहा १६७। चगर कोइ, चादमी चन्नान चीर लाइन्सीसे चयेनी

चगर कोइ चाद्मी चन्नान चौर वाइन्सोत मर्यना माणिक पहेरे, तो जहर उस् चाद्मीको भाइ, चौर दीलत वगरुष्ठे नामका इस्मीग कर्ना होगा।१८८।

196. Those rubies which send out a two-fold shade, bring about loss; and those which are marked with a hard's foot in two several places, are the cause of defeat.

197. Those which bear gritty fragments and are indented, dirty, lack-lustre, rough and discolored, are certainly unlucky, although they may be otherwise good and may belong to a superior caste.

198. If through ignorance, a person happens to wear a defective ruby, loss of friends, destruction of wealth et cetera, are the inevitable consequences

অমুবার ।

যে সকল মণিব শোভা দ্বিবিদ, তাহাবা অভিশ্য ক্ষতি কাৰক, এবং যাহাদেব ছুই বানে পক্ষীব পদ চিহ্ন থাকে, তাহাবা প্রাভবেব কাবণ। ১৯৬।

যাহাবা কর্ক বযুক্ত, সচ্ছিদ্র, মলিন, প্রভাহীন, কর্ক শ ও বিবর্ণ, তাহারা উত্তমজাতি বা অভ্যান্য ওণসমূহে ভূষিত হুইলেও কুদাচই প্রশস্ত নহে। ১৯৭।

যদিকোন ব্যক্তিঅজ্ঞানতঃ দোবদূষিত মণি ধাৰণ কৰে, তাহা হইলে সে ব্যক্তিকে অবশ্যই বন্ধুবিতনাশাদি দুঃধ ভোগ কবিতে ইইবে। ১৯৮। सच्छ।

सापलामध्येऽपि कताधिवासं प्रमाददृतावपि वर्त्तमान ।

प्रमादहनाविष वन्तमान । त पद्मरागस्य मचागुणस्य भर्नारमापत समुपेति काचित् ॥१८९॥

दोषोपसर्गप्रभवाद्य ये ते नोपद्रवास्त्र समसिद्रवन्ति।

युणे समुखी सकति रुपेत य पद्मरागं प्रयतो विभक्ति। २०० ॥

चित्रांति यथा दिलातीन् प्रमेख भूरीनिष हिला यहात्। तथा मणीन् भूरियुक्षोपयन्नान्

यान् भूरश्रुवापयनान्। यक्षोति विद्रावियतं विवाति ॥२०१॥

तर्थमा ।

जिय्ने मजानमे वेश्वयेवी भाणिक रहे, वह शाहमी श्वार सब्बेटा शीतरफा इसमनने रहनेवाले मकानसे रहे, श्रववा वज्जत् तरहनी तक् निपने पद्धे, तोभी उस्को कीर श्वाफत पकद नहि सक्ति १८८।

जी जात पक्ष गाँव का ता (२८१)
जी जादमी पर्वयुक्त समझ ज्यात् तामाम वस्की
मराज्ञ्या एक माधिक पडेरे, जीर उसके साथ भी माधिक
अध्वदार पडेरे, तो उस्का कुच सीर्मान निंह भी
सक्ता (२००)

किस परितिषे मतसे ए सामी कहा है, के एव पाएडान निस्तरहसे भी शाजार ब्राह्मणको दूपित करदेता है, उसी प्रकारसे एक विज्ञाति रहा भी भी स्वयंग्रवस्य प्र रक्षको दूपित करता है। २०१।

199. The man who keeps in his house a storling padmarága, can with perfect safety, constantly live in the midst of enemies, and is impervious to the nttacks of adverse fortune

200. He who wears a padmarága of matchless virtues, need not apprehend any mischief from the foul touch of had padmarágas without numher.

201. According to some, as the contact of a single chanddla* suffices to contaminate ever so many Brahmins, even so one impure gem serves to pol lute pure gems ad infinitum

षश्वाम ।

যাহাব গৃহে দণ্ডণ পদ্মৰাগ থাকে, দে ব্যক্তি যদি সৰ্বদ। শত্ৰু পৰিবেষ্টিত স্থানে বাস কৰে, অথবা নানা প্ৰমাদে পতিত হয়, তথাপি কোন আপদ তাহাকে কথনই আক্ৰমণ কৰিতে সমৰ্থ হয় না। ১৯১।

যে ব্যক্তি সর্ব্বগুণসম্পন একথানি প্রবাগ ধারণ কবে, সমস্ত দোষদূষিত শত পত্ররাগেও তাহার অনিউ সাধন কবিতে পাবে না ।২০০।

কাহাৰও মতে এক জন চণ্ডালেব নহবাদে বেমন শত সহস্র আন্ধান দূষিত হইবা থাকেন, দেইপ্রকাব একথানি বিজাতি রত্নত শত শত শর্কপ্রথমস্পান বত্নকে বিদ্রাবিত কবিতে সক্ষম হব। ২০১।

[•] The generic name for a man of the lowest and most despited of the mixed tribes, born from a budra father and a Brahmin mother.

मृचम्। जात्यस्य सर्वेऽपि मणेने जात्

विजातयः सन्ति समानवर्णाः।

तयापि नानासरणार्थमेवं भेदपुकारः परमः प्रदिष्टः ॥ २०२ ॥ गणोपपञ्चेन सहाववडो

मणिने धायों विग्रणो विजात्य'। न कौसुभेनापि सहावयद्वं

विदान् विकाति विश्ववात् कदाचित्। २०३ । गुष्टाफलममाणस्य दशस्त्र विग्रह्मकान्। पद्मरागसुखयति यथापृष्टं भसाग्वयः। २०४ ।

त्र्जमा ।

पहेर्ना मनासिफ निह । २०३।

धव तरक्षे विज्ञाति सिव कभी छुजात सिवके यमान यर्थ को भिक्ष सका, वछत् तरक्षे छानीके भेट्से रहके किनायये योजा करक कोता की २०२१

विजाति मणि स्व तरक्षे ग्रुणसम्बद्धमणिगृहित एक जगड जड़ेयाने घेभी पहेर्ना मनाहिष महि है, पण्टित स्रोग कहते हैं, विजातिमणि स्रोद्धममण्डिसे मातमेथी

मुद्धापलके यमान माधिक घोजनमे तिन, घयवा मान, या दम गुद्धाके बराबर को चला है, उस्मेमे को जिस्कद्र जादा घोजनी कोगा, यह गुयमे ज्यादा है। १०४।

TP ANSLATION

202 The colors of defective rubies are never like those of good rubies, yet to a certain extent they differ one from the other in color in accordance with their respective mines

203 Bad rubies should never be worn, although set along with the best rubies—nay, should they happen to be in company with Kaustuva* itself

204 Padmarágas which resemble in shape a gunja berry, may weigh three, seven or ten gunjás, and the heaviest is the most precious

অভ্ৰাদ।

সর্ব্ধপ্রকাব বিজ্ঞাতি মণি কথনই স্কৃজাত মণিব সনান বর্ণ প্রাপ্ত হয় না, কিন্ত নানা আকরতেদে তাহাদেব বর্ণগত কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ ভেদও লক্ষিত হয়।২০২।

বিজাতি মণি সর্বপ্রকাৰ গুণসম্পন্ন মণিব দহিত একত্র সম্বন্ধ ইইলেও ধাৰণ কৰা কর্তব্য নহে, এখন কি পণ্ডিতেবা বলেন, বিজাতি মণি কোন্তভ্যাণিব সহিত আবন্ধ হইলেও তাহা পণিত্যাগ ক্রিবে। ২০০।

ওঞ্জাফলের সমান আকাববিশিষ্ট প্রবাগ ওজনে তিন, সাত ও দশ গুঞ্জাপরিনিত হইতে পারে, তন্মধ্যে যাহা ওজনে বত অধিক ভাবী হইবে, তাহা তত ওপশানী বনিবা প্রসিত্ত। ২০৪।

[•] The name of a celebrated newel obtained with thirteen other precious things at the churn ng of the ocean. It was suspended on the breast of Krishna.

म्सम् ।

कोष्ट्रकोलफलाकारो बाद्याष्टी बिगुञ्जकान्। पद्मरागस्तुतवाति यथापूर्व्व सष्टाग्रुवः ॥ २०५ ॥ वदरीकलतुत्वो यः सूरदिज्नवमायकः। धाचीकलसम्ल्यादियतिबाष्टमायकः ॥ २०६॥ तथास्कलतुत्वो यो विज्ञपत्तिकाष्टमायकः। तास्मूलीफलमानो यदात्तिहोसकोलकः॥ २०७॥

सर्जमा ।

क्षष्टुष्पत पार्थात् स्वाकुलको समान बद्दा साथिक चाजनमे बार, चयथा चाट, चयवा दा ग्रुङ्का के प्रमाण चीता है। २०५।

जिस्का कर बयेरके समान ही, उसका राज भीजनि बार, द्या चौरनी माधा ही, जो देखने ने चामले के कबके ममान ही, वह भोजनमें विश्व, विश्व चयवा गील सामानक हो सक्ता ही। २०६।

रीष्ट्राचके फलके धनान माधिक तिन, भगवा दे। भगवा एक नामा डीए, ताम् खीफलके समान की माधिक भीए, वक्ष भीजनमें चार, तिन, दे। भीर एक तीला डी सहा भी १२०७।

205. Padmaragas resembling the fruit of Kroshtu (Terminalia Catappa), may weigh two, eight or twelve quarias.

206. That padmarága which is plum shaped, weighs nine, ten or twelve mdshás,* that resembling the fruit of the Emblic Myrobalam in shape, weighs sixteen, twenty or thirty máshás.

207. A rudrákshya-shaped† padmarága weighs one, two or three máshás, a támbuli-shaped‡ padmarága weighs from one to four tolás.

অপুৰাৰ।

শেষাকুলেব স্থায় আকাববিশিষ্ট পন্মরাগ ওজনে বার, আট ও চুই গুঞ্জাপবিমিত হয়।২০৫।

যাহাব আকাব গামাত্ত কুলেব ভাষ, তাহাব ভাব বাব, দশ ও নয মাথা; বেওলি দেখিতে আমলকীফলেব ভায়, দেগুলি ওজনে ত্রিশ, কুড়িও যোল মাথা হইবা থাকে।২০৬।

ক্রাক্চলসদৃশ প্রবাণেব ভাব তিন, ছুই ও এক মাবা; তাছুনীফলসমানাকাব প্ররাগ ওজনে চারি, তিন, ছুই ও এক তোলাপরিমিত হয়। ২০৭।

^{*} A particular weight of gold, = five brishnales = 1sth suverna (the weight in common use is said to be about seventeen grains Troy) Williams

[†] The berry of a kind of tree, Elementus Ganitrus ‡ The berry of a plant of the same name

मूचम् ।

विध्वीफलसमाकारो वस्तपङ्क्यातीलक ।
चत पर प्रमाणित मानेन च न स्थते ।
विद् तथ्येत प्रखोत तदा सिद्धिमवामुद्यात् ३०८ ।
केचिद्याचतरा सन्ति आत्याना मित्रपता ।
विजातय प्रयत्नेन विद्यासानुपलद्वयेत् । २०९ ।
च च प्रमुख्य न विभाति
यो वा प्रमुख्य, प्रजदाति दीक्षिं।

यो वा प्रमुख्यः, प्रजद्यातं दीप्ति चाक्रान्तमूद्वीच तद्याद्गुलिभ्या

य कालिका पार्श्वगता विभक्ति। तं छचिम जातिविद्योगरत

दूरात्तरजेत् भूमिपति स्वभ्यं । ५१० ।

तर्जमा।

जिस्का कह विश्वपन ने समान शीए, उनका श्रीजन हर, जाट, कय तीना शी सका है, इन्हें द्यादा बहा श्रीर श्रीजनने भारी साबिक याया निष्ठ जाता श्रीक श्रीप सायवन्ति स्त्रीविक सिन, तो वह तामास वस्त्री सिद्धितो शासिवका पत्री है। एक ।

केत्ने विजाति रत्न सुझाति रत्नके समान दिनधर भार्यात् मने। मुश्रोते के, लेकिन प्रविद्यत लोग इम् किसिमके रत्नका त्यागकरनेकी कड़ते के। २०९।

जो माणिक चमकदार होकर प्रकाश ना पाने भीर जिल्ले कापदेसे साम कर्नेचे पड़ेकि ए सी चमक कम ही जाए, भीर दो चहुनीसे पकदकर चडानेसे कालापन देखलाह देसे, एसे किसिमका साणिक क्रांचम क्यांत्त परेशी चीर विज्ञाति करवाता है, चसको सुप्त पानेसेमी एहेरना मनाधिक नहि। ५१०।

208. That padmardga which is like a vimba,* weighs six, eight or ten tolds—this is the maximum of weight. If any man by good luck happens to obtain a heavier padmardga, he will succeed in whatever he undertakes.

209. Some vicious rubies are as beautiful as good ones; but the authorities advise us to shun them carefully.

210. That pdmarága which is lack-lustre, or which loses its former brightness on being rubbed by cloth, and which betrays a dark shade on its sides on being held between two fingers, is a false and vicious gem, and should never be worn even when it is selling for a song.

অভ্ৰাদ।

যাহার আকাব বিষ (তেলাকুচ) কলেব তুল্য, তাহার ভার দশ, আট ও ছ্য তোলা হইয়া থাকে। ইহার অধিক রহদাকাব বা গুরুভার পদ্মরাগ পাওষা যায না, যদি কোন প্যবানের ভাগ্যে ঘটে, তবে তিনি দর্কবিব্যে দিছি লাভ করিতে পারেন। ২০৮।

ক্তকগুলি বিজাতি বন্ধ হুজাতির ভাষ মনোত হইযা থাকে, কিন্তু পণ্ডিতেবা তাদৃশ বন্ধকে অতিবন্ধপূর্বক পনি-ভ্যাগ ক্বিতে বিধি দেন। ২০১।

যে পদ্মবাগ চাব্চিক্যশালী হইবা প্রকাশ পায় না,
যাহাকে বন্ত্রাদিবাবা উত্তমক্রপে মার্চন করিলে পূর্বর প্রভা পরিত্যাগ করে, ছুইটা অসুনিবাবা বারণ করিলে যাহার পার্মে কালিমা দৃত হয়, সেই পদ্মবাগ রন্ত্রিম, বিজাতি,
তাহা অতি দ্বলত হইলেও কথনই ধারণ বনিবে না। ২১০।

[•] The bright-red gourd of a plant (Momardies Monadelpha)

म्चम् ।

समणस्वति चन्देहे माणाया परिवर्षयेत् ।
सुनातकषमुत्ये न विखेदापि परस्यरं । २१९ ।
एटोऽप्यत्यन्त्रयोभावान् गरिमाणं न सुन्दति ।
सुन्तेयः सुद्वभातिस्य न्त्रीयसाये विजातयः । १९२ ।
कुर्यावन्दं तया बद्धा विस्त्यान्येन केनचित्।
न मक्तं नेस्वनं कर्न्तं पद्मरागेन्द्रनीनयोः ॥ १९३ ।
यन्मृत्य पद्मरागस्य मगुणस्य प्रकीर्त्तं ।
तावन् मृत्यं तथा मुद्वे कुरुविन्दे विधीयते ॥ १९४ ॥

तर्जमा ।

कोइप्रकारने परीचा कर्नेसेभी खगर सन्देश दूर ना होता, यानने यन्त्रपर विस्नेसेकी फरेबी और आवल माणिकका हाल मालुम हो आयेगा, खवना आसन माणि-कसे विस्नेसे फरेबी माणिकका हाल मालुम हो जायेगा, खर्यात् कर जायेगा। १९१।

चो माणिक यिन्नेचे चौरभी उमरा चो और चोजनमें कम ना चौर, वची माणिक चासन है, उसके सेवाय सब माणिक विज्ञातिने समार किये गडे हैं। ५१२।

कुरुविन्द भीर घीरके सेवाय किंगि जानका रहा ^{माणि} कको कट निष्ट सक्ता । ५१३ ।

मळ्युणमम्बद्धा प्रधात् सव तारिकोसे भरा छया माणि कवा जो मूल होता है, वही किसत बेचयेव कुर्रावन्द कीमी होति है। २९८।

211. Should other tests fail in dispelling doubt, the reality or otherwise of a padmarága will he indubitably ascertained by rubbing it upon a whetstone or with a padmarága of tested genuineness. A false padmarága will receive scratches from the process.

212. That padmarága which shines out the more, the more it is rubbed, and which is moreover not light, is a pure gem; the others are impure.

213. Excepting kuruvinda and diamond, no gem can make scratches upon either the padmarága or the indranila.

214. A genuine kuruvinda is worth as much as a padmardga furnished with every quality.

অনুবাদ।

অন্যান্য পরীক্ষাষারা সন্দেহ দূর না হইলে গাণ্যস্কে ঘর্ষণ করিলেই প্রবাগের ক্রিনাক্রতিমন্থ প্রকাশ পাইবে, অথবা হাপরীক্ষিত অপব একথানি পদ্মরাগের সহিত পর-স্পার ঘর্ষণ করিবে, তাহা হইলে ক্রতিমথানি অন্ধিত হইবে। ২১১।

বে পদ্মরাগ অত্যন্ত যুক্ত হইলে অধিকতর শোভা পায়, এবং পরিমাণে লঘু না হয়, দেই পদ্মরাগই শুদ্ধজাতি, তদ্বৈপরীত্ত্যে বিজাতিমধ্যে পরিগণিত হয়। ২১২।

কুরুবিন্দ এবং হীরক ভিন্ন অপর কোন জাতীয় রত্ন পন্মরাগ ও ইন্দ্রনীলকে অফিত করিতে সমর্থ হয় না। ২১০।

দর্মগুণসম্পদ প্রারাগের বংপরিনাণে দ্ল্য নির্দ্ধিত হয, বিশুদ্ধ কুরুবিদ্দেরও সেই পরিনাণে দ্ল্য হইয়া থাকে। ২১৪। समुणे कुर्नावन्दे च यावन्मूच्य प्रकीर्तित । तावन् मूल्यचतुर्यायचीन सादि समस्यिते । १९५ ॥ यावनमूल्यं समास्यातं वैद्यवर्णे च ग्रस्थितः । तावन्मूस्यचतुर्यायं चीवत ग्रद्रजन्मनि ॥ १९६ ॥

वर्णदीप्तापपदा हि मिल्यतं प्रमस्तते । तास्यामीपदिष स्त्रष्टो मिल्यमूच्यात् प्रधीयते । २१७ । सन्देशे वदि जायेत क्षत्रिमे सहजेऽपि वा । ज्यत्योत्य वर्षयेष्ट्रलं कृष्टिमं तहिमिद्यते । २१८ ।

तर्जमा ।

वेश्रवेव कुरुविन्द्यो खेत्ना टाम होगा, चौगिर्सिका दाम उस्से चार चाना कम होगा, खर्चात् कुरुविन्दका दाम खगर एक रोपया होए, तो सौगिर्सिकका दाम बारे खाना होगा। २१५। वेश्रवर्ण माणिकका जो दाम होगा, श्रद्भवर्ण माणिकका उससे चार खाना कम होगा। २१६।

मध किसिम्का जवाहेरात् कुट चौर रद्वसे छमरा होता है, चौर इसिकि जरामि कमिसे उसका दामभी कम

हो जाता है। २९७। ध्यार किनि रलको सम्भक्त सुक् स्यद्त होण तो णक्ष साझा रलसे धिमना चाहिए, तो अस्तरत्व पर हो जाये

साच्चा रत्नमे घिम्ना चाडिए तो मुठारत्न पुर हो जाये गा। ५१८।

E.

7.0

215. A saugandhila is worth three-fourth the price of a lururinda.

216. A súdra padmarága is, according to the authorities, worth three-fourth the price of a Vaisya padmarága

217. All gems derive their value from their lustre and their color; accordingly, gems which are found wanting in these two essentials are of small worth.

218. When doubts arise as to the reality of a gem, the infallible test is to rub it with another gem of tested worth. A false gem will be reduced to fragments under the process.

. जन्दार।

বিশুদ্ধ বুরুবিলের যত মূল্য হইবে, হুণজিকের মূল্য তাহার তিনের চতুর্বাংশ হইয়া থাকে। ২১৫।

পণ্ডিতেরা বৈশ্ববর্ণ পরবাগের চতুর্বাংশহীন দুল্য শুদ্র-জাতি পরবাগের দুল্য নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন। ২১৬।

সর্বপ্রকার রক্ব দীপ্তি ও বর্ণাসুদাবে প্রাশস্তা লাভ করে, দেই বর্ণ ও দীপ্তি হইতে ঈবংপরিমাণে এই হইলে তাহার মুন্যও অন্ন হইবে। ২১৭।

যদি কোন রয়কে হতিন বলিয়া গদেহ অন্ম, তবে একথানি অহতিন রয়ের সাহত ঘর্ষণ করিবে, তাংগতে হতিন্যানি চুর্গ হইয়া যাইবে।২২৮। मखिमाचा ।

मुखम।

सम्बन्धणसम्बूषे पद्मरागे गृहे स्थिते।

च्रावमेधफलं तस्य वित्तमायुर्जयं लमेत् । २१८ ।

तरजमा।

सर्वेलचणात्रान्त एक पद्मराग अवति माणिक मकानमे रहने हे अयमेधयम्का फल लाभ अनावास प्राप्त होता है, और उस्से धन, उनरकी हिंदु और अय लाम होता है। २१८।

इति पद्मरामका वयान।

219 The treasuring up of a padmarága furnished with every perfection is as meritorious as the celebration of the Aswamedha* jajna, and leads to wealth, success and leng life

অধ্বাদ।

নর্বলক্ষণাক্রান্ত একথানি পদবাগ গৃহে থাকিলে অথনেধযজেব ফল অনাযাদে প্রাপ্ত হওয়া যায় এবং তাহাতে বন, আয়ুর্কৃদ্ধি ওজ্ব লাভ হয়।২১৯।

ইতি প্ররাগ।

[•] The Horse Sacrifice a celebrated ceremeny the antiquity of which reaches back to the Ved e period. Fide bymns 162 and 163 in the first Mandals of the Rig Ved. In later times its efficacy was to entitle the sacrificer to displace Indra from the dominion of Swarga. In it, the horse was generally, if not always immolated.

THE RUBY

Its Properties

HE Ruby is perhaps the hardest substance known next, of course, to the Diamond It is a variety of the Corundum, which name (de rived from the Sansl rit I orund,) is used to denote the class of aluminous stones generally, and particu larly a species or subdivision of that class Besides the crystalline form (which is generally rough and deformed), the Corundum appears in compact masses and in aggregates of grains of different sizes All the different varieties of the Corundum derive their names from their colour Thus, the erimson red Corundum is called the Oriental Ruby, the colourless, white Sappliere, the azure blue, Oriental Suppliere, the indigo blue, indigo Sapphire, the violet, Oriental Amethyst, the yellow, Oriental Topaz &c &c &c Count Bournon was the first European who had classified the Corundums into different heads (in 1802) But the Eastern nations have however adopted the different designations for several centuries past. The first and most important variety of the Corundum is the Rubythe coarsest being the Emery, which is used for polishing metals gems, marble &c It is sometimes more valuable than the Diamond, when it is of a large size, good colour and free from defects. Its specific gravity is from 3 9 to 4.1. The electricity which it obtains by friction continues for a considerable time. This stone is composed of alumina and coloured by traces of metallic oxides, chrome. &c. Like the other varieties of the Corundum. it is infusible by itself, but together with a flux, melts with difficulty into clear glass. It is possessed of double refraction, though not to a very high degree. The system of crystallization to which it belongs is rhombohedral. Its cleavage is basal, that is, it breaks across the prisms with nearly a flat surface. Its lustre is vitreous It loses nothing of its beauty when viewed by artificial light. Its colour varies from the lightest rose-tint to the deenest carmine. The two extreme colours are not liked at all. The most estcemed colour is, what is called by the jewellers, the "pigcon's blood,". which is a pure deep rich red, without the faintest tinge of blue or yellow. The other colours are light-red, white, crimson, peach-blossom, violet, &c. The Ruby is divided into four classes.

1st.—The Oriental Ruby, called by Pliny the Indian Carbuncle, is the best favorite and most valuable of all. Its chemical properties have heen described under the general heading. Theophrastus speaks of it as being incombustable and having the appearance of a burning coal when held up to the sun. Hence the name "Anthrax" (or "live coal.")

given to it by the Greeks. The ancient writers, both of the East and West, have described it as having the power of shining in the absence of all light. The fact is, that the Ruby can be rendered phosphorescent by exposing it to sunshine for sometime or by putting it in a closo crucible, heated to a certain degree.

2nd.—The Spinel Ruby is of a fine lively red hue, with a oinnam on tint about it, but is very inferior to the true Ruby in brilliance. It is found in granular lime-stones; is transparent and translucent and receives its red tint from chromic acid. It belongs to the cubic system of crystallization and is almost found in octrahedral crystals. It does not acquire electricity either by friction or heat; is possessed of simple refraction and is infusible before the blow-pipe. It is distinguished from the Ruby by its peculiar formation and inferior hardness. Its specific gravity is from 3-5 to 3-8. It is called by the natives of India the Lal Rumani or the Pomegranate Ruby.

3rd.—The Balas Ruby is of a pale rese-colour and is of the same composition as the Spinel. According to the Persian tradition, the mines of these stones were not discovered until after an earthquake which rent the mountain in two. Their inferior hardness prevented people from taking them as the real Rubies. The ancient Greeks connect the origin of the name "Balas" Ruby with the word "Palatius," as they supposed it to be the matrix or

palace in which the true Ruby was found Probably, thename is derived from the mountain "Ballaheia" in India, which, according to Marce Polo, used to supply this stone. The old French name "Rubin de Balais" adds weight to this assertion The name Balas may have originated from the word "Ballen" or king—the Phrygian name for a certain flery stone. Chardin attributes the origin of the name to "Balachani," the stone of "Balachan" (Pegu)—the Persian name for the Ruby. Some say that the original of the term "Balas' Ruby is the ancient name of Beloochistan, Balakschan or Balaschan.

4th.—The Rubicelle is an inferior variety of the Spinel and is of a vellowish red color.

The Rubies are often found in company with Sappline, Zircon, oxide of tin, magnetic iron, Topaz, &c. Where Rubies and Sappbires are met with, gold is almost certain to be present.

Where found.

The finest Oriental Rubies come from Burmah, Siam, India and Ceylon. Rubies are also found in Hohenstein on the Elbe, in the rivers Rhine and Danube; Espailly in Auvergne and Iser; in Bohemia, France, Brazil, Australia, Borneo, Sumatra, &c

The most beautiful of these stones are those that come from Burmalt. The mines are very strictly guarded and rendered difficult of access to the Europeaus. They are a royal monopoly, extreme care being taken to prevent the stones getting out of the country. The excessive fondness of the King for these stones has earned him the title, "Lord of the Rubies" Whenever any particularly large stone is found, a procession is sent with great colat to meet it. When Pegu, the "father land of Ruhies," was annexed to the British Crown in 1852, it was thought that the English Government would be richer by its ac But whether on account of the dangers in the shape of wild beasts that surround the Rubyyielding countries, or some other cause, tho Government has been sadly disappointed. The inhalitants of Burmak believe that Rubies ripen in the earth, that they are at first crude and colorless, and that, as they ripen, they become yellow, green, blue and last of all, red-which is the sure sign of perfect ripening The Burmese law prohibits the sale of Rubies in the market and makes it compulsory on the discoverer of stones of a certain weight (100 ticals) to make them over to the Government, under pain of death. To avoid this dangerous law, the finder often breaks up the large stones into small pieces; thus causing more loss to the Government than he gains. The Ruhics that come out of Burmah must be either stolen ones or passed out through the agency of private individuals.

The Rubies that come from Ceylon are generally

found in the beds of rivers.

Some pretty looking Ruhies have been found for many years in Badakshan, a part of Tartary.

Some were also found on the slopes of the Oxus, near to Shushan and Charan. The natives of these places are under the impression that Rubies always occur in pairs. If they chance to find out one, they are sure to conceal it until the other is found, failing which, they will break it in two.

Many Rubies have been found in the gold washings in Australia, but most of them are taken no notice of, being considered as Garnets. Some, however, of very good quality have found their way into the London market.

The Spinel Ruhies are found in rolled pebbles in alluvial denosits and the beds of rivers in Cevlon. Ava, Mysoro, Beluchistan, and other Eastern countries: in Meronity in Bohemia and in Libenhurgen; in the region between Amity and Andover in North America; also in the Ovens River in Victoria and in the Pearl Rivers of New South Wales and other parts of Australia. Blue Spinels are found at Aker in Sweden; also in Torland and Straskan in Moravia; in Antwerp and Cevlon. These are translucent and generally contain three to four per cent. of iron. The Chloro-Spinels or green Spinels are found in the Ural Mountains. Black Spinels or Ceylonites, (also called Pleonaste by Hauy.) have been found in Covlon. Bohemia in the River Iser, in the Tyrol, at Andernach on the Rhine. in Russia and in several places in the United States, where also the brown Spinels are found in abundance The specific gravity of the Pleonaste

is from 35 to 38. The principal thing in its composition is aluminum and about 10 per eent of protoxide of iron. It is infusible before the blow pipe and with borax forms into an iron colored glass. The automalite or zinc Spinel is found in Sweden. The white Spinel is found at La Riccia near Rome. Some also come from Brazil mixed with Drimonds.

The Balas Ruby has been described by Marco Polo as being chiefly found in the Balascea or Ballahia (on the upper Oxus,) where they were found below the surface soil, and from which place, he had, in the latter half of the 13th century, made a collection

Mode of Cutting

THE Ruby is cut by means of Diamond powder on an non wheel or shaff, and polished on a copper one with tripolis and water. In the East, Corun dum is used for cutting, but the work is not flat and sharp. The usual form of cutting is the mixed or half brilliant, although silky and imperfect stones are often ent en cabochon—a cut by which the stone receives one or two convox faces, with or without facets at the base. The Asteriated Rubies, that is, those that have a six pointed star across the crystal, formed by a silky imperfection in the gen, are also cut en cabochon and particular care is taken to get the centre of the star as nearly

as possible in the middle of the gem. Such stones, if possessed of good colour, fetch very high price in the market

The Spinel is cut on an iron wheel, with Emery or Diamond powder and polished on a copper one. The form is generally the mixed-cut. The colour of this stone becomes deeper by being heated.

The Ruby, as known to the Ancients.

THE Ruby is spoken of in the book of Job and in the Proverbs, in the Bible. The breast-plate of the High Priest, which was composed of twolve stones, included the Ruhy, then known as tho Carbunele. The fact of its having been well known to the ancient Greeks and Romans admits of no question whatever. The Anthrax of Theophrastus and the Indian Carbuncle of Pliny are, boyond doubt, Rubies According to Pliny, the Ethiopians used to increase the lustre of Rubies by steeping them in vinegar for 14 days. Though this process added to their splendour for the same number of months, they were afterwards rendered softer and more brittle. Ælian, an ancient natural-historian, relates how a certain widow named Heracles, had tended a young stork and cured one of its fractured legs and how the hird, in token of its gratitude for her kindness. presented her with a Lychnis (Ruby). But the question as to why of all others the Lychnis was selected for the present, is best answered by the

assertion of Philostratus, according to whom, storks were in the habit of placing these stones in their nests as amulets against serpents, and there fore as a fitting reward for the valuable services rendered by Heraclea, such a useful thing was presented to her In an account of the statue of the Syrian Goddess (Astarte), Lucian speaks of her, as wearing on her head a gem called Lychnis (lamp stone,) which used to light up the templo throughout the night Epiphanius, speaking of Carhunclo, says, "when worn, it is impossible to conceal it, for notwithstanding whatsoover clothes it may be covered over with, its lustre shows itself outsido its envelope, whenco it is called Carbunelo" The Oriental nations speak of Rubies and other precious stones as illuminating the place in which they were I ept . In China, Rubics have been used from the earlist times for ornamenting the slippers of women and in India, for being set into cups, vases, sword handles or pipe mounts and other ornamental things

Lugrarings

Ancient integlios and cameos t engraved on this stone, are still in existence, some of which are said

subjects are in ref for re-set above the surface. Both these k ods of eu. a ng can be executed on a mot all sorts of stores.



^{*}Tiere is a bel ef exist gill attat Rubbes grow i the lead f seeps to an it hat tier can be obtained by throwing a lump of cow recpe is an rular tier can be outstand by thorough a long of the fine of the properties of the state of the s

to have been done, 500 years B. C ,-a period when the Greeks had attained the same of artistic excellence. A large eval slightly convex stone, of the real pigeon's-blood colour, in the Devenshire parure, has a "Venus Victrix" engraved upon it also exists a full-length figure of Osms in half-relief. Then there are a gorgon's head and a head of Pertinax, engraved on Spinels; and the head of a Bacchanite, upon a Balas. The earliest example of an engraving executed in the Middle Ages, has heen discovered in the Spinel of the Marlborough cabinet It is a heautiful stone, 2 of an inch square, upon which is engraved a head in front face, wearing a crown, resembling very much that of Henry VI, as found upon his great scal Italians have left many engravings on the Ruby, amongst which may be mentioned an intaglio, of a head of Thetis, capped with a crab's shell, at present in the possession of the Rothschilds; and a camee of a head of Serapis in front face, found in the Hope cabinet of precious stones. Amongst the collection of cameos of our Most Gracious Maiesty, is one having the head of Louis XII, engraved upon a fine stone of considerable size,-a specimen of the art after the Revival. Dominico dei Camei engraved upon a Balas of the size of a shilling. the integlio pertrait of Ludevice il More. The Orleans cabinet had a Ruby engraved with an intaglio head of Henry IV, with the date 1598. Chardin who, in 1666, examined a Ruby, amongst the

Crown jewels of Persia, describe it as being as big as a hen's egg cut in half. The upper part of this stone bore the name "Chaic Sophy," cut upon it by its former master who had considerably maired its beauty by so doing. Pistrucci executed a beautiful front face of Diana on a Ruby, about \(\frac{1}{2} \) inch long

The Price of the Ruby, its Flaus and Defects, Mode of Testing

The jealous care with which the best Oriental Rubies are kept by the King of Burmab, renders them difficult of access to the public and makes them sometimes more valuable than the Diamonds. The ancients put a very high price upon the Rubies. In the present day, fine Rubies under $\frac{1}{2}$ a carat, if English cut, cost from £ 4 to £ 10, if Indian cut, from £ 1 to £ 4

A Ruby of one carat is worth from £ 14 to £ 20 " 25 to " 35 Ditto 11 ditto ditto , 70 to , 80 Ditto 2 ditto ditto , 200 to , 250 Ditto 3 ditto ditto , 400 to , 450 Ditto 4 ditto ditto Stones of greater weight than 4 carats, being rare ties, fetch fancy price

Rubies with flaws and speeks, or having any silky or milky appearance, either on the table or beneath it or which are too deep or too pale in colour, are now much deprecated in value A pale Ruby of 4 carats might be worth less than £12 It is true

that there are many Rubies in the market but these are of inferior quality and cannot command the same value as the true Oriental Rubies that come from Burmah and Siam

The value of the Spinel and Balas Rubies varies chiefly according to the demand, character and cut of the stones, and sometimes, to caprice and fashion At the present time the value of small Spinels ranges from 5 to £10 per carat.

Medium size of fair color, 20 to £ 40 per carat

Large ... 60 .. £100 ...

As an instance of the uncertainty of the value of the Spinels, a stone weighing 40 carats, clear and of good quality, was sold in 1856 for £400; in 1862, it fetched £80 by public auction, and was lately sold for £240

So is the case with Balas Rubies; for example, a dark rose red Balas of 10 millimetres, square-out and polished as a brilliant will fetch 300 francs; while a pale rose of like character and size will self or 20 fiancs only. A specimen of 5 carats will occasionally realize £50. At the sale of the Marquis of Drée, a Ruby of 10 grains sold for £56

In order that the pivots of watches may turn with greater precision, they are set in small Rubies perforated for the purpose; but these small jewels, about the size of millet grains, though very useful, are not of much value, owing to their abundance.

To test a perfect Ruby, it has to be placed on the same sheet of paper on which the fresh blood of a pigeon has been dropped. The perfection of the stone can then be ascertained if it exactly agrees with the blood in color. The Spinels or Balas Rubics have often been passed off as true Rubics: but with any one acquainted with the physical and chemical properties of these stones, the deception would not succeed. The hardness and specific gravity of the true Rnby is much greater than those of the others. An unset stone can easily be tested by taking its specific gravity; a set one would, if a true Ruby, be seratched by Diamond only but would scratch all other stones; if a Balas or Spinol, it would be scratched by a Sapphire. Then the refraction would point out the nature of the stone. In the case of the true Ruby, it would be double (though in a small degree,) but in that of the Spinel or Balas, it would be absolutely simple. The Brazilian pink Topaz is often made to imitate the Ruby by placing it in a crucible with sand and heated till it gets the requisite color. But it differs essentially from the real Ruby in its character. Its specific gravity is from 3.4 to 3.6, whereas that of the Ruby is from 3.9 to 4.1. It is 8 in the scale of hardness, while the Ruby is 9, i.e., next to Diamond, which has the full standard number 10.

The Garnet is sometimes made to pass for the true Ruby. The Garnet, however, pure and brilliant, will appear black and opaque, if held so as to reflect the light directly; while the Ruby would



retain its transparency and true color. Sometimes Garnets backed up by Ruhy foils have been mistaken for Rubies. The Parisian traders have recently hit upon a plan by which they can, without the use of foils, give to pale valueless Rubies the hest color they should have. They fill up the inside of the setting with Ruby-enamel, which gives a deep tinge to the entire stone enclosed within. The Rubies are also imitated in paste, which can only be detected by touching them with the emery-stone (cote). The artificial gems will appear softer and brittle, inferior in weight and, in some cases, showing silvery air bubbles in the interior. The Rubies are sometimes infected with

white spots but these are removed by hurning.*
The Spinel is also mistaken occasionally for the Garnet and more frequently for the Jacinth owing to similarity of color. But both these stones are of inferior hardness: while the Spinel would scratch quartz readily, these would, but slightly. Then, the Jacinth has double refractive power in a very high degree, whereas the Spinel has simple refraction

The Marcellous and Medicinal Powers attributed to the Ruby.

Each precious stone was supposed to have been gifted with special powers. The pharmacopæa of

^{*} The Indian jewellers, however, in spite of great care and labor, have not yet succeeded in entirely removing these spots from the stones.

the ancients had, among its most potent remedies, a very costly compound called the "Five Precious Fragments" which consisted of powdered Rubies, Topazes, Emeralds, Sapphires, and Hyacinths. But as the patients were not likely, nor were they competent, to analyze the chemical properties of the mixture, it generally happened that the physicians used to pocket the real gems, by substituting falso ones in their place. The Oriental Ruby, or the Carbuncle of the ancients, whether used externally or internally, was an antidote to poison and plague; it drove away sadness, evil thoughts, wicked spirits, night-marcs and diverted the mind from sensuality. It was also used as an amulet against all illness. It would warn the wearer of the approach of any misfortune, by a change of color to blackness and would not resume its original brightness until tho peril had passed away. To confirm the above, wo can not resist the temptation of reproducing here the following apparently authentic story related by Wolfgang Gabelchover, a German philosopher, as quoted by Tollius: "It is worthy of notice that the true Oriental Ruby presages to the wearer by the frequent change and darkening of its color that some inevitable loss or misfortune is not far off: and in proportion to the greatness of the coming evil, so doth it assume a greater or less degree of darkness and opacity-a thing which I have heard repeatedly from people of the highest eminence and have, alast experienced in my own person.

For. on December 5th, 1600, as I was travelling from Stutgard to Cal-wam in company with my beloved wife Catherine Adelmann, of pious mcmory. I observed most distinctly during the journey that a very fine Ruby, her gift, which I were set in a ring upon my finger, had lost, once or twice, almost all its splendid color and had put on dullness in place of brilliancy and darkness in place of light: the which blackness and opacity lasted not for one or two days only, but several: so that being beyond measure disgusted thereat, I took the ring off my finger and locked it up in my trunk. Whereupon I repeatedly warned my wife that some grievous mishap was impending over either her or myself, as I foreboded from the change of color in my Ruby. Nor was I wrong in my acticipation, inasmuch as within a few days she was taken with a fatal sickness that never left her till her death. And truly after her decease, its former brilliant color again returned spontaneously to my Rully."

Celebrated Rubies

TAVENIER speaks of a Ruby seen in the possession of the King of Visapore, India, weighing 50 carats and of very fine quality. The best Oriental Rubies, as we have said before, are rare in the market, being monopolized by the King of Burmah, who is reported to be the owner of a Ruby, of an extraordinary quality and of the size of a pigeon's egg.

But no Europeans have hitherto heen allowed to bave a look at it The king of Ada bas a perfect Ruby of the size of a small hen's egg which he uses as an car drop One of the largest Rubies in the Crown jewels of France, adorns the Order of the Golden Fleece and is cut into the form of a diagon with extended wings There was a remark able Oriental Ruby of the size of a pigeon s egg in the Crown of the Empress Catherine of Russia known to have been presented to her by Gustavus III of Swedon, when on a visit to St Petersburg, in 1777 There was one in Paris, seen by Far tiero which weighed 4061 carats There are se veral Rubies of good size and quality among the Crown jewels of Austria It is related by Gesner that Catherine of Arragon used to wear a ring set with a stone which became luminous at night and which was therefore conjectured to be a Ruby Two remarkable genuino Rubies were sent to England from Burmah in 1875 The sale of these two stones caused great excitement at Burmah and the fact of two stones of such extraordinary quality ap pearing simultaneously created not a little sensa tion in England One was a dark colored stone, cushion shaped and weighing 37 carats, and the other, a blunt drop shape of 47 to carats Both were put in the hands of Mr James N Forster of London for recutting The former was reduced to 32 re and the latter to 39 re carats Both of these have found purchasers in the Continent, the smaller

fetching over a lac of Rupees The largest Ruby seen in India by Garcias did not exceed 24 carats, it was bought by a prince in the Decean for 156th weight of gold

Rudolf II possessed a Ruby as big as a small hens egg, bequeathed to him by his sister, the Queen Dowager of France, it was about 100 carats in weight and was reported to have been originally valued at 66,000 ducats. But modern mineralogists have pronounced this to be a Spinel

In the front of the Crown of our Most Gracious Majesty is the famous Ruby (new pronounced to be a Spinel) said to have been given to Edward the Black Prince by Don Pedro (King of Castile,) after the battle of Naiera (near Vittoria.) in 1367. It was afterwards worn upon his beliet by Henry V, at the battle of Agincourt, 1415 It is an irregular oval, pierced through the middle, according to the usual oriental fashion, the upper part of the perforation being concealed by a small Ruby Two large Spinels taken from India in 1861 were shown in the Exhibition of 1862 The one that was exhibited by Messrs Hunt and Roskell, was a cabochon cut, octagon shaped stone, of perfect color and free from flaws It originally weighed 197 carats and after being cut by Mr Torster, 81 carats The other Spinel was also of the same shape and color, originally weighing 1021 carats, and after being recut, 721 carits One Spinel collected by Dr Heron, is said to be 49lb, being in 3 pieces

and containing cavities filled up by crystals of Corundum In the list of the French Crown jewels taken in 1791, we find, amongst others, one Spinel Ruby of 563 carats, worth 50,000 francs. A specimen of a blue Spinel, a thick oblong stone, was in the possession of Messrs Pittar Leverson & Co. It was an Indian-cut stone, weighing 37% carats and after heing recut (by Mr. Forster,) 25 carats. It was originally sent from India as a Sapphire and having been afterwards found out to be a Spinel, the purchaser returned it to the merchant, who at once wrote to the consigner in India. The statement not being believed, the merchant hnd it cut and upon its identity as a Spinel being established, sold it for n much higher sum than it had fetched as a Sapphire. Tavernier tells us that he counted on the Great Mogul's throne, 180 large Rubies varying in weight from 100 to 200 carats and one single gem that weighed 21 ounces. These were, however, Balas Rubies. In the catalogue of the French Crown Jewels, of 1791, mention is made of two Balas Rnbies, one of which, weighing 20% carats, was valued at 10,000 francs and the other, weighing 123, at 3,000 francs.

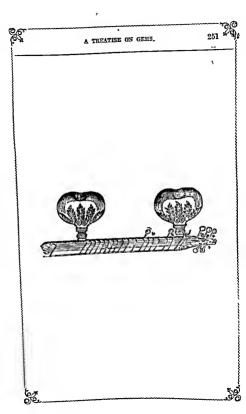
Charles the Duko of Burgundy, had lost several valuable stones at Granson. Among these were 3 Ruhies called the "three brothers" and two called "La Hotte et la Balle de Flandres" James I, in sending some jewels to his son, mentions the "three brethren." The similarity of the name

leads many to identify these as the Ruhies oneo helonging to the Duke.

Sir James Melville, in bis Historic Memoirs, says that Queen Elizabeth showed him "a fair ruhy. great, like a racket ball" Runjeet Sing is said to have owned a large Ruby weighing 14 tollahs. with the names of Aurungzebe, Ahmed Shah and several other kings engraved upon it. Robert de Berquem mentions that when Josephus Barbaro had (in 1472) an audience with Yussum Cassam. the king of Persia, (at whose Court he was an ambassador for the Venetian Republic.) he was shown a hand-kerchief, filled with the most valuable of precious stones. Amongst these was a table cut Balas Ruby, of, at least, a finger's breadth, of the most heautiful colour and weighing 24 ounces. De Berguem also speaks of 3 great Rubies, belonging to a Parisian of great rank. The one bad once been set in a gold crown covered with gems, with which Pope Stephen V, (who came to Franco in 817) crowned the King of France, Louis le Dobonnaire, as Emperor. This Ruby was in the shape of a Lozengo and weighed 1294 carats. The other was egg shaped and weighed 2113 carats. It was given to Charles, Duko of Anjou, by the Neapolitans, in 1264. The third, weighing 209 carats, had belonged to Anne, Duchess of Brittany who married Charles VIII in 1191. How these monster stones came into the hands of the Parisian nohleman and what became of them subsequently are not known to us. It is said that when Peter the Great left England, he presented the King with a "rough Ruby, which the greatest Jewellers of Amsterdam (as well Jows as Christians) valued at £2,000 storling"

Some very good Rabies are to be found in India. A fine Oriental Ruby was recently bought of a Burmese merchant (at 22,000 Rupees), by Sir Salar Jung, on one occasion of his visit to Calcutta. The estate of the Paikpara Raj family (in the suburbs of Calcutta) has in its possession a largo Ruby, sot in a ring, and free from flaws. Another Ruby of a good size, also set in a ring is to bo seen with Rai Luchmeepnt Sing Bahadoor of Azimgunj. Babu Hurruck Chand of Moorshedabad has with him a Ruby of the true "pigoon's blood" color. A large Ruby is to be seen in the estate of the Hon'ble Maharajah Joteendre Mohun Tagore Bahadeor, set in a ring and having somo Chineso letters, ferming the name of God engraved en its back. There is also one large Ruby of tho size of a pigeon's egg lengthwise cut in half, set in ene of his watch-chains It weighed about 500 Ratis in its rough state, and has, upon being cut, been reduced to about 300 Ratis. There is also one beautiful Ruby of about 93 Ratis, set in another watch chain of the Maharajah's.





भ्रय बैदूर्यम् ।

मूचम्।

ष्यविदूरे गिरे: कस्य तथैवोत्सञ्जदेशत:। ष्रिधित्यकाप्रदेशे च वैदूर्यस्याकरो भवेत्। २२० ॥ पद्मरागमुपादाय मणिवृणी कि ये चिती। सर्वासान् वर्षशोभाभिवेद्रयमनुगच्छति । ५२१ । सितञ्च धूसमङ्काशमीपत्मृण्यत्विपस्मवेत्। वैदुर्थं नाम तद्रवं रत्नविद्गिष्ट्राचुनं । २५५। तेपा प्रधानं शितिकष्टनील

यदा भवेदेगुद्लप्रकार्य ।

चासाग्रपचप्रतिमश्चियो ये

न ते प्रयक्ता मणियास्तविद्धि । २२३ ।

वैद्रव्य अर्थात् लशुनियेका वयान ।

सरनमा ।

किमि किसि पाष्टाउके करीवकी जमीनमे, बीचके हिस्सेमे और चोटीपर लगुनिया पाया जाता है। २२०। . पदाराग वगैरह जहेरातमे जिस्तरहका रङ्ग देख्लाइ

देता है, वधी सब रह बैदूर्य चर्चात् चमुनियामेभी होता रे। २२१।

उसके सेवाय सफेद रद्र, वेंग्रणी रद्र श्रीर घोड़ा सेयाइ, यधी तिन रङ्ग लगुनियामे देख चाते है। १११।

रलपारची परिउतलोक कहते है, के जित्ने किसिमका लगुनिया है, उसमें को रह भोरके गले चौर वामके पत्तके समान है, वही प्रधान है। श्रीर जिल्ला रव नीनकण्डपञ्चीके परके गमान है, वह श्राच्छा शर्हि । ५२३।

THE CAT'S-EYE.

TRANSLATION.

220. Car's EYE quarries are found at the top, or the mid region of certain mountains, as well as in their vicinity.

221—222 All those colors that shine in the padmarága and other gems of a like nature, are also seen in the Cat's-eye. Besides these, we find white, smoke-colored and gray cat's-eyes.

223 Of Cat's eyes, those which in color resemble the peacock's neck or the bamboo leaf are first-class, while those resembling the wing of the mia-kantha* bird are of small worth.

देवमूर्या ।

অহ্বাদ।

কোন কোন পর্ব্বতের সমিহিত প্রদেশ, মধ্যভাগ ও অধিত্যকা প্রদেশে বৈদূর্ব্যের আকব লক্ষিত হয়।২২০।

পদ্মবাগপ্ৰভৃতি বন্ধসমূহে যে সকল বৰ্ণ দৃষ্ট হয়, সেই সকল বৰ্ণই বৈদূৰ্য্যমণিৰ অনুগামী; তদ্ভিন শুক্ল, ধৃমল ও ঈৰং কৃষ্ণবৰ্ণবিশিষ্ট বৈদূৰ্য্য দেখা যায় । ২২১ । ২২২ ।

মণিশান্ত্রবিৎ পণ্ডিতেবা ক্ষেন, যতপ্রকার বৈদ্য্য আছে, তন্মধ্যে যে তলিব বর্গ মন্তবেব কণ্ঠ অথবা বংশ-পত্রেব সদৃশ, দেইওলি প্রধান, এবং যাহাদেব বর্গ, নীল-বন্ঠ পক্ষীর পক্ষের তুল্য, তাহাবা প্রশন্ত নহে। ২২৩।

[·] A species of gallinule or water hen (1)

मूचम्।

वस्रचित्रविद् गूट्रजातिमेदाञ्चतिर्विधं । युवचणं भवेद्रवं वैद्र्यं नाम भूमितः । २२४ । सितानीनो भवेदिमः सि तारकस्य बाङ्जः । गीतानीनस्य वैद्यः साद्गीन एव वि गूद्रवः । २२५ । एकं वेणुपनायको मनरूपा मायूरकष्टित्वा मार्जारे चण्पिञ्जन्यवित्वा भी यं विधा न्द्रायया । यद्गाचं ग्रुरता द्याति नितरां सिन्यन्त दोपोधितं वैद्र्यं विश्वदं वदिना सुधियः स्वन्न्द्य तन्द्रोभनं । २२६ ।

तर्जमा।

जिस्तरस्थे मतुष्यके ब्राह्मण, चिन्नु, येख थीर ग्रह पार जात धोते हैं, उसी तरस्ये लगुनियामेभी पार जात है। श्रीर यशे पार जात मुल्ह्मणाकान्त लगुनिया जमी-नसे पयदा धोता है। ५२४।

योदा नीवापनिवयेक्षये चफेर रङ्ग वसुनिया नाम्नण जात है, योदा सुधीमायेव मफेर रङ्ग वसुनिया चिन्न जात है, योदा नीवापनजरिमायेच वसुनिया वैद्य जात है भौर नीवरङ्ग वसुनिया ऋड्र जात है। २२५।

वांग्रका नवा पत्ता, भीरका गुना, विद्योश चांग्र इन्नी तिन चीजों समान चमुनियाकी काया देखि जाति हैं, चीर जो समुनिया चीजनमें भारी, चीर वजत खिला पेमवेंग्र, निम्में चीर सक्द हो, पिट्टन सेक उस्कों चित्र मुसलक्ष कहते हैं। २२६।

TRANSLATION.

224. The earth produces all the four castes of Cat's-eye redolent of lucky signs.

225. A white Cat's-eye furnished with a blue gleam (say the authorities), is a Brahmin, a white Cat's-eye with a gleam of red, is a Khetriya, a yellow Cat's eye with a blue lustre, is a Vaisya, and a purely blue Cat's eye is a Sudra.

226. Cat's eyes possess a shade hke the color of a fresh hamboo leaf, peacock's neck, or a eat's eye Thoso Cat's eyes that are heavy, deliciously cool, flawless, smooth and otherwise faulticss, the authoraties consider to be very lucky.

অনুবাদ।

ভ্রাহ্মণ, কজিব, বৈশ্য ও পূল এই জাতিচত্উয়তেদে চতুর্বিধ স্থলকণাক্রান্ত বৈদুর্ঘ্য মণি ভূমি হ'ইতে জমিয়া বাবে । ২২৪।

ঈষৎ নীলেব আভাযুক্ত শুক্তবর্ণ বৈদুর্য্য প্রান্ধণজাতি, ঈষৎ লোহিতের আভাযুক্ত শুক্তবর্ণ বৈদুর্য্য ক্ষন্তিয়জাতি, ঈষৎ নীলের আভাযুক্ত গীতবর্ণ বৈদুর্য্য বৈশ্বজাতি ও বিশুদ্ধ নীলবর্ণ বৈদুর্য্য শুদ্রজাতি বলিয়া কথিত হয় । ২২৫।

বংশের ন্তন পত্র, নয়বক্ঠ ও মার্চারের চক্চ্ এই তিন বস্তর ফায় ছায়া বৈদ্র্য্যে, দৃষ্ট হয়, এবং যে সকল বৈদ্র্য্য ওজনে ভারী, অত্যন্ত নিয়, গোষবর্জিত, নির্মান ও ফার, পণিতেরা ভাহাদিগতে অতি শুভনামন্যক্ত করেন। ২২৬ /

मुखम् ।

ष्ट यदासना सन्द खन्छाया निक्रमामान। स्तुरं पदर्शयेदेतहैं दुर्क जात्यम् चते । ५२७ ।

च्चय वैदूर्व्यगुणा: । मार्ज्जारनयनप्रख्यं रसोनप्रतिम हि वा !

क्षिलं निर्मालं व्यङ्ग वैदूर्य देवमूपण । २२८॥ सतारं घनमत्यक्तं कतिलं व्यङ्गमेव 🔊 ।

वैदूर्याणा समाखाता एते पञ्च महाग्रणा ॥ २२८॥ छद्गिरिज्ञव दीप्ति यत् मृतारिमिति गद्यते।

प्रमाणतार्खं गुरु यत् धनमित्यभिधीयते ॥ ५३० ॥

सर्जमा।

कसीटीपर धिसनेसे जिस् चयुनियेकी खब्द्रता भीर साफाइ ज्यादातर होति जाय, यही लग्निया धायल है। १२७।

लगुनियेका गुण्।

विद्वीकी चाच चौर लक्ष्युनके समान, कलिल, निर्माल चौर ब्यद्ग लगुनिया देवताचे कि लावेक घी। ५५८। सुतारः घन, अत्यच्छ, कलिल और छात्र, यही पाच

किसिमका चयुनिया बज्जत् ग्रुषसम्पन्न है। २२८।

निष् च प्रनियामें आभा निक्चे उसे मुतार कहते हैं, को बद्मे छोटा, लेकिन चौजनमे भारी, एस्को धन कडते हैं। ५३०।

TRANSLATION.

227 That Cat's-eye which on being rubbed over the touch-stone attains additional lustre and smoothness, is sterling and excellent.

Qualities of the Cat's-eye.

228 That kalila or byanga Cat's eye which is like a veritable cat's-eye, or a garlic, and which is perfectly smooth, is a gem worthy of the acceptance of the gods themselves.

229. Sutára, ghana, atyachchha, kahla and byanga are the five best kinds of the Cat's-eyo.

230. The Cat's eye which sparkles beautifully, is called sulára; that which combines small bulk with heaviness, is called ghana.

व्यक्ताम ।

কষপাবাণে হুউ হ'ইনেও যে বৈদুর্য্যের ক্ষতা ও ছামা অধিকতন উচ্ছনভাবে প্রকাশ পান্ন, সেই বৈদ্র্যাই উৎকৃষ্ট বনিষা প্রসিদ্ধ ও অকুত্রিম। ২২৭।

रिक्ट्र्यग्रह छन १

মার্লাব নয়ন বা বদোনের প্রতিরূপ, কলিল, স্বন্ধ ও বাঙ্গ বৈদুর্য্য দেবভোগ্য। ২২৮।

স্থভার, ঘন, অতাচ্ছ, কনিন ওব্যন্ন এই পঞ্চবিধ বৈদ্ধ্য ` মহাগুণদম্পন্ন। ২২৯।

যে বৈদ্যা হইতে দীপ্তি উদ্যাণ হয়, তাহাকে হতার কহে, যাহা প্রমাণে অন্ন, কিন্ত ওজনে ওজ, তাহা ঘন নানে বিধ্যাত। ২০০।

मृचम।

श्रथ बैद्रयंदोपा।

कलङ्काद्यिकीनं तदत्यच्छमिति कीर्त्तितं । ब्रह्मसूचकलाकारचञ्चलो यच दृश्यते ॥ २३९ ॥ कलिल नाम तद्रल सर्व्वसम्यनिकारक ।

विश्विष्टाङ्गन्तु वैद्वर्ष व्यङ्गमत्वभिधीयते ॥ २३२ ॥

शक्तरं कक्षर चास कलक्की देश मृत्यि। एते पश्च मधारोषा वैद्वयीणासुदीरिता ॥ २३३॥

णक्षरायुक्तमिय यस्पृतिभाति चणक्षरः । स्पर्मे खर्रयत् तज्ज्ञेयं कक्षरं यस्पृताणनं ॥ २३८ ॥

तरजगरा।

क्षत्र प्राद घरेशेसे खाली लगुनियेको चायाच्य कश्ते हे, जिस् लगुनियासे चन्द्रकलाके रोगा चश्चन सूत देखलाइ दे, उपको कलिल कश्ते हे, कलिल लगु निया गव सम्पत्का कारण है। २३१।

जिस च मुनियेका चाधा चद्र काटा मालुम हो। उसको टाद्र कहते हैं। रहर।

लसुनेका ऋयेव।

कर्का, गर्कर चार, कल्क्स चीर देव समुनियामे यक्षो पाच किसिमका चयेव के । २३३।

जो कुनेसे खुरधारा, उसे कर्कर क्रुटते हैं, कर्कर चगुनिया भारूपोकी नाग करता है, चीर दुधिया नग्रनियाको गर्कर कहते हैं। २३४।

TRANSLATION.

231. That Cat's-eye which is free from such defects as *kalanka* etc., is called *atyachohha*; that which shows a lustre resembling the Brahminical thread and aye twinkling like the moonbeam, goes by the name of *kalila*. This is the veritable cornucopia.

232. That which manifests a variety of parts and sides, is entitled byanga

Defects of the Cat's-eye.

233. Karla a, sarkara, trása, lalanka and deha are the five defects belonging to this class of gems 234. A Cat's-eye which is hard to the touch, is called karkara; and that which contains grits, is called sarkara. A karkara Cat's-eye brings about hoss of friends.

व्यक्तीं ।

কলন্ধানিদোষবিহীন বৈদ্ধাকে অভ্যন্থ বলে। এবং বাহাতে চন্দ্ৰকলাৰ ভাষ চঞ্চল ভ্ৰফদুত্ৰ লক্ষিত হয়, ভাহাকে কলিল বলা যায়, কলিল বৈদুৰ্ঘ্য সৰ্ববদম্পত্তিৰ নিদান। ২৩১।

যাহাব অন্ন বিন্নিউ, অর্থাৎ অন্ন প্রত্যন্ন পৃথক্ বলিযা বোধ হয, তাহাব নাম ব্যন্ন। ২০২।

देवमूर्यात सीम १

कर्दन, भर्कन, खाम, कनरू ७ (पष्ट, रिवृद्धा प्रतिराज ७३ পঞ্চপ্রকার দোনের বিদ্যুমানতা দেখা যাব। ২৩০।

যাহাব স্পর্শ অতি কঠিন, তাহাব নাম কর্বব, এবং শর্ববাযুক্ত বৈদুর্ঘাকে শর্বব কছে, কর্বর বৈদুর্ঘ্যে বদ্ধবিনাশ কবে।২৩৪। भिन्नभान्तिकरस्त्रामः स कुर्यात् कुलर्वचर्यं।

विरुद्धवर्णी यस्याङ्गे कलड्डः चयकारकः।

मलदिग्ध द्वाभाति देहो देहविनाश्वनः ॥ २३५ ॥

गिरिकाच शिशुपालः काचः स्फटिकस मृमिनिर्भिताः। वैद्र्यमणेरेते विजातय' सन्तिभाः सन्ति । २३६ ॥ विखामावाकाचं वष्मावाव्हि गुपावक विद्यात्।

गिरिकाचमदीप्रत्वात् स्कटिकं वर्षोञ्जुलनेन ॥ २३७ ।

तरजमा ।

जिस् निमानके जरियेषे लगुनिया दृटा मानुम हो, उस्को चाम कहते हैं, धास अयेवका लग्नुनिया कुलका

नाम करनेवाला है, चीर जिस् लशुनियेक मध्ये दुस्रा रद खेलाप मालुम हो, उसकी कलडू कहते हैं, कलडू

भयेवका लगुनिया चार्मीका नाम करनेवाला है; भीर जिस्को मध्य भयला मालुम हो, उस्को द्वेह कहते हैं। देच खरेका लगुनिया चादमीका गरीर नए करता

है। १३५। गिरिकाच, ग्रिगुपाल, कांच चौर एकटिक इस्त्री चीं जीके

बारा भुठा लगुनिया बानाता है। ५६६।

धीरेंबेंधेवाय और पीजके जित्येंसे जी ना कटे, वह काच, काल्का क्षोनेसे शिशुपाल की, दीप्ति नारकनेसे गिरिकाच चीर न्यादा उज्नाच होते हे स्कृटिक समस्ता चाहिये। ५३७।

TRANSTATION.

235. That mark in a Cat's-eye which looks like a break, is a trdea. It destroys family dignity. That which shows conflicting colors, is called kalanka. Such a gem is destructive. A deka Cat's-eye bears dirt within it. This gem wastes the body.

236. Girikácha, Sisupála, glass and crystal are made use of in fabricating false Cat's-eyes.

237. A false Cat's-eye, if it is made of glass, is detected by being scratched by the diamond alone; if it is made of sisupala by its lightness; if of girikacha, by its want of lustre, and finally if of crystal, by its excessive gloss.

অহুবাদ।

যে চিহুছারা বৈদ্বাকে ভাগ বলিয়া বোধ হয়, তাহাকে আদ কহে, আদমুক্ত বৈদ্বা হলক্ষ-কাবক। যাহার মধ্যে বিক্লন্ত বর্ণ লক্ষিত হয়, তাহাকে কলন্ত মলে, কলন্তদায় মন্ত্রয়ের ক্ষয়কাবক, এবং যাহাব-মধ্যে মলা থাকে, তাহাকে দেহ কহে, দেহে দেহক্ষয় করে। ২৩৫।

গিরিকাচ, শিশুপাল, কাচ ও স্ফটিক এই সকল পদার্থ দ্বারা কৃত্রিম বৈদুর্য্য মণি প্রস্তুত হইয়া থাকে। ২৩৬।

হীরক ভিন্ন অফ কোন বস্তুদারা অভিত না হওযাতে কাচ, লযুতা দারা শিশুপাল, অদীগুছেছ গিরিকাচ ও অধিকতর উজ্জল বর্গ দারা ফটিক প্রকাশিত হইয়া পড়ে। ২৩৭। मूखम्।

जात्यस्य धर्वस्य मणेस्य यादक् विजातय सन्ति ममानवर्णीः।

तथापि नानाकरणातुमेय-

भेदप्रकार परमः प्रदिष्टः ॥ ५३८ ॥ मुखोपलच्यच मदा विचायाँ

चुकापसन्तव सदा विचाया चाय प्रमेदो विद्या नरेण ।

चेडमिदी चघुता चतुर्त विजातिविद्धं खल् मार्श्वनमां ॥ २३९ ॥

कुणला' कुणले: प्रयुक्तमाना:
प्रतिबद्धा' प्रतिचतुक्तियापयोगै: ।

ग्रणदोपसमुद्धवं सभन्ते मणदोऽयन्तिरमुख्यमेव भिद्धाः ॥ ५४०॥

तर्जमा ।

त्या।

भुठा जवाहेर भगर वेरत्न और फदम सार्वेके
समान हो, लेकिन तरह तरहके परीद्याके दारा छत्का हाल
आयल मालम हो मक्ता है। १३००।

रत्नपारची परिडत खे घमभेद, लघुना, क्षोमलता रूप्ती गव विजातिनियानवे अस्थिने चनायाम सुजात मणिका

मवा विज्ञातानशानय आरयम चनावाम गुजात माणका विचार कर मके हैं। २३८। सोगेमे जड्नेचे दलकारीके च्ययबचे वृद्या रहमी खाराप है, चौर चौताद कारिगरके हातका जडाउँ

वज्ञत् कम कदर रत्नभी चम्दगीको पाता की। ५४०।

TRANSLATION.

238. Even when a false gem resembles in color a real one to a degree, still there are characteristic differences between the two, which legibly mark out the one from the other.

239. Persons well versed in the science can easily distinguish a mendacious jewel from a genuine one, by its lightness, softness, gloss etc.

240. Much depends upon the art with which a gem is set on gold or any other precious metal,—indeed so much that a gem of really superior order may be shorn of half its lustre by the vicious skill of the goldsmith, while another of far less worth may gain in brilliancy from the skill with which it is set.

अनुद्राप ।

দর্বপ্রকার বিজাতি মণি হজাত মণির সমান বর্ণ-বিশিষ্ট হুইলেও নানাপ্রকাবে তাহাদের পরস্পার ভেদ প্রমাণী-ক্রত হুইতে পারে। ২৩৮।

রত্বত্ত্ত্ত্ব পথিতেরা মেহপ্রতেদ, লঘুতা, কোমলতা প্রভৃতি বিজ্ঞাতি চিহুন্থারা খনাধানে হজাত মণিব বিচার ক্বিতে পারেন। ২৩৯।

মণিসমূদায হবর্ণাদি ধাতু সদ্বন্ধ হইলে শিল্পীন শিল্প-দোবে উত্তন রন্তও অভিজয়ত এবং শিল্পবৈশ্বদারা অভি সামান্য রন্তও অতি উত্তনকপে প্রতিভাত হয়। ২৪০।

THE CAT'S-EYE

Its Properties

HE Cat's eye is a raro variety of the Chryso beryl, of extreme hardness and is characteriz ed by the remarkable play of light in a certain direction, probably caused by a peculiarity in its crystallization This ray of light, or in the jeweller's language, this " line," shines in well polished stones with a phosphoreseent brilliance This stone is found of various colours, ranging through all the shades of yollow, brown, green, and very rarely, black No matter what the ground colour of the stone may be, the "line is always white and more or less indescent. The gas light or full sun light, which renders the line more vivid, displays the lustre to the best advantage. The most popular colours are the clear apple green and the dark olivethese forming splendid black grounds over which the line appears in beautiful contrast When held towards the light the stone resembles the contract ed pupil of the eye of a cat Its peculiar beauty lies in the mysterious gleaming streak which moves from side to side as the stone is turned The speci mens most liked by the Indians are those of a dark olive colour having the ray so bright on each edge as to appear double. The hardness of the

Cat's eye is 8 5 in the scale, it being scratched by the Sapphire, Ruby, &c Its specific gravity is 3 8. It is infusible before the blow pipe aloue, but is not affected by acids. It contains about 80 per cent of alumina and 20 of glucina and colouring matter (protoxide of iron). It belongs to the trimetric or rhombic system of crystallization. Its lustic varies from being almost perfectly transparent to almost opique. It possesses a double refraction and acquires electricity by friction and returns it for soveral hours.

Where found

This gem is found in rolled pebbles in parts of North America, Brazil, Moravia, the Ural Mountain, India, but chiefly in Ceylon together with Supphire

Mode of Cutting

The Cat's eye is generally cut in Ceylon, cn cabochon The Chrysoberyl of which it is but one variety, is cut on a copper wheel with Emery and polished with Tripoli

Its Price , Flaus and Defects , Mode of Testing

THE Cat's eyo is much used in jewelry for rings and pins and is never engrived upon. Its value chiefly depends on its size and beauty. The varie-

ties of colour do not affect the value very much; some people like one colonr, some, another. To fetch a good value, the line should not only be perfect and hrilliant but it should be well-defined, not very broad and should run evenly from end to end across the middle of the stone. It has always been very highly prized by the Indians and the Cingalese. The value has of late considerably increased, owing to the faney which the Europeans have begun to take to it. A ring-stone may be worth from £10 to £100 or upwards. There are some large stones in the market said to be valued at more than £1,000.

The jewellers havo frequently confounded the true Cat's-eye with another stone of the same name which is a variety of the Quartz, and have often sold the one for the other. Even by the least experienced, the Quartz Cat's eye can he distinguished from the true one, by its inferior hardness and want of hrilliance. The colour of the Quartz Cat's-eye is of various shades of yellow and brown only. Its landness is from 6 to 6.5. It can only scratch glass. Its specific gravity is 2-65. It melts with soda into a clear glass and is soluble in fluoric acid. The chemical composition is of 48 parts of Silicium and 51 of Oxygen with a small amount of exide of iron and lime. It is usually set with a black or gold foil to add to its play and brilliancy.

Marvellous Powers.

The fact of the gleaming streak shifting from side to side as the stone is turned, has led the superstitious to believe it to be the abode of some evil spirits. It was dedicated by the ancient Assyrians to their god Belus and was called, on this account, the oculus Beli and by others, the "wolf's eyc." It is regarded by some nations as a sacred stone and used as a charm against witch-craft.

Celebrated Cat's-eyes

The largest Cat's-eye (also the "Hope") is hemispherical and ½ inoh in diameter. In 1815 it was captured from the King of Kandy (Ceylon), with whom it had been an object of great pride. It has attained a celebrity for many centuries past and appears to be the identical stone mentioned by Rhhiero, in bis History of Ceylon, as bolonging in the 16th century to the Prince of Ura. It is mounted in massy pure gold and set* with Rubies (cut en cabochon), in the Eastern fashion. A very large sized Cat's

^{*}The late King Victor Emmanuel had many peculiarities one of which may be related in a few words. It appears that Ilin Mayesty och year silowed one of his to-enails to remain uncut through the year, and on New Year's Day he cut off his projecting nail which was always about an one in length. A pseudier cut an i poinhed thin spree of nail, which acquired the appearance of the house a voice of the second of the second that the second of the s

eyo was once seen with one Pundit Lutchminaram, who had at one time refused an offer of Rs. 10,000 for it. It has afterwards been bought by a zemindar of Mymensung, East Bengal, for Rs 6000 Babu Than Sing Boyed of Moorsbedabad has a good Cat's-eye of a black color. Rai Budridass Mokeem has, in the shape of a kanthá, a collection of Cat's-eyes of various shades and tints. There is a very large Cat's-eye, about the size of a pigeon's egg, set upon a pán dán, in the possession of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore Bahadoor. It is of a brownish color and shows the "line" to great advantage.





.....

चय सुता।

मूचम।

नागेन्द्रजीमूतवराचण्ड-मत्स्याचित्रुकुरद्वववेणुजानि। सुक्ताफलानि प्रधितानि लोके

तेषान्तु मुक्तग्रह्मवनेव भूरि ॥ २८२ ॥ धाराभरेषु जायेत मौक्तिकं जनविन्दुभिः । दुर्जमं तत्माधारकं देवे सत्तीयतेऽम्बरात्॥ २८८ ॥ इभाष्टिकोजमत्स्याना गोर्पे मुकाफलोद्ववः । त्वस्पारमुक्तियञ्चाना गर्भे सुकाफलोद्ववः ॥ २८५ ॥

मतिका वयान।

तर्जमा।

षायी, भेष, गूकर, श्रष्ठ, मक्ति, बाप, सिप धौर वाग इन् सब वसुने भोति पयदा द्योता है। यह इनियामें मस्डर है, लेकिन इन सबसेसे चाकसर मौति सिपमें ज्यादा पयदा द्योता है। ५8३।

मेघ फीकर जलके बुंदके जित्यमें जो मीति होता है, उस्की महारक्षमे गिन्ति हीति ही, चादमीकी वज्जत् दुर्वम है, देवता लोक चाकामहीने उस्की छ लेते हैं। २८८।

ष्ठायी, सांप, मूकर श्रीर सकति दून् गवके मसकि में श्रीर बांग, सिप श्रीर मुख्य पेटमे सीति होता है। २८५।

PEARL.

TRANSLATION

243 It is generally believed that the Pearl originates in elephants, clouds, boars, conch shells, fish, serpents, oysters and bamboos—of which oysters have the largest share in their production

244 The Pearl which originates in a water drop from the clouds, is a gem of the first rank and a ranty,—the gods appropriate it from the sky

245 Pearls originate in the heads of elephants, boars, serpents and fish, in the hollows of ham boos, and in the wombs of oysters and conch shells

মুক্তা ।

अञ्चाम।

হস্তী, নেঘ, বৰাহ, শক্ষা, মৎস্ত, মর্প, শুক্তি এবং বংশ এই মকল-পদার্ঘেই যে, মুক্তা জন্মে, ইহা লোকপ্রাদিন্ধ, তন্মধ্যে শুক্তি হইতেই অধিক পবিদাণে মুক্তা জন্মিয়া থাকে। ২৪০।

নেব হুইতে জন বিন্দুধাবা যে মূকা জন্মে, তাহা মহা ব্রহ্মধ্যে পবিগণিত, উহা নমুযোর পকে অভিজ্লভ, দেবতাবাই আকাশ হুইতেই গ্রহণ ববেন। ২৪৪।

হস্তী, দর্গ, ববাহ ও মংক্ত ইহাদিগের শর্বদেশে এবং বংশ, শুক্তি ও শন্ধ ইহাদিশের শর্তমধ্যে মুকা জমিয়া থাকে। ২৪৫।

मुखम्।

गणा चिन पद्रप्पायं भौकिकं तपग विना।
भौकिकं लखते श्रेष्ठमाकरेषु कवी चिपु । ५४६ं ॥
वेधन्त गुजुउद्वरमेव तेषा
येषाण्यभेद्यानि वहन्ति तन् चाः।
मतक्ष्रं ये ते विग्रुद्धवंश्वाक्षे मौक्षिकानां प्रभवाः प्रदिष्ठाः । ५४७ ।
व्यक्ष्यस्तानिष्ठम् तं
यक्क्ष्यस्त्रं यच्च वराष्ट्रजातं।
प्रायो विमुक्तानि भवन्ति भाषा

तर्जमा ।

श्रसानि माञ्जल्यतया तथापि ॥ ५৪८ ॥ ,

हावी और सापके यसको को मोति पयदा होता है, विना तपस्ताके वह मोति वक्कत दुवेभ है, जाव वाफ, सिष और प्रक्व में उस्दा उस्दा मोति पयदा होता है। २८६। पहिले को किसिस मोतिकी वयान कि यह, उसमें वे सिपका मौति वेधा ज्ञाता है, उस्में वेष हो नहि सका, पाणि वर्षकों को मोति पयदा होता है, वही वव मौति प्रधान है। २८०। वाफ, हावी, तिम सकलि, शुद्ध और मुकर दून सबमें

को मोति पयदा होता है, यद्यो सब मोति चावदार निर्व होता है, नेविन मञ्जलकार्यप्रमे बद्धत् उत्तम है। २४८।

246. Those Pearls that are found in the beads of elephants and snakes, are rarely to be had except by devout austerities;—at present good Pearls are obtained from hamhoos, oysters and conch-shells

247. Of the kinds of the Pearl enumerated above, those derived from the oysteralone are penetrable, the rest being impervious Those Pearls that originate in clouds, are the hest of their sort.

248. The Pearls that are produced in hamboos, elephants, whales, conch shells and hoars, are generally lack-lustre, although they are of great use in auspicious rates.

षश्वान ।

গল্ল ও দর্শেব মন্তকে যে মূক্তা জন্মে, বিনা তপত্যায তাহা অতিছুপ্রাপ্য, অধুনা বংশ, শুক্তি ও শখ এই তিন বস্তু হুইতেই উত্তম উত্তম মূক্তা প্রাপ্ত হওয়া যায়। ২৪৬।

পূর্ব্বে যে ক্যপ্রকাব মূকার বিষয় উল্লেখ করা গেল, ভঙ্মধ্যে শুক্তিজাত মূকাই বেধ্য, অর্ধাৎ এই জাতীয় মূকাতেই ছিল্ল করা যাইতে পাবে, তত্তিন অপরাপর জাতীয় মূকা অবেধ্য, অর্ধাৎ তৎসমূর্বায়ে ছিল্ল করা যাইতে পাবে না। মেম ইইতে যে সকল মূকা উৎপন্ন হয়, তাহারাই সর্ব্বপ্রকাব মূকার প্রধান। ২৪৭।

বংশ, হস্তী, তিনিমংত, শৰ্ ও ববাহ এই সকল পদার্থ হইতে যে সকল মূকা জন্মে, দেই সকল মূকা প্রায়ই তেজোবিহীন হইবা থাকে, কিন্ত তথাপি মাদ্দন্যবার্ক্যে অক্তিশ্য প্রশন্ত । ২৪৮। मूचम्।

वच्चे गजपरीचाया गजजातियतुविधा । भौक्षिक तेषु जात डि चतुर्विधमुदीर्यते । २४८ । ब्राह्मण पीतमुक्तन्तु चिन्न्य पीतरककं । पोतखामन्त् वैश्व खाच्छूट्र स्थात् पीतनीवक । २५० ।

कु दार्डसम हम मीतिकं निविद्धं ग्रह । धनन भात्मद्वार्थं देवयोग्यनमात्त्व ॥ २५१ ॥

तर जमा।

गजियद्याके पण्डितोने चायोकी चार किमिमकी तक किम की प्रे, चर्मा वस्त्र वास्त्र किम की प्रे, चर्मा वस्त्र वस्त वस्त्र वस्त वस्त्र वस्त वस्त्र वस्त वस्त वस्त वस्त्र व

जो मोति पीलापन्श्यिक्षये, फफेट् रङ्ग घोए, वह ब्राह्मणवर्ण है, जो मोति पीलापन्रलियेक्षये स्व द द घोए वह चिन्नयवर्ण, जो मोति पीलापन्रलियेक्षये खामवर्ण है, वह वैद्यवर्ण चौर जो मोति पीलापन्रलिये क्षये नीलवर्ण घोए, वह प्रमुवर्ण है। २५०।

मेघसे पयदाज्ञये मोतिमे जो मुरगके चाउने बरावर जमदा, गोल, ठोस, चोजनमे भारी, चौर मूर्यके समान नेजकी खान, यैसा मोति देवताचाक मोगमे रप्ता है, मनुष्यदुर्वम है। ५५९।

249. Persons who have studied the elephant with particular attention, have divided it into four classes, called after the names of the four cardinal divisions of the Hindus. Accordingly, Pearls derived from elephants are classed under four heads.

250. Pearls which are white and which emit a yellow lustre, are Brahmins; those which are red and possessed of the same lustre, are Kshetriyas; those which are hlack (lustre same), are Vaisyas; and those which are hlue (lustre do.), are Sudras.

251. Of cloud-hegotten Pearls, those which resemble in shape the hen's egg, which are heautifully circular, substantial, weighty and hright as the sun, are enjoyable by the gods and cannot be obtained by men.

षश्वान ।

গঙ্গ-পরীক্ষক পণ্ডিতের। হন্তীকে ব্রাহ্মণাদি চারি জাতিতে বিভক্ত করিয়াছেন, হৃতরাং তদমুসারে গজোৎ-পুর মুক্তাও ব্রাহ্মণাদি চছুর্বিধ হইয়া থাকে। ২৪৯।

বে দক্ল মুক্তা গীতের আভায়ুক্ত শুরবর্গ, তাহারা ক্রিয়বর্গ; বাহারা গীতের আভায়ুক্ত রক্তবর্ণ, তাহারা ক্রিয়বর্ণ; বাহারা গীতের আভায়ুক্ত খাদবর্ণ, তাহারা বৈশ্রবর্ণ; বাহারা গীতের আভায়ুক্ত নীলবর্ণ, তাহারা পুদ্রবর্ণ বলিয়া পরিচিত। ২৫০।

নেঘোৎপদ মুক্তার মধ্যে যে গুলি আকারে কুরুটের অন্তস্মূপ, উত্তম গোলাকার, নিবেট, ওজনে ভারী এবং সূর্য্যের স্থায় তেজঃপুঞ্জ, তৎসমূলার দেবভোগ্য, মনুষ্যের অপ্রাপ্য। ২৫১।

मुचम् ।

काम्योजकुत्सियस्तं धाषीकवितमं ग्रमः । चितिपञ्चरविद्धार्यं मौक्तिक मन्ददीधित । २५२ । किंवजं वर्त्तुलं रस्यं नीचन्छायं महाद्दरित । प्रष्मुष्ठीना न पर्यान्ति वासकेः कुत्तसभव ॥ २५३ ॥ नाम्येति भेषप्रभवं धरिषीं वियद्गतं तहितुषा प्ररान्ति । चर्त्विप्रतानावतदिग्विभाग-

तर्जमा ।

मादित्यवद्:खविभाव्यविमं । ५५८ ।

श्वामदेशके बीचमें कस्त्रोजदेशमें जो हात्री पगदा होता है, छस्के मायेमे जो मीति पगदा होता है, वह सब मीति चामलेके फलके समान, चोजनमें भारी, ज्यादा पीला, लेकिन कम चाव। १५२।

सायसे जो मोति पयदा होता है, वह ब्याच्छा गीलः देखनेमे खाच्छा, योदा नीलापनलियेङ्कये खौर बङ्गत् खाबदार, पुष्प्रकीन चादमीको सैसा मोति खाससमी देखना नसीव नहिं होता। १५३।

मेधसे जो मोति पयदा होता है, वह कभी जमीन निर्ह कृता, चालायशीमें देवता लोग ले जाते हैं। उस मोतिका एँगा तेज है, के दीपहरको मूर्याके ममान, उस्पर चाल निर्हे ठहर सकृति। २५४।

252. Those Pearls that originate in the head of the elephants of Khamhoja in the country of Shyáma, are large as the fruit of the Emblic Myrobalan, heavy and more yellow but not more lustrous than the other kinds

253. Pearls which originate in the crest of serpents, are beautifully round, and are embosomed in a blue halo'of surpassing glory. These, persons void of merit are denied the privilege of even looking at.

254. Cloud-begotten Pearls never touch the carth, and are appropriated by the gods from the sky. They are clad in the mighty effulgence of the mid-day sun.

অহুবাদ ।

খ্যামদেশের অন্তর্গত কম্বোজদেশ-জাত হন্তীর মন্তকে যে মুক্তা জমো, তাহা আকারে আমলকী ফলের ভার বৃহৎ, গুজনে ভারী, অধিক পীতবর্গ, কিন্তু অধিক তেজমী নহে। ২৫২।

দর্পজাত মূলা উত্তম গোলাকার, অতিরমণীয়, ঈষং নীলের আভাযুক্ত এবং অলিতেজধী; পুণাহীন ব্যক্তিরা এতাদৃশ মূক্তা কথন চম্পেও পেথিতে পায় না। ২৫০।

নেঘোৎপন মক্তা বলাচ পৃথিবী স্পর্শ করে না, খন্য হইতেই দেবগণ তাহা এহণ করেন, সেই দকল মুকার তেজ এত অধিক যে, নধ্যাক্তবালীন সূর্য্যের তায় অতি ভূঃসহ। ২৫৪।



मूचम्।

तेजिलिरस्कृत्य इतायनेन्दु-नद्यचताराग्रहमसम्बद्ध । , दिवा यथा दीप्तिकरस्वयैव

तमोऽवगदास्त्रवि तिज्ञशम् ॥ ५५५ विविचरत्रदातिमारतीया

चतुःसमुद्राभरणाभिरामा । मूर्त्यं न वा स्थादिति निस्थयो में कृत्सा मंडी तस्य सुवर्णपूर्णी । २५६ ।

ष्टीनोऽपि यसाझमते सवस्व-दिपासमागान्यस्तः गुभस्य। सापत्राष्टीनः प्रविशे समग्रा भुनक्षि तसिष्ठति यावदेव ॥ २५७ ॥

वर्जमा।

भेग्रसे को भोति पयदा होता है, वह प्रकाशमें चारा, चन्द्र, नचन, तारा चौर ग्रहगणको मन्द्र करदेता है, चौर बड़ी मोति जिस् तरह दिनको प्रकाश पाता है, दूधी तरह गाड़ि चाहरेमे रोचन रहता है। २४४।

दुशं तरह गाड चाघरमं रांचन रहता है। रप्पप्र उत्तम किरणविश्वष्ट अवाडेर से भरि चारा समुद्र-मूणित रत्न से भरि तानाम प्रत्योभी एक मेखे यवहा उदये मोतिक वरावरमें नहिंडी सक्ति। रप्प्ष्

मोतिक बरावरमे निर्दं घी सक्ति । ५५६।
बज्जत् छोटा चादमी नमीवके जोरसे किमी तर्षसे
एक मेधसे पबदा ज्वा मोति पावे चौर जित्ते दिन
वक्ष मोति उसके पाम रिकेंगा, उत्ते दिन वक्ष चादमी
इ.स् तामाम प्रथ्वीपर राज करेगा। २५७।

255. They surpass in lustre, fire, the moon and stars, and are equally flaming in the light of day and the blackest night.

256 This world, ornameuted by the four oceans,*
—the home of the most splendid gems of infinite
variety, can scarcely equal in value one cloud-generated Pearl.

257. If by rare good fortune even a person helonging to the very lowest order comes in possession of such a Pearl, he shall reign paramount in this world so long as the gem is with him.

অভ্নাদ।

মেণপ্রতন মৃক্তা তেকে অগ্নি, চন্দ্র, নদ্দত্র, তারা ও অফান্ড গ্রহণণকে পবাতব করে, এবং সেই সকল মৃক্তা দিবাতাগে যেনন দীপ্তি পান্ন, অত্যন্ত গাঢ়ান্ধকার রাজিতেও তজ্ঞপ দীপ্তি পাইয়া থাকে। ২৫৫।

বিচিত্র-ছাতি-বরপূর্ণ চত্ৎসমূত্র-ভ্বিতা ররপূর্ণা সমগ্র প্ৰিবীও একটি মেঘলাত মূকার প্রহৃত মূল্য হয় কি না সন্দেহ। ২৫৬।

অতিনীচলোকও ভাগ্যবলে কোনপ্রকারে একটা নেবপ্রত্রব মূক্তা লাভ করিতে পাবিলে বতদিন সেই মূক্তা তাহার হস্তগত থাকিবে, ততদিন দে ব্যক্তি এই পৃথি-বীতে একাধিপত্য কবিতে পারিবে। ২৫৭।

[•] Our English readers are requested to remember that we go by our Skattrat, and not by the far more advanced high of European Science. As it is our most chernshed object to give a peculiarly Indian air to the book, (which is all the more necessary, harmy regar to the authorities we follow) we have not scrupied to exist it in the mound of Gaustria.

मृषम् ।

न केवलं तच्छुभक्तम्पस्य भागितः प्रजानासपि जन्म तस्य । यद्योजनाना परितः शतस्य /

सर्वाननर्धान् विमुखीकरोति । १५०।

जन ज्योतिमें बज्जाना मेधाना चिविधसावेत्। जनाधिकाधिक खच्छे कोमनं ग्रद्य कान्तिमत्॥ २५८ ॥ ज्योतिषं कान्तिमतृत्र दुनिरीचा रविधमं। कान्तिमत्कोमनं दुनिरीचा रविधमं।

तर्ज्ञमा ।

भेषसे पयदाख्या सोति एैना निह है, के फकत उन्के मालिकहीका माला करे, बलके जिस् राजाके राजभे ऐसा मोति रहे, तो उसको प्र-योजनतक दूरि राजनेवाली प्रजाका दुखनाय करें। १५८।

पाणि, तेज, श्रीर भावा इन् तिन ताजव मिलमेरी मेध पयदा भीता भी, प्रभीतरह मेघसे पयदाज्ञ्या मीति तिनकिमिनका भीता भी, प्रथीत् किसीमे पाणि, विभीमें तेज श्रीर किसीमें हावाका हिसा ज्यादा अथवा कम रहता भी, ज्याका कम रहता भी, ज्या कर कहत् साम जम्हा श्रीप ज्यादा श्रीर नेष्टात रोगन भी। रूप्टा भीजनमें जाादा श्रीर नेष्टायेत रोगन भी। रूप्टा आजनमें जाादा श्रीर नेष्टायेत रोगन भी। रूप्टा ज्यादा भीता भी, वह किस्में तेज्ञा प्रमुख्ता भीता भी, वह साम क्रीर स्था

जिस्म तल्का ध्रिस्मा ज्यादा धाता ६, व॰ ज्यादा अस्ति ६, व॰ ज्यादा असकदार नेषायेत् मोन और ज्यामे असमि उत्तरि, और जिसमे धायाका हिस्सा जादा सीता है, वह ज्यादा रोसन, गोल, वज्जत् आफ और जीजनमे धान्का । ५६०।

A cloud begotten Pearl is a blessing not only to its owner ,—but it shoots its blessed influence a hundred yojanas* beyond the precincts of the

domains of the king possessing it

Clouds are produced by the union of three things,-water, energy and the air, accordingly. cloud hegotten Pearls are divided into three classes. agreeably to the preponderanco of one or other of these substances Those in which water forms the base, are very transparent, soft, weighty and highly agreeable

260 Those in which energy prependerates, are beautifully round and perceptible from a distance like the sun, while such as are predominated over by the air, are agreeably tender, spherical,

highly transparent and light to a degree

অমুবাদ।

মেঘোদ্ভৰ যুক্তা যে কেবল তৎস্বামীৰই শুভজনক এমন নহে,যে বাজাৰ বাজ্যে ঐ প্ৰকাৰ মূক্তা থাকে, সেই বাজাৰ শতযোজনদূৰবৰ্তী প্ৰজাবৰ্গেৰও সকলখনৰ্থ বিনক্ট হয ।২৫৮।

জল, জ্যোতি ও বাযু এই ত্রিবিধ পদার্থেব সংযোগেই মেঘের উৎপত্তি, স্থতবাং উক্ত ত্রিবিধ পদার্থের আধিক্য অনুসাবে মেঘোৎপন মুক্তাও ত্রিবিধ হইযা থাকে, যে মুক্তায দ্রালব ভাগ অধিক থাকে, তাহা অত্যন্ত বছ, কোমল, ওলনে ভাবী ও অতিশ্য কান্তিবিশিক হয়। ২৫৯।

যে মুক্তাতে তেজেব ভাগ অধিক থাকে, তাহা কান্ধি বিশিষ্ট, স্থবৃত ও সূর্য্যেব ভাষ ছর্নিবীক্ষ্য এবং যাহাতে বায়ুব ভাগ অধিক থাকে, তাহা কাত্তিবিশিক্ত, কোমল, ণোলা কাব, অতিনির্মান ও ওজনে অতিলয় হয়। ২৬০।

A logana is sometimes regarded as about equal to a European league (i.e. 4 or 5 E glish nules but more correctly 1 loss of about 9 m les according to other calculations 24 English unles and according to some 8 Irosus)-M Williams

म्चम।

वराच्यीर्षप्रभव वरिष्ठं तस्त्रैव दंष्ट्राङ्गुरतुस्यवर्षा। कचित् सयश्चित् सभुवप्रदेशे

या पर्यापास्य चुनुनन्दः प्रजायते ऋकरवद्दरिष्ठं ॥ २६९ ॥ वस्तादिजातिभेदेन यराकोऽपि चतुर्व्विधः ।

तेषु जाता भवेषुका समावेन चतुन्विषा । २६१ । बाक्षणः मुल्लयण्यं कोमलस्य एव च । चित्र्य मुल्लरक्षम् स्पेरेककेय एव च । २६३ । येख स्वाच्छुलपीतमु कोमलः कोणमन्तिम । यद्भ स्वाच्छुलपीतमु कोम स्वाम एव च । २६४ ।

तर्जमा।

मूक्तरके सदाकमें जो मीति पयदा होता है, वह मीति मूक्तरके दांतके समान समेद्दर्ण होता है, सेक्ति कियी कियो जगहमें मूक्तरके यदनके समान रहा होता है। देहर

जिस्तर है मनुष्ये बास्तम, सानू, वैद्य और मूत्र बार जात है, उनीतरह मुक्तरभी बार जातका होता है, और उसमे पवदाखवा गोतिभी बार जातका होता है। १६०। बास्तगजातका मोति महेदवर और बेदना: यानू

जातका मोति भवेटा सुषीमायेच चीर हुनेमे कर्कम 1 १६३। वैद्यापातका मोति सबेद पीनावनविदेशये चीर हुनेमें

पेन्ताः चीर मूहलानका मोति शर्पेद नीमापनिविद्येष्टिये चीर क्लेमे वर्षमा १६४।

•

€€.

TRANSLATION.

261. Pearls which originate in the head of the boar, are generally white as the tusks of that animal;—rarely resembling in hue, the color of the boar

262. As boars are divided into four orders denominated after the names of the four cardinal castes, even so are the pearls which are produced by them.

263 64. The Brahmin Pearl is white and soft to the touch; the Kshetriya one is red-white and hard; the Pearl of the Vaisya class is white-yellow and tender; while the Sudra Pearl is blue-white and hard to the touch.

অনুবাদ ৷

বৰাহ্মন্তকে যে সৰুল মুক্তা জন্মে, তৎসমূৰ্য প্ৰায়ই বৰাহ্মন্তেৰ ভাষ শুক্লবৰ্গ হয়, তবে কোন কোন খলে কথন বা সেই বৰাহেৰ গাত্ৰেৰ বৰ্ণেৰ ভায় বৰ্ণবিশিক্তও হুইয়া থাকে (২৬১)

ত্রাহ্মণাদি জাতিভেদে বরাহও বেমন চারিপ্রকার হয়, তত্ত্ৎপন্ন মূক্রাও তদ্ধপ চতুর্বিংধ হইবা থাকে। ২৬২।

ব্ৰহ্মবৰ্ণ মূক্তা শুরবর্ণ ও কোমলম্পর্শ, ক্ষত্রিয়বর্ণ মূক্তা শুক্ল-রক্তবর্ণ ও কর্ম-শব্দশি। ২৬৩।

বৈশ্ববৰ্ণ মূক্তা শুক্ৰপীতবৰ্ণ ও কোমলম্পৰ্ণ, মূদ্ৰবৰ্ণ মূক্তা শুক্ৰনীলবৰ্ণ ও কৰ্মশম্পৰ্শ I২৬৪।

मूलम्।

कोवजं कोवसहारं तहं द्रामहारक्षिव ।

चवारं मनुजै रस्यं मौकितं मुख्यविजैतेः ॥ २६५ ॥

ये कव्यवः शाद्धिस्वावमर्प
पीतस्य शह्यम्बरस्य गोवे ।
स्वाचौकिकानामिष्ठ तेषु जन्म

तह्यचणं वम्मति कीर्भयामः ॥ २६६ ॥

स्वोनिमध्यक्यविनुत्यवणं

शङ्घादृष्टकोवफवममाण ।

कथ्नृङ्गव तेषु मुभं प्रदिष्ट
सुतस्त्वीते यथ गकेन्द्रकुमान् ॥ २६७ ॥

तरजमा।

जो भोति बेरके फलके समान श्रीर गुकरने दात^क समान सफेट, रोगा श्रकरके जातका मीति देखनेमें यज्जत. श्राच्हा भौर गुखादीन शाहमीको नांद मील सक्ता। १२६^५।

जिम् गञ्जमा बदन पीनारज्ञ होए चौर सुकाला रज्ज, रेचेडी गञ्जमें मोति पयदा होता है, दूर्सविये भाग उपके जातके मोतिका हाल लिखा जाता है। १९६ । गञ्जसे जो मोति पयदा होता है, उसका कद बदे

यह वेरके भमान ही, और उसका रद्ग शक्त पेटके भमान ही, शक्तवाना मोति श्रीर हायीके सत्तकका मोति सर्वर्ष

श्रेष्ठ श्रीर मङ्गल करनेवाला है। २६७।

265. A boar-begotten Pearl resembling a plum in shape and the tasks of that animal in hue, is a most beautiful object in nature and is not to be obtained by a meritless individual

266 Of conch shells, those only that are yellowbodied and black-mouthed produce Pearls. I shall now describe Pearls of this origin.

267. A Pearl that is derived from a conch shell, is of the dumensions of a large plum, and is white as the inner surface of the coat of that shell fish. Such Pearls as well as those produced by elephants, are the best of their kind and are productive of good fortune.

বহুবার।

আকাৰে ভূলেব সদৃশ অধচ ববাহ দন্তবং শুরবর্ণ ববাহ-ক্লাত মুক্তা দেখিতে অতিবদশ্বিধ এবং পুণাহীন ব্যক্তিবর্গেব অপ্রাপা। ২৬৫।

শধোৰ মধ্যে যেওলিৰ ব্দৰ্যৰ পীত্ৰৰ্গ এবং মুখ কৃষ্ণবৰ্গ, দেই দকল শব্দেই মুক্তা স্কমিয়া থাকে, সম্প্ৰতি তজ্জাত মুক্তাৰ বিবৰণ বিবৃত কৰা যাইতেছে। ২৬১।

শখ হইতে যে সকল মুক্তা জন্মে, তাহাদিগের আকাব বৃহৎ বুলের ভাষ, বর্ণ শশুর উদ্বেব ভাষ, শখুজাত ও গজ-বুস্তজাত মুক্তাই দর্বপ্রধান এবং মুচলজনক। ২৬৭। वर्षोपलसम् दीप्तरा पाञ्चलत्यकुलोद्ववं । कपोताग्डममाण तदतिकान्तिमनोष्टरं ॥ ५६८ ॥ ष्राधिन्यादिकनचचे ये जाता' कस्वय' गुभा' ।

मौक्तिकं तेषु जातं हि सप्तविश्तिभेदमान्। २६८। गुक्तागुक्तपीतरका नीवलोक्तिपिस्तरा।

चाकर्वूरा पाटलाच नव वर्णी प्रकीतिंता । ५७० ।

तर्जमा।

श्रञ्जने मध्ये पाञ्चलत्य शंख सबसे प्रधान की अस्ते

नियान रावन चार देखनम मनका घरनवाला। २६८। चित्रनी चाद नद्यथमे यानाइम नद्यथनक् मानाइम किसिमका मञ्ज पयदा घोना है, इमी तरुष्ट महस्त

पयदाज्ञया मोतिभी सामाद्रम् किसिमका होता है रिस्टी मृद्खसे पयदाज्ञये मोतिसे सफेद, काला, कमपीला,

व्यादा लाल, नीला, कम लाल, ज्यादा पीला, शालका खाकी और इटके मेंसा रफ़, इसी तरक्षते नीकिसिमका

रद्ग होता है। ५७०।

<u>z</u>

268 The conch shell called panchajanya* 1s the best of its kind. The Pearls produced by it are like the pigeon's egg in size, and transparent as hail as well as white. These are exceedingly heautiful.

269. There are twenty seven kinds of conchshells, produced by as many stars of the Asumi class; accordingly Pearls generated in them being marked out by distinctive qualities, are divided into twenty-seven orders.

270. A conch-shell Pearl is white, black, yellowish, crimson blue, reddish, deep yellow, ashcolored or palo-red.

অহুবাৰ।

শ্ৰেৰ মধ্যে পাঞ্চল্লই সৰ্ব্বপ্ৰধান, তৰংশজশুৱোত্তৰ মূকা আকারে কপোত ভিঘ সদৃশ, কবকাব ভায় অছে, শুক্লবৰ্গ, অতিশ্যকান্তিবিশিক, দেখিতে অতিমনোহর ।২৬৮।

অধিকাদি সপ্তবিংশতি নক্ষত্রে সপ্তবিংশতিপ্রকাব শখ উৎপদ্দ হয়, স্থতরাং শব্বোম্ভব মুক্তাও তদমুদারে সপ্ত বিংশতিবিধ চইযা থাকে। ২৬৯।

শান্ত্রোৎপর মূক্তাব শুরু, হৃষ্ণ, ঈবংপীত, গাঢ-লোহিত, নীল, ঈবং-লোহিত, গাদশীত, ঈবংপীতটে এবং পাটল এই নববিধ বর্ণ হইয়া থাকে। ২৭০।

So called because it is related to the five classes of beings, rf, gods, men, Gandharvas and Asuras, surpents and Pittis.— Billiams

मूचम्।

महनायलघुनानिः सप्तविंगतिधा भवेत्।

कमतक्षेषु विश्वय नचचेषु मनीषिभि ॥ ५७९ ॥

पाठीनप्रस्थ समानवर्ष

मीनात् सहत्त लघु नातिमूपा'।

उत्पद्यते वारिचराननेम्

मीनाख ये मध्यचरा: पयोधे । २७२।

ग्रञ्जापनसमें यसु मीजिक तिमिनं वघु। पारनीप्रव्यवद्वागमस्रकान्ति सुवर्त्तुन ॥ ५७३ ॥

सर्जमा ।

श्विती थाद गासाइय नस्वके मध्ये श्वितीये विकर श्वरोगातक् यकी नी नस्वमे प्यदाङ्ग्या भौति श्रोजनमे बङ्गम् भारी, मधा नस्वस्ते स्रोठा नस्वतक, यकी नी नस्वसातका मोति एकत् श्रोजनी श्रीर मूब मस्वस्ये रेवती भस्यस्य यक्षी नी नस्वस्यातका मोति श्रोजनमे शास्का होता की १५७१।

को महलि चसुद्रमे पयदा होति हैं। उसके समें मीति पयदा होता हैं, महलिआतका मोति बहुत गोव, देखनेमें कोटा, घोडममें हान्या और उसका वर्ष वोयाल

मक्तिक पिठके ममान । १७२ ।

तिमि मक्तिचे को मीति पयदा कीता के, उन्ता कीत प्रयदा कीता के, उन्ता कीत प्रयदा कीता के कित्र कित्र

Ž.

271. The nine species of Pearls obtained from the first nine stars of the Assimi order from Assim to Aslead, are very heavy—those produced by the next nine from Magha to Ieshihud are less so; while those produced by the rest from Mala to Revati are very light.

272. Pearls are also obtained from the month of sea-fish. Such pearls are singularly round, small and light, and in color are like the back of the sheat fish, (Silurus Bodis).

273. Those Pearls that originate ia whales, are gunja shaped* and patali-colored.† They are very light and agreeably round, but are not highly lustrous.

षञ्चान ।

অধিখাদি দপ্তবিংশতি নক্ষত্রের নধ্যে অধিনী হইতে
অপ্লেরা পর্যান্ত এই নবনক্ষত্রজাত মূকা ওজনে অতিওক্ত,
নুমা হইতে জ্যেষ্ঠা পর্যান্ত এই নবনক্ষত্রজাত মূকা ওজনে
গুরু এবং মূলা হইতে বেৰতী পর্যান্ত এই নবনক্ত্রজাত
মূকা ওজনে লমু হইবা থাকে। ২৭১।

মে সকল মংজ সমূত্রে জমে, তাহারিগের মূথে মূকা উৎপদ্দ হয়, মংসাজাত মূকা অতিগোলাকাব, আকারে কুলু, ওজনে লমু হয়, এবং তাহার বর্গ বোয়াল-মংস্যের পুঠভাগের বর্গ সদৃশ। ২৭২।

তিমিমংস্য হইতে যে মুক্তা জন্মে, তাহা আকারে গুপ্তার (কুঁচের) ভাষ, ওজনে অভিনয়, পাটনীপুপ-সন্দ বর্ণবিশিষ্ট, উত্তম গোনাকার, কিন্ত অধিক তেজ-বিশিষ্ট হয় না। ২৭০।

^{*} Patali is the trumpet flower, Bignonia Suarcoloni.— Williams † A red and black berry of Abru's Precatorius forming the smallest (f) of the jeweller's weights averaging about ‡1 grains Troy.— Williams.

म्सम्।

वातिपत्तवषदन्दृविद्यपातप्रभेदतः । सप्तप्रक्रतयो मीनाः सप्तधा तेन मीक्तिकं॥ २०४॥ विध्वप्तम्त्रणं यातात् त्रायीतं मृदु पित्ततः । मुखं ग्रम् कजोट्ने कात् यातपित्तानमृदुवषुः॥ २७५॥

तर्जमा ।

ं यार, पित्त, कफ; याद्यपित्त; कफ्रांपत्त; यायुक्ष भीर वायुांपत्तकष यही पात किंपिमकी मक्तिभी पार्व प्रकारकी चीति हैं, इसवाची मक्तिभी पयदाज्ञया मीतिभी सात तरहेका चीता है। ५७८।

जिम् सह्विमे घाषा च्यारा घोता, उन्हे पयदाजया मीति घोजनमे बज्जत् चालका, घरणवर्षः जिस्
मह्विमे पित्त ज्यादा घोता, उन्हे पयदाज्ञ्या मीति
चाल्का पीलारङ्ग, घोर जेरा ठोजरवे भट टुट् जायेगाः
जिस् मह्विमे कप ज्यादा घोता, उन्हे पयदाज्ञ्या मीति
घोजनमे मारी, घौर मधेद रद्भः घौर जिस् मह्विमे
वायुषित्त च्यादा घोता, उन्हा पयदाज्ञ्या मीति घोजनमे
बज्जत् चालका, चौर खेरा ठोकरवे टुट् जादेगा। २०४।

TRANSTATION

274. Fishes are divided into seven kinds, according to the prependerance of one, two, or all of the three vital properties—the air, hile and cold; and so are the Pearls produced by the finny kind.

275. Pearls which come from fish into whose composition the air principally enters, are exceedingly light and reddish hrown, those produced by bilious fish are yellowish and hrittle; these produced by fishes in which cold prependerates, are heavy and white; and those which originate in fish predominated over by the air and bile, are brittle and excessively light.

অন্নবাদ।

বাত, পিন্ত, কফ; বাতপিন্ত; বাতক্দ এবং বাতপিত-কফ; এই সপ্তবিধ ধাছপ্রাধাতনিবদ্ধন মংঅ সপ্তবিধ হইয়া থাকে, স্বতরাং ভব্দাত মুক্তাও সাতপ্রকার হয়। ২৭৪।

বাতপ্রধান মংক্রপ্রাত মুকা ওলনে অভিশন্ন নাযু ও অল্লাবর্ণ; পিডাধিক মংক্রোন্তব মুকা ঈষং শীতবর্ণ ও ভদ্ন-প্রবণ; কদস্বভাব মংক্রোৎপন্ন মুকা ওলনে ভারী ও শুক্র-বর্ণ এবং বাতপিতাধিক মংক্রমন্তব মুকা ভদপ্রবণ ও ওল্পনে অভি লমু । ২৭৫। मिक्रमासा ।

मूचम्। यातसी पामनं स्यूनं पित्तसी पाणम च्छं। सर्वेतिक्रप्रयोगेने सामिपातिकसुचाते।

एकजा: ग्रुभदा: ग्रोकासया वै साद्मिपातिका: 1 १७६ ।

भौजल्रमं नीलविशुहुटसं सब्दं भवेत् पोळा लवणयोमं ।

नितान्तधौतप्रतिषस्य रमान-

निस्ति जधारासम्बद्योभंक । ५७ ७।

भुजद्रमास्ते विषवेगहप्ताः त्रीवासुकेवंशमवाः प्रशिद्धां।

क्षचित् कदाचित् खलु अख्यदेशे

तिष्ठिना ते पर्यात तान् मनुष्यः॥ १७० ।

तर्जमा । निष् मछनिमे बायुक्क न्यादा श्रीमा, उस्का पयदा-

ज्ञया मोति कट्ने कुच यड़ा; जिस् मह्लिमे पिना क्य च्यादा शोगाः उसका पयदाख्या मौति बछत् साप भीर निर्मात ; निस् महलिसे बाय वित्त क्ष तिनी समान द्दोगा, उस्का पयदाज्ञया मोति पूर्वित्वित तिन गुण्युक शोगा; भीर इसी सातिक्तिमुकी मक्तिके मौतिके मध्ये

जो मीति एकधातुप्रधान खबना सर्वेधातुमधान महलिसे पयदा डोए, वडी गुभदायक है। २७६।

सापके मस्तकमें को मौति पयदा होता है, वह छम्दा, गील, बज्जत् साम और जेनाति छड तलवारके बादके पमान नीलारङ । ५७७।

जिस् सपेंके मस्तकमें मौति पथदा होता है, वह बास्रवि-बंगका साप द्वीता है, और सेसा साप जमीनपर दरलगड़े निष्ठ पयदा होता, कदाचित् किनी पविच देशमे ऐसा साप पाया याता है। २७८।



276. Pearls produced by fish predominated over by the air and cold, are rather large; those produced by fish in which bile and cold prependerate are very transparent; and those produced by fish into which the three substances enter in equal proportions, combine all the first-mentioned qualities. Of these, those only into the composition of which either one substance or all the three enter, are productive of good.

277. Pearls which adorn the serpent's crest, are finely round and highly shining; and reflect a beautiful hlue halo like the flash of a polished sword.

278. Those serpents that bear Pearls on their head are the descendants of Vásuhi*; these are not born everywhere, and are rarely seen by men in some sacred ground.

অধ্বাদ।

যে মংজে বাতমেমার ভাগ অধিক, ততুৎপন্ন মুকার
আকার কিঞ্চিৎ বৃহৎ হয়; পিতমেমাপ্রধান মংজ্ঞান্ত
মুক্তা অতিথক্ত এবং বাত-পিত্তকদাধিক মংজোৎপন্ন
মুক্তা প্রথমোক্ত ত্রিবিধ লফণাক্রান্ত হইয়া ধাকে। উক্ত
সপ্রবিধ মুকার মধ্যে যে ত্তি একগাতুপ্রধান বা সর্ক্ষ্যাতুন
প্রধান মংজহইতে জন্মে, তাহারাই তত্ত্বনক। ২৭৬।

ভূলসমন্তহন্তাত মূকা উভনগোলাকার, অতিশয় উচ্ছল, এবং শাণিত করবালের ধারের হ্যায় বিশুদ্ধ নীল-আভাযুক্ত হয়। ২৭৭।

যে সকল ভূজদের মন্তবে মূক্তা জন্মে, তাহারা বাহ্-কির বংশসমূত্ত এবং সে সকল সর্প পৃথিবীর সকল খানে জন্মে না, ক্লাচিং কোন পবিত্র প্রদেশে তাহাদিগকে দেখিতে পালয়া যায়। ২৭৮।

[.] Borereign of the snakes.

मूषम ।

प्रणिकं वर्त्तुकं रस्यं नीलच्छाय महाद्युति । सुर्ख्यां हीना न पर्खाना वास्त्रते कुलसभावं ॥ २७८ ॥

गृगाचकोलामलकोलग्रञ्जा-

फलप्रमाणासु चतुर्विधासा । स्वत्रस्वाह्यस्वविधासूद्राः

स्तुत्र सार्वा हर्द्व वय्य गूर्ता. सर्पेषु जाता' प्रवरास्त सर्जा । १८० ।

प्राणापि रत्नानि धर्न त्रियत्ना राजत्रियत्ना महती दुराणां।

तेजोऽन्विताः पुण्यकतो भवन्ति

सुकापलस्यास्य विधारणेन ॥ ५८९ ॥

सरजमा ।

सापने मस्त्रकता पयराज्यया मोति गोल, देस्नेमे स्वा स्रतः, नीलरञ्जकी याभासित, यज्जत रोसन, रोस मोति स्राप्यकीन थार्मोको वाष्से देस्नामी नशीय निर् कोता। २७८।

यांपर्क मस्तक में को मीति पयदा होता है, यह मी बाह्मण, हिन्नु बैंख चौर ऋद्रके समान चारवर्णका है, उस्में को ब्राह्मणवर्ष होए, उसका सद ह्यांकुलके फलके समान, को हिन्नुवर्ण, उसका कर श्रामलाफलके समान, को बैंखनके, उस्का कर कोटे बेरके समान श्रीर जो ऋद्र वर्ण, उसका कर सहारे के रके समान श्रीर जो ऋद्र

पुष्णवान् षादमी बजत् रल, धन, चनी, या बजत् सुन्कत्वचे चासिनचीनेवाली राचलक्क्षीको चासिल कर्के जिसतरच्ये चमकति, पेयानी चौर सुराषी चेचारा चीते चै, छत्ती तरचसे सापने मस्त्रत्वा एक मोति धारण करनेसे तेजवान चौ सक्के ची रुष्टर्।

279. Persons void of merit cannot see the class of Pearls under description;—the exceeding hrilliance and heauty of which are hidden from their view.

280. Such Pearls as are found on the head of serpents, are divided into four classes called after the names of the four principal castes. Of these, those which are Brahmins, resemble in form Shydkula*; the Kshetriya class are like the fruit of the Emblic Myrobalan; the Vaisya Pearls are like common plums; while the Sudra ones are gunjd-sbaped.

281. The power which is attained by virtuous people through the possession of innumerable gems and great wealth, through ordinary prosperity or through regal good fortune, is attained by wearing one serpont-begotten Pearl.

অন্তব্য :

ফণীর মন্তকোতুত, গোলাকার, রমণীয়, নীলছায়া-বিশিক্ত ও অভিতেজন্দী মুক্তা পুণাহীন ব্যক্তির নয়নগোচর হইবার নহে। ২৯৭।

দর্শনতকে বে দকল মুক্তা উৎপন্ন হয়, তাহারা ব্রাহ্মণ, কজির, বৈশু ও শুদ্রভেদে চতুর্বিধ হইরা থাকে। তঅধ্যে বেগুলি জন্মবর্ণ, সেগুলি শার্কুলের আয়; যেগুলি কজিবর্ণ, দেগুলি আমলনীর আয়; যেগুলি বৈশুত্বর্ণ, দেগুলি সামাত কুলের আয় এবং বেগুলি শুদ্রবর্ণ, দে-গুলি কুঁচের আয় হয়। ২৮০।

পুণ্যবান্ লোকেরা প্রান্থর রছ, ধন, সামান্য ঐ অথবা অভিছুপ্রাপ্য মহৎ রাজঐ প্রাপ্ত হইয়া যেরপ ভেজধী হন, একটী সর্পজাত মূক্তাধারণে সেইরপ ভেজধী হইতে পারেন। ২৮১।

A thorny shrub.

मूचम्।

निज्ञासया रत्नविनिचयज्ञैः

श्मे सहर्त्ते प्रवतीः प्रवतात्।

गुने सुहत्तं प्रयतः प्रयतात्

रत्ताविधानं समहदिधाय हमार्गीयविष्टं क्रियते यदा तत् ॥ २८५॥

तदा महहुन्द्रभित्याघोषै-

धनेधनेराब्यितेऽनारीचं।

न तं भुजद्वा न तु जातुधाना न राचमा नावि च दुष्टलोकाः ॥

न राचमा नावि च दुष्टलाकाः ॥ विंसन्ति यस्याधित्ररःसम्ह्य

सुक्ताक्लं तिष्ठति कोषमध्ये॥ ५८३॥ भेकादिपुषि जायन्ते मण्यो ये कचित् कचित्।

भीजज्ञममणेख्यास्त विश्वेया वधोत्तमीः ॥ २८४॥

वर्जमा ।

विस्वक कोइ आदमी रलपारचीने मतने खतुसार नेकसावितमे गांपके मस्तक में पबदा उन्ने मीतिको मकानमें

रखते की, उप्वक्तमे आकाममण्डलमे घन घन दुर्खाम माजे, की मुन क्षीत की, दूस कारण जो आहमी खाजानेमें सांपका मोति रक्षे, वक्ष आहमी कमी सांप, राजस, निमान

चर श्रीर डाकु वगैरडसे भय निष्ठ रस्ता । २८२।२८३ । किंस किंसि सगधमे मेदककेभी मसक्से मोति होता है, परिहत सोक उसु मोतिकोसी सांपके मोतिक समान

कहते हैं। ५८४।

TRANSPACTON.

282—283 When in an auspicious hour, a person carefully keeps such a gem in his house, in conformity with the instructions of the authorities, the skies resound with the sound of the Dundhuri,* and such a person has nothing to fear from serpents, Rákshasas† and other demons, or from wicked people.

284. In certain places, Pearls are found on the head of frogs; learned men class these with serpent Pearls.

অসুবাৰ ।

যথন কোন ব্যক্তি বন্ধপরীক্ষনিগের অভিমত শুভলটো সর্পোত্তর মুক্তা অভিবন্ধপূর্মক গৃহে রক্ষা করেন, সেই সময়ে আকাশমণ্ডলে খন খন ছুন্দুভিগানি হইতে থাকে। এবং যে ব্যক্তিব কোষমধ্যে সর্পমূক্তা থাকে, সে ব্যক্তি কথনই সর্প, বাক্ষস, অপবাপর নিশাচর এবং ছুক্তলোক হুইতে ভীত হয় না। ২৮২। ২৮৩।

কোন কোন স্থানে ভেকাদিব মস্তকেও মণি জন্মিয়া থাকে, পণ্ডিতেবা সেই মণিকে মর্পমণিব তুল্য বিবেচনা করেন।২৮৪।

A sort of large kettle drum

[†] Fide antè

मूचम्। चेंच्चिकपारलीकिकभौराष्ट्रतामुपर्धीपारमीका ।

कौवरपाण्डावराटमित सकाकराचाटी । २०५ । स्वात्वा स्थिते रवी मेघेमुका वे अन्तविन्द । गीर्षा मुक्तिपु जायन्ते तैसु का निर्मन्तित्व ॥ २०६॥ स्त्वा मध्यात्तवा सूमा विन्द्यानानुगारत । भवत्ति सुक्कासास्त्र मृत्यं स्थान्यानरूपत । २०७॥

तरजमा। सिंहल, पारलीकिक (श्वाब इसवक्रमे निंह मालुम,

के उस्का नाम केव हैं), शीराष्ट्र (सराट), नामपणीं (पश्चिम घाटपर्यंतके पाम), पारकीक (पारख देग), कीवेर (कैलासपर्वंतके निकट), पाय्ड्र (हाविडके धन्तर्यते), विराट (मत्ख देग), इसी चाट जगहमें मीति पवदा होता है। रूप्।
सूर्य जिस् समये स्तातीमचचमे रक्ता है, उसी जमसे समयमें जो सब जसकी बुद निपमें पद्ति है, उसी जनसी बुदक बारा बङ्कत् बाफ प्रधान बड़त् रोसन मोति पयरा

जलकी बुद जिस् तरध्यो बर्पे गो, उनी नरहेया मोतिभी होगा, चर्यात् चगर जलकी बुद रति होगि।तो बडा मोति होगा, चौर मध्यम जलकी बुद्दे मध्यम मोति होगा चौर पत्ति बुद्दे होटा मोति होगा। ५८०।

होता है। २८६।

62

285. Pearls are produced in the following eight places :- Sinhala, * Páralaulika, † Saurástra, ‡ Tam raparni, Párasika, Kauvera, Pándya** and Viráta.++

286. The Pearls that originate in water-drops falling upon oysters, when the sun rests on the Swdt#‡ star, are flawless and bright

287. The size of these varies in strict concomitance with the size of the water-drops-1. e. a large drop producing a proportionately large Pearl, and a small drop, a proportionately small one.

অনুবাদ।

দিংহল, পাৰদোকিক (অধুনা অজ্ঞাত নামে পবি-ণত) সৌবাষ্ট্র (ছবাট), তাত্রপর্ণী (পশ্চিম ঘাটেব সম্লিহিত), পার্মীক (পাবস্থদেশ), কোবেব (কৈলাস-পর্ব্বতের সন্নিহিত), পাণ্ড্য (দ্রাবিডেব অন্তর্গত), বিবাট म्रदश्यामा), **এই अस्टेशात मुका** छेर शह रग। २৮৫।

সূর্য্য যে সমযে স্বাতীনক্ষত্তে অবস্থিতি কবেন, সেই সময়ে যে সকল জলবিন্দু ভক্তিগর্ভে নিপতিত হয়, সেই জনবিন্দু দ্বাবা অতিনির্মান এবং অতিতেজমী যুক্তা জন্মে | ২৮৬ |

ব্লষ্টিবিন্দু সকল যে পৰিমাণে পতিত হইবে, মুক্তাও टमहे शिवमार्ग अभिरत, अर्थां श्रुलिन्तू घाना श्रूल, मधा-বিন্দু দাবা মধ্যমাকার এবং অতিসুক্ষবিন্দুতে অতিকুদ্র মক্রা উৎপন্ন হইবে।২৮৭।

^{*} Ceglon. t Cannot be identified now. + Surat - (Vide ante) Wear the Western Ghats. Adjoining the Kailasha Mountain

[·] Included in Dravira ti Matayadesha If The star Arcturus (as forming the fifteenth lunar asterism)

²³⁹⁵⁵

मियाला।

मुचम्।

सुसिषं मधुरच्छायं भौक्तिकं सिवलीहर्व। पारली किकसमातं मी क्षिकं निविदं गुरु । ५८८ । तासपणीं भवं तासंपीतं पार्यसभावं। र्रपच्छ्यामञ्च रूचच्च कोवेरोद्धवमीकिर्व। पाण्डादेशाह्व पाण्ड वित रूवं विराटन । २८८। र्विमाखाखात् या शुक्तिसत्प्रसूतिः सुदुर्वभा। तच जातं चितं खक्छ जातीफलसम वरं ॥ २६० ॥

सर्जमा।

विद्वलदेशी मोति बङ्जत् चमकदार श्रीर शाफ मीमके समान रहा, पारलीकिन देशका पयदाज्ञया मोति वजत् ठीस चौर चोजनमें बझत भारी। २८८।

तासपणी देशका पयदाख्या मीति नावेके रबन पारस देशका भौति पीला रखा कौवेर देशका मौति थोड़ा खान रज चौर वदा कर्केश, पाएड उदेशका मोति फिका

चफेद, विराट देशका मोति शुक्तरङ्ग और वर्केश । २००६। क्विज्ञणी नामकी एक जात सिप पथदा द्रोति है, चेकिन उस् जातकी सिप बद्धत् क्षम है, उस्से जो मोति पयदा होता है, वह ने हायेत् खोसरदा, सफेद छीर वज्जत् साफ श्रीर जायफलके चसान वडा, इस तरहेका मोति काविल इज्जत्ते हैं। ५८०।

288. A Gingalese Pearl is very cool to the touch, pure and honey-colored; a páralaukika Pearl is very substantial, and consequently heavy.

289. A Pearl of the *Támraparni* country is copper-colored; a Persian Pearl is yellow; a *Kauvera* Pearl is gray and frightfully rough; and a Pearl produced in *Pándya* is white and rough.

290. There is a particular oyster called Rukmini, which is very rare. The pearls found in it are white, transparent and large as nutmegs. They are much coveted.

অহ্বাদ।

নিংহলদেশীয় মূকা অতিস্লিগ্ধ এবং বিজ্ঞ নধুর স্থায় বর্ণবিশিক্ট; পারলৌকিকোৎপদ মূকা অত্যন্ত নিবেট, স্থতরাং ওজনে ভারী হইরা থাকে। ২৮৮।

তাত্ৰপৰ্ণীসমূত্ত মূক্তাৰ বৰ্ণ তাত্ৰেৰ ন্যায়; পাৰস্যদেশীয় মূকা গীতবৰ্ণ; কোৰেয়দেশোন্তৰ মূকা ইৰং স্থামবৰ্ণ ও অতিকৰ্কশ; পাত্যদেশোৎপদ মূকা পাতৃবৰ্ণ এবং বিব্লাট-দেশজাত মূকা শুক্লবৰ্ণ ও কৰ্কশ ইইয়া খাকে।২৮১।

রুরিণী নামে একজাতীয় শুক্তি জম্মে, তঙ্গাতীয় শুক্তি অতিতুর্নত, তাহাতে যে মুক্তা উৎপদ হয়, তাহা শুরুবর্ণ, বক্ত ও জায়দনের ন্যায় বৃহৎ হয়, এবং এ প্রকার মুক্তা অতিয়াদরণীয়। ২৯০'। मूलम् १

हायावदर्जुलं रस्यं निर्होषं यदि सस्यते ।
श्वमू त्यं तिदनिर्देष्टं रत्नलचणकोषिदैः ।
दुलेमं नृपयोग्यं स्थाद्सभाग्यं ने सम्यते ॥ २८९ ॥
बह्मादिकातिमेदेन गुक्तयोऽपि चतुर्विधाः ।
तास्र चर्चास्त जातं हि मौक्तिकं स्याञ्चतुर्विधं । २८२ ॥
बाह्मणस्तु वितः स्वच्हा गुकः स्विधः प्रभान्वतः ।
श्वारकः चिवयः स्यूतस्यादविभान्वतः ॥ २९३ ॥

तर्जमा ।

रस्रवारची पिष्डतों के सतके श्रुत्तार उक्तम कुटहेने-बाला और गोल, ट्रेकनेने रमणीय धीर वेश्यवेद मोति बज्जत् दुर्लम घै; श्रीर वेकिनत् घै, श्रीर राजाके योग्य घै, उप्जातका मोति कम नसीवके योग्य निर्धं बद्धे एक बालमन्द्र प्रतापमानके योग्य घै। रहर । जिस् प्रकारसे बाह्मण, चिन्नु, बैखा श्रीर ऋद्र चारजात

होति हैं, उमी प्रकार मिपमेभी चारजात हैं, उम्मे पनदाः अया मौतिभी चार जातका है। १२१। जो मौति मफेद रज्ञ, माफ, चोजनमे भारी, चमकः दार चौर तेजस्वी होए, उम्को ब्राह्मणवर्ष कहते हैं; जो मौति स्विमायेख, चौर देखनेमे बढ़ा, स्रुपः

रक भीर कुटदेनेवाला, वह मोति चानिवर्ण है। २८१।

6.

291. According to the authorities, perfectly circular and chaste Pearls casting a beautiful shade, are rarely found and are of priceless worth, they heing fit enjoyment for princes. Such Pearls are heyond the reach of unlucky individuals.

292. The four-fold division of caste holds also with oysters; accordingly oyster-begotten Pearls are of four kinds.

293. Such of these as are white, transparent, weighty, cool and shining, are reckoned Brahmins; those which are ruddy, and large and which possess a reddish light, are Kshetriyas.

षद्भवान ।

রত্বলক্ষণবিং পণ্ডিতদিধের মতে উত্তম ছাঝাবিশিন্ট, হুন্দর গোলাকার, দেখিতে রম্পীন, অথচ নির্দ্ধোয় মুক্তা অতিত্বর্লত, অমূন্য এবং রাজতোগ্য, তঙ্গাতীয় মুক্তা অম ভাগ্য ব্যক্তিগণের অপ্রাপ্য । ২৯১ ।

ব্ৰহ্মাদি দ্বাতিভেদে শুক্তি চতুৰ্ব্বিধ হইবাথাকে, হুতবাং শুক্তিদ্ধাত মুক্তাও চতুৰ্ব্বিধ হয়।২৯২।

যে সকল মূলা শুরবর্গ, বচ্ছ, গুজনে ভারী, রিশ্ন ও প্রভাবিশিক্ট, তাহারা জন্মবর্গনধ্যে গণ্য; যেওলি ঈবং বক্তবর্গ, আকারে হৃহৎ ও অরুশবর্গ প্রভাবিশিক্ট সেগুলি ক্ষত্রিবর্গনধ্যে গণনীয়। ২৯০।

मू धम्।

वैश्वस्वापीतवर्षोऽपि सिन्धः श्वेतमभान्वतः। ग्रहः मुक्तवपुः सूप्तस्या स्व्वोऽपितद्यृतिः॥ २८४॥ वैश्वजं ग्रिसङ्कार्यं क्क्कोलफलमान्वः। ग्राप्यते वज्जनिः प्रश्वेसद्द्रं देवसमानं॥ २८५॥ पद्यमूतससुद्रे काहंगः पद्यविधों भवेत्। सुकाः पद्यविधास्तागा यथालवणसुन्यते॥ १८६॥॥

तर्जमा ।

को मोति कम पीवारक, चमकदार, चमेद चौर कुटदैने-वाला चोए, उसकी वैखवर्ण कचते चे, चीर को मोति सादारक, लेकिन कोटा, चौर जो मोति कद्वे वडा, लेकिन कालारक वच गूद्रवर्ण मोति चै । १८८।

वासभे को मोति पयदा घोता है, वह देखनेमें चन्द्रके समान सुक्षवर्षे भीर उद्का कर कक्कोलफलके समान वहा, इस जातका मोति खाय, कोइ कोइ लोक वक्षत् सुष्युके जोरचे दो एक पावे। १८५।

प्टब्दी चाद पाच मधामृत सर्वात् माद्वी, पाणि, चावा, चाग चौर चाकाग इसी पांच तत्त्वके कमी वेशीये वांगमी पाचमकारका चीता ची, इस्कारण वाग्रजातका मीतिमी पांचप्रकारका चीता ची १८६।

294. Those Pearls that are yellowish and cool. and which are possessed of a white lustre, are Vaisyas; lastly of Sudra Pearls, some are white and small while the rest are black and large.

295. Pearls which originate in bamboos, are clear as the moon : and are like the kakkol* fruit in shape. They are generally enjoyable by the gods. Some through rare merit obtain possession of one or two.

296. There are five species of bamboos, on account of the preponderance in them of one or other of the five elements; consequently bamboo Pearls are classified under five distinct heads.

অন্নবাদ ৷

যে সকল নুকুল ইষৎ পীতবর্ণ, প্রিশ্ধ অথচ খেতপ্রভা-বিশিষ্ট, তাহারা বৈশ্ববর্ণনধ্যে পরিগণিত এবং শুক্রজাতীয় মুক্তার মধ্যে কতকগুলি শুরুবর্ণ ও ফুদ্রকায়, এবং কতক-छनि कृष्ण्यर्ग ७ वृहरकात्र हरेत्रा थाटक । २৯८।

বংশজাত মুক্তা দেখিতে চক্তের ভাব শুরুবর্ণ, আকারে ককোল (সুগন্ধি দ্রব্য বিশেষ) ফলের সদুশ, এই জাতীয় মুক্তা প্রায়ই দেবভোগ্য, কেহ কেহ বহু পুণাবলে ছুই একটা প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। ২৯৫।

পৃথিব্যাদি পঞ্ছতের প্রাধান্যনিবন্ধন বংশ পঞ্চবিধ হয়, স্তরাং বংশজাত মূক্তাও পাঁচপ্রকারের হইয়া থাকে। ২৯৬।

^{*} A fragrant fruit.

मूचम् ।

षाधिने ग्रहरच्छा च तैजकी तेजका लघुः।
वायनी च खदुः खूला गागनी कोमना लघुः ॥ २८७॥
खाष्या खिन्या च्या गुक्ता पद्धिता प्रवरा मताः।
खासा धारणमाचेण व्याधिः कोऽपि न जायते ॥ ५८८॥
चतुर्घा मौक्षिके च्छाया पीता च मधुरा सिता।
नीता चैव समाखाता रव्यतत्त्वपरीचकै ॥ १८९॥

बर्जमा। जिस् सीतिमे प्रथीका हिस्सा ज्यादा है, वह स्रोज-

नमें भारी, चौर वज्जत् साक, जिस् मीतिमें तेजका हिस्सा जादा है, वज चाजनमें बाल्का, जिस् मीतिमें बावाला हिस्सा ल्यादा है, यह योजा ठोकरचे टुट खाता है चौर कदसे वडा, चौर जिस् मीतिमें आकायका हिस्सा लादा है, वह कुनेमें चाच्छा चौर चीजनमें बाल्का। १८७।

जिस् मेरितमे अलका हिम्सा ज्यादा है, वह प्रमक्दार, सादा और साफ, यही पांवजातके मेरित पहेरनेसे किमी तरहकी व्याधि खर्यात् बद्दनके विमारिका खीफ नहिं, २८८०।

रक्षपार्ची परिवत पीला, मधुके समान रझ, मुक्तपण चीर नीलवर्ण, यशे भारमकारका चामा मीनिकी ककते है। २८८।

207. Earthy Pearls are heavy and spotless; energy-begotten Pearls are very light; airy Pearls are exceedingly brittle and thick; skyey Pearls are very soft and light.

208 Watery Pearls are cool and eminently white. All these kinds are superior; and the wearing of them wards off disease.

299. Authorities in the matter of gems mention four kinds of shade as belonging to Pearls;—vzz., the yellow, the honey-colored, the white and the blue shade.

অগুবার ।

পার্ধিবী মূলা ওয়নে ভাষী ও অতিনির্মন, তৈজগী মূলা ওছনে অতিলয়, বায়বী মূলা অতি-ভদুর ও সুল, গাগনী মূলা অতি-কোমল অথচ ওয়নে লম্। ২৯৭।

জনীয়া মূলা মিন্ত, ঘতান্ত শুরবর্ণ হইরা থাকে, এই পঞ্চবিধ মূলাই অভিশ্রেষ্ঠ এবং এই দকন দ্বাতীয় মূলা ধারণ করিলে কোনপ্রকার ব্যাধিভয় থাকে না। ২৯৮।

রয়বিং পণ্ডিতেরা প্রিত, মধুর, তর ও নীল এই চারি-প্রকার ছামা মূকাতে নির্দেশ করিয়া গিমাছেন। ২৯১। मूचम्।

पीता लक्षोप्रदा च्हाया मञ्जरा बहिवाहैंनी । युक्का यमस्करी च्हाया नीला चीमाग्यदायिनी ॥ २००॥ सितच्हाया भवेदिप्रः चित्तुवचार्कराक्रमान् ।

पीतच्हाया भनेहीया यूद्र कृष्णक्चियात । ३०९॥

त्रथ मुक्ता-गुणा: I

सतारश्च सङ्क्षः विक्यं निर्माणनाया। धनं सिग्धञ्च सङ्क्षायं तयास्तु (टतमेव च । चष्टौ गुणा समाखाता भौकिकानामग्रेपतः । ३०२।

तर्जमा।

पीला चाभायुक्त मोति दीलतका ज्यादा करनेवाला है, मधुके समान ज्याभाविश्वष्ट मोति इद्विको देनेवाला मुक्कवर्ष चाभायुक्त मोति यणका ज्यादा करनेवाला है चौर नील ज्याभायुक्त मोति सुभाग देनेवाला। ३००।

मुक्त भागपुक मोनि ब्राह्मववर्ष, प्रात कालके यूर्यके समान भाभादुक मोनि चित्त्ववर्ष, पीत भागायुक मोनि वैद्यवर्ष भीर कम्या भागायुक मोनि ऋदूवर्षने समार किया गेवा है। २६१।

मोतिका गुण्।

सतारतः, सहनतः, सन्हतः, निर्मावसः, धनतः, विस्ततः, सन्दानः भीर चस्कुटिततः यही बाटमकार्वः गुण मोतिमे होता है। ३०२।

TRANSLATION.

300. The first brings on wealth; the second fosters the understanding; the next brings about fame; and the last is the harhinger of good luck.

301. A Pearl with a white shade belongs to the Brahmin, with a pale-red shade to the Kshetriya, with a yellow shade to the Vaisya, and with a hlack shade to the Sudra order.

Properties of Pearls.

302. A Pearl is named after the name of the quality which forms its distinctive feature; and eight sorts emerge as the consequence of this classification.

অহ্বাদ।

পীতছাবা লক্ষীর্ছিকাবিদী, মধুরছাবা বৃছিদাবিদী, শুরুছাবা বশোবর্ছিনী এবং নীলছাবা সোভাগ্যদারিনী হইয়া থাকে। ০০০।

শুরুছায়াবিশিউ মূকা বিপ্রবর্গ, তরুণ মরুণছায়া-বিশিষ্ট মূকা ক্ষত্রিযবর্গ, পীতছামাবিশিষ্ট মূকা বৈশ্রবর্গ এবং মুক্তছায়াবিশিষ্ট মূকা শুরুর্বনধ্যে পরিগণিত। ৩০১।

মুক্তার গুণ ৷

স্তারক, থ্রতক, বাজ্ব, নির্মানক, ঘনত, নিগ্রন্থ, হাজায়র ও অফ্টিতক, এই আটপ্রকার গুণ মুক্তার বিদ্যানান থাকে। ৩০২। ਸੂਚਸੂ ।

तारकाशुतिमञ्जाम स्तारमिति गर्राते । स्कूतो वर्त्तुलं वन्तु स्वर्क्तं तिद्वमद्यते ॥ १०२ ॥ सक्दं दोपबिनर्मुक निर्मलं मत्त्वकित । एकत्व तुल्या यस्य तद्धनं मौक्तिकं वर ॥ १०४ । श्रीताशुविव्यसञ्जामं मौक्तिकं विश्वस्यते । स्वायासम्बत्त यद्य स्टब्हाय नित्तमद्यते । स्वायासम्बत्त यद्य स्टब्हाय नित्तमद्यते । व्यप्तेस्वाविकीनं यत तत् स्यादस्कृटितं सुभं॥ १०५ । स्वेतकाषसमालारं सुभागुणतथीजितं । भ्रम्पराणप्रतिच्हायं मौक्तिक देवभूमणं॥ १०६ ॥

तरजमा।

जिस मोतिमे तारेके समान भाभा निक्वे, वह सतार, जो मोति गोलाकार, वह सहन । ३०३।

भी मीति वेश्वयेव शेष्ट, उस्की खब्द करते हैं, जो मीति मयला ना शेष, उस्की निर्माल कहते हैं और जी

मोति चोलनमे भारी होए, उमको धन कहते है। ३०४। जो चन्द्रके समान किरणविश्विष्ठ है, उसको खिल्ल

कडते हैं, जा मोति उत्तम कावाबिश्च प्रयात् उत्तम पाभाविश्च उप्को सुच्हाव कडते हैं, चौर जो मीति वाक सब्दा होय, उस्को चस्कृतित कडते हैं। ३०५।

सकेद रङ्ग काचके बमान, धन्तम किरणविश्वष्ट, राज्य मकलिके नमान खामासुक, रोज्य मोति देवताचेकि गधनेकि योग्य है। १०६।

TRANSLATION.

303. Those Pearls which throw out starry beams. are termed sútára; those which are entirely round. are called supritta.

Those which are flawless, are called sach-304 chha (transparent); those in which dirt has no place, are called nirmala [dirtless]; those which are

weighty, are termed ghana [dense].

Those Pearls which are ray-darting like the moon, are called snigdha [cool]; those which cast a fine shade, are denominated suchchhaua (finely shadowing); and finally those which are free from spots or breaks, are termed usfutita (not indented).

Such Pearls as resemble in color the white glass as are furnished with an excellent brightness, and as are possessed of a shade like the rolula* fish, are fit ornaments for the gods.

षश्चाम ।

যে সকল গ্রুল হইতে তারাব ন্যায় আভা নির্গত হয়. তাহাদিগকে স্থতার, যাহারা সর্বতোভাবে গোলাকার, তাহাদিগকে শ্বরত কহে। ৩০৩।

যে সকল মূকা দোষবর্ভিত, তাহারা বচ্ছ; যাহাবা মলবর্দ্দিত, তাহারা নির্মাল ও যাহারা ওজনে ভারী.

তাহারা ঘন বলিয়া প্রসিদ্ধ । ৩০৪।

যে সমুদায় মুক্তা চল্লের স্থায় কিরণবিশিষ্ট, তাহারা প্রিদ্ধ : त्य कृति উत्प्रकांग्राविभिन्ने स्वकृति छन्नाग्र धवः गांहाता ত্রণরেথাদিবিহীন, তাহাবা অক্ষুটিত বলিয়া বিখ্যাত ।৩•৫। খেত কাচের আয় তর, উৎরুট কিরণছটাবিশিট,

বোহিতনংভেব ভায় ছায়াযুক্ত মৌক্তিক দেবতাদিগের ভূষণযোগ্য। ৩০৬।

Esprinus Rohlis.

मखिमाचा । 314

र्इडक्सळेंगुणोपेतं भौतिक येन धार्यते। तस्यायर्वेडते खची सर्वेगाप प्रणय्वति । ३०० ।

मूचम्।

प्रमाणवदगौरवर फियुक्तं वित सप्टन समसूदारम् ।

श्रकेतुरप्यावहति प्रमोदं यन्मौतिकं तदगुषवत् प्रदिष्टं । ३०८॥

एव समझीन गुणोदयेन यन्त्रीकिक योगमुपागत स्थात् । न तस्य भन्नरिमनन्यज्ञात-

मेकोऽपि दोष समुपैति सदा । २०६। ग्रुणवहुक् यह है मौतिकसम्य तिरुति । चञ्चापि स्थिरा भूता कमना तच वर्तते । ३१०॥

तरक्षमा । उपरमे जिन् सब ग्रणोकी बात कांड गेई है, बडी सम गुणयुक्त मौति जी चाइमी धारण करे, उसकी उमर

चौर दीलत दोनो बाइति हो, चौर धर्म पापनाम हाए । ३००। जी मौति याजनमे भारी, छमदा, दीप्तिविशिष्ट। सफेद, गोल, समान भीर बारिकवेध सेवाय खरिददाने

देखनेवानेकोभी चानन्ददेनेवाला है, ऐसा मोति सबसे षाक्ता है। ३०८। जो मोति सवतरहे वेश्ययेव है, वडी मोति

मालेकका नव दुखनाम करनेवाला है, चीर उसके मालिकको कोइ दुध की नहि सक्ता। ३०८। जिम् घरमे वेचयेव मौति रहता है, चद्यम टीमत उन् घरमे मर्भदा काल चायल रहति है। ३१०।

Egg.

TRANSLATION.

307. The wearing of such Pearls leads to longevity and wealth, and purges the wearer of every sin.

308. A Pearl which is heavy, lustrous, silvery, well-rounded, which is furnished with equal and minute openings and which is n delight not only to its owner but also to the observer, is the nemo of perfection.

309. Those Pearls which are possessed of every valuable quality, shield their master from every evil, and suffer nothing harmful to come near him.

310. The house which contains a perfect Pearl, the ever-restless Lahsmi* chooses to make her dwelling for ever and a day.

जञ्राम्।

উরিবিত গুণসূহে ভূষিত মৌক্তিক যে ব্যক্তি ধারণ করে, তাহার আয়ু ও লক্ষীবৃদ্ধি পায় এবং সর্ব্বপাপক্ষয হয়। ৩০৭।

যে মূকা ওছনে ভারী, উত্তননীপ্রিবিশিষ্ট, শুত্রবর্ণ, উত্তনগোলাকার, সনান বর্ধচ সূক্ষরদ্বুক্ত, ক্রেতা ভিন্ন অপর ব্যক্তিরও প্রনোদবর্ত্তন করে, সেই মূক্তাই সর্ব্বাপেকা উত্তন। ৩০৮।

যে সকল মুক্তা সনুবাধ গুণমুক্ত, তংসমুবাধ নিজপানীর সমুবায় অনর্থ বিনাশ করে, এবং তংপানীকে কোন দোবই ক্ষাৰ্শ করিতে পারেনা। ৩০৯।

त्य गृहर श्वनपुळ पूका शास्त्र, प्रजातक्यना नक्सी त्म गृहर क्रिकटान निकला हहेग्रा शास्त्र । २०० ।

[.] The golden of wealth.

मूचम्।

चिन्ता न तस्याकरजा विशेषा रूपे प्रमाणे च यतेत विद्वान्।

न च व्यवस्थासि गुणागुणेपु सर्वेद सर्वेद्याति मदिना ॥ ३११ ॥

चय सुता-दोषा: ।

चलार: सुर्मेष्टादोपा. पर्मध्याय प्रकीर्त्तेता'। एव द्य समाखातासेषा वन्तामि नचणं ॥ ३९२ ॥ यभैकदेशे संनाम भुक्तिष्ठरहो विभाव्यते । मुक्तिनाम' ममाखात' र दोष कुछकारक' ॥ ३९३ ॥

तर्जमा।

मोतिके पयदा इसकी अगध्का देखना कुछ जबर निर्ध, उस्मा अयेन, जनर, रज्न और रूप देखना चाहिए ऐसा ना समभना चाहिए के फलाने जगहका प्यदाज्या मोति चाव्या धोता है, और प्रवाने जगहका प्यदाज्या मोति वृद्दा धोता है, वक्के सव जगहेनि नृदा भावा दोनो प्रकारका मोति पयदा होता है। ३१९।

मोतिका ऋयेव।

रलपार्ची पिस्डतीने मोतिके रूममकारके अपेय करें है, उन्मेरी चारप्रकारके वर्दे अपेव और कप्रकारके मध्यम अपेय कें, जानग जानग उन्का उत्तव जिस्ति है। ३९२।

जिस् मोतिके किमी रहने विषका टुकरा लागा रह जाता है, चम्को मुक्तिमान दोष कहते हैं, मुक्तिसान अयनवा मोति पहरनेचे कोद्धी विमारि होति है। ११३।

TRANSPATION.

311. The consideration of origin is trivial in regard to Pearls; not so the consideration of form and other qualities: no source but it produces good and bad Pearls.

Defects of Pearl.

312. The authorities mention ten kinds of defects as belonging to Pearls; of which four aro principal, the rest being of a less essential character. I will treat of these now.

313. If any part of an oyster remains fast attached to a Pearl, the defect is called sukti-lagnadosha: and brings on leprosy.

षश्वाम ।

মূকার আকারগত কোন বিশেষ বিবেচনা কর্তব্য নছে, তাহার রূপ ও প্রমাণই বিবেচনীয়, কোন আকরবিশেষে যে শুভজনক বা অনসলকারক মূকা জন্মে, এমন নছে, দকল আকবে সকল রকম মূকাই জন্মিয়া থাকে। ৩১১।

মুক্তার দোব ৷

রব্ধবিং পণ্ডিতের। মূক্তাসম্বন্ধে দশবিধ দোবের উল্লেখ করিয়াছেন, তমধ্যে চাবিপ্রকাব দোব মহাদোব এবং ষড়্বিধ মধ্যদোবমধ্যে পরিগণিত, ক্রমশঃ তাহাদিগের লক্ষণ নির্দেশ করা যাইতেছে । ৩২২ ।

মূকার কোন একখানে শুক্তিখণ্ড সংলগ্ন থাকিলে তাহাকে শুক্তিলগ্ন বোষ করে, শুক্তিলগ্ন দোষগুক্ত মূকা ধাবণ করিলে বুঠব্যাধি হইতে পাবে। ৩১৩।

Laterally, the defect sucedent to the fact of an oyster fragment being attached.

मूचम ।

मीनवीचनमङ्गाया हस्यते मीकि वे तु य'।
भीनाव स तु दीप स्वात् प्रचनायकरो दुवं। ३९८॥
दीप्तिशीनं गतच्छाय जठरं तिहर्दुश्या।
दारिद्राजनवं यसात् तसानत्मरिक्क्येत्। ३१५॥
भीकिकं विद्रुमच्छायमतिरक्तं विदुर्वृथा।
तस्तिन् सन्यारिते स्त्युजीवते नाच समय,॥ ३९६॥
उपस्परि तिष्ठन्त ववयो यच भौकिके।
विदर्भनाम तस्त्रोकं सीभाग्यव्यकारक॥ ३९७॥

तर्जमा।

मोतिमे मळ्जिने चालके समान एकतरण्या निमान रण्डेनेको सीनाच थयेव कण्डेने पें, श्रीर वण श्रीय चित्रकेका नाम करनेवाला है। ३९८।

मीतिमें दीति और धामा ना रहनेको जठर खबेब कहते है, जठर खबेबदार मीति पहरेनेक दारिद्रा खबात् सुर्ज्ञाविक होति है, इस कारण दूस्मकारका मीतिकभी पहरेना मनासिक नहिं। ३१५।

मीतिमें सुद्देशे समान आभा निकेल्नेको चतिरक चयेव कहते हैं, चितरक चयेवी मोतिको पहेरनेसे जहर चल्यु होए। १९६१

मोतिमें जो कहे के समान तिन रेखा होए. ध्वकी विद्या खाँव कहते हैं, विद्या दीपयुक्त मोति समाग

नाम करता है। ३१७।

Č.

TRANSLATION.

314. On certain Pearls, there are marks like the eye of a fish and these are hence called mindksha.* Rearls possessed of this defect bring about loss of sons.

315. When a Pearl is without lustre and shade, it is said to have the jathara defect. Such Pearls lead to poverty, and should not therefore be worn by any person.

316. When a Pcarl has a shade like coral, the defect is called attrikla; this is inevitably fatal to the wearer.

317. The three bracelet-like streaks which are sometimes met with in Pearls side by side, are termed trivrita. They are destructive of good fortune.

অহুবাদ ।

মুক্তাতে যে মংক্রের লোচনসন্থ একপ্রকাব চিহ্ন থাকে, তাহার নাম মীনাক্ষ, মীনাক্ষদোধ পুত্রনাশকর বলিয়া উল্লিখিত আছে। ৩১৪।

মূক্তাতে দীপ্তি ও ছাযা না থাকাকে জঠরদোষ বলে, জঠরদোষধৃষিত মূক্তাধারণে দারিত্যদশা উপস্থিত হয়, হৃতরাং তাদুশ মুক্তা কদাচ ধাবণ করা কর্ত্ব্য নহে। ৩১৫।

মূক্তা হইতে বিজ্ঞানে ভাষ ছামা নির্গত হওয়াকে অভি-রক্তনোষ বলা যায়, অভিবক্ত-দোষযুক্ত মূক্তা ধারণ করিলে অবগ্যই ধাবকের মৃত্যু হইবে। ৩১৬। .

মূকাতে যে উপরি উপরি তিনটা বল্যাকার রেথা থাকে, তাহা ত্রিরভদোষনানে অভিহিত, ত্রিরভদোষশালী মুক্তা সৌভাগ্য নাশ করে। ৩১৭।

[·] Laterally, the eye of a fish

मूचम् ।

ष्यद्यां मौतिकं यञ्च विषिटं तद्विगद्यते ।
भौतिकं जियते येन तस्याकीर्त्ताने वेसदा । १९८॥
विकोणं त्युक्तमाखातं भौभाग्यव्यकारकं ।
दीर्घ यत्तकृत्रं प्रोक्तं प्रज्ञाविष्यंग्रकारकं । १९८ ।
निभग्नमेकतो यञ्च क्रमपाकं तद्व्यते ।
सदोष मौतिकं निन्दां निकद्योगकरं वि तत्। १२०॥
श्वरत्त्रं गुणदीनस् स्वस्मानिकारकं ।
सरस्यं गुणदीनस्र स्वसमूत्वस्र मौतिकं । १२९॥

सर्जमा।

क्षो मीति गोल निक, उसकी विधिट कहते हैं, विधिट मीति पड़ेरनेसे हमेगा प्रयम अर्थात् बटनामी हासिक होए। ३१८-।

जो सीति विक्षाण कोर, उसका नाम त्यूस, त्यूसं अयेवके भीति पकेरनेसे भीभाग्य नाम कोर भीर जो मीति पकेरनेसे भीभाग्य नाम कोर भीर जो मीति पकेरनेसे स्वा, उसे काम कोर भीर पकेरनेसे बहु जाय। ३१६।

त्राच प्राप्त । ज्ञान के दुर जाय, उसको छ्यपार्थ करते हैं, इन्प्रकारका स्रोति यक्षत्र खाराप श्रीर इस् जातका मोति परेरनेचे पादमीको पासकत् पाति हैं। देर्ग

जो मोति वेसकुन गोष निष्, नानामकार विमारी-बाक्षे अयेवोधे भराज्या, देखनेभी सन्दर निष्टं चौर बाक्ष प्रण्डीन, ऐसा मीति सब तरहथे दीलतका नाम करनेवाना, इम्बारण सम्बा दामभी भज्जत् कम होता है। ३२१।

TRANSPATTON.

318 That Pearl which is not perfectly circular, is called cimita. It brings its wearer to disgrace

319. The Pearl which tends to be triangular, is called trasra A trasra Pearl is minucal to good fortune A large-sized Pearl is called Krisha This Pearl is reputed to be fatal to knowledge.

320 A Pearl with a broken side is called Krisha-párswa, and brings on inactivity. It is a pest which should be carefully avoided.

321. A Pearl which is not faultlessly round, which is productive of a variety of diseases, which is not agreeable to look at, which is in short utterly void of any valuable quality, is destructive of every sort of wealth; its price is very small

অহবাদ।

যে মুক্তা সম্পূর্ণ গোলাকান নছে, তাহাকে চিপিট কছে, চিপিট মুক্তা ধাবণে পদে পদে অকীর্ত্তিভান্ধন হইতে হয়। ৩১৮।

যে মুক্তা ক্রিকোগাকাব, তাহাব নাম ত্যেন, ত্যেন্দ্র ফুল সোভাগ্যনাশক, এবংযে মুকা দীর্ঘাকার, তাহাকে রুশ বলে, রুশ মুক্তা জ্ঞানের মহা অন্তবায বলিয়া প্রদিদ্ধ আছে।৩১৯।

মূক্তাব কোন স্থান ভয় হইলে তাহাকে রুশপার্থ বলা যায়, তাদুশ মূক্তা অতিনিন্দনীয় এবং তদ্বাবণে মনুষ্য একবাবে নিক্দ্যোগী পড়িয়া পড়ে। ৩২০।

বে মূক্তা সম্পূর্ণ গোলাকাব নহে, নানা গীডাকর দোব-সঙ্কুল, দেখিতে বমগীয় নহে, এবং নিতাত ওণহীন, সেই মূক্তা সর্ব্বপ্রকাব সম্পত্তিবিনাশক, এবং তাহার মূল্যও অভিঅল্ল হইমা থাকে। ৩২১। मूचम्।

मौक्षिकं यस मन्देष्ट' कविमे सहजेऽपिवा ।

परीचा तम कर्मेव्या रक्षणास्त्रविश्वारदेः ॥ ३२२ ॥

यस क्षमिमसन्देष्ट' क्षचिद् भवति मौक्षिकं ।

उद्यो सलवणे खेष्ठे निगा तद्वासयेक्जले ॥ ३२३ ॥

परेद्यं प्रातनत्वाय गुष्कवस्त्रोपवेष्टिनं ।

इस्ते मौक्षिकमादाय बीष्टिभियोपवर्षयेत् ॥ ३२४ ॥

यम् नायाति वैवर्ष्यं विद्येयं तदक्षचिमं ।

क्षचिमं मङ्गाप्रोति सण्डलक्षातिहीयते ॥ ३२५ ॥

तर्जमा। मोति बनाया चीए, श्रयमा श्रासल चीए, मनमे स्व

धोनेथे रक्षपारची परिष्ठतके दारा खब्की परीद्या कर्ना जबर है। इ२२। चगर किसी मीतिने फरेबका खक घोए, तो ^{उस्}

मीतिको एक रात गरम नेमक्तिमलाइस्ये पाणिमे भिगाः कर रख्ना चाडिए। ३५३। सनेरे सखे कापडमे रखकर चौर शोड़ा चाडल लेकर

डातसे रगडना चाडिए। इ२८। दमीतरहे अरनेसे आवल सीति खाराप ना डोकर

इसीतरण करनेचे जायल सीति खाराप ना शंकर जौरभी साफ छोगा, चौर बनाबाङ्या सीति उमीदम एट लावेगा। ३५५।

TRANSLATION.

322. Whether a Pearl be real or false, whenever doubts arise concerning its genuineness, the authorities should be resorted to.

323. When doubts are entertained as to the genuineness of a Pearl, it should be placed in salt water for one night.

324-25. The next day, put it on a piece of dry cloth, and mixing it with a quantity of paddy; rub it with the hand, when if the Pearl is real, it will attain greater hrightness, while if it is false, it will be broken to pieces.

অভ্বাদ।

মৌজিক কৃত্রিমই হউক অথবা অকৃত্রিমই হউক, মনোমধ্যে সন্দেহ উপস্থিত হইলেই বন্ধতত্ত্বিশারন পণ্ডিড দ্বারা তাহাব পরীক্ষা কবা কর্ম্ববা । ৩২২ ।

বদি কোন মুক্তাকে ক্বজিন বলিব। সলেহ উপস্থিত হয়, তাহা হইলে নেই মুক্তাকে এক রাজি উক্ত লবণমিশ্রিত জনে ভিজাইবা বাধিবে। ৩২০।

প্রদিবন প্রতিঃকালে সেই মূক্তা শুক বন্ত্রমধ্যে বাথিষা কতকগুলি ধান্যের সহিত একত্র করত হত্তে ঘর্ষণ কবিবে। ৩২৪।

এইন্দপ প্রক্রিয়া দারা অর্বত্রিন মূকা বিবর্ণ না হইরা অধিকত্তব ঔদ্ধল্য প্রাপ্ত হইবে, এবং ক্বত্রিন মূকা তৎ-ক্ষণাৎ ভগ্ন হইবা বাইবে। ৩২৫।

मुखम।

चिपेत् गोमूचभाष्ठे तु त्वचणचारसयुते ।
सेदयेत् विद्यन्ता वापि इस्ते मौक्तिकमादृदत् । १५६ ।
त्रोहेसुपेण स्वोच्य मह येस पुन पुन ।
स्विमं भङ्गमायाति महजसातिदीयते ॥ १५७ ।
स्वासमत्स्यपुटमध्यातन्तु कला
पद्यात् पचेत् तत्त ततस वितानगद्या ।
सुद्वे तत पपसि तदिपचेत् सुराया
सक्ततोऽपि पयसा मूचिनस्यिने ॥ १५८ ॥
मुद्व ततो विमलवस्त्निधपेले म
स्यान्तीकिक विमलवस्त्निधपेले ।
स्वान्तीकिक विमलवस्त्निधपेले ।
स्वान्तीकिक विमलवस्त्निधपेले ।

बर्जमा ।

नेमकिनजिङ्या गीके भूचके मरेज व वर्षति में मोतिको रखकर आगपर योदा योदा गरम करना होगा, बाद उन्हें हातने उठाकर धानके किलकेके सायमे धिमनेने बनायाज्ज्या मोति टुट जार्बेगा, चीर भामस मोति भीरमी साम रहेगा। १२६। १२०।

पिल महानिक पटी गरम करके छल्मे मीतिको रखकर आगर घोडा गरम करना होगा, बाद छल्के हुभ, मराप या साल पाणिमे आहे से सहार होगा, बाद छल्के हुभ, मराप या साल पाणिमे आहे से चाह से पालाना होगा, बाद छल्के सह काप हो में रखकर धिन्म होगा, आसल मीति होने से बजत् पाल और आबदार होगा। मोतिको खगर लेसके रसमे पालामें, तो बेसने से बजत् सामानी होगि। १२८८। १२८८।

इति मोतिका वदान।

E 20

TRANSLATION.

326-27. This is another way:—Cast a Pearl in cow's urine mixed with salt; then gently heat it in fire; lastly placing it in a small quantity of chaff, rab it with the hand. By this process, a false Pearl will be reduced to fragments, while a real one will shine with greater light.

328-29. Enclose a Pearl in one of the hot lungs of a fish; then gently heating it in fire, boil it successively in pure milk, wine and water; next rub it with a piece of cloth, when it will look fresh and fair. A Pearl can be perforated after it has been boiled in lime juice.

অহ্বাৰ।

সনবণ গোমত্রপূর্ণ ভাণ্ডে মৃক্যা নিক্ষেপ করিবা অগ্নিতে অন্নপরিনাণে উত্তও করিতে হইবে, পবে হতে তুলিযা তুষ-সংযোগে পুন: পুন: মর্কন করিলে কৃত্রিন মুক্তা ভাদিয়া যাইবে, এবং অকৃত্রিন মুক্তা অভিশ্য উজ্জ্বল হইয়া উটিবে । ৩২৬ । ৩২৭ ।

প্রথমতঃ. মৃক্রাকে মংতের অতি উষ্ণ পট্পটার মধ্যে পুরিয়া অমিতে অলপরিমাণে উত্তপ্ত করিযা পশ্চাৎ বিশুদ্ধ ছুন্ধ, স্থরা ও নির্মান জনে ক্রমান্থযে সিদ্ধ করিতে হুইবে। ৩২৮।

তৎপশ্চাৎ অতিশুত্র বব্রে ঘর্নণ ক্বিলে মূকা বিশুদ্ধ অতি-মির্মান এবং কান্তিযুক্ত হুইবে। মূকাকে লেবুর রসে দিন্ত ক্বিয়া তাহাতে যথেন্দ্র ছিদ্র ক্রা যাইতে পারে। ৩২৯।

ইভি মুক্তা।

THE PEARL.

Its Properties

MHOUGH the Pearl cannot properly come under the province of precious stones, on account of its being animal product, it is held in great esteem by the newellers and all lovers of gems This beautiful gem is formed in the shells of oysters and mussels and is composed entirely of carbonate of lime and organic matter It possesses a lustre peculiar to itself and called by its own name, pearly It calcines by being exposed to heat and is easily affected by acid and fetid gases. The specific gravity is from 2 5 to 2 7 It is found of various shapes and colors and receives certain names ac cording to its size and form Those of extraordinary sizo are called Paragon Pearls, when of the size of the cherry, cherry Pearls, small, piece Pearls, smaller, seed Pearls, smallest, dust Pearls Thoso of a long and oval form, pear Pearls, while the deformed ones are known as "baroques" Pearls The Romans called the large ball shaped Pearls, "Uniones", the pea shaped, "Elenebi", the half ball shaped, 'Tympania," and those possessed of the most beautiful color, "Exaluminate Margaritæ" The Saxon word Pearl signifies a gem or white speck The oriental Pearls are seldom found of any other color than white and yellow, and are generally of a round or button form, while the

American, better known as the Panama, Pearls, are generally blackish or brownish and mostly long and drop-shaped.

Original formation of Pearls

THE ancient authorities had started several curious theories as to the presence of Pearls within the oysters. According to Athenseus, the Pearls were found in the flesh of oysters, just as the measles (tubercles), in the pork Pliny and Diascorides supposed that the Pearls were the tears of fallen angels, or dew-drops from heaven, taken in by the oysters, which opened at certain seasons to receive them; the size and quality varying according to the size and purity of the dew imbibed weather spoilt the colour, lightning stopped the growth and thunder made the shell-fish miscarry altogether Valentino said that they were the eggs of female oysters, while Samuel Dale held, that they were a sort of calculus produced by hurt received. This last theory suggested to Linneus the idea of creating the disease in the fresh water mussel of Sweden, and thus of manufacturing artificial Pearls Artificial Pearl-oyster beds were established in several rivers but the process by which the Pearls wero formed was kept a secret. It was, however. ascertained that small holes were drilled in the shells of the living oysters into which some foreign matters were put. But the Pearls which were produced by this means were so small and the labor and cost incorred, comparatively so great. that this ingenious invention was soon given up. In India a somewhat similar way of producing Pearls existed. Some of the shells of the large Pearl ovsters have been found with brass wires inserted throughout their whole length, and the cavities in the interior proved that Pearls had been produced in consequence. The Chinese have succeeded in introducing within the living fish minute Pearl beads, strung on a string, or miniature idols of brass or stone, and in the course of a year theso are found so completely covered with a pearly coating as to resemble true Pearls of fantastic figures. A few specimens of these are in the possesion of W. J. Ingram Esq., M. P Pearls are looked upon, according to the most generally received opinion, as concretions arising from the superabundance of calcerous matter destined to form the shell, and in confirmation of this, it has been observed that the oyster is of the same brilliancy as the mother-o'-pearl that forms the inner coat of the shell If a Pearl is cut, it will be found to be composed of a succession of laming like the onion and presents the same appearance in its substanco as the shell With the help of the microscope we find that the shells of all the ovsters that produce Pearls have three layers. The outside layer, i.e., the outer skin, consists of thin scales or leaves, having no regular form: the second one, is composed of numerous small horny cells, (filled with a calcerous mass) in which the various pigments that give to

the shell such beautiful colors are deposited, the third and inner layer has a more foliated form and an uniform foundation, which looks like fine folds on the outside, and which produces, when the light shines upon it, the peculiar mother-o' pearl lustre. that adds so much to the beauty of many shells It is the soft and tender unevenness of its surface and not its material (which is nothing but lime) that gives the exquisite sheen to the mother o' peurl Several naturalists account for the formation of Pearls, in the attempts made by the animal to get rid of some substance which has entered into its shell, by covering it with a deposit similar to the interior of the oyster shell-commonly known as the mother o'-pearl In some cases, a Pearl has been found, by bisecting, to consist of a series of layers or skins round a speck of some darker substance in others, the middle of the Pearl bas been found holloward of a globular or spherical form, while in some others, it appears perfectly solid and of the same colour, texture and formation all through The beautiful pohish and consequent brilliance of a fine Pearl is the result of the friction of the soft hody of the oyster for a long time. In most cases, the polish exists on the outer skin only, the inner layers being found dull as a fish's oye In other cases, a Pearl of a hard exterior has been found to contain a fine and lovely kernel The Pearls are situated either in the body of the oyster or loose between it and the shell, or lastly they are fixed to the latter by a kind

of neck. Sometimes the Pearl is a sort of wart, hollow inside, and is then called coq-de-perle and fetches but little value. It is said that Pearls take four years for their formation. There are two kinds of Pearls. The one highly valued is called the Margarita*(the soa Pearl oyster) or by its full name, "Meleagrina Margaritifera lamarck," which is a large oyster of 7 or 8 inches in diameter, with very tbick shells, rather flat, and of a greenish black exterior; whilst the inside is of a very white colour, reflecting various hues and is known as the mother-o'-pearl. The other kind is called the Unio Margarita (River Pearl oystor). A kind of Pearl called the phantasy Pearl has sometimes been found in the market. These are Pearl substances which are taken out of the shells, consisting partly of mother-o'-poarl and partly of a pearly substance. A curious circumstance in connection with one of these pieces is mentioned by Barbot. "A French Pearl merchant, in Mexico, bought one of theso pieces of a fisherman for a small sum of money, inorder to learn something of them Ho was not a little surprised, on cutting it in half, to find a perfect, round Pearl inside, of purest water and brilliant lustre, weighing 141 carats and which ho sold sometime after in Paris for 5000 francs -about half of its value." Now a-days, Pearls are fre-

[•] The term Margarita is probably the Greek form of "Mukta," the Sanskrit name for Pearl, and not, as erroneously supposed by some writers, of "Marakata" which, in Sanskrit, means the Emerald



quently peeled and have been found to contain a finer Pearl underneath

Where found: Pearl fisheries.

Pearls were a mercantile commodity with the Phænicians and Babylonians. According to the author of the Periplns, Pearls were fished near Mannar, between Cevlon and India. Ceylon, the Taprobane of the ancients, also produced Pearls. According to Arrien, Hercules visited all the Indian ocean and found a Pearl with which he adorned his daughter Pandea. The story of this fishery is also mentioned by the companions of Alexander, when he came to India, and it is therefore clear that it existed prior to this time. There were some other Pearl fisheries also known to the ancients, in the Red Sea and the Coromandel Coast the Red Sea were at that time considered very important, and were distinguished by the title "Ixaluminate," e clear as globules of alum der the Ptolemies and latterly under the Egyptian Caliphs, several merchants settled on the coasts and by following the Pearl-trade became considerably rich. Pearls were also fished up in the Mediterra-The chief Pearl fisheries in the modern times are on the west coast of Coylon, in the Bay of Manaar, in the Persian Gulf, in the Red Sca, in the Bosphorus, in the Sooloo Islands (near Borneo,) in Japan, Java, and Sumatra: near the island of Papua or New Gumea; in America, (both on the

Pacific and Atlantic coasts), and latterly, in Australia and the Fin Islands Some Pearls are also obtained in Trance, Scotland and Ireland from the Ilz in Bavaria, the Battava in Bohemia and the Elster in Saxony, in Sweden, in the North of Russia and in Finland

The Peul fishery in Ceylon, which is one of the most productivo ones, now helongs to the Colonial Government and is conducted by it The Portu gueso were the first Europeans who obtained firm footing in Ceylon (1506) It was stipulated with the then ruler of the Island that he should pay them an annual tribute in the shape of spices and Pearls The Portuguese fattened on this tribute for a long time till the Dutch obtained supremacy and seized upon the fishery (1640) Under them the natives were allowed every three years twenty alternato days to fish for themselves and every other day was for the Government, after which the produce was sold to the highest hidders From 1760 to 1796, the fishery at the bank at Manar was stopped by the Rajah in consequence of a dis puto with the Dutch When the English obtained possession of Ceylon, they had the henchit of the accumulation, which, when sold in 1798, fetched 14 00,000 Rs clear This profit might he realized if the fishing was confined to 20 days, every seven years The fishing season is generally in March and April when the sea is calm and unruffled Before the commencement of work, the banks are carefully

12

tested by experienced divers A fleet of hoats. sometimes consisting of 150, arc sent out-each containing ten rowers and ten divers, hesides a steerman and several "pillal karras," or shark-charmers, whose duty is to keep off sharks, hy incantations. The latter people are indispensible in a fishing excursion, as without them no diver would agree to descend, and the Government is conscquently obliged to keep thom on regular pay Other conjurors remain on the sea-shore, repeating their prayers until the return of the fleet The divers go down into the sea, five at a time, the other five remaining on the boat till the first hatch come up to refresh themselves for another plunge. These people (Roman Catholics and mostly Hindus) who principally come from the Colang, on the Malabar Coast, get, in some cases, fixed wages but generally, by mutual consent, they keep 1 of the produce to themselves and give # to their employers. As a preparation, they abstain from food and drink (except, occasionally, toddy) and rub their bodies over with oil, stuff cotton into their ears, compress their nostrals by means of an instrument made of horn, and bind over their mouths a sponge soaked in oil, which serves as a temporary proof against Then they sling a rope round their body . and generally hung a heavy stone on their feet to hasten their descent. Some use a crescent-shaped stone which they fasten round their waist, in order to keep the action of the fect free; for some of these

people use the toes as nimbly in picking up the smallest things as any other could, with their fingers. These stones generally weigh 20 to 25 lbs each. With all these preliminaries, which are also attended with prayers and incantations, the divers go down, each seizing a rope with the right hand, and soon reach the bettem. By means of a sharp knife they loosen from the bank and collect as many oysters as they can and put them into bags, with which each of them is provided on his back. The time they can usually remain under water is from one to two minutes and the gain in that time is from 50 to 80 oysters Some have been known to romain from 4 to 6 minutes. If any accidents happen while under water, either in the shape of loss of strength or the approach of a shark, they give a sign with their rope and are pulled up at once Some of the divers are provided with a charm or amulet which they keep on their persons, wrapped in oil-cloth, while they go down. The Roman Catholic divers would not commence husiness until they get an assurance of their safety, from their own clergymen, and also seem to have firm faith in the ability of the conjurors in Aceping the sharks away. * Continuous submersion into water tell fearfully on

[&]quot;In a paper published in the Transactions of the Koyal Austic or the Country Capitan Stewart arys that he insisted upon a shark-dammer to the country of the Country of the Country of the Country was, but he declined to do so, saring that his business was to keep them away but affirmed positively has shirty to do whatever he liked with them "During the few days," to quote Copian Stewart, "that we were employed maxing off the ground to be cloid, a shark was can and reported to me I makingly send for the shart-dammer to

the constitution of the divers, many of whom, on coming out, bleed at the mouth and nose. The strongest of them can work only for a few years. These people can make 40 to 50 descents in a day. The adoption of the diving bell in the present times has made diving less dangerous, but unfortunately it is too dear to be of general use. With this a single diver can collect one to four thousand ovsters in one season. On the return of the heats, they are unloaded and the ovsters left, in closed pits or in closed vessels, to get foul, whereby most of them open of themselves. After this the Pearls are washed from the decayed systers, in troughs, with salt water. Those shells that do not open of themselves are thrown on one side and made over to the clippers whose duty is to disengage them from the Pearls by means of a forcops and hammor. The part which sticks to the oyster has to be polished by means of a powder made of the Pearls themselves. The roundest and best of these Pearls are rendered fit to be strung with other Pearls, and some of them are used for setting in rings and brooches. The refuse is mixed with the sand Pearl and sold to make chunam (lime) for the consumption of certain Chinese grandees. The oysters are, however, generally sold without being opened, in much the samo form as a lottery, tho

appear before me and desired him to account for permitting a shark to appear before me at a time when alarm might have a senion influence on the success of the fishery. He replied that I had frequently requested him to summon a shark to a pear and he had therefore allowed this out the laberty, to please me."

profit of the purchaser depending on chance; for some oysters may contain Pearls worth 2000 or 3000 rupces each, while many may contain nothing at all. At certain times, the Pearl oysters are seen floating about on the sea, as minute in shape as the spawn of fish. These are carried by the currents, around the coasts of Ceylon, where, owing to their increased size and weight, they sink and form the heds. The best Pearls are generally taken from the most fleshy part of the oyster near the hinge of the shell, but they are also to be found in all other parts of the oyster, and especially sticking to the shell. Each oyster is supposed to contain one or more Pearls, or in some cases, none at all. Sometimes an oyster is found to contain over a hundred Pearls of different sizes, known as the seed Pearls. The Ceylon Government derive a considerably large income from the fishery and take particular care of it. The heds having become exhausted, the fishery has been discontinued for some years.

has been discontinued for some years.

Megasthenes, an officer of Selcucus, King of Syria, gives to the Western nations, the first account of Pearls found in the Persian Gulf The Portuguse held mastery over the fisheries of this place during the sixteenth century; after which the native princes have regained possession of them. June to September is the hest time for fishing, which is allowed freely, barring a small duty paid to the Sheik of the harbour. The sword fishes are great obstacles in fishing here. The sum annually realized by sale

comes from 30 to 35 lacs. The Pearls found bere are much inferior to those of Ceylon and are commercially known as the Bombay Pearls—Bombay being the place to which they are chiefly sent.

The Red Sca fisheries are not so flourishing as they used to be in former days. Good Pearls are still to be found in the Island of Dhalak, opposite Massowa, on the Abyssinian Coast. The fishery, which is carried on by the Negroes, generally takes place from December to April; the average gain being one Pearl from five oysters

The produce of the fisheries of the Sooloo islands and of Japan, Java, &e, generally goes to China.

The first Spaniards who landed in America, after its discovery, saw the aboriginal nations decorated with necklaces and bracelets of Pearls. New Cadix. in the little island of Cubagna, was the first place that rose to affluence, owing to the Pearl trade. The next fishery in importance was that of the Island of Santa Margarita or the Isle of Pearls. about three miles from Cubagna. The Pearls produced in this place were in sizo and beauty far superior to those of the other deposits. Tavernier had one of these Pearls, which weighed 55 carats and which was of a beautiful pea-shapo and fine "orient." The third fishery was at Camogoto, near the main land. The fourth was in the River La Hacha, along the same coast. The fifth and last was at Santa Marta, about 180 miles from the River La Hacha. The last three fishcries produced large Pearls, but they were mostly badly-shaped and bad a leaden hue Now-a days, the fisheries in the Gulf of Punama and in California supply the best Amouean Pearls Pearls in the coast of New Jersey were discovered by a farmer, who, when fishing for cysters, came across one which contained a very large Pearl

The rivers in Scotland produce many Pearls but they are generally small and deformed and hable to become black by wear. A large number of rose inted Pearls, much esteemed by the Parisian nobility, has been found here. These together with those found in Ireland are generally called Scotch or Brock Pearls, are possessed of a dull hue and are used for brooches and ornaments, strung with horse-hair or mother-o'-poul, previously formed into the pattern designed.

The River Moldava in Behemia annually produces from 300 to 100 Pearls, of the purest crient and of very good shape, hesides several hundred deformed ones. The greatest portion of the banks are in the possession of the house of Schwartzenburg Besides the Moldava, Pearls are also found in another small river called the Wattava. The obsters are not fished up from the inverheds but are picked up from the hanks where they are thrown by the overflowing of this river.

The fishery of the Hz yielded at one time a large income to the Bavarian Government, but owing to

had management, it has now become almost entirely exhausted.

Mode of Boring and Polishing.

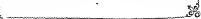
THE operation of boring, better conducted in India than elsewhere, must be performed slowly, particular care being taken that the Pearl does not break in halves The Pearl should be held between two pieces of wood and drilled with a very fine drill, with a bow and string Unbored Pearls are called "virgins," and in Persian, by the generic name, "Merwerid," and those that have suffered from wear, "widows," and in the Persian, "Lulu," In order to perforate the Pearls, which they intend to string, the Arabs take a piece of wood of a porons nature on the flat surface of which they make small spherical holes with a knife; into these holes they put the Pearls so that only a portion of each Pearl goes into the opening, and then the whole is placed in a little water. The Pearl being thus held tight by the wood which swells, a small iron drill, which is turned by means of a wheel, cuts the hole. The Pearl is then loosened and taken out by letting the wood dry. The cleaning, rounding, polishing and, sometimes, the drilling and stringing are performed by skilful Negro workmen. Pearls are polished. and rounded (as found in the market) by means of their own dust : the portion taken from one Pearl in the process of cleaning cit, serving to round and polish another. If worn next to skin, Pearls are

liable to lose their lustre. Redi who tried the experiment of restoring their original orient by making pigeons swallow them, found out that, after remaining in the stomach* for twenty hours, they have diminished in weight by one-third. Pearls also get discoloured by contact with acids, gases, foul weather and noxious vapours. The simplest and best remedy would be to wipe them, after heing worn, with a clean linea and to keep them earcfully covered with it, in a closed box. Pearls kept in dry, common magnesia, justcad of the cotton wool generally used in jewel-cases, are according to some, never known to loso their brillianer. Pearls, unlike precious stones, crumble into dust and lose their heauty in course of time. When the tomb in which the daughters of Stilicho were huried with all their ornaments, was opened, after a lapso of 1118 years, all the riches that had been put in were found in good condition except the Pearls, which had become so soft, that they crumbled into fragments when pressed between the thumb and the fingers.

Pearls as known to the Ancients.

The beauty of the Pearl being entirely due to nature and being utterly incapable of improvement from art, it has, from the earliest ages, held the

^{*} A smaller prectice still obtant in Indea umong the Mahomedean Pearl merchants who are not be labit of purchasing blackab. Fearls at chief the property of the property of the precision of the precision of the precision of the property of the property



highest place amongst precious gems. The mythology of the Hindus ascribe the discovery or creation of Pearl to Vishnu and makes frequent mention of the gods and goddesses and of heroes as being adorned with it. It was held in great esteem hy the ancient Persians, Egyptians, Babylonians, Medes, and other oriental nations of antiquity. The Persian nobles used to wear in the right ear a golden ear-ring containing Pearls, Ethiopian and Egyptian princes and nobles profusely used this gem. It is said that, according to an ancient law in India, any one who spoilt the Pearl and precious stones in boring, should not only make good the mischief but pay a fine of 250 panas. (a pana being, at the present time, equivalent to onesixteenth of a Rupee). It was also a great favorito with the ancient Chinese. 2300 years before the hirth of Christ, Pearls were known to have been paid as tributes. When Pompey conquered Mithridates, he found in his treasury, besides several crowns of Pearls, one portrait of that king consisting of Pearls in mosaic. In his third conquest over the Asiatic princes (61 B. C.), Pompey took away a largo number of jewels, 33 crowns of Pearls and the portrait of his own wrought in the same material. From this period, the taste for Pearls roso so extravagantly high in Rome as to hring down censuro from the philosophers and authors of the time. Pliny says that it was the Romans only who gave to drop Pearls the name of "Unio," on account of the



difficulty that then existed in obtaining matches for those white round and brilliant things. Califula nore slippers made out of Pearls, while his wife Lollin Pauling used in her parun, Pearls to the value of 70,00,000 frames. Noro presented them in large numbers to his courtier, and adorned with them the sceptres and must a for his theatre as well as his couches. Julius Cusar presented to Servilla, the mother of Marcus Brutus amagnificent Pearl (received from I gept as boots,) the value of which was then esturated at 990,000 france. The Romans used to decorate their temples and dwelling houses with Pearls and the ladies used to hire them for personal use on festive occasions, if they had not a sufficient number of them in their possession Clodius, the son of Dsop, the celebrated tragic actor, is reported to have swallowed, in a banquet, water in which Pearls were dissolved and, relishing the flavour very much, generously provided each of his guests with the same costly drink Latterly on, Cleopatra laid a wager with Antony (who is well? reputed for his extravagance) that she would spend 10 lacs of our money, upon a single dinner, and claimed victory when she had! taken out of one of her ear rings, one of the finest Pearls in the world, dissolved it in a cup of the strongest rinegar, and1 supped the contents off She was about to do the same with the other, when L Planeus, the appoin ted umpire, snatched it off her hands, and declared Autony's defeat After the death of Cleopatra and)

the conquest of Egypt, this Pearl fell into the hands of the Emperor Augustus of Rome, who had it cut into two pieces and made into two ear-rings of the statue of Venus, in the Pantheon. Assimilar piece of folly was committed, in the modern times, by the princely English merchant Sir Thomas Grosham The Spanish Ambassador at the court of Queen Elizabeth, had, hefore the Queen, been boasting of the revenue and riches of his master and of the nohlomen of his country, when Sir Thomas, who was present, told him that his Sovereign had subjects who could spend on one meal, the whole of a day's ravenue of the Spanish King together with that of all his grandees; and this he was prepared to show any day, on a wager. The Ambassador called on the merchant one day, without provious engagement, and dined with him, but finding only an ordinary meal, told him, "you have lost your wager" "Not at all," replied Sir Thomas, and, immediately pulled out from his pocket a box from which ho took out one of the finest oriental Pearls, (for which he had ofton refused 15,000 £) and, after showing it to the Ambassador, ground it and drank the powder in a glass of wine, to the health of his Queen. It is said that one of the things which had excited the eupidity of Julius Casar in conquering Britain, was the somewhat exaggerated accounts ho had heard of the Pearl fisheries that existed in or about the country. Ho is known to have been a great connoissour in jewelry, and could tell the specific weight and value of a Pearl by simply taking it in his hands. The Roman ladies were Pearls fastened to their finger-rings, and sometimes in their ears in clusters of two or three, which went by the name of "Crotalia" (rattles), on account of the rattling sound made by their clashing against each other. Mahomed Ben Mansur placed the Pearl on the top of the list, while the Romans placed it second, after the Diamond, to which they gave superiority, on account of its talismanic virtues and not, ovidently, for beauty

Price of Pearls, Imitations.

The price of Pearls depends upon their form, texture (technically called "skin"), transparency (water) and lustre. It also depends upon national tastes for colour In Europe, the white specimens, (and sometimes those with the bluish tinge), are most valued To the Europeans, a perfect Pearl should be perfectly round or drop-shaped, seeming as if fashioned or turned into shape; should have a perfectly white colour; should be transparent in a slight degree; should be free from flaws or blemishes, and should have the lustre peculiar to this gem. The Indians, Arabians and the Chinese prefer those with the yellow tinge, which have this advantage over the white ones that they do not lose their lustre and tint by wear To fix a standard price for the Pearls would only tend to mislead the buyer, for, like the Diamond, their value greatly

depends upon their shape. For example, a onecarat Pearl may be worth from 24/ to 40/; two-carat ones, if fine, from £6 to £8; and the value of the large and fine Pearls ranges from £2 per grain, upwards. It is easy to examine a single round or drop-shaped Pearl by itself, but not so, if they are strung in a row as in a necklaco; for it becomes difficult to find out from the group the particular color of an individual stone,-the Pearl-stringer arranges them so ingeniously, with reference to gradation of color, that the tints, imperceptively blending with each other, make all appear to be of one hue, The vellow tint in the Pearl is said to be due to the decomposition of oysters which are sometimes left to open of themselves The heat at the Straits of Manaar being greater and consequently the oysters naturally opening 5 or 6 days sooner than in the Isle of Bahreia (in the Persian gulf), the number of yellow Pearls found there is comparatively smaller than those that come from the latter place. Goa was the principal mart in which the Pearls were sold. The American Pearls, commercially called the "Panama Pearls," though appearing whitish (rather quick-silverish) at first sight, have almost invariably a sort of blackness under tho skin. Like similar Pearls found in the Pacific and in Western Australia, these are sometimes worth from £1 to £10 per grain. Inferior coloured Pearls are often dyed black (with Hematite, and imported iron ore) or russet-brown, but the want of the true

pearly tint and lustre can be detected by even the most inexperienced. The black or bad coloured Pearls are sold for good price, if they are of good colour and shape. Some people hke the lead or plumbage tint, others, the shining greenish black. These would sell for 35/ to £6 per grain. The pink coloured Pearls are generally found in America and the West India Islands and are valued, according to their shape, quality and size, at £5 to £6 per grain These are seldom found of regular shape, and when bad or deformed look somewhat like decayed teeth Although called "pink," theso are found of different colors, ranging from red to palo yellow, and frequently of a dull white, like a polished fish's eye. The grey Pearls heing unfit for use in jewelry are not of much value. The specimen known as La Perle Roséi ranks the same with the clear white rose but the irregularity of its shapo prevents its being used for personal ornaments The pale pink Coral is sometimes cut and shaped like a Perle Roséi and offered for sale as a real Pearl, but an experienced eye would not take the glistening of the cellular structure of the Coral for the peculiar sheen of the Pearl. Jewellers sometimes make very largo Pearls by applying, one on the other, two of the hemispherical rounded tubercles taken from the interior of a Pearl shell. The paste makers of ancient times, notwithstanding their wonderful skill, did not think, or had not the ability, of counterfeiting Pearls In 1680, onc

Jacquire, a rosary maker of Paris, observing the pearly lustre of the scales of the small river-fish called the bleak, struck upon the idea of filling therewith hollow glass spherules prepared with a glutinous fluid. The manufacture has flourished since that period, the Parisian jewellers exporting four lass of Rupees worth of these counterfeit Pearls. Although some of the false Pearls are made solid and of fish scales, and do not break easily, yet they are generally brittle and much lighter in weight than the real ones Then again, the holes in the real Pearls pro drilled very small and have a sharp edge, whereas in the spurious ones. they are larger and have a blunt edge. The doformed Pearls, called the "Barrok Pearls" (perles baroques, in French,) are sold for £10 to £200 per ounce, the value depending upon the quality, colour and size of the specimens. Pearls are split in halves, when they are used for setting in jewelry. Those that are flat on one side and convex on the other are mostly used and are called Button Pearls (perles boutons). These pro worth nhout 25 per cent less than the round Pearls of tho samo sizo and quality. The round Pearls, (perfect. according to the given standard), fetch the highest price. The approximate value of one round Pearl of 10 grains would be from £10 to £11; one of 20, £40 to £50; one of 30, £50 to £100. Pearls nhove 30 grains are of raro occurrence and consequently of exceptional value. Pearls of rare

colour or of any fanciful tint or shado are, as a matter of course, sold at fancy prices. The value of Pearls generally has risen up since the last few years, owing, perhaps, to the stoppage of the fisheries at Ceylon. The mother-of-pearl fetched a high value in the Middle Ages

In Europe large Pearls are sold by casats, like Diamonds and other precious stones, but in Persia, they are weighed by the abas, which is \$\frac{1}{2}\$ less than the earnt, and in India, by raits, which is equivalent in weight to the abas. In Europe the ounce weight is used for weighing small and Baroques Pearls, Coral, Peridots and rough Garnets; an Euglish ounce being equivalent to 151\frac{1}{2}\$ carats and a Cologne ounce, to 72 carats.

The Marvellous and Medicinal Varines of the Pearl.

From the earliest times the Pearls have come to be considered as emblems of purity, beauty, and nobility. In Bengal, they were at one time worn by virgins on their arms, as preservatives of virtue. The oneirocriticks or interpreters of dreams drew interpretations from Pearls. These had great medicinal effect, when taken internally. It is said that one of the medicines given to restore Charles VI to reson, was a decoction of Pearls and distilled water. In China and other oriental countries, they are used as medicines—being thought to possess the power of

euring syneope, flux of blood, &c. Largo quantities of seed Pearls are used, even at present, in the composition of Majoons or electuaries, in the formation of which powders of several precious stones are sometimes used. The Majoon, (in which there is a large quantity of Pearls,) is much in use for its supposed stimulating and restorative qualities. The oriental potentates were supposed to burn Pearls and use the powder as Chunam with the heetle-leaves they chowed. Powdered Pearls were also considered a sovereign remedy in stomach complaints, but there is nothing in the gems or in the shells which can render any more beneficial service than that done by chalks or other anti-acids.

Celebrated Pearls.

ONE of the largest Pearls known at present is called La Perigrina or the Incomparable. It was brought from India in 1620 by Gongilius of Calais, who sold it to Philip IV of Spain in 1625. This gem is now said to be in the possession of the Russian princess Yonssopoff and is valued at 80,000 dueats. It is pear-shaped and is of 106 carats in weight. According to some writers of jewelry, the shell of this Pearl was found by a Negro boy, in the Panama fishery. The Pearl was presented to Philip II and was valued by the jewellers of the timent 11,400 dueats. It was pear-shaped, weighed 134 grains and was "as hig as the higgest pigeon's egg." According to these writers, the 900 which has become so much

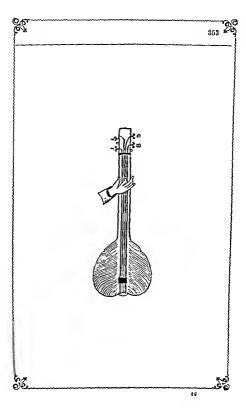
celebrated by the name La Perigrina is a different gem altogether. De Boot mentions a Pearl belonging to Rodolph II, weighing 120 grains-" 30 carats that cost as many thousands of gold pieces" Napolean had one, weighing nearly 180 grains. Tavermer speaks of one perfect round Pearl weighing 36½ ratis, purchased by Aurungzehe. He also gives a drawing of a large pear-shaped Pearl hought by the Shah of Persia (in 1635) from an Arah coming from the Catifa fishery. It weighed 192 ratis and was valued at Rs 5,60,000. It is above an inch in diameter and is still in the possession of the Royal family The Imam of Muscat has one for which he is said to have refused 3,00,000 Rs. The Pearl, which the King of France gave to Madam do Mainton and which was offered for sale in 1819, weighed 274 carats The famous necklace of the Empress Eugènie, consisting of a row of matchless black Pearls, fetched £4,000, after the removal of the Pearl forming the snap, which was subsequently sold, for 1,000 guineas, to form the centre of a hracelet. The Crown Prince of Prussia gave to his hride, the Princess Royal of England, a necklace of 32 Pearls, valued at 5,00,000 francs Tho Marquis of Abercorn is said to possess a matchless drop Pcarl of considerable size. The Municipality of Florence long gloried in the pessession of a splendid single row of Pearls which was borrowed of them by the Grand Duchess, after the Restoration (in 1849) The Devenshire Cabinet possesses a large Pearl of the finest

orient, but of the Baroques nature, skilfully converted into the body of a very graceful mermaid. It is valued at Rs. 20,000. Another specimen of the deformed Pearl, made into a beautiful shape, now belonging to Col. Guthrie, is thus described: "Cinque-Cento pendant in the form of a syren; the bead, neck and arms, of white enamel; tho body, of a very fine and large Pearl Baroque, ending in scrolls and a fish's tail, beautifully enamelled and set with rubies. She is represented arranging her hair, with a comb in her right hand; her left originally held a mirror. This splendid gem was brought from India; it is of fine Italian work of the 16th century. On the back is inscribed Fallit aspectus cantusque syrenæ and 'D. L. V. D. R.'" The initials can be interpreted as "Donum Ludovice Regis," ie. presented by the king Lodovico, (the XII, of Lombardy). It is supposed that this jewel was brought by Tavernier and other iewellers, to India and sold to the Mogul Emperor. The Londenborough unicorn is modelled out of two big Baroques, mounted by figures of France and Victory in sisterly embrace. In the list of tho jewels of Henry III, of England, mention is made of a Baroque resembling a head in relief. The curious articles of lewelry by Dinglinger, in the green vaults of Dresden, mounted in gold and enamel, are made of "Cog de perle." A Pearl of this nature, formed into the shape of a strawberry, was shown in the Exhibition of 1862 and was afterwards sold to an English merchant for a fabulous sum, its intrinsic value being next to nothing

Pearls of great beauty and value are to be seen amongst the state-jewels of the Indian Princes, of which special mention can be made of those belonging to the Guikwar of Baroda and their Highnesses the Maharajahs of Gwalior, Holkar, Jeypore, &c. The estates of the late Juggut Settjee and of the late Babu Inder Chand, of Moorshedabad, have in their possession, Pearl necklaces of very great beauty and value. In Calcutta* there is a Pearl of extraordinary size in the possession of the Sett family. There are also some valuable oacs with the Mullick family. Rajah Kally Kissen, the son of the late Rua Buddmauth, has a valuable necklace of Pearls and also some heautiful single Pearls The late Rajah Presenne Narain Deh of Sobha Bazar had a good collection. There is a Pearl of extraordinary size, nearly as hig as a sparrow's egg, in the possession of the Hon'hle Maharaja Joteendro Mohun Tagore Bahadoor. There are also some very good Pearls and necklaces in his estate.

Several specimens of Baroque Pearls have been seen in Calcutta, amongst which was one in the shape of a dog

There are some very large and beautiful Fearls in the possession of Mr David, a Jewsh gentleman of Calcutta. A very good neckless, consisting of very large Fearls (valued at Rs. 125/87) was once seen in Calcutta in the hands of Fanns Lal, a Bombay needler.



श्रय गोमेदः।

मूषम्।

हिमालये या मिन्दी वा गोमेदमणिसमयः। खच्छतान्तियु दः भिन्धो वर्णाद्यो दीप्तिमानित । बचचः पिछारी धन्यो गोमेद इति कोर्नितः। ३३०॥ चतुर्था जातिमेदस्य गोमेदेशि प्रकाखते । बाह्मणः मुक्तवणः खात् जिनूयो रक्त उच्यते ॥ ३३१॥ खापीतो वैद्यजातिय महस्वानील उच्यते । खाया चतुर्विधा खेता रक्ता पीतासिता तथा॥ ३३२॥

गोमेट्का वयान।

तर्जमा।

चिमालय पर्वेत चौर चिन्धुनहमे गोमेह मणि पयहा चोति है। खच्छ, ग्रुस, खिन्छ, गरेरा रङ्ग, दीप्तिमान, विदे अथवा जरह रङ्ग गोमेह वज्जत्तारिषके लायेक है। ३३०।

जिस् तरक्षे त्राह्मण, चिन्नु, वैद्य और खूड्र वार जात कोते हैं, उसी तरके गोमेदमी चार्राकसिमका कोता है। एकेद रङ्ग वाष्म्रणजात, सालरङ्ग चिन्नजात, थोडा धीवा वैद्यजात और थोड़ा नीवा यूड्रजात गोमेद कोता है। सकेद, साल, पीवा और कावा यक्षे चार्यकारको काया हुनी चारजातके गोमेदसे निकलति हैं। ३३९। ३३२।

GOMEDA.

TRANSLATION.

330. Gomeda is produced in the Himalaya and the shores of the Indus. A transparent, weighty, cool, deep-colored, shining, and white or green gomeda is worthy of the highest admiration.

331—332. The Brahminical classification of castes obtains also with gomeda. The white gomeda is the Vipra; the red one is the Kshetriya; the yellowish one is the Vaishya; and the hluish one is the Sudra. These respectively cast the white, the red, the yellow and the dark shade.

शिक्षिम १

अञ्चाम।

হিন্নালয় পর্ববত ও পিকুনদে গোমেদ মণি উৎপন্ন হয়। অভ্য, ওক, ন্লিঙ্ক, প্রগাঢ়বর্গ, দীপ্তিমান্, ত্রু বা হবিদ্রাবর্ণ গোমেদ অভিপ্রশংসনীয়। ৩০০।

গোমেদেও ব্রাহ্মণাদি চাবিপ্রকাব জাতিভেদ আছে। শুরুবর্ণ বিপ্রজাতি, রক্তবর্ণ ফুল্রিয়জাতি, ইয়ংগীতবর্গ বৈশু জাতি ও ইয়ং মীলবর্গ শুদ্রজাতিমধ্যে পরিগণিত। খেত, রক্ত, পীত ও রক্ষ এই চতুর্বিধ ছায়া উক্ত চারিজাতির হুইয়া থাকে। ৩০১। ৩৩২। मृषम् ।

युक्तः प्रभाकाः सितवर्षेरूपः सिन्धो स्टर्जातिमद्दापुराणः।

खळ्ख गोमेदमण्डितोऽयं करोति क्यों धनधान्यद्यद्वं । १११ ॥

लघुविं रूपो इतिखरोइन्यमानः

स्रेडोपलिप्तो मलिनः खरोऽपि । करोति गोमेट्मणिर्वनामं

चम्पनिभोगाखिनवीर्थराश्चः ॥३१४ । वे दोषा घीरके श्रीयास्त्रे गोमेदमणाविष । परीचा विक्रतः कार्या गाले वा रक्षकोविदेः ॥ ११५ ॥

तर्जमा ।

भारी, प्रभाविष्यष्ट, चक्षेद् रङ्ग, खिन्ध, छोमल पङ्गत् पुराणा भीर खच्छ गोमेदचे बङ्गत् दीलतकी बाद्द्रित छोति है। ३३३।

हास्का, बद्धरत, ज्यादा घुरधरा श्रववाकम छुर-धरा, श्रान्तिजनक, श्रवांत् मक पचदा करनेवाला, श्रविग्ध, मलिन गोमेद दीलत, भोग श्रीर बलको नाम कर्ता

8 1 5 48 1

शिरिका लेतृना स्रवेष कथा गया है, गोमेदमेभी वधी सब स्रवेष पादा लाता है, रत्नपार्ची पछित साग सीर साममे गोमेदकी पश्चान करते हैं। ३३५।

TRANSLATION.

333. The wearing of a weighty, lustrous, white, cool, tender, very old, and transparent gomeda leads to prosperity.

334. A light, discolored, exceedingly rough, dilusion-creating, and cool yet dirty gomeda blights happiness and saps the foundations of energy.

335. Those defects that have been mentioned as belonging to the diamond, are also found in the gomeda This gem is tested by fire or by whetting

अपूरान ।

গুৰু, প্ৰভাবিশিষ্ট, শুক্লবর্গ, মিঞ্চ, কোমল, অত্যন্ত পুৰাতন ও অচ্ছ গোমেদ ধানণ কবিলে অত্যন্ত এছিছি হয়। ৩০০।

লঘু, বিৰূপ, অত্যন্তখৰস্পৰ্শ, আধিজনক, এবং শ্লিয় অথচ মলিন ও থৰস্পৰ্শ গোমেদ সম্পত্তি, সমুদায় ভোগ ও সমস্ত বীৰ্যোব নাশকাৰী। ৩৩৪।

হীরকেব যে সমস্ত দোব উল্লিখিত হইষাছে, গোমেদেও সেই সকল দোষ লক্ষিত হয়, ব্রহবিং পণ্ডিতেবা অগ্নি বা শাণবাবা গোমেদের পরীক্ষা করিয়া থাকেন 1 ০০৫। मिक्रमाचा ।

मूचम्। शुहुस्य गोमेदमणेस्तु मृत्यं सुवर्षती है गुणमा ऊरेके। श्रन्ये तया विद्रमतुल्यमूर्ल

तथापरे चामरतुत्यमाजः । ३३६ । साटिवेनैव कुर्वन्ति गोमेदप्रतिरूपिण। चतुर्विधानामेषान्तु धारणं पविसमातम् ॥ ३३७ ॥

तर्जमा (

वेष्ययेव गोमेदका मूख, धवके मतके समान मधि घोता, किसीने कौलके मुजिब खगर एक तोला गोमेंद घो. दो तोला सोणा दाम उसका है। और किसीके कौलके

मुजिब एक तीला मुद्देका जी दाम घीगा, वधी दाम एक तीला गोमेदका होगा। किसीके कीलके मुनिव चामरका समान दाम गोमेदका होगा । इहहै।

फरेवी सबदागर साटिक्से गोमेंद बनाते हैं। बाह्म-णादि चारमकारका चीरा पहेरनेसे जा फल घोता है,

चारप्रकारका गोमेंद् पहेरनेसे वही फल होता ही 1 ३३७।

इति गोमेदवा वदान ।

TRANSLATION.

336. Opinions are divided as to the price of a sterling gomeda, some maintaining it to be double that of a proportionate mass of gold, some holding it to be equal to that of a Vidruma, some making it equal to that of chámara.*

337. Fraudulent jewellers fabricate false gomedas with crystal. The good that is reaped by wearing the four classes of the diamond, is also obtained by wearing the four classes of the gomeda.

यश्वीम ।

ৰিশুদ্ধ গোনেদের দূল্য সকলের মতে সমান হয় না, কাহার মতে প্রবর্ণের বিগুণ, কাহার মতে বিজ্ঞানের সমান এবং কাহারও মতে চামরের সদৃশ হইমা থাকে। ৩৩৬।

খসং বণিকের। ফটিক ধারা কৃত্রিম গোমেন প্রস্তুত করিয়া থাকে। ব্রাহ্মণাদি চতুর্নাতি বক্ত ধারণের যে ফল, চতুর্নিধ গোমেন ধারণেও সেই ফল। ৩৩৭।

देवि शीरनम्।

^{*} The bushy tail of the Bos Oranniens, used as a fly-flap or fan and as one of the insigms of royalty.

THE ZIRCON, HYACINTH OR JACINTH,

Its Properties.

HE Zircon, Hyacinth or Jacinth and Jargoon are identically the same stone, differing only in colour. The Greek name is "Wakinthis," Latin, "Hyacinthus," German, "Hyacinth," and "Eia hreuneder Jacinth," French, "Jacinthe La Belle." The word Zircon is supposed to he derived from the Arabic word Zerk, which means a gem; the Hyaeinth, from the Arabic Yakut which means the Ruby. The transparent and bright-coloured varieties are known as the Hyacinth or Jaciath; tho greyish and smoke-coloured ones, (which are sometimes sold as inferior Diamonds,) as the Jargoon The Jargoon again occurs of several colours and is seldom perfectly transparent. Botius do Boot. describes the varieties thus; "(1) there are some that flame like fire or are similar in colour to crim-These the French son or to natural vermillion. jewellers call Jacinthe La Belle, and these they esteem the best. (2) Those with a yellow red (3) Others are like unto Amber, so that tbey can hardly be distinguished from it, but by their hardness. These are of no great value, by reason of the atoms they contain, and the multiplicity of small bodies which are in them, which do binder their transparency and translucency." According to Cardanus, "there is a fourth kind which have no redness at all in them, which are like to white pellucid Amber, and these are of least value." This gem belongs to the dimetric system of crystallization. Its specific gravity is from 4 07 to 475. In the transparent varieties, the lustre is almost adamantine; in the opaque ones, it is vitrious. It varies in colour from red to vellow, brown. green, grey and white Its number in the scale of hardness is 75; it baving the power of slightly scratching quartz. Its oleavage is imperfect: its fracture conchoidal and brilliant. It is composed of zirconia, 66 8, silica, 33 2 and peroxide of iron. 1. Being heated it becomes phosphorescent, loses its colour and increases in specific gravity, but regains its normal properties when cool, and if reheated immediately after, the phosphorescence does not appear. It is infusible before the blow-pipe but melts with borax into clear glass. No acids but sulphuric can affect it, and that even, after long maceration. It possesses double refraction in a very high degree, specially the Jargoon of Cevlon. The Zircon is distinguished by its quadrilateral crystals, terminating at both ends in a pyramid. with the same number of facets.

Where found.

NICOLS, writing 226 years ago, speaks of the Zircons:—"They are found in Ethiopia, India and Arabia. The Arabs distinguish three kinds:

(1) Rubris Coloris ;(2) Citrine Coloris ;(3) Antimonii Coloris. Of these the worst is found in the river Isera, which is upon the confines of Silisia and Bohemia. The best and most excellent ones are brought from Cananor, Calicut and Cambia." Since this period, several places have been found which are known to contain Zircon. It is found in embedded and attached crystals in granito, Syenite and Gness and also in beds of rivers together with Garnets, in Coylon, Pegu, India and parts of Europe and America It has been found in small crystals in Syenite at Meissen and in the Plauenschen Grund, (both near Dresdon), and in dense basait, in Siben-Giberge, in Prussia; in the rivers Espially (France) and Iser (Bohemia); in the island of Harris, in the Pfitsch Thal in Tyrol; in Gaston, Pennsylvania and in Hammond, New York. It is also found in some volcanie places (and with many Volcanic or Plutonie stones), such as at Neide-Mindy, in porous millstone lava; in Pachersea, (in little white and red crystals), in volcanic homb-shells and in the lava of Vesuvius

Mode of Cutting and Polishing

The Zircon is soldom used in jewelry, but when it is necessary to prepare it for ornaments, such as rings, pins, car-rings &c, it is ground in a leaden plate with emery powder, and polished on a plate of copper with powdered rotten stone. The Jargoon is generally cut in the form of a Rose



Diamond; i.e., flat at the bottom and pointed at the top; the Jacinth or Hyacinth, like a brilliant with a rounded table.

The Zircon, Jacinth or Hyacinth as known to the Ancients: Engravings

ALTHOUGH this stone was well-known to the ancients, it is a matter of question whether the gem they called by this name was the same as the true Some suppose at to be the Lyncurium of Theophrastus. Its Hebrew name is Techyleth or blue, hence, perhaps, Pliny called the stone known to us as the sapphire, by the name Hyacinthus. It was a great favorite of the ancient Romans, hut is little worn at present. In the Paris Museum may be seen a splendid specimen of a very ancient engraving on a Zircon, representing Moses with the two tables of the law. It is 54 millimetres in length and 34 in width Lord Duncannon is said to he in possession of a Zircon having the figure of an athlete engraved upon it. The modern Chinese use this gem profusely in decorating their gods

Price of the Zircon; its Flaves and Defects:

Made of Testing

No standard prices can be given for the Zircon as it is seldom used for jewelry purposes Tormerly it communded a very high price A solitary specimen of a Zircon, if free from flaws and possessed of a fine colour, may fetch a high price, in the pre-

sent time A perfect Zircon should be of n beautiful orango colour, with a shade of scarlet, quito clear and without flaws To remove dark spots from the stone and to equalize its colour, it is sometimes very carefully burnt with sand and iron filings The Jargoon that comes from Matura (in Ceylon) approaches the diamond so closely in lustre, that in the 18th century it had been supposed to be an inferior diamond and sold as such. The people of Ceylon call it the "Maturian Diamond" It is seldom found of large size-the maximum weight has not yet exceeded more than 12 carats It was formerly much used in mourning ornaments The Zircon is sometimes confounded with the Essonite or Cinnamon stone, from which, however, it differs in its essential characteristics. While the specific gravity of the former is from 407 to 47, that of the latter is from 3 5 to 4 3 Then, in the scale of hardness, the former is 7 5, while the latter is from 6 5 to 7 5 Then there is a great deal of difference in the chemical composition of each The latter has a large element of lime, magnesium and aluminum in it and is fusible before the blow pipe, whereas the former is not As to refraction, the Zircon possesses double, while the Cinnamon stone, single refraction The Spinel is sometimes mistaken for the Jacinth, owing to similarity of colour in some of the specimens, but a reference to the dis tinguished characteristics of each will easily correct the mistake To distinguish the Zircon from all

other stones of a similar nature, it should be looked at through a microscope in front of a strong light, and care must be tiken to observe, whether it has a peculiar texture, called in French, Ratine (nappy)—which has the appearance of water when spirit is poured into it. This cottony or "nappy" look is its special characteristic.

Marvellous Properties attributed to the Zircon

In the Middle Ages, this gem was supposed to bring riches, honor and wisdom, and was considered a great charm for plague and wicked spirits. "Ono of these," says Cardanus, "he was wont to wear about him, for the purpose of procuring sleep, to which purpose it did somewhat to confer, but not much." It was also thought to be a safe-guard against lightning.



चय विदु,सस्।

म्चम्।

ये तमागरमध्ये तु जायते वस्तरी तु या ।
विद्रमनामरसाख्या दुर्जमा वद्यस्पणी ॥ ३३८ ॥
विद्रमं नाम वद्रस्रं धारयन्ति मनीषिणः,।
बद्यादिजातिमेटेन तस्तुर्विधसुख्यत्थे ॥ ३३८ ॥
धरण प्रधरक्षादं कोमलं खिराधमेव च ।
प्रवार्च विप्रजातिः स्तात् स्तव्येथं मनीषरं ॥ ३४० ॥

विदुम अर्थात् मुंगेका वयान।

सर्जमा ।

यमेद पसुद्र मध्ये यज्ञ रूपियी एक किसिमका खताकार रक्ष पयदा घोता है, उस्को विद्रुम खर्यात् मुंगा कश्ते है। ३३८ ।

पिएडत लोक जिस् मुंगेके पहेरते हैं, वह मुंगा जिस् नरहे ब्राह्मण, चिन्न, वैश्व और श्रद्र चार जात होते हैं

उसी तरह उस्कीभी चार जात शोते है। इहटा खरगोसके चायके समान खुख, कोमल खीर बडन् खिम्ध मुंगा बाञ्चणजात है, बाञ्चस्थानतवा सुंगा देखनेने

विजय मुना बाह्ययात ६ । बाह्ययजातका मुना देवन वज्जत् त्राच्छा है और अल्दि देध होता है। ३४०।

THE CORAL.

TRANSLATION.

338. A cross-shaped gem resembling a plant is found in the White Sea. It is called Vidruma.
339. The Brahminical classification of castes has also been introduced among Vidrumas.

340. That, Vidruma which is red like the eye of the hare, tender and very cool, is the Brahmin. It is exceedingly beautiful and is easily penetrable.

বিক্রম ৷

অহ্বাদ।

শ্বেতসমূদ্ৰেৰ মধ্যে যে ৰজ্বৰূপিণী একপ্ৰকাৰ লতাকাৰ ৰত্ব জন্মে, তাহাকে বিক্ৰম মণি কহে। ৩৩৮।

পণ্ডিতেবা বিক্রমনামক বে রত্ন ধাবণ কবেন, ভাহা ব্রাহ্মণাদি জাতিভেদে চাবিপ্রকাব হইয়া থাকে। ৩৩৯।

শশকের চকুর তাম অকণবর্গ, কোমল ও অতিরিগ্ধ প্রবাল বিপ্রকাতিমধ্যে গণনীয় এবং দেখিতে অতিমনোহর অধচ অনাযাদে বেধ্য । ৩৪০ । मूचन्। जवावसूकसिन्दूरं दाहिमीकुसमोपमं।

कांठन दुवेश्वमसिन्यं चवजातिसत्व्यते । ५८१ ॥ पवाजकुरमाभावं तथा पाटवनसिमं । वैश्वजातिभवेत् सिन्धं वर्णाटा मन्दकान्तिम ॥ ५८५ ॥ रकोत्पवद्वाकारं कठिनं श्वचिरद्यति ।

विद्रुम ऋद्रजाति: खादायुवेधं तथैव च ॥३८३॥ रक्तता ख्रियता दार्टेश चिरद्युति खवर्णता। प्रयाजाना गुणाः प्रोका धनधान्यकशः पराः ॥ ५८८॥

तर्जमा।

क्षनेत्रका पुत. वाधूबीका पुत, विन्दूर प्रथवा धानारके पुत्रके समान सुष, सक, सुस्कित्वे वेधडीनेवाला और

पित्रिय मुंगा चित्रुवात है। ३८१। पवारफुव चौर पाटवीफुवके समान सु ख्रङ्ग, खिय चौर योडा कान्तिविधिष्ट मुंगा वैद्यजात है। ३८२।

जो सुगा लाल कमलके समान रङ्गदार, मक्त. जिस्की

चमक योधे दिन रहे चौर जो बज्जत् जल्दि वेधा जाय, वह ऋड़जात है। ३८३। जालरह, खिखता, सक्ष, कायेमरङ्ग चौर सुप् सरह

मुंगेका यही कदएक खास ग्रुष है। चीर यही सब गुण-यक मुंगा धनधान्यकी दृहिकर्नेवाला है। ३८८।

B.

TRANSLATION

341 That which resembles the China rose, the bandhuli flower, vermilion or the pomegranate flower, which is impenetrably liard and which is not cool, is a Klisetriya

342 That Vidruma which is like the Butea frondosa, or the trumpet flower, which is cool and slightly lustrous, is reckoned a Vaisua

343 That Vidrumu, the lustre of which is not enduring, which is like the leves of the red lotus, which is hard yet easily penetrable, is a Sudra

344 Yellowness, coolness, hardness, perma nancy of lustre and beauty are the principal qualities of the Coral, and those Corals that possess them, are auspicious

অনুবাৰ।

জবা, বাঁধ্নীপুঞ্জ, দিন্দুৰ অথবা দাভিনেব পুঞ্জেব ভাষ বক্তবর্ণ, কঠিন, দুর্ভেদ্য ও অমিশ্ব বিক্রনকে দপ্তজাভিমধ্যে গণনা ক্রবা যায় 1985 ।

পলান ও পাটনপুষ্পদদৃশ বর্ণাচ্য, স্লিম্ব, অথচ অন্ন কান্তিবিশিক্ট বিক্রম বৈশুজাতিমধ্যে পবিগণিত। ৩৪২।

মাহার দীপ্তি অচিবস্থায়ী, 'মাহা বক্তোৎপলদলেব ভাষ বর্ণবিশিক্ট, কৃঠিন এবং অনাধাদে বেধ্য, সেই বিক্রমকে শুক্তজাতি বলা যায়। ০৪০।

লোহিত বর্গ, মিশ্বতা, দৃঢ়তা, চিবছায়ী কিবণ ও সৌন্দর্য্য,প্রবালের এই করেকটা প্রধান ওণ এবং এই দবল ওণশালী প্রবাল নেধাক্তকর I ৩৪৪। मुखम 1

हिमाद्री यनु सजात तद्रक्षमविनिष्ठ्रं। तस्य धारणमाचेण विषरीम प्रशास्त्रति ॥ ३४५ ॥

विवर्णता तु खरता प्रवाने दृपणदय ।

रेखा काकपदो बिन्दुर्येषा वज्रेषु दोपकृत्। ३४६॥ रेखा चन्याद यशो लचीमावर्त कुलनाशन ।

पटुलो रोगकत् खातो विन्द्धेनविनागकत्। चास सजनवेनार नीविका ऋत्यकारियी ॥ ३४० ।

तर्जमा ।

डिमालय पब्नैतमे बद्धत् गहेरा लालरस्नका जो भुगा पयदा होता है, उस्को पहरनेसे जहरका दोगनाम होता है। ३४५।

वदरङ्गी, खुरधरापन यशी दो मुगेके प्रधान श्रवेव हैं। दूस्केंपेयाय चिर्, कालपद और किट वर्गरह हीरेमें जो चयेव होते हैं, वही सब चयेव मुगेमेभी चक्रमर होते हैं। ३८६।

चिर धयेवसे नाम्बरी और दीलतनाम चीति घें, चावर्त चयेव कुलनाम कर्ता है, परिवर्त चयेव विमारी पयदा करता ची, किटाका चयेव दीलतका नाम कर्ता है, बास अयेव बास देता है और नीला अयेव मीतका कारण है। ३४७।

TRANSLATION.

345. A deep red Coral is found in the Himalays. The wearing of it leads to instant cure from poisoning.

346. Ronghness and the quality of being discolored are the two primary defects of the Coral; besides which, there are Rekká,* Kákapada, Vindu, and other defects found in Diamonds.

347. Rekhá blights fame and beauty, A'varta brings about loss of family dignity, Pattala leads to disease, Vindu to loss of wealth, Trása to fear and Nilakáya to death itself.

অনুবাদ।

হিমালয় পর্বতে অতিগাঢ় লোহিতবর্ণ যে প্রবাল জন্মে, তাহা ধাবণ কবিবামাত্র বিষয়োগ প্রশমিত হয়। ৩৪৫।

বিবর্গতা ও থবতা এই তুইটা প্রবাদেব প্রধান দোব, তদ্ভিন রেখা, কাকপদ ও বিন্দু প্রভৃতি বজাপ্রিত দোয সমূহও প্রবাদের দোবনধ্যে গণনীয়। ৩৪৬।

রেখাতে যুগ ও এ বিনক হয়, আবর্তে কুলনাশ, পঞ্চলে রোগ, বিন্দুতে ধনক্ষ্ম, ত্রাদে ত্রান ও নীলিকায় মৃত্যু হইয়া থাকে। ৩৪৭। 372 मियमाचा ।

मसम् ।

मूर्त्यं शुहुप्रवालस्य रूप्यदिगुणमुच्यते ।

धारणेऽस्यापि नियमो जातिभेदेन पूर्ववत् ॥ ३४८ ॥ विक्पजाति विषमं विवर्णे

> खरप्रवार्लं प्रवर्जनत येया। तफ्ल्य्युमेवालानिवैष्टरन्ति •

सत्यं बद्त्येष करो सुनीन्द्र: ॥ ३४६ ॥ गौरयं खच्छता कान्तिः काठिन्यं रत्नजा गुणाः । विद्याय बज्जकाष्येषु गौरवं शोभनं भवेत ॥ ३५० ॥

तर्जभा ।

वेश्यवेव मुंगेका दाम उसके श्रोजनसे दुना खालिय बादी शीम, मुंगा एरेरनेका फल, जिम् तरह जातभेदके हिसावये सावेक लिखेळचे रत्न देते हैं, हुनी तरहसे मुंगाभी फल देता है। ३,8 रू।

कर नामे एक सुनिका वचन की, के जी चाहमी बद् सुरत्, विजाति, नीचा उंचा, बद्रक चीर खुरधरा मुंगा पहेर्ता की, वक चापनि भीत चाप बीनाता की 1 ३४९।

पहेरता है, यह आपनि सीत चाप बोलाता है। ३४८। यहता, खब्छता, कान्ति चीर कठिनताभी कोडण्ड रलके प्रधान युण हैं, वेजिन हीरेक्षेचेवाय चीर रहींकी भारी होनेकी तारिक हैं। ३५०।

TRANSLATION.

348. The price of a faultless Coral is twice that of an equal quantity of pure silver. As in regard to other gems, the effects of wearing Corals vary in accordance with each of the four classes.

349. According to Kar, the celebrated sage, the man who wears an ugly, discolored and rough Coral, courts his own death.

350. Heaviness, transparency, beauty and hardness are the principal qualities of jewels. But the first holds with respect to diamonds only.

অসুবাদ।

বিশুদ্ধ প্রবালের মূল্য বিশুদ্ধ রৌপ্যের ছিগুণ পরিমাণে ইইনা থাকে। প্রবালধারণের ফল, জাতি-বিভাগ অমুসারে পূর্ব্ববর্ণিত অপরাপর ব্রহ্ণাবণের অনুরূপ। ৩৪৮।

করনামক মুনিপ্রবর বলেন, যে ব্যক্তি বিষপ, বিজাতি, বজুব, বিষর্ণ ও বক্সপর্শ প্রবাল ধারণ করে, সে আপনাব মৃত্যু আহ্বান করে। ৩৪৯।

গুরুতা, স্বছতা, কান্তি ও কঠিনতা রহের এই ক্ষট প্রধান গুণ, কিন্ত বক্ল বাতিরেকে অপবাপর রহের ওকতাই অধিক পৌরবজনক। ৩৫০।

रताना रूपमास्यन्तु धूर्ता कुळन्ति युक्तित । तेषा परीचां वच्यामि रत्नशास्त्रविचारिणी ॥ ३५१ ॥

यज्ञेण वेधयेह्न क्षाचिमच्चे विधीयते ।

क्षचिम मौक्तियं नम्येत् चालिनं खबणामासा । ३५२॥ माणिक्यादीनि रत्नानि घर्षणान् परस्तरं।

शोधयेद्रलवित् प्राप्त सिमं शुहुमैव च ॥ २५१ ॥ त्यजित स्थितं रागं क्षिमं तद्दीरित।

माईवं हयते घृष्टं चीयन्तत् छिनमं बुधै, ॥ १५४॥

तरज्ञमा ।

धूर्भवीव बुद्धिवल कर्के माचे रत्नके समान भुठा रत तैयार कर नकी है, इस् कारण जास्त्रके प्रमाणके मीयां फिक रत्नकी परीचा लिखि जाति है। ३५१।

धीरेके दारा भूठा घीरा वेतक खुप वेध की जाता है, श्रीर भंठा मीति जलमें लोग मिलाकर धीनेसे नष्ट घी जाता है। ३५३।

रलपारची पण्डित कहते है, के परसार धिस्नेसे माणिक चाद रलकी भुठाइ चीर सावाइ मालूम घी सित के । ३५३।

ऐसे गासकी सान वगैरहमे जिस्को पाणिमे देवर पाकानेमे पाणिका रच्न बदरद्र हो जाय, और उम् पाणिमे कस चा जाय, ऐसे जलमे जिस्दाको फेंक देनेसे उसका रङ्ग बदरद्भ हो जाय, श्रीर धिस्तेसे नरम हो लाय उस्को भुठा कहते हैं। ३५8।

TRANSLATION.

351 Whereas frandulent traders fabricate false gems, I will now describe the way of testing precious stones as laid down by the authorities.

352. A false diamond is easily penetrable by a real one; a false pearl is destroyed when washed in salt water

353. The Ruby and other gems, say the author ities, are very well tested by rubbing one by the other.

354 When a false gem is put in any gruel, it loses its brilliance; and when rubbed becomes soft.

अञ्चाम।

ধূর্ত্তলোকেরা নানা কৌশল অবল্যনপূর্বক বরের প্রতিকৃতি প্রস্তুত কবিতে পারে, অতএব শাস্ত্রামূমত পবীকৃ বলা যাইতেছে ১৩৫১ I

কৃত্রিম বজ্ঞ বজ্ঞবাবা অনাযাদে বিদ্ধ হয়, কৃত্রিম মুক্তা লবণাসূতে ধৌত করিলে নফ হইয়া যায়। ৩৫২।

বত্নতত্ত্বল্জ পণ্ডিতেরা প্রক্ষাব ঘর্ষণ দাবা মাণিক্যাদি বত্ন সমুদাযেব কুত্রিমতাক্বত্রিমম্বাদি বিচাব করিতে পাবেন।৩৫৩।

কোন বস্তুব কাথে নিকিপ্ত হইলে কৃত্রিম বত্ত পূর্ব শোভা পবিত্যাগ করে এবং যুক্ত হইলে কোমল হইয়া পড়ে। ৩৫৪।

376 मियमाचा । मूचम्। एवं विचार्य रत्नानि की ये सञ्चितवान् नृपः। भायलेकी जयं की तिं पात्रीति नाम संगयः ॥ ३५५ ॥ प्रचन्नं कीमले सिन्धं सुरागं विद्रमं डितं। धनधान्यवरं लोके विपात्तिभयनाशनं ॥ ३५६ ॥

राजा लोगांको मनासिफ है, इस्काय्देके मौतानिक रत्नको परीचा कर्के बाद उस्के रत्नको खाजानेमे रख्नेकी

सर्जमा ।

चाचा दें, द्रम् सववसे उनर, दीवन चीर नाम्बरी बार्ड गि और फते हामिल होगि। इपूप्।

परिष्कृत, कोमल, सिन्ध और उत्तम मधिविधिष्ट मुंगा

चाद्मीचाना हितकारी ही धनधान्यकर्नेवाला चौर जहरका रोग नायकर्नेवाला है। ३५६। रति संग्रेका वयान।



TRANSLATION.

355. Princes should examine precious stones by these tests before depositing them in their treasury, so that they may enjoy long life and prosperity, and acquire success and fame.

356. A clear, soft, cool, and finely red Coral is auspicious, conduces to prosperity and is an antidote

to poisoning.

অনুবাদ 1

নুপতিগণেব কর্ত্তব্য যে, এই প্রণালীতে আগ্রে পবীকা কবিবা পশ্চাৎ বন্ধু দুনুদায় কোমে স্থাপন কবেন, তাহাতে ভাঁহাদেব আয়ু, লক্ষ্মী ও কীর্ত্তি বর্দ্ধিত এবং জয়দাত ইইতে পাবে। ৩৫৫।

পৰিষ্কৃত, কোমল, মিগ্ধ ও উত্তম বক্তবৰ্ণ বিজ্ঞান লোকেব হিতজনক, ধনধাত্তকৰ ও বিষয়োগবিনাশক বলিয়া বিখ্যাত আছে। ৩৫৬।

ইভি বিজ্ঞস।



मणिमाचा ।

मूषम्। एवं विचार्य रत्नानि कीचे मञ्जितवान् नृपः। भावलेकी जब की तिं प्राप्नीत नाच संगयः। ३५५॥

प्रसद्धं कीमलं सिन्धं सुरागं विद्रुमं हितं। धनधान्यकरं लोके विवास्तिमयनाशनं ॥ ३५६ ॥

तर्जमा ।

राजा लोगांको मनासिक ही, इसकाय्देके मौतानिक रलको परीचा कर्के बाद उस्के रतको खाजानेने रख्नेकी षाचा दें, इस सबबसे उमर, दौबत और नाम्बरी

बाड़े गि और फते हानिल होगि। ३५५ । परिष्कृत, कोमल, खिम्ध चौर उत्तम वर्णविशिष्ट मुंगा

धाद्मीचाका दितकारी है धनधान्यकर्नेवाला और जरेरका रीम नामकर्नेवाला है। ३५६।

इति मुंगेका वयान !



TRANSLATION

355 Princes should examine precious stones by these tests before depositing them in their treasury, so that they may enjoy long life and prosperity, and acquire success and fame

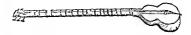
356 A clear, soft, cool, and finely red Coral is auspicious, conduces to prosperity and is an autidote to poisoning

অহুবাধ ৷

নুপতিগণেৰ কর্ত্তব্য যে, এই প্রণালীতে অথে প্রবীকা কবিষা পশ্চাৎ বন্ধ সমূরাৰ কোবে স্থাপন কবেন, তাহাতে তাঁহাদেৰ আমু, লক্ষ্মী ও কীর্ত্তি বর্দ্ধিত এবং জয়সাত হইতে পাবে। ৩৫৫।

পৰিভূত, কোমল, প্লিগ্ধ ও উত্তম বক্তবৰ্ণ বিজ্ঞান লোকেব হিতজনক, ধনধাত্তকৰ ও বিষয়োগবিনাশক বলিয়া বিখ্যাত আছে। ৩৫৬।

ইতি বিজ্ঞম।



THE CORAL.

Its Properties.

MHE Pearl is one of the two animal products included amongst the precious gems. The Coral, the other, is the production of gelatinous creatures, belonging to the family of "Polypi," of which there are many varieties. The variety known as "Isis Nobilis," (or the precious Coral,) is like a tree with leafless hranches, the stem of which is somotimes soen to he as thick as a man's body, but generally about a foot high and an inch thick. "The calcarious axis of the 'Isis Nohilis' is distinguished by its sizo, hardness and capability of polish as well as by its heautiful red colour. It has a sort of leathery covering in the cells to which the Polypi adhere. In the soft rind which surrounds the axis, there are small lime-needles and outside these the nets of the common canals which the little creatures weave." The sub-marine forests which are formed by the Coral grow to such an extent as to make islands and to seriously obstruct navigation. It was the belief of the ancients-a helief still shared in by many, in the present timethat the Coral is of vegetable origin; hut modern science, with the help of the miscroscope, has discovered the form of the insects which produce this wonderful phenomenon of nature. The Polypi consist of a soft gelatinous substance, and when

they sit in their cells undisturbed, each of them is found to resemble an eight-cornered star, notched on each point and situated in a circle round the mouth, by means of which they eatch their food and convey it to this opening. They are so peculiarly organized, that if one of them be touched. even in the slightest degree, all the separate molusks on the hranch will form into one corporate body. Though the insects show, in this respect, a marvellous degree of sensitiveness, they have not yet been discovered to possess nerves or any of the fivo senses. In the case of the precious Coral, the food goes into a hole in the stomach and is there wellmixed with water and circulated in all directions in little vessels, and thus conveyed to the whole mass, which are all in communication with each other. Particles of plants, found in the water and little worms or insects, form their chief nourish ment. They are very much averse to light and to a disturbance of the water, either of which is sufficient to make them recedo to their cells. The Corals are affected by heat and acids

Where Found: Coral Fisheries.

THE Corals are found in many parts of the water-world, but those that are used for ornaments puncipally come from the Mediterranean and especially from the African Coast. The beds, (formed by the creatures themselves), in the clefts of rocks, are evidently the result of very great labour, for, in some cases, they have been found 700 or 800 feet beneath the surface of the sea. The Coral fishery is conducted in many places, principally amongst which may be mentioned the coasts of Tunis, Algiers, Sicily, Corsica, the Red Sea and the Persian Gulf. Although it is chiefly carried on by the Italians and Maltese, it was first initiated by tho French. In 1450, a French Company was established at Calle or Kalak, (a scaport of the African coast), the fishing at which place became their monopoly, on condition of their employing Provencal sailors only. In 1701, the fishery was thrown open to all who traded with the Loyant and states of Africa. In 1794, however, tho French ships were protected by a duty laid on those of all other nations During the time England held possession of Calle (1802 1816), the fishery was pursued with great energy. In 1830, the Italians had, according to fresh arrangements, to pay a duty for it, while the French were exempted. But still the Italians predominated. The fishery, which hegins in March and ends in the heginning of October, is conducted in the following way. "Two iron rods about 7 feet long and having 4 prongs, are bound crosswise together, and wrapped up in hemp about 1 inch thick, and bound to this is a net-work bag In the middle of the rods a weight of lead is fastened. This machine is let down by means of a cable and when drawn up

again, it catches the projecting Coral in the hemp which is gently brought to the surface" Each fishing boat consists of 13 sailors. Experienced divers can sometimes bring up a strong branch of the Coral. It is then cut into various lengths as required and sorted, according to their thickness, size and beauty.

Cutting and Boring of Coral,

THE Coral is principally cut into beads and boutons or pieces cut en-cabochon, into drops for ear-rings, also into leaves, flowers and various other forms, for making the carved ornaments, as seen in Naples and Genoa, into charms which are worn in bunches : sometimes into Cameos and into stick and whip mounts and bandles It is bored by steel needles; in Italy it is done by hand. But Karl Hoffmann of Leipzig has rendered the operation much cheaper by inventing a machine for boring. The working on Coral is chiefly carried on in Marscilles, Leghorn and Genoa. In Leghorn about 300 persons are employed in conducting the operations and the Coral thereof is exported to India, Persia, China and Japan. The branches of the Coral are cut in such a manner as may be convenient and advantageous, according to their shape and freedom from flaws. They are afterwards ground into beads and polished with oil.

Engrarings

On account of its softness the Coral is often used for Cameo. At the sale of the Empress Eugènic's

jewels by Messrs. Cristic and Manson (1872), a very fine suit of carved Coral and gold ornaments fetched a very high value. Fine specimens of carved Coral are not at all rare.

Coral as known to the Ancients: Its uses.

According to a Greek tradition, the Coral was supposed to have sprung out of the blood dropping from the head of Medusa, which Persues had deposited on some branches near the sea-shore and which, on becoming bard, was taken by the seanymphs and planted in the sea Pliny termed it "Dendrites" and "Corallum" It was dedicated by the Romans to Jupiter and Apollo.

The Coral is not so much liked in Europe as it was in former times. In the beginning of the present century, however, it was set in gold or silver and was used in ear-rings, bracelets, necklaces and baby-rattles in the nursery of the middle and upper classes of people. In the oriental countries it is held in great favour. The worm eaten Coral and especially that of the dark red variety is in great demand in certain parts of India. One house of Naples is reported to export Rs 80,000 worth of Coral to Calcutta, and India is said to spend 20 lacs of Rupees a year for the purchase of this commodity Coral is very profusely worn by the Eastern nations in strings, on turbans and on the handles of swords and daggers. The Brahmins and Fakeers, use the Coral beads as resaries to count their

prayers. The rich wear the red Coral on their head, throat and legs. Some writers say that there is scarcely to be found an Indian who does not wear Coral in some or other part of his body. The Chinese mix the red Coral with Jade beads and wear them as ornaments for the neck and head. It is also worn in Spain and in the West Indian Islands by the Negroes.

The Price of Coral: Its Imitations.

Conal is found of several colours, all shades of red ond pink, green, brown, yellow, white and black. Tho last three varieties are not of much value. The most beautiful production is called the "flower of blood." The rose-tinted ones, on occount of their resembliog the fanciful shopes assumed by pink Pearls, obtain the highest price. These sell for £100 to £200 per ounce. A siegle large head or drop will fetch £30 to £40. The next in quality is the pale-coloured one, which sells from £10 to £100 per ounce. The price of the other red varieties ranges occording to colour, between £3 and £20 per ounce. The red Coral was once considered the most valuable. But present fashion awards the palm to the pink ones.

Th Coral is often imitated by bone, horn, and ivory, stained with cinabar—also by a composition of gypsun, gum and cinabar.

Marvellous and Medicinal Powers attributed to Coral.

In the most ancient times the Coral was held in great esteem. But at the time of Pliny, its influence was evidently not much appreciated, os in one of his works, he remarks that "formerly it was deemed excellent as an antidoto to poison." In tho Middle Ages, it regained its attributes, both as a medicino aod as a charm. It was then considered as a powerful astringent and a talisman against enchantments, witch-craft, venom, epilepsy, assaults of Satan, &c. &c. &c. From an old work quoted by Brand, it appears that, "Witches tell that this stone withstendeth, lyghtenying and putteth it as woll as whirl-windes, tempestes, and the stormes, from shippes and houses that it is io " Pierro de Rosnel says, that if worn by a man, it would deepen in colonr and look lively; and would become pale and livid, if worn hy a woman or by a man who is ill and likely to die. It would stop hemorrhage, if hung round the neck. Beetius do Boot says, that he was himself cured of a dangerous pestilential fever by taking six drops of tiocturo of Coral. Armand de Villcoevoo prescribes 10 grains of Coral, to be given to ao infaot, in its mother's milk, (provided this bo the first child and its first food), io order to preserve it from epilepsy or any other fit, throughout life. Io the modern times, the power of the red Coral in withstanding witchcraft is helieved in some nurseries and

of infants.*

^{*} Some women in India make their children swallow bits of Coral put within plantains, in the hope of radding them of stehes, &c.

च्यय सरकतम् **।**

मृचम्।

तुरुष्कविषयामोधिषमीपविषमस्त्रते । भवेनारकतं रत्नं गुणो दोषोऽस्य कथाते ॥ ३५७ ॥

तचाकठोरगुककण्डशिरीयग्रुष्य-

चद्योतप्रथवरणाद्वस्यवानां ।

कल्लारपचकमुजङ्गभुनाञ्च पच-

प्रान्तत्वियो मरकताः सुभदा भवन्ति ॥ ३५८ ॥ तस्मित्रारकतस्त्राने यत्किस्दिद्यजायते । तस्त्रेषं विपरोगाणां प्रयमाय प्रचलते ॥ ३५८ ॥

सरकत चर्चात पान्त्रेका वयान।

तर्जमा।

तुर्किट्यके ससुद्रके करिव नीचि ज'ची लभीनमे पाझा पयदा कोता है, पानेका जनर और खयेब सुकस्तव वयान कोता है। ३५०।

पानिके मध्ये यो कथ्य खर्यात् खुरधरा निर्ण, धीर जिस्का रङ्ग मदुज मुगेके गत्ने, शिरीपफुल, खद्योतकी विठ, नद्द शाम, चेवार, कोद्र फुलपाचा धीर मदूरके प्रक्राके गमान मदुज रङ्ग, यशे मन बज्जन् थास्का है। २५८ ।

पानेकी खानसे जो कुच पयदा छोए, यह सब जहरके रोगको नाम कर्मा है । ६५८।

EMERALD

TRANSLATION.

357. Emerald is produced in the undulating coast of the Black Sca belonging to Turkey. The good as well as the bad qualities of Emeralds will follow.

358. Those Emeralds that are smooth, and the color of which is like that of the parrot's throat, acade suresa, the glow-worm's back, new-born grass, Vallisniria Octandra, leaves of the water-hip or the peacock's tail, are auspicious

359. Genuine Emeralds are infallible remedics

for all cases of poisoning.

ম্র্ক্ত ৷

ष्ट्यान ।

তৃককেব সন্ত্ৰসমিহিত বজুৰ ভূতাণে সৰ্কত রত্ন উৎপন্ন হ্য, মৰ্কতেৰ ওপ ও দোব ক্রমশঃ ক্ষিত হই-তেছে। ৩৫৭।

মবৰতেৰ মধ্যে বে ওলি কর্কণ নহে, এবং বাহাদেৰ বৰ্ণ শুক্পফীৰ কণ্ঠ, শিৰীৰপুন্তা, ধন্যোতপুষ্ঠ, মূচন তৃণদন, শৈৰাল, কফোৰ (ফুঁদি) ফুলেৰ পত্ৰ ও মনুনপুচ্ছেৰ মনুশ শ্যামন, সেই ওলি অভিজ্ঞানক। ৩২৮।

প্ৰদিদ্ধ মৰকতাকৰে যাহা কিছু উৎপন্ন হয়, তংগদু-দানেৰ দাবা সৰ্বপ্ৰকাৰ বিগৱোগ প্ৰশনিত হইয়া ধাকে। ৩৫৯। मूचम्। सर्वमन्द्रीपधिगणेथेद्र यका विकस्तितं। सन्नाहदं युप्तमवं विचं तत्तेन यास्यति॥ ३६०॥ सन्मदयाकरे तत्र वर्षणेण विवक्तितं।

अन्यद्धाकर तथ वहायण विश्व ।

जायते तत्विचाणासुसम परिकीर्त्ति । ३६९ ॥

सुक्तं पंद्यानगुणैः समराग गीरवेण परिकीर्त ।

स्वितुः करसस्यां व्हवयति सब्वांत्रम दीप्ता ॥ ६६२ ॥

एला च करितभावं यस्यान्त्रविनिक्ता भवेदीप्तः ।

चित्रप्रभाग्नभाकतनवयाह्वसन्तिमा भाति ॥ ३६३ ॥

यद्य मनस प्रसाद विद्धाति निरीधितमतिमाणं।

तमारकत मचागुणमिति रखविदां मनोष्टिमा । ३६४।

तर्जमा ।

सायका जसर सगर मन्त्र भीर दायांचे दूर न घो, वह पालेके जरियेसे नाथ होता है। ३६०।

पाद्वेजे खानसे खार और कोइ इस्टे किसिम्बो वे-चयेव सणि पयदा हो, तो उच्को उसदा चयसा उत्तम कहते हैं। १६९।

जो पाझा गुण्डीन और घोजनमे बद्धत् चाल्का, सब जगड रज़मे बरावर चूर्यकी किरणसे सर्वे करके सब मकानको रोमन करें। चयवा जो रज़मे चानका, तिकन उम्के भितरकी चामा जिस् तरह विजनिके चमकनेसे धामके उपर देखनाइ दिति हैं, चयवा जिस्क देखनेडीसे मनमें बद्धत् खुनी चासिल थी, रक्षयार्ची प्रविद्तीको मनके चत्रसार वडी पाझा नेहायेत् उम्द्र हैं। १६ १३६ १३६ ११६ १८

TRANSLATION.

360. Such cases of snake-bite in which incantation and medicine are of no avail, are curable by Emeralds.

361. Even any other flawless gem assuming the

form of an Emerald is highly prized.

362 An Emerald which is of one uniform color, although excessively light and devoid of any other good property, which illumines a place when exposed to the sun:

363. Which is not extremely green, yet the splendour of which looks like the hightning's play among fresh grass:

364 The sight of which instills the livehest pleasure into the mind, is the very best of its kind.

অহ্বাদ।

যে দকল দর্গবিষ কোনৰূপ মন্ত্র বা ^উষ্পপ্রযোগ্যাবা নিবাবিত না হয়, তৎসমূদায় মরকতছাবা শমতা প্রাপ্ত হয়। ৩৬০।

মরকতেব আকবে যদি অন্য কোনকপ নির্দোষ মণি উৎপন্ন হয়, তাহাও উতম বলিষা কীর্তিত হইযা থাকে।৩৬১।

যে মরকত শুণবিহীন ও ওজনে অতিশম লয় হইযাও দর্শব্দে সমান হণবিশিক্ট এবং সূর্যাকিরণসংস্পর্শে সমুদায় গৃহ দীপ্তিমান্ করে । ৩১২।

यांश निजास स्विबर्ग नरह, ष्यक्ष छांश्वर ष्यस्कि विद्युरक्षज्ञ-क्षेत्रिज्ञान नवहुनम्हात्वर मृग्ग । ०५० ।

অথবা বাহা দৃষ্টমাত্রেই মনেব মধ্যে নিরতিশব আনন্দ উৎপাদন বরে, রহুতত্ত্ববিং পণ্ডিতদিগেব মতে সেই ম্বক্তই অতি উৎসুক্ত । ৩১৪। मुखम्।

यसु भास्तरसम्प्राद्वसम्यक्षो महामणः।
रञ्जयेदालपादेसु महामरकतं हि तत्॥ ३६५ ॥
वर्षस्याति वज्जतात् यसान्तः स्वक्षित्रपपरीधानं।
सान्द्रस्विद्यविद्युद्ध कोमलवर्ष्णमादिसमकान्ति ॥ ३६६ ॥
चलयोज्ज्वसा कान्त्रा सान्द्रकरो विभासया माति।
तद्यि न यणवत् संत्तामाप्रोति हि ताहर्षोपूष्ट्या ॥ ३६० ॥
चतुर्धो जातिभदेसु महामरकते मणी।
हायाभदेन विद्या चतुर्वेषस्य लच्चौः ॥ ३६८ ॥

तर्जमा।

जो पाद्या चातपर रख्ने से पूर्ण के क्रिरण के लाग्नेसे चप्ने किरणको नेकाले, चौर चारा तरफको खुम्नमा करे, उस्पाचेको मचामरकत कडते है। ३६५।

रज़ भे ने न्यायेत् गानेरा, श्रीर जिस्का वीचका हिस्सा माफ, घन, श्र्यात् गानेरा रज्ज सिन्धः, श्रीर मयूरके पेषिके समान कोमल विरणविशिष्टः, बन्नी पान्ने मध्ये उत्तम याद्रा समार किया गया है। ३६६।

को पादा गाम रोमनिविज्यः, नेकिन वकी रोसिन चगर चञ्चल को,तो उसको होनेने उसका मुण पश्चिमे वयान कियेक्डवे पाद्मेक समान नक्षि है। ३६७।

जिस् तरक्षे बाझण, घानुय, वैद्य चीर प्रृष्ट्र वार जात कीते के, उसी प्रकार इस्से सकासरकात माणिमेमी चार जात के, काया भेद चीर तरक तरक के अञ्चलके द्वारा चार जातका भेद मानुम कीता के। इस्ट।

TRANSLATION.

365. The Emerald which when placed on the palm, and exposed to the sun, scatters light all round, is termed a Maha Marakata.*

366. An Emerald, which owing to its deep green has a densely transparent centre, the home of cool and gentle rays of the color of the peacock's tail, is a sterling gem.

367. If an Emerald is lustrous, but if its lustro is unsteady, it can never equal the above-mentioned one in value.

368. Mahámarakatas are divided into four castes like the Hindus, each caste being recognized by certain peculiarities of shade and by other marks.

অভ্ৰাদ।

যে মরকত করতলে স্থাপিত হইয়াও পূর্য্যকিরণসংসর্গে নিজকিরণ বিকীর্ণ করিয়া চতুর্দ্দিক রঞ্জিত করে, তাহাকে মহামরকত কহা যায়। ৩৬৫।

বর্ণের বাহল্যপ্রযুক্ত বাহার মধ্যভাগ অচ্ছ, কিরণ-বিশিষ্ট, ঘন, স্লিপ্ত ও মনুরপুছসমূশ কোমল কিরণ-পরিপূর্ণ, তাহা বিশুদ্ধ মুরক্তমধ্যে পরিগণিত। ৩৬৬।

যে মরকত উম্বন-দীপ্তিরিশিক, কিন্তু সেই দীপ্তি যদি চঞ্চল হয়, তাহা হইলে তাহার তথ পূর্কোক্ত মরকতের ফায় হইকে পারেনা। ৩১৭।

নহানরহত মণির আম্মণাদি চারিপ্রকার জাতিতেদ লফিত হয়, ছায়াতেদ ও অভাত লফণদারা সেই চারি ভাতি পরিজাত হওয়া যায়। ৩৬৮।

[·] Laterally, the Great Emerald.

392 मिलिमा

मृतम्। दोषाः सप्त भवन्तरस्य गुणाः पञ्चविधाः स्मृताः ।

भवन्तरप्रविधा च्हाया मणेमरकतस्य हि । ३६०॥

च्यव मरकतदोपाः I

श्रक्षियं क्विमित्युक्तं व्याधिसस्मिन् भृते भवेत्। विष्कोटः स्थादंगपीते धृते मस्त्रकतो भवेत्। ३७०॥ वपापाणे सवेदिष्टनायो भरकते धृते। विक्कायं मस्तिनं प्रायो व्याधिस्तेन प्रमायते ॥ ३७९॥

तर्जमा ।

सरकत सणि खर्वात् पाझेने सात प्रकारका खरीक और पाच प्रकारका ग्रुय और चाट प्रकारकी क्षाया श्रुवते हैं। ३६८।

पान्नेका चयेव।

को खामायिक चित्र्य निष्ठ, उस्को रूच कप्ते हैं, ए मा पाद्मा पहेरनेचे विमारी घोति है, और को पाद्मा किसी कमडे फ्ल्टिका रद्ग रख्ना है, उस्को विष्कोट कप्तते हैं, विष्कोट पाद्मा पहेरनेचे प्रस्त्रधातचे भीत घोति हैं। १९०।

पायरके दुक्रिके सिहतवाना पात्रा पहेरनेसे मनका अभिनाप नष्ट शीता है, और जिस्की शाकार मिन शील उस्पानेको विच्हाय करते हैं, येसा पान्ना शोनेसे तरह नरहकी विमारी पददा शी 1 शुरु ।

TRANSLATION.

369 Seven defects are mentioned as belonging to Emeralds, as also five good qualities and eight shades.

Defects of the Emerald

370. An Emerald which is not cool, is called a Rukshma; it leads to disease That which has a yellow spot, is called a Bushfota. Death from wounds inflicted by a weapon may be apprehended from wearing it.

371. An Emerald to which a stone fragment is inseparably attached, has a baleful influence. That which is dirty, is called a Bic c'haya. Such an Emerald may bring on a variety of diseases

অমুবাদ।

মবকত মণিব সপ্তবিধ দোষ, পঞ্চপ্ৰকাৰ গুণ ও অঞ্চ বিধ ছায়া নিৰ্দ্দিক আছে। ৩৬৯।

মূরকতের দৌষ ৷

যে মবকত স্বভাবতঃ অপ্লিয়, তাহাকে ৰুক্ষ কহে, তাদৃশ মৰকতধাৰণে ব্যাধি হইষা থাকে, যাহাৰ একদেশ পীতবৰ্ণ, তাহাৰ নাম বিচ্ছোট, বিচ্ছোট মৰকত ধাৰণ কবিলে শস্ত্ৰাঘাতে মৃত্যু ঘটিবাৰ সম্ভাবনা। ৩৭०।

পাষাণ্থণ্ডযুক্ত মৰ্ক্তধাৰণে ইউনাশ হয়, এবং যাহাৰ আকাৰ মলিন, তাহাকে বিছায় কহে, তাদৃশ মরকত হইতে নানাব্যাধি উৎপন্ন হইতে পাৰে। ৩৭১।

मृजम।

कर्प गर्वरायुक्त पुचगोक भयपद । जठर कान्तिचीनं स्वाइंडिभ्यो भवमादिशेत्। ३७२॥

कुल्माववर्णधवले धृते चत्यभवसावेत्। इति दोषा. समाखाता वर्ष्यन्ते साम्प्रतं ग्रुणाः । ३७३ ।

चय भरकतग्रणाः 1

निर्मानं वियत खच्छं गुरु स्वादग्रहतायुत । सियां रूचिनिम्सिनरजस्तमरेणुकं । ३७४॥ श्वरङ्ग रज्ञवज्ञलमिति पञ्च गुणाः स्रोता.।

यतीर्विक सरकतं सर्वयायभयायसः ॥ ३७५ ॥

सरजमा ।

चिनि चर्यात् सफेद मक्करके चूरके समान चूरयुक पालेको कर्नर कहते हैं, कर्मर पाला चाचीलातको नाम कर्ता है, चौर कान्तिहीन चर्चात् वेनुर पासेको जठर

बोल्ते है, जठर पाना पहेरनेसे दांतकादनेवाले जानवरीका

भय पयदा हो। ३७२। उर्दीके दालके समान वर्णविज्ञिष्ट श्रयात् रज्ञवाला पाना पहेरनेसे मीतका भय होए, यही सातप्रकारका श्रयेव बयान किया गया, मन्यृति गुणका वयान करते है। ३७३।

पाचेका ग्रुप।

निर्मानत, गुरुत, सुम्बत, घरअस्तत चीर सरद्रत यही पांच ग्रुण पान्त्रेके प्रधान ग्रुण है, यही सब ग्रुणयुक्त पामा मन पापको नाश करता है। ३७४। ३७५।

TRANSLATION.

872. An Emerald containing gritty fragments is termed a Karkara It causes the death of its owner's son; an ugly Emerald is called a Jathara. A Jathara Emerald renders one liable to bites

373 The Emerald, the color of which is like that of *Mdshalaldi*,* is fatal to its wearer. These are the seven kinds of defects pertaining to Emeralds. I shall now mention the good qualities.

Good Properties of the Emerald.

374—375. Purity, weight, coolness, freedom from dust, and beauty, are the five principal qualities of Emeralds. Such Emeralds cleanse men from all sin.

অসুবাদ 1

শর্ক বাযুক্ত মবকত কর্জ ব নামে অভিহিত, কর্জ ব মব কত পুজনাশক; কান্তিহীন মবকতকে জঠব বলা যায, জঠব মরকত দংটিতযোহপাদক। ৩৭২।

মাৰকলাইয়েব ভাষ বৰ্ণবিশিষ্ট মৰকত ধাৰণকাৰীৰ মৃত্যু আসন্ধ। এই সপ্তবিধ দোষেব বিষম বলা হইল, একণে ওপেন বিষম বলা যাইতেছে। ৩৭৩।

মরকতের গুণ।

নির্মানত্ব, গুরুত্ব, স্লিপ্তত, অরজরত ও হালবত এই পাঁচটা মবকতেব প্রধান গুণ, এই সকল ওণমুক্ত মবকত সর্ব্বপাপক্ষকর। ৩৭৪। ৩৭৫।

Vide antè

मूखम्।

धनधानादिकरणे तथा सैन्यक्रियाधिधी। विषरोगोपशमने कमासाद्यक्षेण् च। श्रस्तते सुनिभिषेसादयं मरकतो मणिः॥३०६॥

श्रय सरकतक्ताया।

विश्विष्क् ममाभासस्यासपचामाः पराः ।

श्वरित्काचनिमास्यान्ये तथा ग्रैवालमिद्रभाः ॥ ३७७ ॥
खद्योतप्रसङ्काया चालकीरममित्वयः ।
नवयादलमच्हायाः ग्रिटीपकुसमीपमाः ॥ ३७८ ॥
एवमष्टी ममास्याताम्याया मरकताश्रयाः ।
खायाभियुक्षमेताभिः श्रेष्ठ मरकतं भवेत् ॥ ३७८ ॥

सर्जमा ।

रक्षपारची परित्रत ककते की के धनधान्यादि ज्यादा करनेकेशको छठाइको यक, जक्रके रोगकेशको कीर व्यर्थवेदके विधिके कक्षी करणे समे छक्षी सब काममे पान्नेको मणि वळत् चाद्छिकी। ३७६।

मञ्द्रकी पुंच, नीलकण्ड पत्तीका प्राप्त, शतुज काच, शेवान, भगवुगनीकी पिठ, पुगेके बाग्ने, नह पाय चीर शिरीपमुन, यथी चाटमकारकी ज्ञाया पान्नेसे देख्नाह देति के, चीर यथी चाट किसिमधा ज्ञायाविशिष्ट पाडा बज्जत् चाण्हा के 1800 130 130 1

Ž....

TRANSLATION.

376. According to the authorities, the Emerald causes increase of wealth, brings about success in war, cures cases of poisoning, and renders successful the rites performed according to the Atharva-Veda.

Shades of the Emerald.

377-379. The shade of an Emerald is seen to resemble the hue of one or other of the following eight objects -

The peacock's tail, the wing of the Nilakantha,* yellow glass, moss, the glowworm's back, tho young of a parrot, fresh grass, or the Sirisat flower Emeralds which possess these shades, are superior.

অসুবাদ।

রত্বতত্ত্ববিশাবদ পণ্ডিতেবা বহেন, ধনধাত্তাদিরজি করণে, মুদ্ধে, বিষয়োগনাশনে এবং অথর্কবেদোক্ত কর্মে মবকত মণি অভিপ্রশস্ত ! ৩৭৬ !

মরকতের ছায়া ৷

ময়ুবপুচ্ছ, মীলক্ষ্ঠপমিপক, হরিষর্ণ কাচ, শৈবাল, থদ্যোতপুষ্ঠ, শুক্নিশু, নৃতন ভূণদল ও শিবীবর্ত্নন, এই অউবিধ পদার্থেব ভাষ ছামা মবকতে লক্ষিত হয় এবং এই অউপ্রকাব ছামাবিশিউনবকতইসর্বশ্রেষ্ঠ IO৭৭I০৭৮I০৭৯I

^{*} A blue-necked jay + I ids ant?.

^[] tao una

मूनम् ।

ग्रैवालबह्वरीन्द्रायं स्टर्ड चासवर्धितं ।

श्रमधं तमारकतं प्राञ्जः सर्विवपापः ॥ २०० ॥

यत् सन्धिन्धे पितं रत्नमन्य न्यरकताद्भवेत् ।

श्रेयक्तामेने नहार्थे केतन्यस कथस्र न ॥ २०९ ॥

श्रिवमत्वं पश्यतं दस्यते ग्रुरिभः कवित् ।

घर्षयत् मस्तरे व्यद्धः कावस्त्रशाद्विषद्यते ॥ २०२ ॥

संस्येत् मस्तरे व्यद्धः कावस्त्रशाद्विषद्यते ॥ २०२ ॥
संस्येत् स्तरे श्रुर्वे ।

सर्जमा ।

जो पाचा शेवारके समान कायायुक्त, बळत् गुल्टर-रङ्ग और चासके ध्येवसे बिंति, प्रिकृत लोग उधको वेकिमत धर्यात् धान्मोल और नामाम जर्डराका नाम करनेवाला कन्नते की ३००।

पाने के सेवाय दोस्रा रक्ष टुट जाने क्यम ने भाजार चाफेने बाले उन्को कभी पडरेक्ट्रेनिड चौर खरिटेक्ट्रे निष्ट। ३८०९।

जो पाता भुंठा मानुम होगा, उस्को किही साही पात्रेथे विस्ना चाहिये,तवभुंठा पात्ता दुर जावेगा। इटर।

लीकरूब (एक किथिनके लोहेको कलसके उदिया जिस्से तालपनपर लिख्ते हैं) से छत् देकर चूना लागा-नेके भुंठा पाझा मलिन हो जानेगा चीर चागल पाझा बऊत्वाक होगा (इ⊏३।

TRANSLATION.

380 An Emerald which is furnished with a shado like moss, which is of a fine color and which is free from flaws, is a priceless genn, and is considered an antidote to poisons of all kinds.

381. Any gem excepting an Emerald found to be broken should not be worn ;—nay, should not be

bought by one who has a care for his good

382. Any Emerald which raises doubts as to its genuincness, should be rubbed against a real one, when the former, if false, will be broken.

383. Or scratch an Emerald with Lauhavringa,* and then smear it with lime. By this process a false Emerald will grow exceedingly dim, while a real one will attain additional brilliancy.

अञ्चान ।

যে মৰকত শৈবালেৰ জ্ঞায় ছায়াবিশিক্ট, অতিহালৰ বৰ্ণযুক্ত এবং ত্ৰাদবৰ্জিত, পণ্ডিতেরা তাহাকে অমূদ্য ও সর্ববিষনাশত বলিয়া থাকেন। ১৮৮।

মবকত ভিন্ন অন্য বন্ধ ভগ্ন হ'ইলে শ্রেযোহর্থী ব্যক্তি বখনই তাহা ধাবণ, এমন কি ক্রমণ্ড কবিবেন না। ৩৮১।

যে নবকতকে কুত্রিম বলিয়া সন্দেহ হইবে, তাহাকে কোন অকুত্রিম মবকতেব সহিত ঘর্বণ কবিলেই কুত্রিমথানি ভগ্ন হইবা বাইবে। ৩৮২।

লোহভূদ (একপ্রকাব লোহলেখনী, উড়িযাবা যাহা-ঘাবা তালপত্রে লিথিয়া থাকে) তদ্ধাবা অঙ্কিচ করিয়া চূণ লেপন কবিলে কৃত্রিম মবকত অত্যন্ত মলিন হইযা যাইবে এবং অক্কৃত্রিম মবকত অধিকতর উক্ষব হইবে। ৩৮৩।

The iron peu with which an Uriya writes on his palm leaf

मुखस्।

भक्षातमः प्रतिका च तदणैस्यात्यायिनः ।
भिष्मेरकतस्येते जद्यणीया विजातयः । १८८॥
चौभेण वाससा घृष्टा दीप्तिं त्यजित प्रतिका ।
लाधवेनैव काषस्य यक्या कर्त्ते विभावता । १८५॥
तुलवा पद्मरागस्य यम्पत्तेष्वचायते ।
लमतेस्यिषकं तसान्त्राणकरेकतं गुम ॥ १८६॥
तया च पद्मरागाणा दोपैसुँ-सं विष्ठीयते ।
ततीऽस्मित्रिका चानिदाविकरकते भवेत्॥ १८७॥

वर्जमा ।

जिस्पान्नेका रज्ज भेला वा गुंद शावके ममान है, बह विज्ञातिमे गुमार विचा गया है। इक्छ।

रेशनी काप्डेसे धिस्तेसे घोति एँसा रहरार भुठा पाता अप्नेके चमक कोई देगा, और सुवुककाचका बनायाक्रया पाता धाचका डोनेसे अनायास साबुम डो जावेगा। १८५।

एक चादद माणिक, एक घादद् पाद्मा घगर घोजनमे समान हो,तो पद्मरागधे पाद्मेका दान च्यादा होगा (५८६)

जिस् चयेवसे पद्मराग चर्चात् माणिकका दाम जम कोता है, यासेका उस् चयेव कोनेसे बद्धत् दाम कम कोगा। रूटा !

इति मरकतका वयाम ।

TRANSLATION

384 An Emerald which resembles in color the Bhelá* fruit or Putilá is not classed with first-rate Emeralds

385. A putild colored false Emerald on heing rubbed with a piece of linen, will lose its brightness, and a false Emerald composed of yellow glass can easily be detected by its lightness

386 If a Ruby and an Emerald weigh equally, the Emerald is the more precious

387. That defect, the existence of which lessens the price of a Ruby, reduces that of an Emerald still more

অহ্বাদ (

যে সকল মৰকতেৰ বৰ্ণ ভেলা বা পৃতিকা শাকেব সদৃশ, তাহাবা বিজাতিমধ্যে পৰিণণিত। ৩৮৪।

শ্লেমবন্ত্রে ঘর্ষণ কবিলে পৃতিকাৰ ভাষ বর্গবিশিষ্ট কৃত্রিম মবকত স্বীয়নীপ্তি পবিত্যাপ কবিলে, এবং হবিবর্গ কাঁচবাবা কৃত্রিম মবকত প্রস্তুত কবিলে লযুভাবতাষারা তাহা অনাবাদে উপশ্বদ্ধ হইবে 1 ৩৮৫ ।

একখণ্ড পদ্মবাগ ও একখণ্ড মবকত যদি ওজনে সমান ভাবী হয়, তাহা হইলে পদ্মবাণ অপেক্ষা মবকতেব মৃন্য অধিক হইবে। ৩৮৬।

যে দোষে পদ্মবাশেব মূল্য অল্ল হইয়া থাকে, মবকতে সে দোষ থাকিলে তাহাৰ মূল্য অভ্যন্ত অল্ল হইবে। ৩৮৭।

ইতি নর্বত।

T T

^{*} A certain fruit with which Hindu washermen mark the clothes, † A species of cultury plant

THE EMERALD.

Its properties

HE beautiful green color which the Emerald possesses has not been surpassed by any other gem This color is in pleasing contrast with the lime stone matrix in which the gem is found Formerly it was supposed that the coloring matter of the Emerald was the oxide of chrome, but the quantity of chromic acid, obtained by Mr Lewy, on analysis, was so small as to be mappreorable He gives it as his opinion that the beautiful tint of the Emerald is produced by some or ganio substance, which, he imagines, is a carburct of hydrogen, similar to that termed chlorophylle, which constitutes the coloring matter in the leaves of plants The Emeralds of the darkest tint con tain the largest amount of organic matter, and it is remarkable as a test that at a low heat the Emerald loses the color and becomes white and opaque, whilst the minerals of which the coloring matter is chrome (as the chrome Garnet, "Uwarowite") remain unaffected by intense heat. It is possible that the organic coloring matter of the Emerald may be derived from the decomposition of the animals whose remains are now fossilized in the rock which forms the matrix of the gem This rock, as stated before, is a lime stone slightly bituminous, often black with white veins, and con-

taining ammonites and other shells. Mr. Lewy has also arrived at the conclusion that the Emerald has been formed in the wet ways, that is to sav. it has been deposited from a chemical solution. This stone has the same chemical properties as tho Beryl or Aquamarine-except in color, which, in the case of the latter, is light blue or sea-green. It belongs to the hexagonal system of crystallization and is found in hexagonal prisms truncated at both ends. Its hardness is between 7.5 and 8. It is scratched by Spinel and can scratch Quartz with difficulty, (though specimens vary in this respect.) It is the lightest of all hyalines, its specific gravity heing from 2 67 to 2.75, and its bulk is very large, compared to its weight-it being nearly double the size of a Sapphiro of equal weight It is transparent and its lustre is vitrous It does not loose its beauty by artificial light . It is so brittle and is so soft just when it is taken out of the mine, that it crumhles by friction, hut hardens by heing exposed to the air. On account of this softness, it loses somewhat of the intensity of its color by long use. It possesses double refraction, though in a very small degree and acquires positive electricity by friction. It generally remains unchanged before the blow-pipe, and if it changes at all, it becomes a shade cloudy. With borax it fuses into a pale green substance much like glass. Acids cannot affect it, but it can he slowly dissolved with microsmic salt, (salt of phosphorus). It is composed of silica 68.5; alumina, 15.75; glucina, 12.50; peroxido of iron, 1; limo, 25; oxide of chrome, 3, the rest being made up of traces of magnesia, lime and soda. Its cleavage is imperfectly basal.

Where found.

The Emerald is now to be found in all the four quarters of the globe.

Europo.—Emeralds of the finest quality have heen found in the Ural and Altai mountains Tho first Emerald, found in this place (in 1830), was discovered accidentally by a charcoal burner, at the root of a tree in the district of Perni, (east side of the Ural). A regular working of the bed, which followed at once, resulted in the discovery of several good Emeralds, (one of which weighed 101½ carats). The supply has now diminished Soveral dark-green and six-sided stones are supplied by Salzhurg in Austria. These are not so very transparent as they should he.

Asia.—Several beds of Emeralds are found on the Chinese borders of Siberia and in parts of Burmal, in sands, or beds of small rivers, mixed with pure gold and Spinel. It is a matter of question whether India has ever produced Emeralds Some that are sent to Europe hear marks of unfluished cutting, (evidently performed by the Indian lapidaries,) and have to be recent there, in order, that they might have their proper beauty. These are so very unlike in nature to those that helong to South America, that all conjecturers have been at a loss to account for their real locality. A large Emerald, of a medium-sized hen's egg, presented to the Queen Victoria, by the King of Oudh, is said to have been found in Burmah.

Africa.—Those found in Egypt are the most esteemed. Pliny mentions the rocks about Coptos, as containing the celebrated mines of old. According to Mahomed Ben Mansur (13th century), the Emerald mines were situated on the borders of the land of the Negroes, which are still in the possession of the Khedive* De Laet points out the same locality in the 17th century. The mines most known at present are in the mountain of the Sabara, and the beds of the river Harrach (in Algiers), where it joins the river Qued Bouman. Some large specimens have been found in the Dolomite mountains

America.—This is the place from which the best Emerids come. The conquest of Peru by the Spaniards has opened a rich field to merchant-jewellers. The conquerors got possession of several large-sized stones, one of which was as big as a pigeon's egg. A large number of Emeralds was taken from the temple of the Snn. When one of the Peruvian chiefs fell into the hands of the Spaniards, he had on his person a collar of Emeralds of large size and of

This word is evidently a form of the Sansknit word Khitipa, which
means literally, Ruler of the land.

great lustre. They also took possession of the large collection of Emeralds which had remained for centuries in charge of the priests of "Esmeralda"* -a large Emerald of the size of an estrich's egg, which was supposed by the natives of Manta Valley to have been the abode of the goddess of the same and which was worshipped by them on occasions of high festivals, by the offering of as many of her own daughters (small Emeralds), as they could afford to bring. A Dominican friar, who accompanied the Spaniards, declared that the test of the true Emerald was its infrangibility. The ignorant soldiers, who knew nothing of the brittle character of the stones, hegan to put them to the test as dictated by the priest, by placing them under the hammer-the result being, as may be imagined, the indiscriminate destruction of a vast number of good and large Emeralds. It is said that the advice of the friar proceeded from interested motives, his object in diminishing the number of Emeralds ohtained, being to sell those that he had collected for himself, to the hest advantage. Most of the Emeralds now come from Santa Fé and the Tunka Valley, between the mountains of New Granada and Popagan. The Peruvians believed that the Eme-

^{*} Stavenson, in his "Readence in South America, Vol. II," speaks the neighbourhood of Las Emmerdata, as follows; "I never visited it, owing to the superstitious dread of the natives who assured me that it was enchanted and guarded by an enchanted dragon, which poured forth thunder and lightning on those who dared to ascend the river!"



raids ripened in the matrix just as the fruit does upon the tree; that it was first colorless, and became gradually green, that corner first, which faced the sun. In corroboration of this helief, Pierre De Rosnel, in his book published in 1664, speaks of a Peruvian, who had seen, in Cuzeo, an Emerald, a corner of which was green, and the remainder purely white. Philip II was desirous of obtaining this marvel, but unfortunately the owner of it had shortly before caused the white corners to be rounded off, thinking that this peculiarity detracted from its merit.

The Emerald as known to the ancients

THAT the Emerald was known to, and much used by, the ancients, admits of no question whatever. It is called in Arabia, Zamarut; in Chaldean, Ismaragdon; in Greek, Smaragdos; in Latin, Smaragdus; in Spanish, Esmeralda; in French, Emerando; in Italian, Smeraldo. It will appear that the name has undergone but little change in its course through the various countries and that it is evidently derived from the Sanskrit term, "Marahata." Ornaments made of this stone have heen excavated from Pompeii and Herculaneum. Similar ornaments have heen found in tho ruins of ancient Rome and on the Egyptian mummies. Theophrastns says that "the Smaragdus possesses also some peculiar properties, for, it assimilates the color of the water into which it is thrown

to its own color." "It is also good for the eyes; on which account, people wear ring stones made of it, for the sake of looking at them." Pliny writes about it at great length. In one place he says ;-" It is said that the tomb of Hermias, a prince of that island, which stood on the coast near the Tunnyfishery, was surmounted by a marble lion, the eves of which were made of theso Emeralds, (a proof of their large size and little value), and shot forth such lustro upon the sea as to scare away the fish; nor could the cause for a long time be disoovered, until the gems in the eyes were changed." The Emerald was for a long time called the Neromanus, on account of its being a great favorito of the Emperor Nero, who used to see the feats of the gladiators, through an eye-glass of Emerald.* Seneca speaks of Democritus of Thraco as having been possessed with the power of imitating the Emerald and of throwing the fire and color of this stone into a common pebble. Isidorus (Bishop of Seville, 630 A. C.) speaks of the Emerald thus :-"It surpasses in greenness all green stones and even the leaves of plants, and that it imparts to the air around it a green shimmer, that its color is most soothing to the eyes of those engaged in cutting and polishing the stone." Psellos, in the

[•] Maximilian II, was credited with the pessession of a ring set with an exercise by the inflection on which he discovered one of his courtiers helping himself to the contents of a gold cup, (filled with diacties—a present to the Emperor), white all were occupied in boking at a grand show, out of the windows of the reception room.



11th century, speaks of it; -"It is leek-green, playing easily into gold and blue, and that it has power, when mixed with water, to heal leprosy and other diseases." An Emerald mino, unquestionably known to the ancients, was discovered in the mountains of Zeharah, (near the Arabian sea,) by Monsieur Caillaud, a French traveller who had undertaken a scientific expedition, at the request of the Pacha of Egypt. Ho saw ropes, baskets, lamps, levers, tools and utensils of various kinds, lying about all over the place The Persians used the Emerald, in preference to all other gems, for adorning their jewelled goblets Ben Mansur says, "several bits of Emerald united together upon one surface, by means of mina (green glass) are called Astar." This was evidently borrowed of the Re-The tradition of the Sacro Catino may havo given the idea to the ancient nations. The Sacro Catino was the celebrated Emerald dish, which the Queen of Shoba had, along with other gems, offered to Solomon, (who deposited it in the Temple,) and out of which Jesus Christ was said to bavo eaten the Last Supper. It was taken out of Palestine by the Genoese Crusaders in the 12th century, and was pledged by them for 9,500 livres. It was afterwards redeemed and placed in the church of San Lorenzo, guarded by Knights of Honor and exhibited once a year with great ceremony. It was then seized by the French and carried to Paris, where, after careful examination, it was pronounced to be a puece of green glass. At the Congress of Vienna (1815), Victor Emmanuel, the King of Italy, insisted upon having the sacred dish, only for the purpose of restoring it to the church of San Lorenzo. The Italians say, that the substitution of the green glass for the real dish was made by the guardans of the sacred relic before it was taken to Paris.

In the Middle Ages the Emerald was used to ornament church treasures In the tara of the Popes there was an Imerald, one meh long and 1½ meh thick There was also a brilliant Emerald in the Crown of Chirlemagne

Ben Mansur divides the Emerald into 7 classes according to color —I The grass green, (like the beautiful color of the little worms that are often seen in the grass) II The Basil green III The Leaf green IV The Vordigris green V The Euphorbium green VI The Myrtle green VII The Sorp green (which is the worst quality—pale, opaque, and resembling frozen oil)

The Emerald has been in use amongst the Hingus from time immemorial. They use it profusely in ornaments and fancy articles. It is used as a pendant for the ear and brucelet for the arm Ranjeet Sing used a brucelet made of one of the finest Emeralds known. Emeralds are often drilled through and strung together to form beads or nose rings. They are used in snuff boxes or as paper slice, hooka pipe, &c.

Engravings on Emerald.

PLINY says, that on account of its beauty and costliness, "by the common consent of mankind, the stone was spared, being not allowed to be The fact is, that engraved real engraved." Emeralds are seldom met with. A very few can be mentioned One bore the intaglio head of the Emperor Hadrian, another, that of his consort Sabina, a third, the heads of both facing each other. An intaglio head of the Solar Laon, in full relief, with open jaws, furious and life-like, was ongraved upon an Emerald of a very fine color and lustre and of very great value. The Devenshire parure also shows a very large and beautiful Emerald cut into a Gorgon's head in high relief. The Persians were in the habit of ongraving upon Emeralds the figures of eagles or beetles, believing in their power of precuring royal favors and of averting tempests. One of these charms had engraved upon it a head of Jupiter within a coiled serpent resting upon a crocedile, surrounded by the symbols of tho The colebrated five Emeralds, which Planets. Teruando Cortez brought from the "Golden Castile" (America,) and gave as a wedding present to his bride in 1529, were wonderful specimens of Mexican ingenuity. "The first was in the form of a rose; the second is in that of horn; the third, like a fish with eyes of gold; the fourth was like a little bell with a fine Pearl for the tongue; on the rim of which was the inscription in Spanish, 'Blessed is He Who created thee.' The fifth, which was the most valuable, was a small cup with a foot of gold, and with four little chains of the same metal attached to a large Pearl as a button" Several texts from the Koran have been found on the Emerald. The Hindus have sometimes these stones carved into figures of idols. In his "Narrative of a voyage round the world in 1835-6-7," W. S. W. Buschenberger, M. D., mentions the following :- "In the temple of Boudha, in Siam, there is the figure of the god two feet high, said to be cut of a single Emerald. This idel had two brilliants, flashing light through the temple, in place of eyes, which cost in Brazil twenty thousand Dollars. The value of the whole god s inestimable. I doubted its genuineness, but Prince Momfani assured me it was an Emerald, and not a Beryl as I suggested."

The Cutting of Emerald.

THE Emerald is cut on a copper wheel with emery and polished on a tin one with rotten stone. It is generally trap-cut. The object of cutting it as a brilliant, with rounded tables, is to disguise flaws which would otherwise come to view. The Emerald can be cloven at right angles to its axis. Advantage is taken of this by the Indians, in whose ornaments flat stones of large size are often seen,—simply on this account.

The Price of the Emerald sits Flaws and Defects Initiations

In value, the Emerald ranks next to the Ruby Latterly it has risen enormously in value and has become a great favorite, owing to its uniform pleasing effects, both by night and day. The price depends to a great extent upon its color, for example,

A light color, almost white, is worth 5/a curit Lightest green 20/

A fair body of color .100/ Good color, with flaws, from £10 to £15

Pure color and clear . £20 to £30 ,

Very fine dark color, velvety, and without flaws, as high as

A perfect Emerald should be of a rich, soft, lively, pure, meadow green and without any flaws. But an Emerald without flaws is a rarity. Perhaps there is no other gem which suffers more from in equality of formation, color, transparency and from clouds and specks than the Emerald. The defict is inherent in the stone to such an extent that "an Emerald without flaws" has become a proverbal expression to mean unattainable perfection. Even the smallest Peruvian stone will show one or more specks when cut. In fact, the total absence of any flaws in it should put the would be purchaser on guard, as there is no other precious stone which can he more perfectly imitated in glass or counter-

feited, my, surpassed by paste There were several pamphlets in Plinys time, which gave directions for making counterfeit Emeralds The Rock Crys tal had to be heated and plunged into Verdigris, dissolved in Turpentine The Crystal became full of minute cracks, into which the coloring fluid en tered and tinged the whole substance eare was taken in so forming the surface as not to shew these cracks prominently upon it large flat Emerald, if so held as to reflect the light, will look as if it is silvered at the back, its green will disappear when its plane is brought to certain angle with the incident ray and in the same position it will exactly appear as a bit of looking glass This singular change is not to be observed in any other colored stone Ben Mansur says, that an Emo rald can be distinguished from the Jasper, the Green Laal (Spinel) and the Mina (green glass,) by its polish In fact, the lustro of the Emerald even in the palest specimens is such as to make it impossible to he mistaken for any other stone of similar color The ancient glass Emeralds were far superior to the modern pastes, in color, lustre and hardness A specimen of the former, found at Rome, had been recut and set in a gold ring Some jewellers, whenever they come across a fine green paste, get it cut and facetted for a ring stone and sell it for an Emerald to the mexperienced Cingalese are known to collect the thick bottoms of wine bottles, out of which they cut very good



Emeralds, which they sell to the sailors. The Brighton Emeralds are made of similar stuff. The lapidaries of the place purposely throw away the broken bottles into the sea, where, through the attrition of the shingle, they become transformed into natural pebbles and thus bring to the clever artists a good profit.

Pebbles of Quartz are often mistaken for Beryls and vice-verse. If Emerald or Beryl, the fracture will be in planes; if Quartz, it will never be in a straight line but conchoidal.

Marvellous and Medicinal Properties

This stone was dedicated to Mercury and was supposed to bestow wealth, eloquence and a knowledge of futurity. Used, as an amulet, about the neck, or set in a ring, it preserved women in child-birth and put evil spirits and vain terrors to flight. It was an infallible test of chastity and betrayed or punished its violation by flying into pieces. The following lines by Miss Landon was evidently suggested by this particular virtue of the stone:—

"It is a gem which hath the power to show,
If plighted lovers keep their faith or no
If faithful, it is like the leaves of spring,
If faithless, like those leaves when withering

"Take back again your Emerald gem, There is no color in the stone, It might have graced a diadem, But now its hue and light are gone" According to an ancient author, "he who dreams of green gems will become renowned and meet with truth and fidelity." Even in the modern times, the fall of an Emerald from its setting has been considered an ill-omen. When Georgo III. was crowned, a large Emerald fell from his diadem The superstations attribute to this—tho loss of America during his reign.

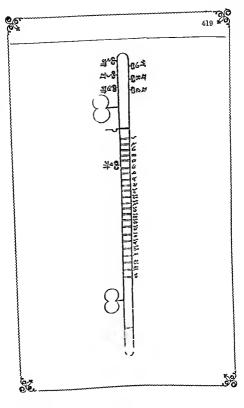
Being like all precious stones, " of a cold, dry nature," the Emorald had very potent medicinal virtues. Applied to the lips, it stopped hemorrhage. When hung round a child's neck, it prevented epileptic fits. It was a restorer of sight and memory. Where it failed to cure any disease or prevent any evils, it shivered into atoms, "being," says Botius de Boot, "as it were, bound to expel the evil or confess itself vanquished in the combat it sustains." Ho also gives directions for extracting out of Emeralds the coloring matter, which, taken internally, was considered a powerful remedy for many diseases Amongst the medicinal virtues of the Emerald, he mentions its power of curing dysentry, epilepsy, venomous bites, and pestilential fevers, and gives the following prescription for them :-" Pound the Emerald in an iron mortar, sift the powder through muslin, then cover it with spiritus uring (Sal volatile); the spirit must be distilled off, leaving the powder of a grey color, but which will communicate that of the Emerald to spirits of wine "

Celebrated Emeralds.

THERE are few Emeralds which are known to possess any historic interest. A finger-ring, (diameter, $\mathbf{1}_{4}^{1} imes \mathbf{1}_{8}^{1}$ inch), cut out of a solid piece of Emerald of the purest quality, with two Emerald drops and two collets set with Rose Diamonds and Ruhy borders, ----once belonging to the Emperor Jehangir of Delhi, whose name is engraved on itwas presented by Shah Suja to the East India Company, and was afterwards purchased by the late Lord Auckland, Governor General of India now in the possession of Hon. Miss Edon. There is also one in the possession of Duleep Sing, which is three inches long, two inches wide and 1 an inch It is of a rare heautiful color and with very thick. few specks. It was, we heliove, shown in tho Great Exhibition of 1851. The Russian, Saxon, and Papal Crowns contain heautiful and large Emeralds There is a Crystal of Emerald in the Austrian treasury which is said to weigh 2,000 carats. The Duke of Devonshire has one whose weight is nearly 9 ounces. It came from the Muzo Mines of New Granada, near Santa Fé di Bogota and was purchased by the Duke from Dom Pedro. It is two inches in diameter and is of the finest color. It is still unent.

There are some very good Emeralds in Bengal, amongst which we may mention those that are in the estates of the late Rajah Chunder Nauth Roy, of Nattore, of the late Baboos Kally Coomar Tagore and Soobuldas Mullick of Calcutta. Amongst the jewels, belonging to the estate of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore, Bahadoor, is an Emerald of about 31 ratis and of exactly the same color as the green grass, another of about 9 ratis and a third of about 5, (the last, without any flaws whatever)——all set in rings. There is also a large stone set in a snuff-hox and also one very beautiful paper-shee in the possession of the above Maharajah One Emerald set in a ring, belonging to the estate of the late Hon'ble Prosonno Coomar Tagore, c s 1, has engraved upon it, its owner's name in the Persan character. It is now in the possession of the Hon ble Maharajah





च्रथ प्रप्**परागः।**

षापीतपाण् तिवर पाषाण शुप्परागमंत्र्यः ।
कौरण्डको नाम खात् स एव यहि लोकितापीतः ॥ १८८॥
षालोकितस्य पीत खच्छः काषायक स एवीक ।
षानोलशुक्रवर्षे सिग्य घोमालकः खगुणै ॥ १८८॥
चार्यन्तलोकितो यः स एव खलु पद्मरागमन्त्रः खात्।
षापि चेन्द्रनीलसंत्र स एव कवित सनीलः सन्॥ १८०॥
मूल्यं वैद्र्योमणेरिव गहित छास्य रक्षणास्त्वविद्रः ।
धारणण्डस तहत् किन्तु स्तीला स्तमहो भवति॥ १८९॥।

पुपराग भ्रष्यात् प्रख्राजका वयान ।

घोडा पीलापनिवरेक्ष्ये मनोहर, बोडा वर्षेद् रह प्रश्लरको प्रध्मराम भवीन प्रस्तान कहते हैं, वही प्रध्न राज श्रीडा पीलापनिवरेक्ष्ये लालरज्ञ होनेसे मौरूएडक कहनाता है, चौर योडा स्वसीमायेल जरद रङ्ग चौर स्वक्ष घोने कापाय कहनाता है, चौर घोडा स्वृद्धी-मायेल पपेद रज्ञ चौर िखाय होनेसे सोमालक कह-लाता है, चौर बक्कत् लालरङ्ग घोनेसे पद्मराम कह-लाता है, चौर बक्कत् लालरङ्ग घोनेसे पद्मराम कह-लाता है, चौर बक्कत् लालरङ्ग घोनेसे पद्मराम कह-लाता है, चौर बक्कत् नील होनेसे पद्मराम कह-लाता है, चौर बक्कत् नील होनेसे प्रस्ताम कह-लाता है, चौर बक्कत् नील होनेसे प्रस्ताम कह-लाता है। इन्द्रनी कहनाता है।

रत्नपार्ची पिष्डितनोग कहते हैं गुख्राजका मूल चौर पहेरनेका फल लगुनियाके समान है। खाग् कर्ते बाज स्त्री गुख्राल पहेरनेसे नेडकेवानी हो सक्ति।स्ट्री

THE TOPAZ.

TRANSLATION

A certain ash colored stone having 388-390 a heautiful yellowish shade, goes by the name of If it is red with a yellowish shade, it is called Kauruntaka, if it is transparent and yellow with a pale red lustre, it is called Kasáyaka, if it is cool and white with a pale red shade, it is called Somdlaka, if it is deep red, it is called Padmaraga, and finally, if it is deep blue, it is called Indranila In worth and use, (say the authorities) Topazes resemble the coral,-with this difference, that by wearing a Topaz, a barren woman can get a child

> পত্যবাগ ৷ অনুবাৰ ৷

ষ্ট্যং পীতেৰ আভাযুক্ত মনোজ পাণ্ডুবৰ্ণ প্ৰস্তবকে পুস্প-বাগ কহে। সেই পুষ্পবাগ ঈষৎ পীতেব আভাবিশিফ লোহিতবর্ণ হইলে কোকণ্টক নামে, ঈষল্লোহিতেব আভা যুক্ত পীতবৰ্ণ ও স্বজ্ঞ হইলে কাষায়ক নামে, ঈৰং লোহি তেব আভাযুক্ত শুরুবর্ণ ও শ্লিশ্ধ ইইলে সোমালক নামে, অত্যন্ত লোহিতবৰ্ণ হইলে পলবাণ নামে এবং অত্যন্ত নীলবৰ্ণ ইইলে ইন্দ্ৰনীল নামে কথিত হয় ।৩৮৮।৩৮৯।৩৯०।

মণিশাস্ত্রবিং পণ্ডিতেবা কহেন, পুষ্পবাণেব মূল্য ও धारगकत, दिम्बी मनिव मन्म, दिरमस्व मस्य श्रृष्णवीन ধাৰণ কৰিলে ৰদ্ধা দ্ৰীলোবও পুত্ৰৰতী হইতে পাৰে।১৯১।

मुख्या

ण्यस्यस्यः कान्तरा खक्त्भावस्य चिक्कषः।
युवदो धनदः युष्यः युष्यरागमण्यमेतः॥ ३८२॥
प्रैयत्पोतञ्च सक्कायं खब्दं कान्तरा मनोष्ठरं।
युष्परागं भवेक्तुद्वं कथितं रत्नकोविदेः॥ ३९३॥
ब्रह्माद्दिजातिमेदेन तदिन्तेयं चतुर्विदं।
कथा चतुर्विधा तस्य सितापीतास्तितासिता॥ ३९४॥

सर्जमा ।

भणके मुखक गमान कात्तिविधिष्ट, खब्द, विक्रण, प्रवराज बक्तत् पाक और इभी तरक्षका प्रवराज पर्देरनेथे विकेद्केवाला केदकेवाला और वेधन दीलतवाला छोता है। ३८२।

रत्नपार्ची पण्डितके मनके चनुधार योडा जरह एवं, कावाविधिए, खब्क चीर मनोहर कान्तिविधिष्ठ ग्रुखराज चत्तम है। ইংছ।

जिस् तरस्ये बाह्मण, चिन्न, वैद्य चीर श्रद्भ चार जात होते हैं, उसी तरस् पुखराजभी चार जात होता है और यही चार किमिमके पुखराजसे सुपेद, जरद, बोदा मकेद भीर कृष्ण यही चारप्रकारकी कावा निक्तति हैं 1368 ।

TRANSLATION.

392. A Topaz, heautiful as the Sana* flower, transparent and smooth is sacred. By wearing this gem, a person who has no child may be blessed with one; and a poor man acquire riches.

393. According to the anthorities, a Topaz which has a fine yellowish shade, and which is smooth, is excellent

394 The Brahminical classification of castes holds also with Topazes . they emit white, yellow, whitish and black shades.

অসুবাদ।

শণপুলের তায় কান্তিমান, বছ ও চিক্ন পুসারাগ অতিপ্রিত্ত, এইপ্রকার পূজারাগ ধারণ কবিলে অপুত্র ব্যক্তি পুত্রবান ও নির্ধন ব্যক্তি ধনী হব। ৩৯২।

বত্নবিৎ পণ্ডিতদিগেৰ মতে ঈ্বংশীতবৰ্ণ, ছাযাৰিশিন্ট, স্বক্ত ও মনোহৰ কান্তিমান্ পুষ্পৰাগ্গই উংকৃন্ট। ৩৯০।

ব্ৰন্ধাদি জাভিভেদে পূল্যবাগ চাবিপ্ৰকাব হইবা থাকে, এবং পূল্যবাগ হইতে শুক্ত, গীত, ঈহৎ শুক্ত ও কৃষ্ণ এই চতুৰিধ ছায়া নিৰ্গত হয়। ৩৯৪।

^{*} Cannavis Saliva

मूचम्।

सच्चायपीतगुर गाचसरङ्गमुह्यं

सिम्बद्ध निर्मालमतीव सहस्रोतं।

यः मुध्यरागणकलं कलयेदसुष्य

पुष्पाति कीत्तिमितशीय सुखायुरर्धान् । ३८५॥ कृष्णुविन्द्रक्षितं रूचं धवलं मिलनं लघ।

कप्पावन्द्राह्मत रूच धवल मालन लघु। विच्छायं शक्षरागारं सुष्परागं मदोषकम्॥ ३८६॥

तर्जमा ।

जो चादमी चत्तम हायाविशिष्ट और वैचवेव जरद् रङ्ग, भारी, सिम्ब, वज्जत् वाफ, गोल चौर ठाएडा सुखराज पहरे, चव्की नाम्बरी, वल, सुख, उनर चौर दीलत च्यादा चीति हैं। ३८५।

जो पुचराज क्रिटेहार, नीचा छ'वा, घादारङ्ग, घोड़ा मधना, घोजनमे फाल्का, कमरङ्ग घीर दुधक, ऐसा पुखराज वज्जत् खाराफ घें । ३८६।

र्रति पुखराजका बवान ।



TRANSLATION.

395 A man, who wears a faultlessly yellow Topaz possessed of a beautiful shade, weighty, exceedingly cool, flawless, and perfectly round, reaps fame, heroism, happiness, wealth, and length of days.

396. That Topaz which is spotted, rough, white, yet dirty, light, void of lustre, and containing grits, is noxious.

षञ्बाम।

বে ব্যক্তি উত্তম ছামারিশিউ, গীতবর্ণ, গুৰু, বিশুদ্ধবর্ণ, ক্লিম্ন, অত্যন্ত নির্মান, উত্তম গোলাকাব ও অত্যন্ত শীতল পুশ্পরাগ ধাবণ কবে, তাহাব কীর্তি, শৌর্য্য, হৃথ, আয়ু ও অর্থ বৃদ্ধিত হয়। ৩৯৫।

বে পূজাবাগ বিন্যুচিহ্ণাজিত, ৰুজ, ধ্বলবৰ্ণ অথচ মনিন, ওজনে লযু, ছাবাবিহীন ও শৰ্কবাযুক্ত, সেই পুজাবাগ দোষদূষিত। ৩৯৬ I

ইতি পুশরাগ।



THE TOPAZ.

Its Properties.

HE Topaz belongs to the trimetric or rhombic system of crystallization Its specific gravity is greater than that of the Diamond-being from 3 6 to 4 2, but it is next to it in hardness-being 8 in the scale It is scratched by Diamond only and can very easily cut Quartz It possesses double refraction, though in a small degree; acquires electricity by heat, friction and pressure, and retains it for se veral hours. It is transparent and its lustre is vitreous. It is infusible in charcoal before the blow-pipe, but, under the influence of strong heat, the surface breaks immediately as blisters aro formed thereon With borax it fuses into clear glass and gets blue with cobalt solution. It yields bydro fluoric acid by the application of sulphuric acid, but is not affected at all by muriatic acid Its cleavage is perfectly basal, i.e., it breaks with a flat surface at right-angles with or across the prism. The Topaz is generally divided into two kinds, according to the difference in the chemical composi tion. Those called the Oriental Topaz, are composed of nearly pure alumina; those known as the Occidental, contun little more than 57 parts of alumina -the rest consisting of silica and fluorine.

Where found: Varieties of the Topaz

THE Topaz is found in almost all the parts of the world, though it varies in color and appearance in almost every country, where it is met with. Next in importance to the Oriental Topaz, is that variety which comes from Brazil. Those from Villa Ricca have a deep orange tint. The crystals, seldom exceeding 2 or 3 inches in length, are generally found in soft loose sandy clay. Those that come from the province of Minas Geraes, are found in rounded pebbles, perfectly pure and colorless. These are called "pingas d'agoa" or "gouttes d'cau," or the "Novas Minas," and, by the Portuguese, the "Slave-Diamond." These are capable of much higher polish than rough crystal. Some specimens of this kind have been found in Tasmania, where also some blue and green ones have heen discovered, though these are more water-worn than those of any other place. Topazes of a fine pale blue color are also found in the cast of Scherna, together with Beryl, Felspar, Quartz, &c ; also in the Ural, north of Katharinhurg, in Graphic, Granite and Allute. The Saxon Topaz, found at Altenburg, is generally of a clear, transparent yellow, extremely hard and very brilliant. It hecomes perfectly white by being put in a small crucible or in a tobacco pipe, covered with ashes or sand, and subjected to heat. It is also found in the Voigtland, 2 miles from Anerback. sometimes covered with a yellowish marl. The

Bohemian Topaz is of a deep hyacinth and sometimes of a brown hue The so-called German Topaz is nothing more than a sort of glassy spar. The Topaz is also found in Connecticut, the United States, Pcru, Ceylon, Asia-Minor, Great Britain, and Ireland, and the Hebridis.

The Topaz as known to the Ancients.

This stone was called in Hebrew,—"Pittdoh," by Professor Aaron Pick, and "Pittdoh," by Gesonius, who (the latter) thought, that it was derived from the Sanskrit word Pita (yellow) and that the Greek "Topásion" is a transposition from "Pittdoh" to "Tipdoh." But the Topazion (found in an island of the same name in the Red Sea,) is not what is known as the present Topaz Topazion is the modern Peridot, while, according to some, Chrysolite was the ancient name for the Oriental Topaz. The Topaz is one of the stones noticed in the Bible and was, in the Middlo Ages, considered to be the emblem of Apostle James the Younger. It was also held in high esteem by the Greeks and Romens

Cutting and Engraving

The Topaz is cut on a leaden wheel with emery and polished with tripoli. The form of cutting is the œ.

full Brilliant, leaving the table smaller and the bezil rather deeper than in the Diamond. The grain (which is the technical expression for the cleavage surface) is well nigh impossible to polish and it becomes necessary for the lapidary to take a small angle from the cleavage plane, instead of cutting it flat, in order that the highest degree of hrilliance might be obtained. Now-a-days, few stone-cutters pay the necessary amount of attention to secure the intense whiteness and lustre, which it should have, and the consequence is, a well-cut Topaz has become a rare article. The Goutte d'eau, if cut as a Brilliant, with a small table, will make a beautiful ornament.

There are still to be found several intaglies engraved on this stone by the Greeks. The Emperor Hadrian (Hadrianus Guildmus of Naples) was said to possess a Topaz seal-ring, upon which the following lines were engraved:—

"Natura deficit Fortuna mutatur Deus omina Cernit."

Pliny says, that this stone was found in the Alabaster mines, near the Egyptian city of Thehes. In the Bibliotheque Royal in Paris, is a signet-ring of Topaz, upon which the portraits of Philip II. and Don Carlos, are deeply cut. There is also a Topaz, of a citron-yellow tint, which represents an Indian Bacchus. There is in St. Petershurg a specimen of excellent workmanship on the Topaz,



upon which is engraved the Constellation of Strius. A Persian jeweller is reported to be in the possession of a Topaz amulet, through which the words "From God alone is success" are bored, in Arabic characters During his visit to Rome (1524 to 27), Cellini mentions, as one of the three finest antiques procured by him from that place, a perfect Topaz, as big as a hazel nut, upon which was engraved a head of Minerva. But whether the stone was a real Topaz or not is a matter of question

Its Price Imitations.

THE Topaz is not so much liked now as it was 50 years ago. The fact 18, it is now only used in the chcapest jewelry, in the jewelling of common Swiss clocks and for optical purposes The rough stones, used for optical purposes, realize from 5 to 10s. per pound avoirdupois The pink Topaz fetches better value-the price ranging hetween 40s, to £20 per ounce, according to the depth of the pink color. The Topiz is called by different names according to the difference of color in the specimens :- The Nova Mina is colorless; The Brazilian Sapphire is light blue; the Aquamarine is greenish; the Brazilian Chrysolite is greenish yellow; the Brazilian Ruby is the artificially obtained pink or rose color. It should be distinctly borne in mind that the fine pink in the Topaz is not natural;

it is obtained by covering a brownish yellow Topaz with sand and putting it to a low red heat. The experiment can also be tried by wrapping up the stone in German tinder, bound with thin iron wire, and then exposed to heat, either hy setting fire to it or hy putting it hefore the blow-pipe. Those which are of the peculiar brown color obtain this pink hue; while the pale yellow ones hecome permanently white The Topaz can be distinguished from the Chrysoheryl or a yellow Sapphire hy putting their electrical properties to the test. A yellow variety of the Quartz is sometimes sold for the Topaz, but a careful reference to the characteristics of each will set the question of identity at rest. The Cairn-Gorm (a variety of the Quartz) is often called by the term "false Topaz," owing to its similarity with the stone The Egyptian Topaz is sometimes passed off for the Oriental, but it is less hard. The true Topaz should be of a hright citron, and at times, of a bright clear gold color. The soft satur-hke hue is the one most preferred.

Marvellous and Medicinal Properties attributed to the Topaz.

Like the Ruly, the Topaz was gifted with the power of giving light in the dark. A Topaz given by Lady Hildegarde, (wife of Theoderic, Count of Holland) to Monsienr Adelbert, was known to give such a brilliant light throughout the chapel where

it was kept, that prayers could be read without the help of a lamp. According to the Ancients, the Topaz would become pale and obscure if it came in contact with poison. It soothed anger and quenched the heat of hoiling water. It drove away sadness and night-mares, strengthened the intellect, sharpened the wit, bestowed courago and if hound on the left arm or hung round the neck, set in gold, it dispelled enchantments. If worn on the left hand, it preserved from sensuality. It was also supposed to possoss great medicinal virtues When powdered and taken in wine, it cured asthma, sleeplessness and many other diseases.

Celebrated Topazes.

The finest Topaz on record is the one which Tavernier saw in the treasury of Arungzebe, when he had an audience with that Emperor in 1665. It weighed 157% carats and was of an exactly octagonal shape, with two rows of small facets, along the top of the besil It was purchased by the Emperor, at Goa, for Rs. 1,80,000.

The Braganza, of which fuller notice has been taken under the heading, "Celebrated Diamonds," is universally believed to be a white Topaz of unusual brilliancy and extraordinary weight. There is a heavy crystal at St Petersburg, which is 4½ inches long and 4½ wide, weighing 31lbs A big lump of white Topaz, now in the British Museam,

was many years ago used by a London Marine store-dealer as a door-weight, and afterwards sold hy him for 3 shillings. Its weight is about 12 lbs. avoirdupois.

There is, in the possession of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore, Bahadoor, a very large Topaz, of a beautiful extron tint, weighing about 103 ratis, of very great hrilliance and without any flaws whatever. There is also one, with the Maharajah, which is of a smoke-color and weighs about 200 ratis. It forms the pendant to a neck-lace of his family-idol at Moolajore.



ग्रघेन्द्रनीतः ।

मलम्।

इन्द्रनीवस्य सम्भूतिः सिंहवदीपमध्यतः। नद्या रावणगङ्गायाः क्र्वे पद्माकरे स्नृता ॥ ३६७ ॥ तचासिताअहवस्टसमापिस्टङ्ग-गाङ्गीयुधाङ्गहरसकापिमुच्छैः।

शुक्ते तरेच कुन्तुमेर्गिरिकाणिकाया-कस्मिन् भवन्ति मणय: महशावभाम' ॥ हर्द्रः ॥

रुन्द्रनील या नीलम्का वयान।

तर्जमा।

सिंहतदीपने चन्तर्गतमे राववगद्गाके करिट पश्नाकर देशमे पुन्द्रनील या नोला पयदा होता है। ३१७।

तामाम इन्द्रभीवका रह समान निक्ष घोता, को द को द नीवकमत, नीवास्तर, बक्कत् माफ तत्तवार, अमर, रुष्ण-जीका बदन, महादेवजीका कल्ड, मधुरके पुंकका चार,

चीर काले चपराजिताका फुनके समान हैं। ३८८ ।

E.,

SAPPHIRE. Now glow'd the firmament

With living Sapphires-Par Lost B IV

TRANSLATION.

397. The Sapphire is found in the country of Padmákara near the river Rávana Gangá in

398. All Sapphires are not of the same color. Cevlon. Those found in Ceylon resemble one or other of the following objects — The blue lotus, a cloth dyed in blue, a polished sword, the Bhramara, sr. Krishna,† Mahádeva's threat,‡ the eye in a

peacook's tail, the black aparajita § व्यथ हेन्द्रनीत।

অমুবান।

নিংহল দ্বীপের মুধ্যগত বাবণগঙ্গাব সমিহিত পুৱা

কব প্রদেশে ইন্দ্রনীল উৎপন্ন হয়। ৩৯৭। ইন্দ্ৰনীলেৰ মধ্যে কতকণ্ডলি নীলপম, নীলৰদন, হুমা-ৰ্জিত করবান, অমৰ, প্রীকৃষ্ণ, মহাদেবেৰকণ্ঠ, মতৃৰ পুচ্ছান্ত-

ৰ্গত চন্দ্ৰক, ও কৃষ্ণাপৰাজিতাপুশ্পেৰ সদৃশ হ্য। ৩৯৮।

[†] A God analogous to the Capad of classical mythology His color is represented as beautifully gray

The throat of the Great Degree of the Hintu Triad is blue like availoused the possess that areas at the far famed churning of the University of the possess that areas at the far famed churning of the Vasty Sev-along with the moon the nectar the far and lovely Syr-the Impersonation of all lovelmess and gree-Malakkera took. in the poson to sive Nature and her works, but could not awallow it in the poson to sive Nature and her works, but could not awallow in a passage in Hudu Mythology nivalled only by the Sufferingst Caivary

[§] A name applied to several Itants, Chtoria Ternatea, Maridia Quadrifolis, Scalania -Larguisca.

मूलम्।

यन्ये प्रसन्नपयसः पयसानिधातु-रम्बत्विषः शिखिगलप्रतिमासायान्ये ।

रम्बुत्वमः शिखगलप्रीतसाक्षणान्य नीलीरसप्रमयद्वदुदभाख्य केचित्

केचित्तया समद्कोकिनकण्डभासः ॥ ३९९ ॥ एवभाकार्शनस्य वर्षेणोभाभिमाधिनः ।

जायन्ते मणयस्तिसिज्ञिन्द्रनीला महाग्रणाः ॥ ८००॥ स्रोतनीलं रक्तनीलं पीतनीलमद्यापिया। स्रप्पानीलं तथा चौर्यं बाह्यणादिक्रमेण तु॥ ४०९॥ काथा चतुर्विधा तस्या भृणु बच्चामि लहाणं।

कावा वतुत्रया तसा मृजु वस्तान सम्बा सितच्छायो भवेदिमसाम्रच्छायसु चिन्वाः। पीतच्छायसु वैधाः साद्यचः सप्तादीधितः। १०९॥

तर्जमा ।

ससुन्दरका साफ पाणि, सबूरका गला, नीवरज्ञ अवका बद्बदा शौर कोकितका कछ हुन्नी गव चीकाँके समान रज्ञ इन्द्रनीतमे देखा जाता है। श्रीर इसी किविसका इन्द्रनीत सिंच्छदेसमे पबदा होता है। ३८८। ४००।

नित्तरहरे नास्नण, चिन्तु, वैख चीर ऋद्र चारजात होते हैं, उसी तरह नीनमूमेभी चारजात होते हैं। सफेदीमायेल नीला, सुधीमायेल नीला, जरदीमायेल नीला हीर सेयाहीमायेल नीला यही चारजात होता है। ४०९।

कोर सवाकामायन नोना यक्षे चारजात काता का 189र पर पूछी चारजातका दल्दनीन चारजातने खायके गरि देखे जाना जाता के, बास्त्रानकों के परे हाया, चीन वर्णको सुख काता, वे व्यवणकी जर काया चीर प्रद्रवणकी वे वा कावा नाता के, का प्रदे काया चीर प्रद्रवणकी वे वा कावा नाता के व्यवणकी कर का का प्रदे का प्रदे का व्यवणकी वे वा कावा नाता के व्यवणकी वे वा कावा नाता का वर्णकी के प्रदे के 180२।

€%.

TRANSLATION.

399—400. The 'dark blue occan,' the peacock's throat, the hubbles of blue water and the throat of the mad Kokila.* These kinds of the Sapphire are generally found.

401-402. A blue Sapphire with a white shade is a Brahmin; a blue one with a red shade is a Kshetrya; a Sapphire of the same color with a yellow lustre is a Vaisya; and finally a blue Sapphire shining in dark lustre is a Sudra.

पञ्चार ।

সমুদ্রের নির্মান জলবাশি, মন্ত্র্যের কঠ, নীলবদেব বৃদ্রুদ্ধ ও মতকোজিলকঠ, এই সকল পদার্থের সদৃশ বর্ণ ই সচবাচর ইন্দ্রনীলে লক্ষিত হয়, এইপ্রকাব বর্ণবিভূষিত ইন্দ্রনীল সিংহলে জন্মিষা থাকে। ৩১১। ৪০০।

ব্রাহ্মণাদি বর্ণতেদে ইন্দ্রনীলের খেচের আভাযুক্ত নীল, বক্তের আভাযুক্ত নীল, পীতের আভাযুক্ত নীল এবং হৃষ্ণের আভাযুক্ত নীল, এই চতুর্বিধ বর্ণভেদ হইবা থাকে। ৪০১।

উক্ত চাবি জাতি চাবিপ্রকাব ছাযা ধাবা পবিজ্ঞাত হওযা যায, ব্রহ্মবর্ণের খেতজ্ঞাযা, ক্ষত্রিবর্নের বক্তজ্ঞাযা, বৈশ্যবর্ণের পীতজ্ঞায়া এবং গুদ্রবর্ণের ক্লচ্ছাযা নির্দিন্ট হুইয়াছে। ৪০২।

Vide antè.

मूचम।

यथा च पद्मरागाणा जातकवितय भवेत्। दुन्द्रनीलेपुपि तथा द्रष्टव्यमविश्वेषत ॥ ४०३॥ यस्य मध्यगता भातिनीतस्येन्द्रायुधप्रभा । तिमन्द्रनोलिमित्याज्ञमें चांच मुवि दुलें में । ४०४ ॥

यस्त वर्णस्य भूयस्वात् चीरे गतगुणे स्थित । नीलभाव नयेत् सब्ब महानील स उचाते ॥ 8०५ ॥ इन्द्रनीवस्त नीवामा पद्मरागस्त लोहित।

चानील मुक्त सिग्धस मणिमरकता भवेत्। ४०६॥ षालोचितमापीतञ्च खच्छ कापायक विद् । श्रापीतपार्ख्यापाण पुष्परागीऽभिधीयते।

तमेव लोचिताकारमाञ्च कौरएडकं वुधा ॥ ४०७॥ सर जमा ।

खत्तम, मध्यम चौर चथम चर्चात् पष्टिला, दोस्रा चौर तिस्र दर्जेक डिसावन जिस् तरहेसे पद्मराग तिन विचिम्का होता है, उसी तरहेंचे नीलामी तिन किविम्का

चोता है। ४०३। जिस इन्द्रगीलके बीचमे इन्द्रधनुकाके ममान आभा

निकेल्ति है, वह इन्द्रनील वडत दुर्नभ है, खनायास मिल्नेसे बद्धत किमतको विकता है। ४०४।

जो इन्द्रनील अप्ने एक और गुणे दुधने रहने चे तामाम दुधको नीनरद कर्दे, उसको मधानीन बोल्ते हैं 18041 रतके मध्ये जो नीलरदू, वह इन्द्रनीन, जो स्वा

मायेल, वह पद्मराग, जो सबुजरह, वह पाझा, जी योडा नीलापनानियेक्वये और योडा सुख, वह कामाप, जो पीलापनिविद्धिये थोड़ा सादा, वह पुख्रान चीर वृत्ती पुल्याण सुखरद्ग भीनसे कीरगढक कल्लाता

चै। 8०€। ४०७।

TRANSLATION.

403. As Rubies are good, middling and bad, -so it is also with Sapphires.

That Sapphire whose interior gleams with

the iris, is a raro gem of priceless worth.

That Sapphire which being thrown into a quantity of milk a hundred times its hulk, paints the whole mass with its native blue, is entitled a mahánīla.

406-407. Of gems, those which are blue, are Sapphires; those which are red, are Rubies; those which are green, are Emeralds ; those which are red with a shade of yellow are Kasáyas, those which are ash-colored with a yellow shado, are Pushparagas; those of the last which are red, are called Kaurandakas.

অহুবাদ।

উত্তম, মধ্যম ও অধমভেদে পল্লবাগ যেমন ত্রিবিধ হয়, ইন্দ্ৰনীলও সেইৰপ ত্ৰিবিধ হইয়া থাকে। ৪০০।

যে ইন্দ্ৰনীলেৰ মধ্যইইতে ইন্দ্ৰায়ুধেৰ ভাষ আভা বিনিঃ স্ত হয়, সেপ্রকার ইন্দ্রনীল অতিহুর্লভ, দৈবাৎ প্রাপ্ত हरेतन महामृत्ना विकीण हरेतज भारत । 8·8 I

যে ইন্দ্ৰনীল শতগুণ ছুদ্ধে নিকিপ্ত ছইয়া নিজনীলবৰ্ণে সমুদায ভূগ্ধকে নীলবর্ণ কবে, তাহাকে মহানীল বলে। ৪০৫।

বড়েব মধ্যে যেগুলি মীলবর্ণ, তাহাবা ইন্দ্রনীল; যে ওলি লোহিতবর্ণ, তাহাবা পন্মরাগ; যেওলি হবির্ণ, তাহাবা ম্বকত; যেগুলি ঈ্ষংপীত্যুক্ত লোহিত্বর্ণ, তাহারা কাষায ; যেওলি ঈষংপীতেৰ আভায়ুক্ত পাতুৰৰ্গ, তাহাবা পুষ্ণাগ এবং সেই পুষ্ণাবাগ লোহিতবর্ণ ইইলে কৌবতুক বলিয়া অভিহিত হইয়া থাকে। ৪০৬। ৪০৭।

ष्रयेन्द्रनीलगुणाः।

युक्: स्विग्धय वर्णाञ्चा पार्य वर्नी च रङ्गकः । इन्द्रनीतः समाखातः पञ्चभिः समदायुगैः ॥ ४००० ॥ प्रमाणेऽस्रो युक्सनि कुलष्टहिकरो गुक्: ।

खे इं स्वयत्त्रवाभाति स्वित्यो धनविवर्द्धनः ॥ ४०८ ॥ वालार्काभिमुखो नीलो वमन्त्रीला ग्रिष्ठा हि यः। वर्णादो नाम नीलोऽय धनधान्यविवर्द्धनः ॥ ४१० ॥

नीलाका गुण।

तर्जमा।

ग्रदत्तः खिन्यत्तः, पणोद्यतः, पार्श्वधर्तितः शीर रञ्जकतः यशे पाच तरकका गुण्यक इन्द्रनील श्रेष्ठ श्री ४०००।

को इन्ह्रनील कट्ने कोटा श्रीर श्रोजनमें भारी, उसको ग्रुत कहते हैं, गुरू इन्ह्रनील श्रावलात्की क्यादाभी कर्ता हैं; श्रीर जियले होनेचे हामेचा सुहब्यत् होति है, उसको किया कहते हैं, क्याय इन्ह्रनील दीवतकी हिंद्व करता है। 8°टा

सुवस्के सूर्य के सामने रखनेसे जिस् रून्ट्रनीवसे नीन-वर्ष भिक्षा निक्ले, उसकी वर्षाटा करते हैं ; सीर वर्षाटा रून्ट्रनील सरियेसे धन सौर धान्यकी टहि सीति है।8९०।

É..

Qualities of the Sapphire

TRANSLATION

408 Weight, coolness, depth of color, the quality of being parsvavarti* and beauty, invest a Sapphire with matchless worth

409 That Sapphire which combines great weight with small bulk is called Gurut such a gem cen duces to increase of family That which always gives out moisture is called Snigdha † A Snigdha Sapphiro brings on accession of wealth

That Sapphiro which, on being exposed to the morning sun, flames in a blue effulgence, is termed Varnadhja It brings prosperity

इम्मुनीत्वद छ।

अञ्दाम ।

গুক্র, ম্লিন্তর, বর্ণাচ্যর, পার্যবর্তীর, ও রঞ্জকর, এই পঞ্চিধ গুণভূষিত ইন্দ্ৰনীনই শ্ৰেষ্ঠ। ৪০৮।

যে ইন্দ্রনীল প্রমাণে অতিযন্ন হইয়াও ওছনে অধিক ভাবী হ্য, তাহাকে গুৰু কহে, ওক ইন্দ্ৰনীল বংশহৃত্বিবৰ, যাহা হইতে দৰ্বদা' শ্ৰেহ নিৰ্গত হয, তাহাৰ নাম স্নিদ্ধ, শ্লিগ্ধ ইন্দ্রনীল বনরদ্বিকাবক। ৪০৯।

প্রাতঃকালের সূর্ব্যাভিনুৰে ধারা কবিলে যে ইন্দ্রনীল হইতে নীলবৰ্ণ শিৰা নিৰ্গত হৰ, ভাহাকে বৰ্ণাচ্য বলা याय, वर्गाण रेखनीन बांबा ध्नशास्त्रीन दक्ति थाथ र्य।८১०। T Vide ante.

⁺ Laterally heavy • See page 413.

म्चम्।

स्काटिकं रजतं खणेमनादा वसु तैनमं। पार्क्स्यत नीनमणे पार्खं बर्नो वग्र'प्रद्'॥ ४९९॥ चार्ख्यं यस्य नीनस्य तमसेय समावतं। रज्जको नाम नीनोऽय चीवग्र'कुनवर्द्धनः॥ ४९२॥

षयेन्द्रनीवटोपाः । दोपाझीले प्रवस्थामि नामभिर्वद्यपेय पट् । ष्रभ्यकपटलस्थाया पासचित्रक एन प । एद्रम्ममर्भेरीस्थाणि महानोलेषु दूपर्वं ॥ ४१३ ॥

तर्जमा ।

लिए इन्द्रनीतके एक जगन्ने स्कटिक, रूपी, घोषा घथवा चौरकोद चमकनेताला परार्घ देखा जाय, उत्का नाम पार्श्वचर्त्ता चाजवर्त्त कस्ते है, उत्के परेरवेषे नालरी चौति चै। ४९४।

जो इन्द्रनील किसी वर्त्तनमे रखनेसे तामाम वर्त्तनको छत्त्वारङ्ग कर् दे, उस्का नाम रख्नक है; रख्नक इन्द्र-नील दीलत, नाम्बरी श्रीर श्रावलातकी दृद्धि कर्ते हैं। ४१२।

नीलाका श्रयेव।

श्रम्बक, वास, चित्रक मृद्यमे, श्रम्भगर्भ श्रीर रीख यशी कप्रकारका स्रवेद इन्द्रनीलमें श्रीता है। ४९३।

TRANSLATION.

411 That Sapphire through which any lustrous substance such as crystal, silver, gold, is seen, is entitled pārsvavartī. A pārsvavartī Sapphire hrings on fame.

412. That Sapphire which, when placed in a pot, darkens it all through, is called Ranjaka. This gem increases wealth and is conducive to fame and increase of family.

Defects of the Sapphire.

413. Avraka, Trása, C'itraka, Mridgarva, Asmagarva and Raulshya are the six defects of Sapphires.

धर्वाम ।

य रेखनीत्नव **এ**रुस्स्य स्कृष्टिक, दङ्ग्छ, यर्ग वा पण কোন তৈজন পদাৰ্থ লক্ষিত হয়, তাহাৰ নাম পাৰ্য বৰ্টী, পার্শ্বর্তী ইন্দ্রনীল হইতে যশোলাভ হয়। ৪১১।

যে ইন্দ্ৰনীল কোন পাত্ৰে স্থাপন কবিলে সমুদায পাত্ৰটা কৃষ্ণবৰ্ণ ধাৰণ কৰে, তাহার নাম রল্লক, বল্লক ইন্দ্রনীল नक्सी, यग ७ वः म वर्जन करत । ४>२।

हेम्मनीत्वत स्थि।

অত্ৰক, আস, চিত্ৰক, মৃদুগৰ্ভ, অন্মগৰ্ভ, ও রোক্যা, এই ছ্যপ্ৰকাৰ দোহ ইন্দ্ৰনীলে লক্ষিত হইয়া থাকে। ৪১৩।

मृबम ।

षस्वत् पटनं यध्यन् तद्श्वसनिति सृतं। धारणे तस्य गन्यन्तिरायुद्धैव विगद्यति ॥ १९४ ॥ मेदसंत्रवष्ठन्तासस्तेन दंष्ठिभयं भवेत्। चिववणे द्वाभाति चिवसः कुलगायनः ॥ १९५ ॥ मृत्तिसा यस्य गर्भस्या खल्यते रलकोविदै।

मृत्तिकागर्भकं नाम तग्दोपजनक भवेत्। ४९६॥

तर्जमा।

जिस् इन्नीसके उपरके हिस्से मे अध्यक्षके समान काया मालुन को, उस्की अध्यक कहते है, इस् तरहका इन्ह्र नील पहेर्नेसे उसर और दीनत नाम शीति थे। ४९४।

जिल् पिर्निस उपर चार दानत नाग्र छाता छ। छरका जिल् निग्रानके जरियेचे इन्द्रनीन दुटा मानुम छी। उस्को चास कहते हैं, चास खयेवका इन्द्रनीन दात

काटनेवाले जानवारोंका खीक पथदा करता है। ठो इन्द्रनील कोइप्रकारका रज्ञ रखता हो, उसका नाम चिचका चिचक पायेवका इन्द्रनील कुलका नाम कर्ता है। ४१५।

जिस्के बीचके डिस्होंसे साङ्क्ति हैंगा मानुम डोण उस्को मृद्गर्भ करते हैं, मृदगर्भ चयेवया नीला जिल-

ंदिकी विमारी पयदा कर्ते हैं। ४१६। *

Translation.

414. A Sapphire the surface of which wears a mica-like sheen, goes by the name of Avrala.

Such a gem brings ahout loss of wealth and life.

415. That mark in a Sapphire which at first sight looks like a rift, is called Trása. A Trasa renders one liable to hites That Sapphire which is party-colored, is called Citraka: it causes loss of family dignity.

416. The Sapphire which contains dirt, has the sobriquet of *Mridgarva*. This gem produces a variety of skin-diseases like itching.

जङ्गाम ।

যে ইন্দ্রনীলের উপরিভাগে অত্রেব ভাষ ছামা দৃউ হয়, তাহাকে অত্রক কহে, এইপ্রকার ইন্দুনীলধারণে আয়ু ও সম্পত্তি বিনতী হয়। ৪১৪।

যে চিহ্ন ৰাষা ইন্দুনীলকে সংসা ভাষ বলিয়া বোধ হয়,
তাহাকে আস কহে, আসবারা দংট্রিভ্য উৎপন্ন হয়।
বাহা নানাবর্গে চিত্রিত, তাহাব নান চিত্রক, চিত্রক সোনে
কুম বিনতী হয়। ৪১৫।

যাহাব মধাভাগে মৃতিকা সমিহিত থাকে, তাহাকে
মৃণ্যও কহে, মৃণ্যওশোষ হইতে গাত্ৰকণ্ণ প্ৰভৃতি নানা
ছকের রোগ উৎপম হয়। ৪২৬।

म्चम्

हपत् प्रवच्चते गर्भे चय्तमार्भ विनासकत्।
स्वेतामित्रत यन् तद्रीच्चं कथितं वधेः।
तिखान् भृत दरिष्ट्रवं देशव्यागय जायते॥ ४९७ ॥
दीपैस्यको ग्रेणेंक इन्द्रनीचो महामणिः।
यस्य इन्ते भवेत्तस्य चावृवंतयस्वरः॥ ४९८ ॥
इन्द्रनीने भृते सुद्दे औरिरेव मगीदित।
चायुः कुत्त यसो वृद्धिचेत्री सोमा च बहुते॥ ४९८ ॥
सार्यमाणस्य ये दोषाः पद्मरागमणेर्युणाः।
सारणादिन्द्रनीचस्य तानेवासीति मानवः॥ ४२० ॥

तर्जमा ।

जिस दन्द्रनीवकी चन्द्र पायरका सा दुक्रा मालुम शोष, उप्का नाम चन्नगम कहते हैं, चानगभेका मीवा जान मारजान्ता है। जिस्से विनिद्धे सभान सफेर किटे मालुस ही, चर्चात् दुधक हो, उसको रीख कहते हैं, रीख्य चयेवका सन्द्रनीय जो चार्सी एक्टे, उसको देग कोटकर भागना हो। 2001

वेश्रयेव ज्ञनस्याली इन्द्रनीत्मणि जिम्के पाश रहे। उसकी उमर, जोर श्रीर नाम्बरी ज्यादा होण। ४९८।

जी चारमी वेचयेव इन्ह्रनील पहेरता है, नारायण उम्मे घोष घोता है, चौर उम्क्री उमर, यान्ट्रान, नामरी, चल्लेल, दीवत चौर प्रमुख चार होए। १९८।

गुणसुक रक्षराम परेर्नेथे जो फब्टा होता के, गुणसुक रक्ट्रनीन परेर्नेथे बधो फब्टा होता है, प्रवेवटार सामिक परेर्नेथे जो मोक्सन होता है, प्रवेवटार रक्ट्रनीन परेर्नेथे बधी लोकसान होता है। ४००।

TRANSLATION. 417. That which contains gritty fragments, is called Asmagaria This defect is destructive. That which is rough, is called Bankshya Banishment is the consequence of wearing this jewel.

418. A flawless, sterling Sapphire brings its

wearer, strength, fame and length of days.

419. The man who wears a Sapphire of spotless chastity, finds favor with Narayana* and acquires longivity, family dignity, fame, understanding and wealth.

420. Those good and bad consequences which follow the wearing of a Padmardga combining good and bad qualities, are also produced by the wearing of a Sapphire of a like nature.

অসুবার !

যাহাব অন্তবে প্ৰস্তবঞ্চ লক্ষিত হয়, তাহাব নাম অশ্ৰ গর্ভ, অশাগর্ভ দোষ বিনাশেব হেছ়। যাহা শর্কবাযুক্ত, णशिदक दर्शका वल, त्रीकारमायां छ हेस्सीनशारी ব্যক্তিকে দেশত্যাগ কবিতে হয়। ৪১৭।

(मायरीन व्यथि खन्यूक हेन्नुनील मिन याहान निक्छे थारक, जोशेव बायू, वन ६ वन बृद्धि १व। ४०४।

যে ব্যক্তি বিশুদ্ধ ইন্দ্ৰনীল ধাৰণ কৰে, নাবায়ণ তাহাৰ প্রতি প্রদম হন, এবং তাহাতে আয়ু, বুল, য়শ, বুদ্ধি, লক্ষী ও সমৃদ্ধি বৰ্দ্ধিত হয়। ৪১৯।

ওণদম্পন্ন এবং দদোৰ পদাবাগ ধাবণে বে ওণ ও বে দোষ হয়, ইন্দুনীলেবও তজ্ৰপ হইয়া থাকে। ৪২০।

^{*} The Preserver of the Hundu Triad

मुचम।

युरभावकितमावायेतेषां नित्यमेव विद्यायो । काचारवधावद्वत्तरिवद्वतानी विश्वेष ॥ ४५१ ॥ तदाकरसमुद्भूतो मन्भृज्ञसम्ब्र्तिः । दीपिन्द्रावामसाविष्टो स्वामरो मणिक्चाते ॥ ४५२ ॥ चारकता यदा तव तदा टिष्टिमसंज्ञितः । तस्य धारणमानेण गर्भिणो स्तो प्रसूचते ॥ ४५३ ॥ यत पद्मरागस्य मणागुणस्य

मूल्यं भवेन्नापसवसिमातस्य । तदीन्द्रनीवस्य महाग्रवस्य

सुवर्षसंख्यातुवितस्य मृत्यं ॥ ४२८ ॥

तर्जमा ।

भारी श्रीर एक छोनेने इन्द्रनीतको नाचा सनभ्ता वाचिये, श्रायां मुकासने फरक कर्ना साचिये। ४२१।

इन्द्रनील बानमेसे अनरको ए से रज़का दीति और हायाविकिए जो मणि पयदा घीति चै, उस्को आमर कहते चै। ४२२।

जिस् इन्द्रनीलमे घोदा खुषीमायेल खामा मानुम हो, उसकी टिट्ठिम कहते हैं, टिट्टिम जातका मणि गर्मिणी स्त्रीका गर्मे बज्जत् अबद् खारामचे खालास कर्ता है। ४२६।

मचागुणसम्पद्म पद्मराग मणिका जो दाम छोता है, गुणसम्पद्म दुन्द्रनीचकाभी वकी दाम छोता है। ४२४ । इतिनोद्याका वजन।

TRANSLATION A Sapphire is distinguishable from glass by weight and hardness only

422 A shining gem which is found in Sapphire quarries, resembling the Viamaia, and furnished with a shade, is called Vramara

That Sapphire which shows a dash of red, is called a *Tittiva* (amethyst) No soonei a woman who is in her family way, wears a Tittiva than she is delivered of her child, with perfect ease

424 The price of the best Sapphire is equal to that of the hest Padmaraga

অসুবাদ।

গুকত্ব ও কাঠিত অনুসাবেই ইন্দ্রমীলকে কাচ হইতে পৃথক্ বলিষা পৰিজ্ঞাত হইতে পাৰা যায়। ৪২১।

ইন্দ্ৰনীলেৰ আৰুৰে ভ্ৰমৰেৰ তাৰ বৰ্ণ, দীপ্তিও ছাৰ্যা বিশিষ্ট যে মণি উৎপন্ন হয়, তাহাকে ভামৰ মণি কহে। ৪২২।

যে ইন্দ্ৰনীলে ঈষৎ লোহিতেব আছা দৃষ্ট হয়, তাহাকে টিট্টিভ কহে, টিট্টিভজাতীয় মণিবাৰণমাত্ৰেই ণতিণী স্ত্ৰী স্থথে সন্তান প্ৰদৰ কৰে। ৪২৩।

মহাওণসম্পন্ন পদ্মবাগ মণিব যেরপে মূল্য হয়, ওণশালী ইন্দ্ৰনীলেবও তাদৃশ মূল্য হইষা থাকে। ৪২৪।

हेि हें हुनीय ।

THE SAPPHIRE

Its Properties

HE Sapphire is a variety of the Columbum and is of the same composition, hardness and electricity as the Ruby, differing from it only in color, which varies from white to the deepest blue and black The true Oriental Sapphire is of n clear, beautiful azure blue, (of the shade formerly called "Bleu du roz) soft rich and velvety, neither too light nor too dark But the blue is seldem nure or spread all over the stone It is sometimes mixed with black which gives it an inky appearance, and sometimes with red which, though difficult to be seen by day, can be found out by candle light Sometimes a Sapphire is found exhibiting a variety of colors The asterrated or Star Sapphire is usual ly of a greyish blue color, and shows, under the microscope, 'thread like shafts, directed towards the faces of the six sided prisms, said to be spaces left at the moment of enystallization, and it is the re flection of light from these which gives to the stone its star like brillianey" "The Star Sapphire is also known under the title of Astrapia (lightning stone), from its supposed action in a colorless or an azure ground, sending ont, as it were, rays of lightning diverging from the centre

Where found.

In former days, Sapphires were found in Persia and Arabia. The best stones now come from Mo gast and Kiat pyan, in Burmah, and from Siam. Those that are found in Ceylon are smallsized and rather rose-colored The blue Sapphire is found in many parts of North America. A fine red Sapphire is said to have been found in South America, with the Diamond. Specimens of the blue and white Sapphires are found in Ballarat, (in Victoria) and near the Pearl river in New South Wales, Australia. The Sapphire is also found in several countries of Europe; on the tops of the Iser Mountains in Bohemia, and in the beds of the river Iser; also in Saxony and Saxon Switzerland.

Sapphire as Lucion to the Ancients.

THE Sapphire of the present day was known to the ancients as the Hyacinthus. Pliny believed, that it was so called on account of its resemblance to the colour of the flower of the same name. Solinus says :- "Amongst these things (in Ethiopia) of which we have treated, is found also the Hyacinthus of a shining cerulean color; a stone of price, if it he found without hlemish, for it is extremely liable to defects." What was called Sapphirus by the classical authors now goes by the name of Lapis-Lazuli Sapphire was, in old Arabic, termed "Sappeer," to scratch; and in the Syriac and Hehrew languages, it was called by similar expressions,—probably, on account of the great hardness of the stone and of its power of scratching any other stone, (except, of course, the Diamond) According to the Ancients, those Sap plines which were of an indigo or very deep color were the male, the pale blue ones, the female According to Ben Mansur, the Jacut Ind six divisions, vir, the red, the yellow, the black, the white, the green or perceck colored, and the blue or smoke colored Sapplure came under the last heading—blue, which had three sub divisions, vir, the light blue, the Lapis Lazuli blue and the indige blue, each of which, again, had peculiar grades of tint

Ingraing and Cutting

The Sappline being a very bard stone renders itself difficult of being engraved upon. There are still to be found a few specimens of the inecest integlos, amongst which may be mentioned a magnificent head of Jupiter. This stone was one inch in drameter and was quite accidentally found in the pommel of a Turkish Dagger. In the Marlborough collection is found a Methya's heal in nearly full free, engravel on a very clear and besittful Sappline; also, the head of Ciracilla, on a stone of a nich in length and a m breadth. A large pule stone was seen in 1860, in the lard of Mr Boocke, on which was engraved the figure of an actor in front of an altar, with in other ever

imitating his gesticulations. The Signet of Constantius II, a Sapphire of 53 carats, represented that Emperor as spearing a large wild boar, before a reclining female figure. There was another stone, heart-shaped, of a beautiful color and 1'1 x1'1', in dimensions, lately seen in the London market, on which was engraved the figure of Hebe feeding the Eagle. Amongst the modern works of Art may be mentioned the portrait of Popo Paul III, executed on a beautiful Sapphire, $\frac{3}{4}$ of an inch square. There is also one pale Sapphine of an octagonal shape, upon which is the bust of Henry IV, with the initials C. D. F., engraved upon it by Coldoré. In the cabinet of Strozzi, in Rome, is a Sapphire, upon which is the profile of Hercules ongraved by Cinous A Sapphire has also been seen in England, on which are engraved the crest and arms of Cardinal Wolsey.

The Brilliant-ent shows the lustre of the stone to the best advantage.

Its Price: Flaws and Defects: Imitations

SAPPHIRES do not, like the Bubies, rise in value according to their size, but like the Diamonds, in proportion to their color, purity, and symmetry. When a Sapphire is too thick in proportion to its surface, its value is not to be estimated by the weight it actually possesses, but by the weight it should have, if it were properly proportioned. A fine, perfect, evenly-colored, spread Sapphire,

er one carat, if English cut, is worth from to £12, if foreign cut, from £2 to £5, f one carat, from £12 to £25 The value of Star Sapphire, (which the Hindus did and do in great veneration) if small, is from £2 to , if large, from £10 to £100 A really fine phire should appear blue, as well by day as night It has often been noticed that two phires which appear to be of the same color by differ widely, by night "In many of theso es, where the color is partially dark, the lapi has a method of cutting by which he takes y the dark colored part, with the exception of mall spot reserved for the cullet, whilst the er part of the stone is perfectly white, so that n such a stone is looked at from the table, it present a most vivid hue, often superior in earance to those stones which are colored sughout If the stone be held in a pair of nary forceps-or corn-tongs, as they are termed he trade-an inch beneath the surface of clean er, the parts of the stone colored and uncolored he distinctly apparent' This test might

untageously he upplied to all other stones he Oriental Sapphire is most highly admired is consequently of very great value. A perfect ic of this species, weighing about 3 criats, hes even fur higher price than a Diamond of dar weight and quality. But, like the Emerald, i rurely free from imperfections, which generally

consist of clouds, milky semi opaque spots, white glassy stripes, cracks, knots, a congregating of colors at one part and salky flakes on the table The spots are sometimes removed and the color equalized by burning the stone in a crucible, with sand and iron filings, but this process involves serious risks The white Sappbire resembles the Diamond to such an extent, that when well cut and polished, it may pass for the latter The deception can be detected by taking the specific gravity of each, or by testing the hardness with another Sapphire or with a Diamond The pale Sapphire, by heing rendered perfectly colorless by exposure to a regulated heat, and thereby made to acquire great lustre, has often been sold for the The distinction between this uncolored stone, the white Topaz and the true real Diamond Diamond can always be made by remembering the fact that neither of the two possesses the indescence which the Diamond always exhibits when catching the light at a certain angle

The doublets or semi stones are counterfeit stones composed of two pieces of crystal, with a color between them so arranged as to make the whole substance appear colored. These are often made use of to cheat the mexperienced. The color may partly point out the instation, and more specially, the inspection of the girdle, where the inferior stone has been joiced. The top of a Sapphire is in some cases genuine, and the under part, r gum of less

value, as for instance, Garnet Sometimes the under part is glass, artistically joined with the top, with cement. In this case, the application of the file to both the parts at once detects the imposition. Stones that are of a pule color or of little lustre are generally set with a back, often with a colored ful, to add to their heauty. Those that are set "azure" or open, have the interior of the setting enamelled or painted to throw a tint of color into the gem

The doublets are often sold by the Cingalese at Colombo, to Europeans and to the passengers by the P & O Co's steamers Sometimes blue glass, out into facets, are sent there from Birming ham and Paris, in order that they might pass for

real Sapphue and stones of similar color

Marvellous and Medicinal Properties attributed to the Sapphire

EFFHANLS mentions that the vision which appeared to Moses on the mount was in a Sapplier and that the first tables of the law, given by God to Moses, were of Sapplier It was dedicated by the Greeks to Apollo and was when consulting his oracle, wein by the inquirer, on account of its divine nature, which was supposed to seems him an early and favorable answer St Jerome, in explaining the 10th chapter of the project of Isaah, states that the Sapplier produces royal fivors, softens the anger of the chemis, frees people from enchantment and obtains for them

release from captivity If placed on the heart, it bestows strength and energy It prevents evil and impure thoughts Owing to its coldness to the touch, due to its great density, it was thought to have the power of extinguishing fire It "is said to grow dull, if worn by an adulterer or laseivious person," or hy an intemperate man If "worn in a ring or in any other manner," it "is able to quench concupiscence, and for that reason, is proper to be worn by the priest hood and hy all persons vowed to perpetual chastity" For this reason, perhaps, this stone has been used, to adorn the episcopal ring of office, from the commence ment of the Middle Ages down to the present time The ring of the Ahbot of Folleville, the oldest ecclesiastical jewel yet in existence is set with a large Sapplire Great medicinal virtues have been attributed to the stone Placed on the heart, it cured fever, on the brow, it stopped hemorrhage It was an excellent preserver of eye sight If Sapphire powdered and made into a pill, were placed on the eyes, it would draw out any dust or small insect or any other foreign substance that might have fallen into them, and cured them also of inflammation or irritation by small pox or any other disease The application had to be renewed daily for sometime If the powder were taken internally with milk, it would provo a sovereign remedy for pestilence, fevers, poison, hysteria, &c. The Sapphire is such a deadly enemy to poison that

ة عد

if put into glass, or on the mouth of a phial that contained a spider or any other venomous reptile or insect, it would immediately kill it

Celebrated Sapphires

A VERY large Sapphire of 951 carats in weight, of a beautiful blue color and without a single flaw was seen by the English Amhassador, who had, on some occasion, heen sent to Ava In the Musèe de Mineralogie of Paris, is another very beautiful and flawless Suppliere, weighing 1321's carats This stone, called the 'Wooden Spoon sellers," from the occupa tion of the poor man of Bengal who was credited with its discovery came somehow in the possession of the House of Rospoli in Rome, and subsequently of a German Prince, who sold it to Perret, a French jeweller, for 1,70,000 francs, a sum known to be far less than its true value. It is lozenge shaped and has six faces The treasuries and regalias of Europe contain some very good Sapphires There are also some large and beautiful specimons to be seen in the Green Vaults at Dresden Amongst the seve ral valuable stones to be found in the Russian frea sury is one of a light blue color, which once be longed to Mr Hope There is one Sapphire of considerable beauty and size in Vienna An English lady had a large sized Sapphire, which she sold and replaced by such a skilful imitation as to hood wink the jeweller, who estimated it, for probate duty, at £ 10,000 The disappointment of the legatee, who

came in possession of it, after paying the legacy duty may well be imagined An oval Sapphire and a drop of a considerably large size and of great purity, belonging to a Russian Countess, were shown in one of the Paris Exhibitions and attracted the notice of all. Several magnificent Sapphires, from the collection of the late Mr. H. T. Hope, were shown in the London Exhibition, where also Mr. A. J. Hope exhibited his well known "Sapphire Marvoilleux," which is blue by day and amethys tino hy night. There is a very large Sapphire, (partly drilled), in the State Crown of England, purchased for it by His Majesty the late King George IV.

A very good Sapphire was once seen with a Mohunt of Mirzaporo. Rai Buddreo Dass Mokeem has in his possession a small and beautiful stone set, in a ring. The Hindus have a prejudice against this stone and consider it to he the bringer of misfortune. In consequence of this notion, some of them would invariably keep a stone on trial for several days before they would make final settlement with the sellers. Hence, perhaps, the paucity in the number of Sapphires in their possession.



कके तनम्।

मूचम्।

सिन्धा विमुद्धाः समरागिणस्य भागीतवणा सुरवी विविचाः। भागत्रवासावविविकतास्य भन्ने तनास्ते परमाः पविचाः॥ ४२५॥

वर्णेन तहुधिरसोममधुप्रकाय-मानामुणीतदण्डनीज्ज्ञुलितं विभाति। नीलं ग्रन खलु वितं कलुपं विभिन्न व्याख्यादिदोपकरणेन न तदिभाति । ४२६ ।

क्षेत्रकता वयान।

सिन्ध, नेष्येव, सब जाए समान रज्ञ, थोदा जरह रज्ज, खोजनमें भारी, देखनेंमें मनोप्टर खीर बास, उपा नीषा खवेब वर्गेरप्टचे पाज, कर्केनक बज्जत् समहा है ।४५५। सुनके समान स्तुस, बन्द्रमाके यमान प्रफेट, मधुके समान कम जरह रज्ज, तांवेके समान घोडा लालरज्ज,

चागके समान उच्चृतः नीलरद्ग चयवा यद्धत् सफेद कर्जतक पापका नाम कर्नेवाला है, लेकिन खुप साफ नावानानेक

श्रवेवचे चमक देनेवाला नहिं शोता। ४५६ ।

.00

CHRYSOBERYL.

TRANSLATION

425 A Chrysoberyl which is cool, pure, uniform ly colored, slightly yellow, heavy, singularly fino and free from such defects as *Trása*, is the best of all 426 A Chrysoberyl which is blood red, pale like the moon, slightly yellow like honey, light red like copper, yellow, bright like fire, blue, or white, purges sin away, but sometimes has not that glitter which it has, owing to the defective art of the lapidary

অথ কক্কেতন ৷

ष्य्यान् ।

ম্লিড, বিশুদ্ধ, সর্বব্র সমান বর্ণবিশিউ, ঈষং পীতবর্ণ, ওজনে ওক, বিচিত্র এবং ত্রাসনুণারিদেয় বিবর্জিত বর্জে তন অতি উৎকুট । ৪২৫ ।

ক্ষিরের ভাষ লোহিত, চল্লের ভাষ পাহ্র, মধুর তায টবং পীত, তান্সের ভাষ দ্বিরং লোহিত, পীত, ভারির তায উদ্দেশ, নীল এবং শুরবর্ণবিশিক্ট কর্ম্বেডন পাপনাশক এবং সংকারকের দোরে ইহা তাদৃশ দীপ্রিশালী হয় না। ৪২৬। मूखम्।

पनेण काञ्चनमयेन तु वेष्टियता इस्ते गलेऽथ भूतमेतद्तिप्रकार्यः ! रोगप्रणायनकर कालनायनता-

दासुस्तरं कुलकरच सबप्रद्व ॥ ४२७ ॥ एविनयन्डगुण मणिमावर्हाम

कर्ते तनं ग्रुभमसङ्गतये नरा ये । ते पूजिता बज्जधना बज्जवस्थास

त प्राचता बड्डधना बड्डवान्यवास्य नित्योच्चाचाः प्रमुद्तिता चित्र ते भवन्ति ॥ ४६८०॥

कर्षे तनं यदि परीचितवर्णेरूपं प्रत्यग्रभामुरदिवाकरमुप्रकार्थः।

तस्योत्तमस्य मणिशास्त्रविदा मिष्टना तुस्यन्तु मूस्यमुद्दितं तुनितस्य फार्यः ॥ ४५९ ॥

सर्जमा।

कर्षतक मणि सोनेके पत्रभे भोड़ कर्के गर्ने घण्या इतमे पहेरनेगे देखनेने कडत् चाच्छा मानम होता रे, रोग चौर कलियुगके दोवको नाम कर्ता रे, चौर उमर खान्दान, गुखकी हहि कर्ता है। ४२०।

जी चारमी इस् किमिन्छा बज्ज्यणमसस्य वेज्ययेथ कर्नेतक गठनेकेवासे पहेरता है, वक चारमी लोगममाजमे पूजित चौर बज्जत् दीलतमन्त, बज्जत् भाद बादरवाला, नेजसी चौर डामेगा सुरु रहता है। 8 हट।

कर्जनक निण पारे परीचा कियाज्ञया वर्णशिष्ट. चीर मूर्यके ममान चार्यक् रीमनि पाये, तो रवणार्ची परिवृत्तिके मनके चमुनार चन्का दाव उत्तृ चीलनके समान कोगा। ४२८।

इति सर्वेतनका बद्दान ।

463

TRANSLATION.

427. A Chrysoberyl when set on gold and worn on the neck or the hand, is very fine to look at, removes diseases and various vicious properties, and increases life, family and happiness.

429. The man who wears a sterling Chrysoberyl free from every defect, is honored among men, acquires wealth, friends, fame and contentment.

429. If the color of a Chrysoberyl challenges scrntiny, and if it flames like the sun, it fetches (so say the authorities) a price proportionate to its weight.

षञ्दाम।

২ছে তন্মনি হ্বর্ণের পাত্রে মুড়িয়া গলে অথবা হতে ধারণ করিলে দেখিতে অতিহন্দর হয়, বোগ ও কলিশোষ মাশ করে এবং আয়ু, বংশ ও হুণরুদ্ধি করে। ৪২৭।

বে ব্যক্তি বহুওগসম্পন্ন নির্দোদ, কর্কেন রহু খনজা-রের নিনিত্ত ধারণ করে, সেঁ নানব লোকসমাজে প্রতিত, বহুধনের অধীধার, বহুবাছার, দাঁভিমান ও নিতা সম্ভত্ত হ্য। ৪২৮।

কর্কেতন যদি পরীক্ষিত বর্ণবিশিক এবং দূর্যোর তায় স্থাকাশিত হয়, তাহা হইলে মধিশাহ্রবিং পণ্ডিতদিথের মতে তাহার মূল্য ওজনের মসুরূপ হবৈবে। ৪২৯।

देखि दरब्दिन।

THE CHRYSOBERYL.

Its Properties

MHE Chrysobervl, otherwise called the Orien tal Chrysolite, is a brilliant stone, the color of which, varies from asparagus green to grassgreen, greenish-white, and vellowish green helongs to the trimetric or rhombic system of crys tallization and possesses a vitreous and oily lustro It varies from being perfectly transparent to nearly opaque Its cleavage is parallel to the faces of the right angled prisms, it breaks with a conchoidal fracture rather uneven Its specific gravity is from 36 to 38 It is brittle and translucent. possesses double refraction in a bigli degree, and acquires by friction positive electricity, which it has the power of retaining for several hours It is infusible before the blow pipe alone, but with horax or salt of phosphorus, melts with difficulty into clear glass It is 85 in the scale of hardness, scratching Quartz easily and heing scratched by the Suppline, Ruby &c It is not affected by acids but with a solution of cohult, it becomes blue. Its composition has been ascertained to be about 80 per cent. of alumina, and 20 of glueina with traces of protoxide of iron, oxides of lead and copper, according to color and locality

Where found.

The Chrysoberyl is found in rolled pebbles in Ceylon, Brazil, Moravia, Pegn, and in the river Tajowaja in the Ural Mountains. The last variety shows by reflected light, an emerald-green hue, and by transmitted light, a red one, and is called the Alexandrite, after Alexander, the Emperor of Russia This stone is also found on the east side of Borneo, mixed with gold dust, Diamond, Topaz, &c. It has latterly been found at Haddam, Connecticut, at Greenfield near Saratoga, New York, and in the granite of Orange Summit, Vermont.

Mode of Cutting

The transparent yellow Chrysoberyl, which is the variety used in jewelry, is cut in the brilliant form, on a copper wheel with emery and polished with tripoli. The semi-transparent varieties, known as the Cymophanes, and the "Cat's-eyes" of commerce, possess an opalescence and are generally cut en cabehon

The Chrysoberyl as known to the Ancients.

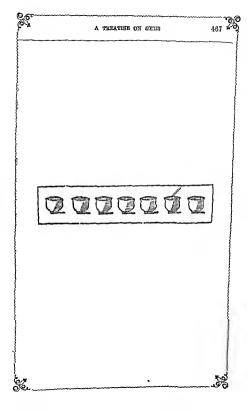
CHRYSOFRASE appears to have been the gcm which was the Chrysoheryl of the Ancients. The name Chrysoberyl is formed of two Greck words, signifying "Golden," and "Beryl." Cymophane is derived from two words, which mean "wave," and "appear," perhaps, so-called, on account of its variable color.

Its Price.

The transparent yellow Chrysoberyl now being out of fashion and rarely mounted as ornaments, fetches but a nominal value. But the Cymophane or the Chrysoberyl Cat's cyo is worth a good deal; its price varying from £100 to £200 or £300, in proportion to the distinctness and brilliancy of the ray of light across the stone. This gem is considered very lucky by the people of the East, and oven by those of the West, and consequently it is getting more valuable than before. An English nobleman is reported to have paid so much as £1000 for one of these. Its beauty is enbanced if surrounded with brilliants or rubies

The transparent yellow Chrysoheryl, or the Indian Chrysolito must not be confounded with the true Chrysolite, with which it materially differs in hardness and specific gravity; the latter being 6 to 7 in the scale of bardness, and its specific gravity, from 3 3 to 3 5. The Chrysolite, moreover, contains a largo element of iron in its composition, and can easily he dissolved into a jelly by sulphuric acid. The Chrysohervl differs also from the vellow Topaz, in one important point, viz, that of not acquiring

electricity by heat.



च्यथ प्रलकः।

मुखम्।

दानाईबागदयनेकलकन्यकादी
युद्धान्त्रनचीद्रप्रणानवर्णः ।
गञ्चविद्धान्यमानः
एते प्रयत्ताः पुनका प्रमृताः । ४२० ।
यदाकाञ्च किविचिचवर्णा
स्वद्याः प्रदिष्टाः प्रमाः पविषाः ।
माञ्चस्यका यज्ञभक्षिविच च्हिपदासे पुनका भवत्तः । ४१ ।

अथ पुलकका वयान।

तर्जमा।

हर्ता, वग्टाद, नर्मादानदीले किनारे के देशने पगदा इत्ये गुड्माके सुखके समान कालारङ. मधु, कमलकी जङ्, कस्त्री, खाग चौर केलेके गाकके समान रङ्गदार पुलक बङ्गत् आच्छा है। ४३०।

शञ्च, सफेंद्र कमल, श्रमर और सूर्यके समान वर्ण-विशिष्ट और सूतदार पुनक यञ्जत् पवित्र चीर मङ्गल

कर्नेवाला है। ४३१!

GARNET.

TRANSLATION

430 The Garnet is produced in the country of Dásarha (Dwáraká) in Bagdad, in the shores of the Narhudda, &c Of Garnets, those which are colored like the black spot in the Gunya, like honey, the stalk of the lotus, the musk deer, fire, or the plantain-tree, are first-rate.

431. A Garnet which is colored like the conch, the lotus, the black bee, or the sun, and which is strung on a thread, is sound and auspicious, and heralds good fortune.

অথ পুলক।

অহবাদ।

দাসাई (বাবকা) বাগদব (বোগদাদ) নর্মদানদীব ভীবত্ব প্রদেশোৎপন, গুলাঞ্জন (কুঁচেব শীর্বদেশত্ব ক্ষাবর্ণ), মধু, মুণাল, কন্তুবীমুগ, আমি ও কদলীয়ক্ষেব ভাষ বর্ণবিশিন্ট পুলক রক্তই অভিপ্রশন্ত। ৪০০।

শন্ধ, পথা, ভ্রমণ ও সূর্য্যের ভাষ বর্ণপালী এবং সূত্রোপ-লক্ষিত পুলক অতিপবিত্র, মদলজনক এবং রঙ্গিপ্রদ বলিয়া নির্দ্ধিউ আছে । ৪০১ । मुलस् ।

काका-खरासमण्गाल इकोग्ररूपे-

र्थं धैः समानक्षिराद्वे सुखैकपेताः।

ग्रुधः समास्काधराद्रमुखकपताः

चत्युप्रदास्तु विदुषा परिवर्ज्जनीया

मूल्य पलस्य कथितञ्च शतानि पञ्च । ४३२ ।

तर्जमा ।

काक, घोड़ा, गाधा, प्रेयाल, लेकड् बाघा, घाड्गेझांके सुखके मासके समान निशानवाचा पुलक मीत कर्ता है, इ.सीवासो परिडतलोग चस्को कोड्नेको कक्ते हैं। और एक पत्र घोजनके मुलकका दाम यात्र शै रूपेशातक घो सक्ता है। ४३२।

इति पुषक्का वयान।



TRANSLATION.

432. A Garnet which is colored like the crow, the horse, the ass, the jackal, the bull, or the bloodstained beak of a vulture holding a piece of flesh, brings on death; and the anthorities advise us to shun it. A Garnet which weighs one pal,* is worth five hundred Rupees.

অনুবাদ (

কাক, অথ, রাসভ, শৃগাল, রক এবং সমাংসক্রধিবার্দ্রথ
গুধোপলন্দিত পুলকধাবনে মৃত্যুঘটনাব সম্ভাবনা, অতএব
পণ্ডিতেরা তাহাকে পবিত্যাগ ববিতে বিধি দেন এবং পলপরিসিত পুলকেব মূল্য পঞ্চশত মূলা পর্যন্ত হইতে
পারে । ৪০২।

ইভি পুনক।

• Equal to 4 kar shas



THE GARNET.

Its Properties.

THE Garnet belongs to the monometric or cubic system of crystallization, and is, for the most part, found in rhombic dodecahedral crystals, also massive and in small pebbles in rivers and alluvial deposits It is 6.5 to 7.5 in the scale of hardness. It can scratch Quartz slightly and is scratched easily by Ruby or Sapphire. Its specific gravity is from 3.5 to 4.3 Its lustro is vitreous and in some cases resinous. It varies from being transparent to being nearly opaque Its fracture is uneven or suh-conchoidal. It possesses simple refraction, acquires positive electricity by friction, and has a sensible effect on the magnetic needle. It is fusible before the blow-pipe and melts down to a black cnamel. The Garnet is composed of silex, alumina, and n small proportion of exide of iron, from which it derives its beautiful color. This stone is found of many colors-red, brown, yellow, white, green, black.

Its Varieties: Where found.

PERHAPS there is no other stone which varies so much in color, shape, and crystallization as the Garnet. It is to be found in almost all parts of the world.

The Almandine or Precious Garnet is found in the Zillerthal and Tyrol, in parts of Norway

and Sweeden, Switzerland, and Spain, and differs from the common Garnet only in color;—that of the former having a blue tinge mixed with the red; that of the latter being blood-red, slightly tinged with brown. The name Almandine, is according to Pliny, derived from the city of Alabanda (in Carien), where this gem was cut and polished. The Garnet is also found in Greenland, United States, Mexico, Brazil, and many other places in America. Some very fue crystals have been found near Oven and the Peel River in Australia.

The Syrian or Oriental Garnet varies in color from the deepest crimson to n violet purple. It is so called, hecause it comes from Syrian (or Suram), the capital of Pegu. It is also found in India and Caylon.

The Pyrope or Bohemian Garnet is of a fine bright deep-red color and is found in Bohemia, Saxony, and other parts of Germany. Its specific gravity is a little lower than that of the Almandine, but it is one of the hardest stones of the Garnet family. It is called by some jewellers, the Vermilion Garnet, or the Vermeille, on account of its unmixed red color.

The Essenite or the Cinnamon stone is, as its name indicates, of a reddish-yellow color, resembling that of the cinnamon, and comes principally from Ceylon. It melts very easily and is much softer than the other varieties—it being 6 5 to 7, in the scale of hardness.

A new variety of the Garnet has found its way into the market, from Siberia. It is very brilliant and of a beautiful green color.

The other varieties come under the province of the mineralogist rather than that of the jeweller, and are as follows:—

The Grossularite, found in Siberia, is of a greenish, and sometimes black color.

The Succinite, found in Piedmont, is of a yellow hue, of the same composition as the above.

The Colophonite and Melanito, found in Norway and America, are Garnets of the aren-lime species, the one being brown and the other black.

The Leucite, found in Siberia and in the lava of the Vesuvius, is a silicate of alumina and potash, and is of a white color.

The Spessartine, found at Spessart in Germany, and in Sweden and Finland, is brown and is a Garnet of the alumina maganase species.

The Uwarowite, found in Siberia, is of a bright green and belongs to the lime chrome class of Garnets. The name is derived from Uwarow, the President of the Imperial Academy of St. Petersburg.

Cutting and Engraving.

Born the common Garnet and the Almandine are frequently cut in facets and polished. When the Almandine is cut en cabochon, it is called the Carbuncle; i e, when it is cut with a convex surface,—the back heing generally hollowed out in order to show off the color of the stone to advantage and also to enable the jewellers to "foil" it, for the purpose of selling it as a Ruby.

The Oriental Garnet is cut with emery or Garnetpowder, on a copper wheel and polished on lead with tripoli, when faceted. The practice is to keep it thin. It is sometimes cut into beads and strung as necklaces.

The Bohemian Garnot is cut as a Brilliant, but more frequently as a Rose, and mounted as a pave.

The Essonite or Commander stone, is, according to some, "out thin on account of the depth of color with a pavilion-cut bolow and a broad table above, bordered with small facets."

The Garnet is easily engraved upon, on account of the small degree of hardness it possesses. Formerly, engravings on this stone were very frequently executed as evidenced by the several beautiful specimens now found in Paris, Turin, Rome, and St. Petersburg. The Greeks do not appear to have made an extensive use of the Garnet for the purpose of engraving. But the Romans have left splendid engravings on this stone. In the Marlhorough Cabinet is a large Indian Garnet, upon which is engraved the head of the Dog-star Sirius, in full relief, and with open jaws, the interior of the mouth being very faithfully represented. In the possession of the same Cabinet, is a celebrated Almandiae, with the beads of Soerates and Plate

engraved upon it. Several Garnets have been found to bear the image and superscription of different Sassanian kings

Several antiques of Garnet have been seen, amongst which may be mentioned a cup, "hollowed out of a solid Garnet, as large as a half goose-egg, and which was engraved internally with the namo of its ancient owner, Codrus; and a heart-shaped tablet (Hertz collection), covered with a long Gnostic formula on both sides, an Alexandrian work of the third century, is 24 by 14 inches in extent, showing the immense magnitude of the crystal from which it has been sawn" In the catalogue of the French Crown jewels, (1701) are mentioned "an oval cup of a single Garnet, rich in eolor, 3 x 21 inches wide, and 3 inches high, valued at 12,000 frames; and a round cup of oriental Garnet, full of flaws, 3 inches wide hy 15 deep; a third is vermeille d'Allemagne, 21 deep, at 6,000 francs: hesides six others of less size."

The Garnet as known to the Annents.

According to some conjecturers, "Garnet" is an Italian corruption of "Garamanticus," an inferior kind of the Carbunculus of Pliny; according to others, the word is derived from the German "Granat owing to the similarity of its color to the blossom and kernel of the pomegranate According to some others, the name is derived from "Granium," a grain, on account of its being often found in that

condition The name is no doubt modern, but the stone itself was well-known to the Ancients.

Theophrastus and Pliny make copious mention of a stone which exactly answers to our description of the Garnet. It came under the heading of Carbunculus, which Pliny divided into male and female; the former being of a brilliant, the latter of a duller lustre. It has been supposed, from tho character of the species as described by that eminent naturalist, that the male Carbuncle was our Ruby, the female, our Garnet Pliny describes "vessels of the capacity of a pint formed out of Carbuncle devoid of all lustre or beauty of color." These vessels are conjectured to have been formed out of the massive varieties of the Garnet.

Its Price: Imitations.

THE Garnet was at one time in great demand for iewelry purposes, but now its commercial value has considerably gone down, owing to its being out of fashion and abundant supply. A Carbunclo of a largo size, if pure and free from flaws. will yet fetch as much as £20. One of the size of half-a-crown is said to have been lately sold for £50. The Bobemian Garnet is held in great esteem in Turkey, Austria, and Transvlvania. and is sold at very high prices. 600 gulden. or £60, is known to have been asked in Vienna, for a necklace of beads. The Almandines, that come in abundance from Coylon are, if of a certain size.

of a fine rich huo and perfectly flawless, worth from £8 to £10 cach. One Garnet of this description weighing five earats, had been put down for 1,200 franes, in the catalogue of French Jewels mentioned before. The Bohemian Garnet of the size of a hazel nut, would, necording to De Boot, he worth as much as a Ruby of the same size. But in De Lact's time, (about 50 years later), both the Indian and Bohemian varieties had diminished in value.

The Almandines set with backs and foils are often sold to the uninitiated, for Ruby. The Essenite sometimes passes for the Hyacinth or Jacinth, with which, however, it differs in essential particulars. Seme jewellers frequently confound the one with the other. Then, some of the varieties of the Garnet itself are confounded with each other. The Almandine, the most valued kind, is a stone of great lustre, and, if, of the first quality, cannot easily be detected from the purple Spinel. The Visuvan Garnet is hardly distinguishable from an Essenite.

The common Garnet is exactly of the color of Burgundy wine, more or less diluted, according to its quality. The Bohemian variety differs from it in its chemical composition, but not much in appearance, except that it is hrighter and clearer. The Syrian Garnet is sometimes made to compete with the Amethyst. But it can be distinguished from the latter by the disadvantage of its losing

its lustre and assuming an orange tintbycandle-light

Marvellous and Medicinal Properties

In the Middle Ages, the Garnet was a gem of great value and was considered to possess the same marvellous and medicinal virtues as the Ruhy.

Celebrated Garnets.

Garaets of extraordinary size have been found in the Cabinet of the Marquis de Drèe; amongst which, may be mentioned one Syrian Garnet, of very good quality, octagonal in shape, which measured 7½×6½, and was valued at 3,550 francs; another of a flame color, which was 10½×6½ in measurement, and valued at 1,003 francs.



श्रय रुधिराख्यम्।

मूखम्।

तच्चेन्द्रगोपकलितं गुकवक्रुवर्षं सञ्चानतः प्रकटपीन्समानगार्षं ।

नानाप्रकारविचितं रुधिराख्यरत्न-

नानाप्रकारीवीच्त रोधराख्यरतः सुद्वुत्य तस्य खलु गर्व्यममानमेव ॥ ४३३ ॥

सुकृत्व तस्य चुनु गयानगरणय ॥ ४२२ मध्यन्त्वाराहरमतीवविशुद्धवर्णे तञ्चन्द्रनीवयदृष्टं पटलादिकं स्थात् ।

ए खर्याभ्रत्यजनन कथितं तदेव यक्कस तत्किल सबेत् सुरवक्कवर्षं ॥ ४३४ ॥

च्रय रुधिराख्यका वयान I

तर्जमा।

बीरवज्जदीके ऐसा चिक्नविश्वष्ट, खुगेके दीटके समान नानरक्ष और फुटन्त फुनके ममान रहको द्विराख्य कहते हैं। 899।

किस् रुधिराखके बीचके डिस्सेमे चन्द्रमाके समान पाराडुवर्ण, चीर श्वासपाय वेचयेव इन्द्रनीलके समान शील-रद्र, बडी प्रकार रुधिराख पड़ेरनेसे एंक्य्य की टाइ डोति है। चीर रुधिराख सुप पड्नेसे सुरबद्धके क्षमान

वर्णविज्ञिष्ट भीता है। 838। इति विधिपत्थना बदान।

2

CARNELIAN.

TRANSLATION.

433. A GEM which is marked like the cochineal, or which is red like the beak of the parrot, and which is shaped like a blown flower is a Carnelian.

434. A Carnelian, the interior of which is purely pale like the lunar lustre, and the side of which is like the Sapphire, brings its wearer wealth. When a Carnelian attains its perfect developement, it has a color like the lightning.

অথ কধিরাথ্য ৷

জনুবাদ।

ইদ্রগোপকীটচিকে চিহ্নিত, তক পফ্নীর ওঠের ফার রক্তবর্ণ, প্রক্ষুটিত পুষ্পের ভাষ আকারবিশিট রহুকে কুধিরাখ্য কহে। ৪০০।

যে কৃষিরাখ্যের মধ্যভাগ চল্লের ভায় বিভদ্ধ পাতৃবর্ণ, जर्थाय हेस्त्रीनमृत्य वर्षविभिक्ते, तमहे थकांद्र कृषिद्राया ধাবণে ঐখর্য্য বৃদ্ধি হয়। কৃধিরাখ্য অতিপরিপক হইয়া স্থ্যবড্রের ভার বর্ণবিশিষ্ট হইবা ধাকে। ৪°৪।

ইতি ক্ষিয়াখ্য।

THE CARNELIAN.

Its Properties

PHE Carnelian belongs to the Quartz species and is a variety of the Chalcedony,-the liver colored or brownish red varieties being called the Sard, and the bright red, white and yellow ones, the Carnelian It is chiefly found in dense imper feet balls, often, however, in obtuse angled pieces It is of a cloudy, waxy and semi transparent lustre Its hardness is a little less than that of the Chalcedony. It is a fact that its color becomes brighter and intensified by long exposure to the sun, and that by the application of too much heat, it becomes white and pale The jewellers classify the different kinds of the Carnelian by the following names "1st. Mase, or Carnelian of old stone, dark red 2nd. Tem , pale red passing into cellow 3rd Sarder, brown, passing into pomeranian and vellow 1th, Sardonyx, where layers of the Sarder alternate with layers of white 5th, Carnelian Onyx, blood red strines playing into white 6th, Carnelian Beryl, a whitish yellow '

Were found

The finest specimens are found in Cambay and Surat, in India and in Arabia They are also to be found in Saxony, Scotland, Ireland, New Zealand, and in the rivers of Urugnay. They are also said to be found in Egypt.

Cutting and Engraving.

This stone is cut on a leaden plate with emery and polished on a wooden one with pumice-stono. The finishing polish, is, however, given on a plate consisting of lead and tin, with water. It is generally cut into squares, hexagons or octagons; sometimes round, or by giving the upper part which is called the treppen or graduated cut.

The artists of the classical times preferred this stone for camees, probably on account of its pleasing color and of its possessing a degree of hardoess, suited for the execution. In the collection of the Emperor of Germany, is a Carnelian, one of the oldest Greek gems known, on which is engraved a winged Jupiter appearing to Semelo, and another an opaque Sardonyx, with a draped figure of Venus represented on it. In the St. Petersburg collection, is a Carnelian, on which is engraved a man's head with o beard most eleverly arranged. It is n specimen of the art of the earliest period. In the British Musuem, is a specimen of the second period. in the shape of a Carnelian butterfly, with a figure of Venus, with largo wings, and wearing a beautiful In the Royal collection of Vienna is a Cornelian of the third period, representing Helena. with wings on her shoulders. A small Carnelian

has been seen in the collection at Horence, bearing a head of Apollo. There is a very transparent Indian Carnelian in the Berlin Musuem, on which is engraved the head of Sextus Pompeius There was once in the possession of Michael Angelo, a famous ancient stone, upon which was represented the birth day festival of Dionysius. In cutting a Cameo from this stone, the snow white layer is used for the figure, the red for the hase work, and if it has a third layer of pure white, it serves for the hair of the figure. The natives of India cut the figure upon the hard moltan mass which is produced by evering the stone with earbonate of soda, and putting it for some time to intense heat

The Carnelian as known to the Ancients

This stone was called in ancient times the Sardins or Sarda, which is derived, according to Pliny, from Sards in Asia Minor, the place where it was first discovered, according to others, from the Arabic word, "Sered," which means "yellow," or "yellowish red". It is said, that the arane came with the thing from Persia, and that the Babylo minimines produced the sort first known and most valued. Hence perhaps, I piphanius called this stone the Babylound Sard. Lather translated the Hebrew word "Olem," or "Adam" (red), (tele Lucdus, chap xxxii, V. 17), by the term Sarda, and this fact confirms the assertion that

the Sarda was a stone of a red color. The modern name Carnelian, is, by the generality of authorities. supposed to be derived from Corneus, or raw flesh. which it resembles in color. It is also spelt Cornelian, which name, according to Lessing, is borrowed from the French term Cornaline, or tho cornel cherry, to which it is similar in color. Speaking of the Sard, Pliny mentious, in one place, that, "no other stone was so great a favorite with the Greeks as this: at least the plays of Menander and of Philemon revel in allusions to it." Ho also remarks that this stone is capable of very high polish. which it can retain much longer than any other gem. Ben Mansur divided the Carnelian into seven classes; viz., the liver-colored, roso-red, yellow, white, black, blue, and bi-colored (evidently including some species of the Agate under this designation). He remarked, "although a hard stone, it is commonly used for the engraving of signets upon." It was found in his time at Senaa and Aden in Yemen; on the confines of India and Rum (i e. the Byzantine Empire), and in the neighbourhood of Basra.

Its Price.

THE Carnelian is not so much used in England as in Germany and Poland. The blood-red specimens are more valuable than the pale-red ones. The price, however, chiefly depends upon the degree of transparency, purity, beauty and

flawlessness of the stones. The alundant supply of the Brazilian stones has sensibly affected their market value, as also the Oherstein method of coloring precious stones. The stone-cutters and polishers in Oherstein and Idar have attained signal success, in not only coloring the surface of the stones but their inner depths. It is said that the Agate merchants at Idar had learnt the use of the honey in coloring the stones from the Romans, who, again, came by the secret either hy reading Pliny's works on the subject, or from tradition. The so-called "Carnelian of Brazil" is worked in large quantities in these places.

This stone is profusely used for rings, seals, watch-keys, and other objects of indornment. It is particularly suited for scals, as it can be very easily taken out of the heated scaling wax, without des-

troying the impression.

Marcellous and Medicinal Virtues attributed to the Carnelian.

Entriceius speaks of the Sard as having been supposed to cure tumours and all wounds made by iron. Marbodus, in the 11th century, remarked, that the Carnehan drove away evil spirits and preserved harmony. In the Middle Ages it was supposed to give success in law suits and bring riches to the owner. Albert Magnus declared that the Sard exhibitated the soul and braished fear and enchantments. The Carnelian, made into powder,

was supposed to be a sovereign remedy for

infections, noxious vapours, hemorrhage, &c also an excellent dentifrice. De Lact (in 1647), has described, from personal experience. its power of stopping the bleeding from the nose. and the necessity of wearing rings, cut entirely out of the stone Some Italians still use rings like these for the same purpose



चय स्फटिकम्।

प स्याटपाम् । मूचम् ।

हिमालये सिंहले च विन्धारयोतरे तथा । स्कटिकं जायते रक्ष नानारूप ममप्रभ ॥ ८३५ ॥

चिमान्ती चन्द्रवद्यायं स्कटिकं तहिथा भवेत्। मूर्यकान्तम् तबेक चन्द्रकान्तं तथापरं ॥ ४२६ ॥ मूर्यत्रामुख्यमान्तेण विज्ञव्यमति यत् चणात्। मूर्य्यकान्ते तदावातं स्कठिकं रक्षवेदिभि ॥ ४३० ॥

पूर्णेन्दुकरसस्पर्शादस्यत स्ववति द्यणात्। चन्द्रकानतं तदाखातं दुर्वभं तत्कली दुर्गे। ४३८ ।

चय स्फटिकका वयान ।

डियालय पर्वेत, सिंडलटेश, विन्धापर्व्यतके जबलके करिवके कसीनचे बक्कत् रीमन तरड तरडका स्कटिक पणदा डोति है। 8३५।

पयदा शात थ। ४२५। डिमालय पर्ध्वतमे पौर्णमासीके चादके ममान सफेदरङ,

सूर्यकान्त और चन्द्रकान्त नामे दोकिसिमका सक्तिक पयदा छोता है। 8३६ । जो सक्तिक सूर्यके किरणके सार्थने चाग देता छै, रत-पार्ची पण्डित उसको सूर्यकान्त चर्यात् चतमी सीमा करते हैं। 8३७ ।

योणमासीके चांदके किरणके सर्जन्य जो स्कटिक पायत दिता है, उपको चन्द्रकान्त कडते हैं, कव्युगरे चन्द्रकान्त स्कटिक बज्जत् दुनेश है। 8३८।

THE QUARTZ.

TRANSLATION

435. A VERY bright Quartz is found in the Himalayas, Ceylon, and the forests in the Vindya Mountains

436 Two kinds of Quartz, respectively called Súrya kanta and Chandra kanta,* are produced in the Himalaya These are dehoiously bright as the moon.

That Quartz which flames in sunshine, the 437 authorities call Surya Lanta

That Quartz which runs nectar when the moon at its full bathes it with its balmy influ ence, is called Chandra Lanta

অথ স্কটিক ৷

অনুবাদ।

হিমাল্য পর্বত, দিংহল দেশ ও বিদ্যাপার্ব্বতীয় আবণ্য প্রদেশেব সন্নিহিত ভূভাগে অতিপ্রভাশালী নানাবিব স্ফটিক উৎপন হয়। ৪৩৫।

हिमानय পर्व्वत्व पूर्वहत्त्वमृत्र छत्नवर्ग मूर्वाकाछ छ চক্ৰকান্ত নামে দ্বিৰিধ স্ফটিক উৎপন্ন হয়। ৪৩৬।

যে স্ফটিক সূর্য্যেব কিবণসংস্পর্ণে বহ্নি উদ্গীবণ করে, বত্নতত্ত্ববিৎ পণ্ডিতেবা তাহাকে সূৰ্য্যকান্ত কহেন। ৪৩৭।

य नकन क्विक इंडेर्ड **प्रा**टल दिवन मःमर्रा समृड কবিত হয, তাহা চল্লকান্ত নামে অভিহিত হইবা থাকে। ৪৩৮।

^{*} Lif . Sun like and Moon like

मूलम् ।

चशोकपञ्चवच्छायं दाद्विमीवीजसन्तिभं। विन्धप्राटवीतरे देशे जायते मन्दकान्तिकं॥ ४३८ ॥ सिंहले जायते क्रयामाकरे गन्धनीलके। पद्मरागभवे स्थाने विविधं स्कटिनभावेत ॥ ८४० । चत्यन्तर्गिनं सन्धं स्वतीव जन ग्रुचि। च्योतिर्ज्याननमाश्चिष्ट सुकच्योतीरमं हिन 1 88९ 1 तदेव लोहिताकारं प्रोक्तं राजमयं गुर्भ। यानीलं खर्णेयुक यन्तु राजवर्ने सुदाइतं। ब्रह्ममूचगय यस प्रोक्तं ब्रह्ममयं दिन ॥ ४४२ ॥

तर्ज्ञा ।

विन्ध्यपर्व्यक्ते जजूनके करियकी जमीनसे जो साटिक पयदा होता है, वह चुशीकफुनके पहाबक्षे समान छाया-युक्त और आनारदानेके गमान प्रभाविणिष्ट धौता है, लेकिन में मा रीसन नहिं होता है। ४३६।

हिमालय देशके मन्धनीलकनामे खान्से छवारह रफटिक पवदा धीता घी। चीर जिस् जगह रहाराग मणि पयदा होति है, चाहा साठिकभी तरह तरहका पयदा स्रोता है। ४४०।

जो स्फटिक बझत् माफ, चौर जिससे माफ पाणि निष्ले, और धामकी तरह रीमन, उस्को मुक्तक्योतीरम करते हैं, चीर पेसा जातका स्कटिक नानरह कीनेने राजदर्भ यो ना जाता है, नीलरदू हानेसे उप्को राजस्य वहते ही चीर शनेउके ममान निशान होनेसे उस्की ब्रह्मस्य बड्ने हैं। 88१। 88२।

TRANSLATION.

439. Those Quartzes that are found in the wilds of the Vindya, are furnished with n shade like the leaves of the Asola* flower, and with a hrightness like the seed of the pomegranate; hut are not so fair.

440 A quarry named Gandha nilala in Ceylon, produces a black Quartz Those places that hring forth the Padma-raga, also hring forth various kinds of the Quartz.

441-442. Those Quartzes that are entirely free from flaws, which exude a pure transparent water and which are glorious as the fire, go by the name of Multafyotrasa When these are red, they are called Rajavarlas, when bluish, Rajamayas, and when like the holy thread, Brahmamayas

অনুবাদ।

বিদ্যাপৰ্বতেৰ অবণ্যদন্নিকটে যে সকল স্ফটিক জন্মে, তাহাবা অশোককুস্থমেব পদ্লবেব ত্যায ছাযাযুক্ত ও দাডিমেব বীজেব স্থায় প্রভাবিশিষ্ট হয়, কিন্তু তাদৃশ কান্তিবিশিষ্ট হ্য না। ৪৩৯ 1

সিংহলদেশে গন্ধনীলকনামক আকবে কৃষ্ণবৰ্ণ স্বাটিক উৎপন্ন হয় এবং যে সকল স্থানে পলবাণ জন্মে, ততৎ-

প্রদেশে বিবিধ স্ফটিক জন্মিয়। থাকে। ৪৪০।

যে সকল স্ফটিক অত্যন্তনির্মান, নির্মান বিশুদ্ধ জনস্রাবী এবং অগ্নিৰ কাম তেজঃপুল, তাহাকে মুক্তজ্যোতীবদ करह। जञ्जां जीय क्विक त्नाहिज्यर्व इहेरत बोब्बर्व, नेयर नीलवर्ग इटेरल बाजमय धवर खक्तमृखमय (१९ठाव नागि চিহ্বিশিষ্ট) হইলে বুলম্য নামে অভিহিত হইযা থাকে । ৪৪১ | ৪৪২ |

⁺ Lide anti

मशिमाचा ।

JE 1

मूचम्।

चाकाशशुद्ध तैवाखं नेचाल स्प्रिटिकं दिन । स्रणातशञ्चधवर्नं किच्चिद्दर्णान्तरान्तितं ॥ ४८३ ॥

न त तुत्य हि रहानामथवा पापनाशनं।

संस्कृतं शिखिना सद्यो मूर्त्यं किचिन्नभित्तत, ॥ ४४४ ॥

तर्जमा ।

याकायक समान निर्माल स्क्रिटकको तैलाव्य कहते हैं। याखकी समेदी, सफेद कमल, कमलकी जद्, यक्तके समान सफेदरङ्ग खीर कोइ रज़ होने खीर खीर रज़के समान हज्जतके काविल, खीर पामका नाम कर्नेवाला नहिं होता है, लेकिन कारियर खोसादके हातका बनावा ज्या कुछ किमत रस्ता है। 888 | 888 |

इति स्फटिकका बयान ।



TRANSLATION

443—444 A Taulalya Quartz is pure as the Heavens When a Quartz is like the white lustro of the eye, the lotus stalk, or is white like the conch, or is colored like any other object, it is not so valuable, or for that matter, so sacred as other gems But when a Quartz is refined by a skilful lapidary, it may turn out a good gem

অহুবাদ।

আকাশেব ন্যায় নির্মাল ক্ষতিককে তিলাখ্য করে। ক্ষতিক চকুব ক্ষেত্র, বা খেতপদা, বা মৃণাল, অথবা শব্যেষ ধ্বলবর্ণ কিন্তা অন্ত কোন বর্ণাহিত ইইলেও অপবাপব বঙ্গেব সদৃশ গৌৰবাহিত বা পাপনাশক ইইতে পাবে না, তবে নিপুণ শিল্পী ছাবা উত্তম সংস্কৃত কবিলে ক্ষতিকেব মূল্য কিঞ্ছিৎ বৃদ্ধি হব। ৪৪০। ৪৪৪।

ৰ্ধান্ত ফটিক।



THE QUARTZ.

THE Quartz belongs to the hexagonal or rhomboliedral system of crystallization There are many varieties, however, which are found mas sive and compact The specific gravity of each of the varieties, is from 25 to 28, its hardness 7 in tho scale In the transparent specimens, the lustre is vitreous in the onaque ones, it is rather resinous The fracture is conchoidal and the cleavage not very distinct. It possesses double refraction and acquires positive electricity by friction Quartz is formed of pure siliea or silieon 48 04 and oxygen 51 96 It is not affected by any acid but hydrofluoric It is infusible before the blow pipo, but when put before the flame of the exyly drogen jet, it melts and then can be drawn into fine threads, and at last becomes volatalized one pieco of Quartz is rubbed with another, both become phosphorescent and " emit an empyreumatic odour "

Its Varieties

All the varieties of the Quartz are of the same composition and have the same properties. The difference of color in the specimens gives us the different names. The whole family of Quartz may be classed under three heads.—

The Vitreous—or transparent The Resinous—or opaque





The Jaspery-or the specimens possessed of the dull color and opacity of the Jasper.

The following Stones come under the 1st Class:-

THE Rock Crystal, (of a white color); the · Amethyst, (of a fine violet color); the Cairn-gorm, (so-called, on account of its being found in tho Cairn-gorm mountains of Scotland), also called the False Topaz, (of a brown and yellow color); and the Aventurine (of a grey, brown or reddish-brown color.)

The following Stones come under the 2nd Class; (i. e., Chalcedonic Variety):-

THE Chrysophrase (of a fine apple-green); the Onyx (with a blackish, brownish or greenish layer); the Sardonyx (having red, or brownish and white layers); the Sard (of a brownish red) and Carnelian (red, white and yellow); the Chalcedony (of a greyish, or milky-white or pinkish color); the Chalceydonyx (having alternate stripes of white and grey); the Mocha-stone (or Moko-stone, "containing infiltrated dendritic oxides of maganeso and iron, which gives it the appearance of containing vegetable remains"); the Plasma (of a grass or olive-green color, with yellow and white speeks); the Agate (of various colors); and the Quartz

The following belong to the 3rd Class:-Cat's-eye.

THE Jasper (yellow, red, green, black and brown); THE Jasper (Years), 100, 50001, 2000, and arown); and the Blood stone or Heliotrope (of a dark-green and the Blood stone or Heliotrope (of a dark-green and the Discourse with blood-red specks).

fuller notice will be taken of some of these stones, in their proper places.

च्रय भीक्षम् [।]

मूलम्। जलिहे मगधे चैव मनये च हिमालये।

भीयारतसमुत्पत्तिसस्य चन्नणमुच्यते ॥ ४४५ ॥

गुकाः गञ्जालिनमाः खोणावसन्निमाः प्रभावन्तः।

प्रभवन्ति ततसरणा वज्रनिभा भीग्रापाणाः । ८८६ ॥ हेमाद्मितवर्द्व गुद्धमणि ज्रह्मया विधत्ते य । भीग्रामणि ग्रीवादिण स सम्बद्ध सर्ज्ञदा लभते ॥ ८८७ ॥

च्यय भीषमणिका वयान।

तरज्ञमा ।

किल द्वेर, मगधदेश, मलयगिरि और हिमालय पर्वतमे भीषारल पयदा होता है, तपमील बार उस्का वयान होता है। ४४५।

होता है। ४४५।
भीग्रमणि यहा, सफेट कमलके नमान सफेट् रहा, नीणा
फुलके नमान जरदरहा और नवा होनेसे होरेके समान
चमक दैनेवाला है। ४४६।
जी चादमी वैचयेव भीग्रारल मोणेने जह करके गले
चयवा हातके पहेरे, वह चादमी हासेमा तरह तरहके
दीलतका हिसादार है। ४४०।

THE ROCK CRYSTAL.

TRANSLATION.

445. The Rock Crystal is produced in Kalinga, Magadha, and the Malaya and Himalaya Mountains Its properties I shall now describe.

446. A Rock Crystal is sometimes white like the conch or the lotus,—sometimes it is yellow like the Syonaka flower. When fresh, it is dazzling like the diamond.

447 A man who wears a sterling Rock Crystal set on gold, acquires success in life.

অথ ভীয়।

অন্বাদ।

কলিদ্ধ ও মগধপ্রদেশে এবং মন্য ও হিমান্য পর্বতে ভীন্মরত্ন উৎপদ্দ হয়, জ্বমশা তাহার লক্ষণাদি বলা যাই-তেছে। ৪৪৫।

ভীল্লনণি শল্প ও প্রের তার তর, ত্যোণাকপুলের তাঘ পীত-বর্ণবিশিউ এবং নৃতন অবহার হীরকের তার প্রভাশানী হইবা থাকে। ৪৪৬।

যে ব্যক্তি বিশুদ্ধ ভীয়বন্ধ হ্বর্ণবন্ধ কবিয়া গ্রীবাদিতে ধাবণ কবে, সে ব্যক্তি শর্কদা নানাদম্পদ্ভাগী হয়। ৪৪৭।

मृषम् ।

गुण्युकस्य तस्त्रेव घारणासुनिषुद्भव ।
विवाणि तानि नस्यन्ति सम्रोध्येव मस्त्रेतवे ॥ ४४ म ॥
विवागा नावाधन्ते ये तमरण्युनिवासिन मसीपेऽपि ।
हीपिष्टकम्प्रभकुन्वरसिष्ट्याद्वादयो सिन्ता ॥ ४४६ ॥
भास्यकारङ्गतान्यपि सपीप्रध्यासुद्धविक्षविपाणि ।
सन्तिवास्त्रिवेरितम्बर्भयानि भीमानि नम्यन्ति ॥ ४५० ॥
भीव त्रवास्त्रास्त्र पद्यो पीतम्म मभाकीन ।
मास्त्रन्तुति विवर्ण द्ररात्यास्वर्ष्ट्वेत् मान्त्र ॥ ४५१ ॥

तरजमा ।

शुण्याधी भीषारत पहेरनेने भव किसिम्का अहरका होपनाम होता है, धीर खेलद यापा, हेर, गरभ (ण्ल किसिम्बा चाट पाचीका हिंगक चर्चात् हारिन्ता जानवार), हात्यो, सेर वर्गरह जजनके रहनेवाले धिषक जानवार उस्के पायभी चा नहिं मतते। 83%। 82%।

भीप्रसम पहेरतेने बनाव. च्या, दिक्छा जहेर धीर जत्र चाम ह्मान चीर चीरवा हर निहर्णता। 89.1 वेवार, मेघके समान रफ्रदार, वर्णम, जरदरफ्र. वेचमय, मवला चीर बदरफ्क भीक्षमणियो पाएनत्रीम दूरशिवे होद् मेथे क्षते हैं। 898।

TRANSLATION

448-449. A good Rock Crystal is an infallible remedy in all cases of poisoning Wild animals like the leopard, Sarava (an eight footed beast), the elephant, the lion and the tiger, cannot approach this gem.

- 450. It neutralizes snake, rat, and scorpion poisons, and the wearer need never fear drowning, fire or a thief.
- 451. Λ moss-colored, cloud like, rough, yellow, dull, dirty and discolored Rock Crystal the authorities shun from a distance

অমুবাদ ৷

গুণশালী ভীমবত্ন ধাৰণ কবিলে সর্ব্বপ্রকাব বিয়দোয প্ৰশমিত হ্য, এবং দ্বীপি, শবভ (এক প্ৰকাৰ অউপাদ হিংঅক জন্ত), হন্তী, সিংহ ও ব্যাত্ত প্রভৃতি খনগাবাসী বিষম হিংশ্ৰ জন্তবৰ্গ তাহাৰ সমীপেও আগমন করিতে পাবে না। ৪৪৮। ৪৪৯।

ভীমুমণি ধাৰণ কবিলে মুর্গ, ইন্দুব ও রুন্চিকের বিষ, এবং দলিল, অনি, শক্ত ও কুসবেব ভব প্রশমিত হয়।৪৫০। ্ৰান্ত স্থান ভাষ বৰ্ণবিশিষ্ট, বৰ্মশ, গীতপ্ৰভা-শৈবাল ও সেমেক ভাষ বৰ্ণবিশিষ্ট, বৰ্মশ, গীতপ্ৰভা-

শালী, হীনপ্রভ, মলিন ও বিবর্ণ ভীলমণিকে পণ্ডিতেরা দূব হইতে পবিত্যাগ কবিবেন। ৪৫১।

मूलम्।

मूलं प्रकलामेषां व्रधवरैदेशकालविद्यानात्। इरेमृतानां बज्ज किश्चिद्यिकटम्युतानाम् । ४५२ ।

सर्जमा

पविज्ञतनोग देश चौर ममयक्षे भेद्धे भीग्रामणिका मोल ठिक कर सक्ते चैं, चर्यात् यद्धत् दूरदेशका पयदा उत्या भीग्रामणिका च्यादा चौर नच्दिक् देशमे पयदाद्धया भीग्र-मणिका कम दाम कचते चै। ४५२।

इति भीग्रमस्थिता बदान।



TRANSLATION.

452 Rock Crystals vary in price (say the authorities) in accordance with time and place, - 1 e, a Rock Crystal coming from a distant country, is more, and that produced near, is less precious.

অহুবাদ।

পণ্ডিতেবা দেশকালভেদে ভীন্নমণিব মূল্যেব তাবতম্য কবিষা থাকেন, অৰ্থাৎ বহুদূৰদেশোৎপন্ন ভীল্লবত্নেব অধিক এবং নিকটস্থ প্রদেশোৎপন্ন ভীশ্ববঙ্গেব অন্ন মূল্য নির্দেশ কবেন। ৪৫২।

ইতি ভীম।



THE ROCK CRYSTAL.

Its Properties.

pure white, to greyish white, yellow white, yellowish-hrown, clove-brown and black. This stone sometimes contains a mixture of mica, ratilo, tournaline, topax, chlorite, &c., and in some specimens possesses a cavity containing water with an air-bubble in it, which moves as the stone is turned. There are some pieces of this nature coming from Madagascar, which emit a smell like that of burnt oil when subjected to friction.

Where found

This stone is found in numerous places, among which may be mentioned, several places in Ireland, Scotland, France, Hungary, India, Ceylon, Brazil, Canada, Australia.

Cutting and Engraving.

The Rock Crystal is cut on a copper wheel by means of emery and polished with tripoli. It is generally cut in the form of a brilliant, rose or table. Splinter of Diamond is used, in case it required to be drilled. Diamond-powder is necessary for engraving, and sometimes a device is etched on the stone with fluoric acid. Amongst the engravings on the Rock-crystal, may be mentioned, "the contest between Hercules and Anteus,"

and an image of Arsinoe drwn by Satyreius In the British Museum may be seen a stone of $7 \times 3\frac{1}{2}$ mehes in dimension, upon which is engraved the "Crucifixion"

The Rock Crystal as known to the Ancients Its Uses

This stone was extensively known to the ancient The Egyptians used it for making evlinders, scarahæi, &c Theophrastus mentions that it was selected for sends Pliny says, that it was very largely used for house ornaments Its name (derived from the word 'Ciystallus") signified " 1cc," and the Ancients thought it to be ice congealed by intense cold, and that it could only be found in the frozen regions Some of them would not even expose it to great heat lest it should melt The Emperor Nero is said to have possessed a pair of beautiful Crystal Cups, which he broke asunder, out of jerlousy and anger, when he heard of the loss of his Lingdom The Empress Livia give to the Capitol of Rome, a piece of Crystil, weighing The Roman doctors used the Crystal balls as lenses, in order to burn out sores On account of its hudness and superiority to glass, this stone or us making lenses for speciales and is is used for the pebble. The natives of India then known as the pebble. hollow it out into cups, gollets &c, of very great thunces and often cover them in heautiful ornamentation The Chinese use it for the same purpose The Japanese cut it into largo round balls, which are said to be used for cooling the hands The Indians behave the Crystal to bo the mother or external husk of the Diamond—calling the Diamond, the ripe, and the Crystal, the unite Diamond

Its Price Imitations

THE price depends upon the quality and size required for particular purposes Those, for instance, that suit for lenses vary from 2s to 15s per pound avoirdupois, but those of a larger size, intended for cups, dishes, &c., and the execution of which is attended with considerable time and risk, fetch & very great price. The green, pink and various other colored beads, which are sold in Switzerland and Germany, are made of crystals colored, by being exposed to heat and put to various chemical solu-The sudden change of temperature causes tions the Crystal to crack all over and the solution easily enters the pores of this stone, and to the naked eve gives it the appearance of being colored through The Rock Crystal is used for rings, pins, earrings, seals, cashets, &c . and specimens of these, found in private hands, are still highly valued, though the glass imitations and the abundant supply from Madagascar, have considerably lessened its price Strass or paste is often sold for Crystal (when

pure and free from air-bubbles,) but it can bo easily made out by its greater weight and inferior hardness.

Marvellous and Medicinal Properties.

In the middle Ages, this stone was beheved to be an enemy to poison and had the virtue of betraying its presence either by breaking into pieces or becoming obsoured. The famous "Show Stone" of Dr. Dee, a sphere of 3 inches in diameter, was known to possess magical properties, and would show to those that consulted it future events and distant persons. This stone may still he seen in tho British Museum. The Crystal, powdered and mixed with wine, was a sovereign remedy for dysentery. Orpheus recommended it as the medicine for diseases of the Lidneys Marhodus mentions, that Crystal powdered and mixed with mulsum (wino and honey,) if used by women suckling, would give them an abundant supply of milk. Crystal were supposed to allay the thirst of fever, if held against the tongue of the patients.

Celebrated Rock Crystals.

Caystals, of various sizes and in various forms and of considerable value, may be seen in private and of consucration of the first collections and in public Museums. The finest work in Rock Crystal in existence, is said to be an urn, 91 inches in diameter, 9 mehes high, and this, together with the pedestal, is made of one entire piece. The upper part contains a representation of Noah asleep, his children holding a covering, and a woman bearing in her hands a basket of finit. This urn belonged to the French Crown, and was, at the time of the Revolution of 1791, estimated at more than 1,000,000 frances.

